डा० कन्हैयालाल मुन्शी 'Gujarat & its Literature' (1935) Page 162:—

"Sadayavatsa katha' has charmed Gujarat for about five hundred years. Sadayavatsa and Sāvalingā, husband and wife, are banished from their native city and are separated. Ultimately they meet after undergoing fearful experiences, in all of which the fantastic vies with the miraculous The story is taken probably from some unknown Prākrit source. Its first available Gujarati version is copied in Samvat 1488."



संकलना

अर्पण

कायस्थ कवि गणपतिकृत 'माधवानल कामकंदला प्रबंध' (१९१४), और भीमकृत 'सदयवत्स वीरप्रबंध' (१९१५) के प्रथम निवेदक ।

अनेक अप्रकट संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश और प्राचीन गुजराती ग्रंथों के आद्य संशोधक ।

(पट्टण ग्रंथ-भण्डारों की सहाय से आधार लेकर) 'गायकवाड़ प्राच्य ग्रंथमाला' के आद्य संपादक

राजरत्न

पं० चीमनलाल दलाल की स्मृति में

सविनय
अर्पण



मंजुलाल मजमुदार

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ मे बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षो से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख है—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध मे विभिन्न स्रोतो से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशो के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है। अनुमानत: पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणो सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं.—

१. **कळायरण,** ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम सस्कर्ता।

२. **आभै पटकी,** प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३. **वरस गाठ,** मौलिक कहानी सग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें. कहानिया और रेखाचित्र आदि छप रहते हैं।

४. 'राजस्थान भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन सस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एव अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सभव नही हो सका है। इसका भाग ५ अक ३-४ **'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक'** बहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड का सचित्र और वृहत् विशेपाक है। अपने ढग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सबध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एव विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाए हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत: सग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि लेखो के अतिरिक्त सस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरो- स्वामी और श्री अगरचद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य निधि की प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो । सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एव शुद्ध रूप मे मुद्रित रवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है । स्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रथो का अनुसधान और प्रकाशन स्था के सदस्यो की ओर से निरतर होता रहा है, जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे या जा रहा है—

. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से घुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अश 'राजस्थान भारती' मे काशित किया गया है । रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व र कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं ।

. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की ाज की गई । जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान भारती' के प्रथम अक मे काशित हुई है । उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी रवाया जा चुका है ।

राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबध जस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है ।

मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है । बीकानेर एव सलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियाँ, र लगभग ७०० लोक कथाएँ सग्रहीत की गई हैं । राजस्थानी कहावतो के दो ाग प्रकाशित किये जा चुके हैं । जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा रथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं ।

० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल ग्रह 'बीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक वृहद् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित । चुका है ।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूडलोद थे।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनो के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश मे आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हे सुगमता से प्राप्त करना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सास्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५०००) रु० इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चोपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चोपई—	श्री अगरचंद नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचंद नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबंध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचंद कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थानी व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. भडुली— श्री अगरचंद नहाटा और म विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली श्री अगरचंद नाहटा
२७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथो का विवरण ,, ,,
२८. दम्पति विनोद ,, ,,
२९. हीयाली–राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य ,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन सग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचद नाहटा), नागदमए (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोडे समय मे इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बडोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, प० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथों का संपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमे लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मा भारती के चरण कमलों मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
संवत् २०१७
दिसम्बर ३, १९६०

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट

उपोद्घात

'सदयवत्स वीरप्रवन्ध' का पहला परिचय- प्रस्तुत प्रबंध के अस्तित्व का पहला उल्लेख करने वाले श्री चीमनलाल दलाल महोदय थे। ई स १९१५ (वि स १९७१) मे गुजरातके प्रख्यात शहर सूरत मे आयोजित की गई (५) पाचवी गुजराती साहित्य परिषद के समक्ष उन्होंने "पट्टण के ग्रथ भांडार और उसम बहुतायत रहा हुआ अपभ्र श एव प्राचीन गुजराती साहित्य" ("पाटणना भ डारो अने खास करीने तेमा-रहेलु अपभ्र श तथा प्राचीन गुजराती साहित्य") नाम का एक बढिया निबन्ध पढकर सुनाया था। उसमे एव अ जिन कवि 'भीम' की रचना (लिपि वि स १४८८) सदयवत्स कहानी का उन्होंने ही सर्वप्रथम निर्देश किया था।

इसके पहले श्री कांटावाला से सपादित 'साहित्य' मासिक पत्रिका के अगस्त ई स १९१४ (वि स १९७०) के अ कमे आम्रपद्र (आमोद) जिला भरुच के कायस्थ कवि गणपति की रचना-कृति "माधवानल कामकदला प्रबध" (रचनाकाल वि स १५७४) कि,जो २ ५०० दोहा छदका काव्य-ग्रथ था उसके प्रति सबसे पहले श्री दलाल महोदय ने ही पाठको एव विद्वानो का ध्यान आकृष्ट किया था।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने ही पट्टण के ग्रथागार मे से अपभ्र श एव प्राचीन गुजराती साहित्य के ग्रथो का परिचय एक सूचिके रूपमे पहले एकत्र किया था। क्योकि उनके पहले पट्टण के ग्रथागार के साहित्यक ग्रथोकी सूचि (नोंध) या सकलित यादी तैयार करने के लिये डा० व्युलर, डा० पीटरसन, एव प्रा० मणिलाल न द्विवेदी आदि महानुभावोंने प्रयत्न किया था। उनको यहांके ग्रथागारके सरक्षको-का सहकार प्राप्त नही हुआ था। किन्तु श्री दलाल महोदय, स्वय जिन होने के नाते, उन्होंने उन ग्रथागार के सरक्षको का सहकार एव सद्भाव प्राप्त कर लिया था। और अत्यत परिश्रम करके यहां के (पट्टणके ग्रथा-

गार के) साहित्यक या द्वारा उस साहित्य का साहित्य जगत में परिचय दिया। गुदड़ी के लाल की तरह, साहित्य प्रकाश में लाया गया। साहित्य जगत में नई रोशनी आई। फलस्वरूप बड़ौदा रियासतकी श्री गायकवाड़ प्राच्य ग्रथमाला (G O Series) के पहले सपादक एव तत्री-पद पर उनकी नियुक्ति की गई थी।

सम्पादनका श्रेय यह एक आनन्दजनक एव आश्चर्यकारक घटना घटी है ऐसा कहने म सकोच नहीं होता है। क्योंकि श्री दलाल महोदय न जिस अ-जैन काव्यग्रथो की सर्व प्रथम उद्घोषणा की थी, वही दोनो ग्रथो के सपादन करन का सद्भाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। कौन जानता था कि यह कार्य मुझसे होगा ? किंतु हो गया है। और अब भी हो रहा है। इसमें ईश्वर का कुछ सकेत होगा ऐसा मैं समझता हू।

ई स १९४२ (वि स १९९७) मे "माधवानल कामकदला प्रबध" मूल-मात्र, एव परिशिष्ट और उपोद्घात सहित प्रथम भाग श्री गायकवाड प्राच्य ग्रथमाला म ९३ पुष्प के रूप मे प्रकाशित हुआ है। विस्तृत प्रस्तावना, टिप्पणियाँ, तथा शब्दकोशका दूसरा भाग तैयार होने जा रहा है।

सपादन का इतिहास- प्रस्तुत "सदयवत्स वीर प्रबध" नामका ग्रथ का सपादन कार्य करने का निर्णय ई स १९३९ (वि स० १९९५) मे किया गया था। उसके बाद अन्य हस्तलिखित पोथियां एव उपयोगी साहित्य की खोज म कुछ वर्ष निकल गये। प्रस्तुत प्रबन्ध का प्रकाशन-कार्य अहमदाबाद की गुजरात विद्यासभा की ओर से होने वाला था। उससे मैंने वहा एव प्रेस-कापी प्रकाशन के लिये भेज दी। वहा के 'नवजीवन' छापखाने से ई स १९५० (वि स २००६) के आसपास के समय मे देवनागरी लिपि मे प्रकाशित हुई कुछ गलतियां वाली प्रूफ-प्रतियाँ प्राप्त हुई। मैंने इन गलतियो की दुरुस्ती करने की प्रार्थना की। किंतु वहाँ के कार्यवाहको को गलतियाँ दुरुस्त करने के लिये सुविधा नहीं होने के नाते, कुछ कठिनाई देखकर इस कार्य को आगे

छपाने मे अनिच्छा व्यक्त की। छापखानेवालो ने यह सिरपच्ची वाला साहित्य विद्यासभा की ओर वापस भेज दिया। और विद्यासभा ने मुझे वापस लौटा दिया। और इस तरह यह प्रकाशनका कार्य यकायक रुक गया।

श्री नाहटाजीकी प्रेरणा- श्री अगरचन्द नाहटाजी महोदयने उनके "राजस्थान भारती" नामके मासिक पत्रिका के अक मे सन् १६५८ मे प्रकाशित एक विस्तृत लेख मे 'उस प्रबन्ध का प्रकाशन होने वाला है," ऐसा नोट के रूप मे उल्लेख किया था। बाद मे (वि स २०१६) ई स. १९६० के सितम्बर मास मे श्री नाहटाजी महोदयने, प्रस्तुत प्रबन्धको श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट बीकानेर ग्रथमालामे प्रकट करनेकी, संस्था के सेक्रेटरी (मत्री) के नाते, मुझे सूचन किया, प्रार्थना की। मैंने धन्यवादके साथ उनकी प्रार्थनाको सहर्ष स्वीकार किया। इस तरह प्रस्तुत प्रबधके प्रकाशन-कार्य की कहानी या पूर्व इतिहास अब पूर्ण होता है।

आभार दर्शन- इस उपयोगी साहित्य रचनाकृति को प्रकाशमे लाने की सुविधा एव सहायता देने के लिये, तथा तत्सबधी अनेक हस्त-लिखित प्रतिया एव अन्य सामग्री भेजकर रचनाकृतिके सपादन, सशोधन एव प्रकाशन आदि कार्यों मे जो सहायता प्रदान की है, इसके लिये मैं श्री नाहटाजी महोदय को धन्यवाद के साथ उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हू।

उस सपादन की प्रस्तावना लिखने मे उपरिनिर्दिष्ट श्री नाहटा जी महोदय का "राजस्थान भारती" मे प्रकाशित "सदयवत्स सावलिगा की प्रेमकथा" नामके अत्यन्त अभ्यासपूर्ण एव विद्वत्तापूर्ण लेख का काफी उपयोग भी किया है। उसके लिये भी मुझे उनका ऋण-स्वीकार करते हुये अत्यन्त हर्ष होता है।

प्रस्तुत ग्रथमे मैंने सशोधित की हुई एव अन्य सर्व गुजराती सामग्री का हिंदी में अनुवाद करने वाले मेरे स्नेही एव साहित्यक-शिष्य श्री चन्द्रकान्त बापालाल पटेल (साहित्यरत्न-प्रयाग) जी को मैं धन्यवाद देता हू।

इस प्रबन्ध के सम्पादन में मेरे मित्र पंडित श्री लालचन्द्र भगवान दास गांधीजी ने पाठ निर्णय और टिप्पणी में हृदयपूर्वक सहायता की है इसलिए मैं अत्यन्त उपकृत हूं।

फोटोग्राफ- 'प्रबंध' और 'चउपाई' की प्राचीन प्रतियों के आदि एवं अन्तभागके फोटोग्राफ (चित्र-कापी) भी दिये हैं। जो प्रतिया बड़ौदा प्राच्यविद्यामंदिर के नियामक श्री डा० भोगीलाल जी सांडेसरा के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं। जिससे लिपियों के प्रकारान्तरका परिचय भी होगा। और सुविधा रहेगी।

टिप्पणीमें कई अपभ्रंश शब्दोंकी व्युत्पत्ति दी गई है जिससे इनका यथार्थ बोध होने में सुविधा रहेगी।

प्रबन्ध में से एक दिलचस्प प्रसङ्ग का चित्र की प्रतिकृति एक सचित्र प्रति में से दी गई है।

"चैतन्यधाम" ३४ प्रतापगंज मंजुलाल मजमुदार
बडौदा २
(गुजरात राज्य)

प्रस्तावना

प्रबन्ध का स्वरूप- वीररस प्रधान एवं ओजपूर्ण शैलीवाला काव्य 'प्रबंध काव्य' कहा जाता है। गद्य या पद्य दोनों में की हुई सार्थक रचना का नाम है 'प्रबंध' (मणिलाल बकोरभाई व्यास का संपादित "विमल प्रबंध", प्रस्तावना पृ० ६२) ई. स. १००० से १५०० तक रचे गये ऐतिहासिक काव्योके नाम, खास करके 'प्रबंध' रखे गये हैं। जैसेकि कुमारपाल प्रबन्ध, भोजप्रबन्ध, चतुर्विंशति प्रबन्ध, प्रबन्ध चिंतामणि, प्रबंध श्रेणि, जैसे संस्कृत गद्यपद्यात्मक ग्रंथों मे एक या अनेक वीरव्यक्तियों के चरित्रों का बयान किया गया है। इन प्रबंधों में संबंधित व्यक्तियों में विमल मंत्री जैसे युद्धवीर तथा धर्मवीर भी हैं, एव जगड् जैसे दानवीर, और विक्रम जैसे युद्धवीर, और सदयवत्स या पृथ्वीराज जैसे शृंगारवीर भी उल्लेखनीय हैं। यो प्रबंध खास करके ऐतिहासिक व्यक्तियोके चरित्र-निरूपण के ही काव्य है।

वीररस का आलंबन- रसशास्त्रका एक सिद्धांत है कि उत्तम प्रकृति के नायकों का ही वीररसमे बयान करना चाहिये। क्योंकि वीरत्व उत्तम पुरुषों मे ही होता है। वीररस का स्थायीभाव उत्साह है। उत्साह का राजस गुण किसी भी कार्य मे वीर को प्रवृत्त करता है। क्योंकि उस कार्य मे उसको विजय प्राप्त करना है। वीर का उत्साह यूं पांच प्रकार का हो सकता है। जैसे कि युद्ध करने का उत्साह, धर्म करने का उत्साह, दान करने का उत्साह, दया करने का उत्साह, तथा प्रेम करने का उत्साह।

महाभारत के पात्रों में अर्जुन युद्धवीर, हैं युधिष्ठिर महाराज धर्मवीर हैं। कर्ण दानवीर हैं। शिविराज दयावीर हैं। भगवान कृष्णचंद शृंगारवीर के रूप में विख्यात हैं ही। यदि कोई कहेंगे कि क्षमावीर, सत्यवीर, लज्जावीर, नीतिवीर, धृतिवीर जैसे भेद क्यों न हो सके? वीरके

अनेक भेद और केवल पांच ही भेद क्यों कहे गये ? इसका समाधान इस प्रकार हो सकता है कि क्षमाका अन्तर्भाव दया मे हो जाता है । तथा सत्य आदि का संनिहित धर्म मे ।

अंग्रेजी वीरपूजा की भावना–कार्लाइल के 'वीर और वीरपूजा' (Hero & Hero worship) नामक पुस्तक मे जीवन के विविध क्षेत्रो मे वीरता दिखाने वाले वीरों का पूजन करना उचित है ऐसा प्रतिपादित किया गया है। इसमे वीरता को व्यापक अर्थ में सूचित किया गया है ।

कवि, धर्मगुरु, वैद, व्यापारी, सैनिक प्रत्येक के क्षेत्र मे हरेक को वीरता दिखलानेका पूर्ण अवकाश रहता है । और वीरता दिखलानेवाले सच्चे वीर कहलाने के योग्य हैं । उपर्युक्त दिखाये गये पांच प्रकार के भेद मे इसका भी अंतर्भाव हो जाता है ।

वीररस के अन्य पद्यस्वरूप- वीरोंके चरित्र 'प्रबन्ध' रूपमें 'पवाडा' रूप मे, श्लोक (सलोका) रूप में, या 'रासा'के रूपमें वीररसके लिये उचित ऐसे 'छद' में रचे जाते हैं । और रचे भी गये हैं । जिसके दृष्टांत ऊपर दिये गये है । सामान्य मनुष्यो के चरित्र कभी काव्य द्वारा बिरदाने के योग्य होते नही हैं, या ऐसे साधारण मनुष्यो के चरित्र काव्य में वर्णित किये नही जाते है, या योग्य भी नही होते । इसलिये गुजराती एवं राजस्थानी पद्य-साहित्य में खास तौर पर चरित्र, प्रबन्ध, पवाडो, रासो तथा छंद, एवं शलोका, ये [illegible] करीब पर्याय रूप में प्रयुक्त किये गये शब्द न हों, ऐसा समझ[illegible] है ।*

---

* [illegible] कुछ प्रतियों में

कान्हडदे[illegible] पवाडउ,

कान्तिलाल

वीरगाथा काल- वीरगाथा काल के राजाश्रित कवियो एव भाट चारणोंने अपने आश्रयदाता राजाओ के शौर्य पराक्रम एव प्रभाव आदि के वर्णन अपनी ओजपूर्ण खनकदार बानी में काव्यों में किये है । ये लोग कभी कभी रणक्षेत्र में जाते थे, तलवार भी चलाते थे । और अपनी वीर बानी से सैन्य में शौर्य का सचार करते थे । खुद भी युद्ध में प्राणार्पण कर देते थे । ऐसी रचनाओं की पीढीगत रक्षा भी की जाती थी एव वृद्धि भी ।

हमें वीरगाथायें दो रूप में मिलतीं हैं । (१) मुक्तक रूप में, और (२) प्रबध में । जिस तरह युरुप में वीरगाथाओं के विषय (Age of Chivalry) युद्ध एव प्रेम थे, वैसे भारत के साहित्य में भी हुआ है । किसी राज्य की स्वरूपवती राजकन्या का समाचार सुनकर अपने लश्कर के साथ उस राज्य पर धावा करके उसकी राजकन्या छीन ली जाती या अपहृत की जाती थी । इसमें वीरो का वीरत्व,गौरव, शौर्य,अभिमान, बल, प्रभाव, आदि माना जाता था । इस तरह प्रबन्ध काव्यो में वीररस के साथ शृगार रस का भी मिश्रण होता था, हुआ है ।

वीररस के मुक्तक- वीररस के प्राचीन मुक्तको का सग्रह मुनि श्री हेमचन्द्राचार्य के 'प्राकृत व्याकरण' ग्रथ में दृष्टान्त के रूप में प्राप्त होता है । इसके सिवा भी प्रबध काव्य एव वीरगीतों के स्वरूप में रचना हुई है ।

रासा साहित्य- गुजराती के रासा युग के समसामायिक काल को हिंदी साहित्य में "वीरगाथा काल' नाम दिया गया है । इस काल में 'खुमान रासो' 'विशालदेव रासो' 'पृथ्वीराज रासो' 'हम्मीर रासो' 'जगनिक का आल्हाखड' आदि रचना हुई है ।

गुजराती म वि स १३७१ के आसपास श्री अबदेव सूरि रचित "समरारासु" में पट्टण के समरसिंह नामक एक ओसवाल वणिक बनिया ने सघ (यात्रा) निकाल के शत्रुजय पहाड पर श्री ऋषभदेव के मन्दिर का जीर्णोद्धार किया । और घर लौट आया उसकी प्रावस या तीर्थ-

यात्रा आदि का वर्णन आता है । इसमें समरसिंह स्वयं दानवीर एवं धर्मवीर भी दिखाई देता है ।

श्री कक्कसूरि ने वि. सं १३९२ में संस्कृतमें रचित ग्रंथ 'नाभिनंदन जिनोद्धार प्रबन्ध' में भी इसका वर्णन है । श्री अम्बदेवसूरि इस यात्रा में सम्मिलित थे । ऐसा उसमें उल्लेख है ।

गुजराती प्रबन्ध साहित्य- 'विसलनगरा नागरब्रभ' पद्मनाभने वि स १५१२ में 'कान्हडदे प्रबंध'की रचना की है। यह बिना सुपरिचित तथा सुविदित हो गई हैं । वि. सं १५६८ में श्री लावण्यसमयने 'विमल प्रबन्ध' की रचना की है वह भी प्रसिद्ध है । कायस्थ कवि गणपति ने 'माधवानल कामकदला प्रबन्ध' की रचना वि स १५७४ में आम्रपद्र, आमोद जिला भडोच में की है।

शील से,शोभित नायक नायिका का शृंगार इसका वर्ण्य विषय है । इसमें माधव चारित्र्य-शुद्ध शृंगारवीर है । कामकदला अभिजात गणिका-पुत्री है । और वह मृच्छकटिक की पात्र वसंतसेना का स्मरण कराती है । इसीलिये उनका मिलन साहसवीर तथा परदुखभंजन ऐसे राजन विक्रम द्वारा होता है । इस प्रबन्ध में विप्रलंभ तथा रतिक्रीडा यो दोनो प्रकार के शृगार रसप्रद वाणी में वर्णित किया गया है । फिर भी इसमें कविने शीलका, चारित्र्यका,माहात्म्य अधिक भावपूर्वक स्थापित किया है ।

वैष्णव कवि श्री गोपालदासने "श्री वल्लभाख्यान" श्री वल्लभाचार्य (जीवनकाल वि स. १५२९-१५८७) तथा श्री विट्ठलनाथजी (जीवनकाल वि सं. १५७२ से १६४२ में) धर्मवीर ऐसे गोस्वामी श्री विट्ठलनाथजी की प्रशस्ति की, प्रबन्ध-रूप में नौ गेय पद्यो में रचना की है ।

संस्कृत गद्य कथा- श्री रत्नशेखर के शिष्य श्री हर्षवर्धनगणिने वि. सं. १५२७ में "सदयवत्स कथा" संस्कृत गद्य में रची है । वह शायद एक जैनेत्तर कवि भीम ने रचित "सदयवत्स वीर प्रबंध" की वि स १४८८ में श्री पट्टन में लिखी गयी प्राचीनतम प्रतिकृति प्राप्त हुई है । इस विनासे इस कृतिकी रचना के संभव में

सकता है कि भीम की रचना अनुमानतः वि. सं. १४६६ में हुई होगी, ऐसा कुछ लोगों ने अनुमान किया है। दूसरी प्रति वि. सं. १५९० में एवं तीसरी प्रति वि. सं. १६६२ की प्राप्त है। इस परसे कहा जा सकता है कि सदयवत्स और सावलिंगा की प्रेम कथा का यह सबसे प्राचीन एवं उपलब्ध संस्करण है।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने जिस प्रति की जांच की थी उसमें पद्य-संख्या ६७२ थी। दूसरी प्रति में ६८९ पद्य-संख्या है। किंतु सर्व प्रतियां का मिलान करनेके बाद,प्रबन्ध की ७३० जितनी कड़िया प्राप्त हुई हैं।

संस्कृत कथानक भीम के प्रबन्ध का मुख्यतः अनुसरण करता है। किंतु उसमें जिनधर्म की महिमा का गुथन करलेनेकी तक श्री हर्षवर्धन-ने छोड़ दी नहीं है। इन प्रसंगों का उल्लेख कथा-सार देते समय कौंस या कोष्टक में सूचित किया जायेगा। खरतर गच्छ के यति श्री कीर्ति-वर्धन ने इस कथानक में जिनमत का कुछ भी प्रचार नहीं किया है।

कथानक का मूल- 'कथा सरित् सागर' जो कि लोककथाओंके महासागर स्वरूप गिना जाता है। उसमें भी 'सदयवत्स कथा' का पता चलता नही है। फिर भी उज्जयिनी, हरसिद्धिमाता, प्रतिष्ठान नगर, शालिवाहन, बावनवीर, और खापरा चोर इत्यादि उल्लेखों से और सदयवत्स के अद्भुत वीरता-भरे वर्णनों से या गाथाओंसे इस लोक-कथा की उत्पत्ति का सम्बन्ध 'विक्रम कथा-चक्र' के साथ होना अनुमान किया जा सकता है।

* संस्कृत में 'सदयवत्स', प्राकृत में 'सुदयवच्छ' 'सुद्धवच्छ' एवं सुद्, गुजरातीमें 'सदयवच्छ' और 'सदेवंत' इस तरह राजस्थानी-मारवाडी में 'सूदों', एवं 'सदेवठ' शब्द हैं। इससे ज्ञात होता है कि ये सर्व शब्द कथानक से सम्बन्ध रखने वाले हैं। कथानक के निकटवर्ती शब्द हैं।

गा का निर्देश कहीं कही सावलिंगी के रूप में भी प्राप्त है।

प्राचीन उल्लेख पद्मावतमे सदयवत्स कथा के विषय में दो प्राचीन उल्लेख प्राप्त होते हैं। (१) मलेक मुहम्मद जायसीकृत रचना पद्मावत में इस कथानक का उल्लेख उसने किया है। और श्री सुधाकर द्विवेदी वाला जो संस्करण है उसमें यही पाठ है।

(२) शिरफ ने जायसीकृत 'पद्मावत' के अपने अंग्रेजी अनुवाद में पृ० १४४ की पादटिप्पणी में भी 'सदयवत्स' पाठ का उल्लेख किया है।

अपभ्रंशमे उल्लेख- एक दूसरा उल्लेख भी प्राचीन समय का प्राप्त होता है, जो अब्दुल रहेमानके अपभ्रंश काव्य 'संदेश रासक'में है। जिसका रचनाकाल वि सं १४०० के आसपास है। उसने मुल्ताननगर का वर्णन किया है। उसमें वहाँ के विचक्षण नागरिकों की साहित्यक विनोद की चर्चा के प्रसंग में उन्होंने लिखा है कि मुलताननगर के सर्व नागरिक पंडित थे। ये विचक्षणों के साथ नगर में परिभ्रमण करते समय कही कही प्राकृत के मनोरम्य छंद के आलाप सुनने में आते थे। तो कही भेष परिवर्तन करने वाले लोग (बहुरूपी) 'रासक' करते देखने को मिलते थे, तो कही वेद, सदयवत्स कथा, नल चरित्र, महाभारत एवं रामायण (रामचरित) सुनने में आते थे।*

---

* देखिये, मूल अपभ्रंश रचना की संस्कृत टिप्पणी--

"यदि विचक्षणैः सह पुरान्त परिभ्रम्यते तदा मनोहर छंद[illegible]
प्राकृत श्रूयते।
कुत्रापि चतुर्वेदिभि वेद प्रकाश्यते।
कुत्रापि बहुरूपिभिर्निबद्धो रासको भाष्यते ।।४५।।
कुत्रापि सुदयवच्छ कथा, कुत्रापि नलचरितम्।
कुत्रापि विविध विनोदै भारत उच्चरित श्रूयते ।।
अन्यच्च कुत्रापि कुत्रापि आशिष त्यागिभिर्द्विजवरै
रामायणमभिनूयते ।।४४।।

यहा नलचरित्र, महाभारत एव रामायण के साथ 'सदयवत्सकथा' का उल्लेख प्राप्त होने से ज्ञात होता है कि उस समय यह कथा उन ग्रथो की तरह ही लोकप्रिय एव प्रसिद्ध होगी ।

प्रान्त प्रान्तमे प्रचार- जायसी के पद्मावत मे इस कथा का उल्लेख है इसस ज्ञात होता है कि उस कथानक की प्रसिद्धि उत्तर प्रदेश मे भी इसी रूप में होगी । यह बात स्पष्ट नजर में आ जाती है ।

अब्दुल रहेमान के इस का इस रूप में उल्लेख, वास्तव में पजाबकी ओर इस कथा के प्रचार का द्योतक है । राजपुतानी (राजस्थान) एव गुजरात मे भी इस कथानक का बहुत प्रचार रहा है । यह बात भी उक्त सपादित सशोधित एव प्रकाशित ग्रथ से ज्ञात होगी ।

विक्रम कथाचक्र से सम्बन्ध- जिन कवि के स स्कृत कथानक मे जिनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जुटाया है । एव कथा में उज्जयिनी, हरसिद्धिमाता (देवी), प्रतिष्ठाननगर एव शालिवाहन राजा बावन वीर, और खापरा चोर आदि के उल्लेख किए हैं । और इस प्रकार से विक्रमकथाओ के वार्ताचक्र (कथा चक्र) के साथ उसका सम्बन्ध व्यजित किया है ।

प्रबन्धके रचयिता कविका परिचय- कवि ने प्रबन्ध मे अपने निर्देश के अतिरिक्त अन्य कोई भी परिचय नही दिया है । नामका निर्देश निम्नलिखित काव्य पक्ति में मिल जाता है, जो यहा उद्धृत किया गया है ।

"इम भणइ भीम तस गुण थुणिसु,
जो हरिसिद्धि-वर-लवध ।"

नाम का निर्देश प्राप्त होता हैं । किंतु कवि ने अपनी जाति ज्ञाति एव जन्मस्थल या निवासस्थान के बारे में कुछ भी उल्लेख नही किया है । साथ साथ प्रबन्धके रचना कालका भी किंतु उनके प्रबन्धकी प्राचीन-

तम प्रतिकृति श्री पट्टन में वि. सं. १४८८ की लिखी हुई प्राप्त हुई है। (विद्वद्जन मनः प्रमोदाय) इससे काफी अनुमान किया जा सकता है कि यह रचना विक्रम की १५ वी शती के उपरार्ध से अर्वाचीन नहीं है ।

कविका निवास स्थान-कविने अपने निवास स्थानके बारेमें कुछ भी संकेत नही किया है । किंतु कविका निवास स्थान गुर्जर भूमि हो ऐसा प्रतीत होता है । क्योंकि जब कामसेना के व्याधिकी चिकित्सा केवल गुर्जर वैद्यराज से ही हो सकी थी । और इससे गुर्जर वैद्यकी कवि भीम ने काफी प्रशंसा भी की है ।

प्राचीन काल की गुर्जर भूमि का विस्तार भी गुर्जर प्रतिहार राजाओ के साम्राज्य विस्तार के साथ साथ हुआ है । जिस राज्य मे सौराष्ट्र, आनर्त, एव समस्त राजस्थान का भी सन्निवेश होता था ; और इसकी व्यापक लोक भाषाये भी समान थी ।

कवि की ज्ञाति- कवि का ब्राह्मण होना सम्भव है । क्योंकि उसने गणेश, शकर, एव हरसिद्धि माता परमेश्वरीका उल्लेख किया है । साथ साथ कैलाशपति भगवान शकर के प्रासाद का सुन्दर बयान दिया है । (दे०कडी २१७, १८, १९) । प्रतिष्ठान नगर वर्णनके प्रसङ्गमें विक्रम, त्रिविक्रम, विष्णु एवं सूर्य का भी उल्लेख हैं । सावलिगा के अग्निप्रवेश की पूर्व तैयारी के रूप में जो प्रार्थना दी है इसमे भी पता चलता है । जैसे कि 'करउ साखि त्रिकम ने तरणी' कडी (२९९) ।

कवि रामायण एवं महाभारत से भी विशिष्ट रीति से परिचित थे ऐसा जान पड़ता हैं । कुछ छंद एवं काव्य पद्धतियो के द्वारा इसका पता चलता हैं । सदयवत्स के गुण एव कार्यो की प्रशंसावली के अनुसधान मे नल, कंदर्प, युधिष्ठिर, गागेय भीष्म पितामह, भीमसेन, कर्ण एवं दुर्योधन जैसोंके उपमान भी कविने दिये हैं ।(दे० छप्पय कडी २८७)कविके जमाने मे जिनधर्म एव जीवदया अहिंसाका भी काफी प्रचार था । इसके द्योतक निम्नलिखित काव्य-पंक्तियां हैं । इससे पता चलता है । जैसे कि 'जिन शासन गाढउ गहगहइ । जीवदया देखी मन रहइ ॥'(दे कडी ४५१,४५२)

✓ प्रबध की भाषा- प्रस्तुत प्रवन्ध की भाषा किसी भी जिनेत्तर गुजराती ग्रय की भाषा से प्राचीन जान पडती है। प्राकृत एव अपभ्र श के शब्द और प्रयोगो के रूप मे उसमे इतनी सामग्रिया भरी पड़ी है कि न पूछो बात। यदि प्रारम्भ के मगलाचरण मे कवि ने गणपति का नाम-स्मरण न किया होता तो इसकी गणना किसी जिन कवि की कृति के रूप मे गिना जाने का सम्भव था। डा० टेसिटोरीने जूनी पश्चिम राजस्थानी का नामाभिधान जिस भाषा स्वरूप को दिया है। और गुजराती विद्वान महाशयोने 'अतीम अपभ्र श' और 'जूनी गुजराती', ऐसे शब्दो से उसका व्यवहार किया है। उसी समयकी भाषा 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध'मे प्रतीत होती हैं। वास्तव मे वि स १४८८ की प्रति की उपलब्धि से भाषा के प्राचीन स्वरूप की रक्षा हुई है। और इसमे कुछ परिवर्तन एव आधुनिकरण नहीं हुआ है।

सरस या सुन्दर रचना -कवि इस प्रवन्धके प्रारम्भ मे 'सरस' 'सुअर्थ' एव सुच्छ द प्रवन्ध के रचयिता सर्व कोई प्रौढ एव लघु छोटे बडे ऐसे कविजनो को नमस्कार करते हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि कवि ने किसी प्राकृत किंवा प्राकृत अपभ्र श ग्रन्थो मे से इस प्रवध के विषय मे प्रेरणा प्राप्त की होगी जिसका निर्देश हमे निम्नलिखित काव्य पक्तियो से मिलता है। जैसे कि "गुरु लहुय जि कवि कवियण, सरस सुअत्य सुछद बधयरा।" कवि के पुरोगामी काल मे ऐसी प्रवन्ध रचना होना भी शायद सम्भव हो। फिर भी अद्य-यावत्प्राप्त जिनेत्तर रचनाओ मे कवि भीम की रचना सबसे प्राचीन है-ऐसा कहने मे सकोच नही है।

भीम कवि की रचना एवं काल-समय- सदयवत्स चरित कथानक के सम्बन्ध मे उपलब्ध साहित्य से निर्णय किया जाता है कि उन रचनाओ का प्रारम्भ वि की १५ वी शती से होता है। प्राचीन गुजराती भाषा मे रचित भीम कवि की रचना 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' ग्रय उपलब्ध रचनाओ मे सबसे प्राचीन है। इसकी प्राचीनतम प्रतिकृति

वि. सं. १४८८ की प्राप्त हुई है। इससे अनुमान किया गया है कि यह रचना निदान २० बीस साल पहले की होना सम्भव है। अतएव इनकी रचना वि. सं. १४६६ की है। ऐसा निर्देश कई लेखकों ने किया होगा। वास्तव में कवि का इसके बारे में कही भी स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

प्रबन्ध के छंद- कवि ने प्रस्तुत प्रबन्धमें दूहा, दूहासोरठा, पद्धडी, चउपई, अडयल, वस्तु, छप्पय, कुंडलिया. चामर एवं मौक्तिकदाम इन मात्रामेल छद एवं एकताली केदारराग, और धउल धनासी, जैसे गेय काव्य-छद प्रयुक्त किये हैं। अतएव ७३० कडियो में यह कृति प्रसादयुक्त एव वैविध्यपूर्ण और सुन्दर बन पाई है।

वस्तुछद 'पिंगलसारोदार'के नियमानुसार, १२५ मात्राओका नवपदी छंद है। पहले तीसरे ओर पांचवें पदमें १५ मात्रायें, दूसरे एवं चौथे पद में ११ मात्रायें, और अंत्यके चार पदों से दूहा बनता है।

पद्धडी पद्धडिका और पाधडी छद कडवक के अंत में अपभ्रंश काव्यो में प्रयुक्त होता है।

आचार्य हेमचंद्र जी ने 'छंदानुशासन' में 'चौः पद्धडिका' चार च गणों से पद्धडिका छंद बनता है ऐसा लक्षण दिया है। चार मात्रा के गणकी चगण संज्ञा है। एवं १६ मात्रा का एक पाद, इस तरह के चार पाद पद्धडिका छद में रहते हैं। इसमें उसका नाम चतुष्पदी भी है।

प्रबन्ध में रस- कवि ने इसमें नौ ९ रस होने का उल्लेख किया है, किंतु प्रधानतया वीर एवं अद्भुत रसका संचार अधिक है। शृंगार रस उसमें गौण रूप में पाया जाता है। 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' नाम के गुजराती कवि की रचना प्रयः वीर रस से ही प्रेरित है।

गुजराती रूपान्तर उज्जयिनी के राजा प्रभुवत्स के महालक्ष्मी रानी से सदयवत्स नामक पुत्र हुआ। उसे द्यूत का कुव्यसन लगा हुआ था। प्रतिष्ठानपुर के राजा शालिवाहन के सार्वलिगा नामक पुत्री थी। उसके स्वयंवर में जाने के लिये आमंत्रण मिलने पर राजा प्रभुवत्स ने मंत्री के साथ सदयवत्स को प्रतिष्ठानपुर भेजा। मंत्री कृपण होने से कुमार को खर्च के लिये आवश्यक द्रव्य नहीं देता था। स्वयंवर में सदयवत्स ने अपने गुण एवं कला से आकर्षित कर सार्वलिगा से विवाह कर लिया।

उज्जयिनी में महादेव नामक एक दरिद्र ज्योतिषी रहता था। स्त्री की प्रेरणा से एक दिन वह राजा प्रभुवत्स की सभा में उपस्थित हुआ। राजा ने उसका परिचय पूछा उसने कहा कि मैं ज्योतिष के बल से भूत, भविष्यत् और वर्तमान के शुभाशुभ को जानता हूं। राजा ने उसके इस अभिमान से क्रुद्ध हो परीक्षार्थ अपने निकटवर्ती जयमंगल हाथी का आयुष्य पूछा। ज्योतिषी ने कहा यह कल दोपहरको मर जायगा। राजा ने क्रोधित होकर उसे कैद कर लिया और नौकरों को जयमंगल हाथी की विशेष रक्षा करने की आज्ञा दे दी। लोक ज्योतिषी की अवज्ञा करते हुये कहने लगे, देखो इस ज्योतिषी ने हाथी का मरण तो जान लिया पर अपने बंदीखाने में पड़ने की बात को नहीं जानी।

इधर वैद्यों की देखरेख में जयमंगल की विशेष सुरक्षा की व्यवस्था हो चुकी थी। पर भवितव्यतावश दूसरे दिन दोपहर के समय हाथी मदोन्मत्त हो भाग निकला और बाजार में उपद्रव मचाने लगा। इसी समय एक सगर्भा ब्राह्मणी के अधरणी उत्सव का वरघोडा उसके पीहर से ससुराल जा रहा था, वहाँ वह हस्ति आ पहुंचा। उत्सव में सम्मिलित लोग भाग खड़े हुये, पर ब्राह्मणी गर्भभार के कारण भाग न सकी। अतः हाथी ने उसे पकड़ ली। यह देखकर उसके पति ने चिल्लाते हुये उसकी रक्षा करनेवाले को हार आदि देने की उद्घोषणा की। सदयवत्स की दृष्टि भी उस ओर पड़ी और उसने हाथी को मारकर ब्राह्मणी की रक्षा की। इससे प्रसन्न हो प्रभुवत्स राजा ने कुमार को युवराज पद देने का

निश्चय किया। स्वयवर में साथ जाने वाले म त्री ने कुमार को युवराज-पद मिलता देख विचार किया कि मैंने इसे आवश्यक द्रव्य व्यय के लिये नही दिया था सभव है वह उस वैर का बदला मुझ से ले। अत इस युवराज पद नही मिले ऐसा सोच राजा को उल्टी म त्रणा दी कि कुमार ने एक साधारण स्त्री की रक्षा करने के लिये "जयमगल"-जैसे राजमान्य हाथी को मार डाला यह उचित नही किया। राजा को म त्री की बात जँच गई उसने कुमार के कार्य को अनुचित समझ कर उसे राज्य छोडकर चले जाने की आज्ञा दे दी।

कुमार ने भी अपमान होने से अब वहाँ रहना उचित नही समझा और जाने की तैयारी कर ली। माता ने समझाया पर उसने नही माना। सार्वलिंगा भी उसके साथ हो गई। चलते चलते वे एक वन मे आ पहुचे वहा सार्वलिंगा को जोरो से प्यास लगी। कुमार पानी की खोज मे इधर उधर घूमते हुए एक प्रपा पर नजर आई। पानी लेनेके लिये पास पहुचने प्रपालिका वृद्धा ने कहा यह हरसिद्धि माता की प्रपा है। जितना पानी लोगे उतना ही खून देने की शर्त से ही जल ले सकते हो। कुमार ने सार्वलिंगा के प्रेमवश यह शर्त स्वीकार कर, पानी ले जा कर, सार्वलिंगा को पिलाया। वृद्धा भी साथ गई और खून माँगा। कुमार शिरच्छेद करने को उद्यत हुआ। इससे देवी ने प्रसन्न हो वर माँगने को कहते हुए कहा- कि मैंने ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये जगल की रचना की है। और मैं उज्जैन एव प्रतिष्ठान नगर की कुलदेवी हू। कुमार ने सग्राम एव युद्ध मे जय होने का वरदान माँगा।

देवी ने सारियो के द्यूत मे जय होने के लिये दो पासे, कपर्दक द्यूत मे जय होने के लिये कपर्दिकायें, और सग्राम मे जय होने के लिये लोहछुरिका दी। आगे चलते हुए स्त्रियो के समूह के बीच मे एक कुमारिका को ध्यान करते हुए देखकर सार्वलिंगा ने उसके पास जाकर वृत्तान्त पूछा। कुमारिका ने कहा यहाँ से ५ कोस पर स्थित धारावती-नगरीके राजा कान्तीरकी स्त्री सारिगीकी मैं लीलावती नामक पुत्री हू।

बन्दीजनों के मुख मे सदयवत्स का गुण श्रवण कर उसें पाने के लिये इस कामितप्रद तीर्थ में ६ महीने से ध्यान कर रही हू। सदयवत्स के न मिलने पर कल चिता मे जल मरूंगी। सावलिगा ने यह वृतांत सदयवत्स को कहा। कुमार सबके साथ नगरी मे आया और लीलावती से विवाह कर उसकी इच्छा पूर्ण की।

[इसी समय धर्मघोष नामक जैनाचार्य वहा पधारे और "थोडा बहुत भी धर्म जरूर ही करना चाहिये" ऐसा उपदेश देते हुये मृगाक की कथा कह सुनाई। सदयवत्स ने उसे सुनकर श्रावक धर्म स्वीकार किया।]

लीलावती को पितृगृह में रखकर सावलिगा के साथ कुमार आगे चला। रास्ते में एक पर्वत पर शिला से ढकी हुई गुफा देखी, दोनों ने कौतूहलवश भीतर प्रवेश किया तो उसमें ५ चोर बैठे देखे। चोरों ने सदयवत्स को अकेला देख उसें मारकर सावलिगा को ग्रहण कर लेनें का विचार किया। उन्होनें द्यूत रमनें के लिये सदयवत्स का आव्हान किया और जो हारे उसे मस्तक देना पडे यह शर्त रखी गई। देवीके वरदानसे सदयवत्स जीता पर सज्जनतासे उसका शिर छेदन नही किया। इससें चोर प्रभावित हुए। और अदृष्टांजन, सजीवनी, रससिद्धि आदि विद्यायें देनें को कहा पर कुमारने उन्हे नही लिया। फिर भी एक चोर ने गुप्तरूप से कुमार के उत्तरीय वस्त्र के छोर से पद्मिनिपत्र वेष्टित लक्ष मूल्य का कंचुक बाध दिया। चोरो ने यह भी कहा कि कभी आप संकट में पड़ जायें तो हमें स्मरण करते ही हम आकर आपकी सहाय करेंगे।

कुमार आगे चलते हुए एक निर्जन नगर मे पहुंचा। राजभवन के समीप आने पर एक स्त्री का रोना सुन कर उसके पास जाके रोने का कारण पूछा। उसने कहा मैं नंद राजा की लक्ष्मी हूं, अनाथ होने से रो रही हूं, तुम मेरे स्वामी बन जाओ।

[नगर का निर्जन होने का कारण पूछने पर लक्ष्मी ने कहा कि इस

वीरपुर नगर में एक तापस आया था। वह ब्रह्मचारी था। लोगों पर प्रभाव जमाने के लिये स्त्री का स्पर्श हो जाने पर बड़ा गुस्सा दिखलाने का ढोंग करता था। एक बार नगरी की वेश्या ने उसका स्पर्श किया, इससे उसने राजा के पास फरियाद की। वेश्या ने उसे ढोंगी बतलाया राजा ने उसकी परीक्षा के लिये उसे महल में लाकर रानी के मर्म में अधिक रूप से आने की व्यवस्था कर दी। रानी को देख कर वह कामातुर हो उठा और भोग के लिये प्रार्थना की। रानी जोर से चिल्लाई तब राजा ने आकर तापस को मारडाला। वह तापस मरकर राक्षस हुआ और पूर्व भव के वैर से नगरी की यह स्थिति कर दी।]

लक्ष्मी ने कुमार को धन का ढेर पड़ा बतलाया। कुमार सार्वलिंगा से कहा कि यह धन अपने फिर कभी विधि विधानपूर्वक ग्रहण करेंगे। अभी तो प्रतिष्ठानपुर चलें। चलते चलते वे प्रतिष्ठान के समीप आ पहुंचे और पास के गाँव मे एक ब्रह्मभट्ट के यहा जा कर ठहरे। ससुराल होने के कारण नगर प्रवेश के लिये योग्य वस्त्राभूषण लाने एवं रचनादि की व्यवस्था करने के लिये कुमार अकेला नगर मे जाने लगा तब सार्वलिंगा ने कहा कि यदि आप ५ दिन मे वापिस नही लौटे तो मैं चिता-प्रवेश कर लूंगी।

कुमार को नगर मे प्रवेश करते हुए एक टूंटक मिला। कुमार उसे अपशकुन समझ कर वापिस जाने लगा। टूंटक को यह बात अखरी और वह पुष्प एवं खाद्यादि मांगलिक वस्तुओं को लेकर पास मे आकर कहने लगा कि मैं सिंहल के राजा का सुरसुंदर नामक पुत्र हूं। कौतुकवश ५०० हाथी एवं करोड़ मोहर लेकर नगर देखने के लिये यहां आया था पर मैं उसको जूए मे हार गया। जुवारियों ने मेरे हाथ कान भी काट डाले। दैव रूठता है वही जूआ खेलता है।

टूंटक के साथ कुमार ने नगर मे प्रवेश किया। रास्ते में सूर्य-प्रासाद मे विवाद हो रहा था। विवाद का विषय यह था कि राज्यमान्य कामसेना वेश्या ने स्वप्न मे देखा कि श्रेष्ठि दत्तक के पुत्र सोमदत्तने उसके

घर आकर उससे भोग किया। अत. सोमदत्त से अपनी द्रव्य मुद्रा रूप मे गर्हित कार्यों की शुल्क लेने के लिये वेश्या ने अक्का भेजी। श्रेष्ठि ने-धन देने से इनकार किया। इसी कारण ३ दिन से विवाद चल रहा था कुमार को देख उसे इसका न्यायाधीश चुना गया। उसने श्रेष्ठि से कहा कि राजमान्य से विरोध करना उचित नही। अतः तुम इसे धन दे दो। कुमार ने श्रेष्ठि से धन मगा कर उसका आधा भाग लेने के लिये अक्का को कहा पर उसने आधा लेने को स्वीकार नही किया। तब कुमार ने एक दर्पण भाग कर उसके सामने धन रख दिया और प्रतिबिम्बित धन लेने के लिये अक्का से कहा। क्योंकि स्वप्न एवं प्रतिबिम्बित अवस्था समान ही होती है। इस न्याय से अक्का लज्जित हो बिलखती हुई लौट गई।

कामसेना यह वृत्तांत जानकर नृत्य करने के बहाने सूर्य प्रासाद मे आई और कुमार को देख कर मोहित हो गई। उसने कुमार को अपने घर चलने को कहा। टूंटक ने जाने का विरोध किया कि वेश्या किसी की नही होती। पर कुमार निर्भीकता से चला गया और ५ दिन उसके यहा रहा। कुमार नगर मे जूआ खेलने गया और बहुत सा धन कमा लाया। उसमे से कुछ धन सार्वलिगा के लिये आभूषणादि खरीद करने के लिये टूटक को दे दिया बाकी वेश्या को दे दिया।

५ वें दिन कुमार ने वेश्या से जाने की आज्ञा मागी। वेश्या ने रहने का बहुत आग्रह किया पर कुमार को सार्वलिगा से वचनबद्ध होने के कारण जाना जरूरी था अतः रवाने हुआ। जाते समय वेश्या-ने कुमार का उत्तरीय वस्त्र खेंचा तो उससे चोर का बाधा हुआ पद्मिनीवेष्टित कंचुक खुल पडा। वेश्या ने वेष्टन खोलने पर रत्नमय कंचुक देख कर कुमार से मागा और उसने वह उदारतापूर्वक दे दिया।

वेश्या उसे पहिन कर राजसभा मे जा रही थी, इसी समय एक सेठ ने कंचुक को देख, वह अपना चोरी गया था वही है यह निश्चय

कर राजा से इसकी फरियाद की। राजा द्वारा वश्या का पूछने पर उसने कहा हमारे यहा अनेक चोरादि आते हैं मैं उनका नाम नही बतला सकती। तब राजा ने वश्या को शूली की सजा का हुक्म दे डाला। कुमार ने जब यह बात सुनी तो वह शूली के स्थान पर पहुचा और कोतवाल को जाकर कहा 'चोर मैं हू, वश्या को छोड दो" पर उसके नही छोडने पर जबरदस्ती उसे छुडा दिया राजाने कुमार को पकडने के लिये अपनी सेना भेजी पर कुमार ने उसे भी हरा दिया।

उधर ५ दिन तक कुमार के न आने के कारण सावलिंगा ने चिता-प्रवेश की तैयारी कर ली। कुमार ने यह सुनते ही अपने बदले सोमदेव को वहा छोड वापिस आने की प्रतिज्ञा कर वहा पहुचा। और सावलिंगा को जलने से बचाया। प्रतिज्ञानुसार कुमार शूलीस्थान पर वापिस आया राजा ने ५२ वीरो को कुमार से युद्ध करने के लिये भेजा। नारद से सूचना पाकर कुमार के पूर्व परिचित ५ चोर वहा सहायतार्थ आ पहुचे अत ५२ वीर भी हार गये।

राजा ने बल से काम निकलता न देख नम्रता से कुमार का नाम पूछा और उसके न बतलाने पर वेश्या से पूछा। तो वेश्या ने उसका नामाङ्कित खड्ग लाकर राजा को दिखलाया। राजा को छलने के लिये कुमार ने कहा इस तलवार को तो मैं सदयवत्स से जूए मे जीता था। राजा ने उसे वश मे करने को गजघटा बुलाई। उसे भी सिंहनाद द्वारा कुमार ने भगा दिया। अत मे राजा के अनुरोध से कुमार ने अपना वास्तविक स्वरूप प्रगट किया। तो राजा को उसे अपना जामाता ही जानकर बडी प्रसन्नता हुई और अपने पुत्र शक्तिसिंह को भेज कर सावलिंगा को भी बुला ली।

अवान्तर कथा। कुछ समय तक दोनो वहा आनदपूर्वक रहे। इसी समय सदयवत्स की मित्रता १ वनिक, १ क्षत्रिय एव ब्राह्मण जाति के तीन व्यक्तियो से हो गई। इतने मे ही एक विदेशी के मिलने पर कुमार ने पूछा कि कही कुछ कौतुक देखा हो तो कहो। उसने कहा तुम्बन नगर मे धनपति सेठ के मृत पिता बहुत

समय हुए जला दिये गये थे, पर वे रात के समय जीवित अवस्था मे घर पर आ जाते हैं। यह बडा आश्चर्य है। कुमार कौतूहलवश तीनो मित्रो के साथ वहा गया। तुम्बन मे प्रवेश करते हुए एक ब्राह्मणकन्या को सीकोतरी पीडा दे रही थी,उसे छुडाकर उसका विवाह ब्राह्मण मित्र के साथ कर दिया।

आगे चल कर मित्रो सहित कुमार सेठ के घर पहुचा। और अमुक धन लेने का तय कर वे उसके पिता का शव जलादेने के लिये स्मशान ले गये। उसे प्रात काल जलाने का निश्चय कर रात को १-१ प्रहर बारी बारी पहरा देने की कर ली गई।

पहली बारी वणिक की थी। पहरा देते हुए उसे एक स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी। वणिक शव को अपनी पीठ पर बाँध स्त्री के पास गया। और रोने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा मेरा पति शूली पर लटका हुआ है मैं उसके लिये थाली मे भोजन लाई हू पर शूली के ऊची होने के कारण उस तक पहुच नही सकती। इसी दुखसे रो रही हू। वणिक ने करुणावश उसे पीठ पर चडा कर ऊची कर दी। स्त्री ने ऊची चढ कर शूली पर लटके हुए पुरुष का मांस खाना शुरू कर दिया। जब एक मासखड वणिकके ऊपर पडा तब उसने उसको नीचे डाल दिया। पडते ही वह स्त्री भागने लगी पर वणिक ने उसका पीछा कर एक हाथ काट डाला और उस हाथ को वालुका मे डाल दिया।

दूसरे पहर मे एक ब्राह्मण ने एक राक्षस द्वारा एक राजकुमारी को ले जाते हुए देखा। राक्षस को राजकुमारी से भोग की प्रार्थना करते देख पीछे से ब्राह्मण ने उसे मार डाला।

तीसरे पहर क्षत्रियकी बारी थी। शव को जलाने के लिये वह अग्नि लेने की खोज मे निकला तो उसने भूतो को खीर पकाते देखा। उनके पास ७ पुरुष खिचडी के साथ साग की जगह खाने के लिये बधे हुए थे।

क्षत्रिय पुत्र ने भूतों को डरा कर भगा दिया। और पत्थर मारकर खिचडी की हाडी को फोड डाला। बधे ७ पुरुष राजकुमार थे।

चौथे प्रहर सदयवत्स उठा तो शव ने उसे जूआ खेलने को आह्वान किया। शव में रहे हुए वैतालने अपने बाहु प्रसारित कर एक राजमहल में से जूआ खेलने की सामग्री उठाकर ले ली। जो हारे उसका मस्तक छेदन कर दिया जाय। इस प्रतिज्ञा पूर्वक माय वैतालको जीनकर कुमार ने शव को जला दिया।

प्रभात में श्रेष्ठि के पास जाकर पूर्व निश्चित धन मांगा। श्रेष्ठि ने कहा कल रातरी करके दूंगा। कुमार ने राजा के पास फरियाद की और रात का सारा वृतान्त कह सुनाया। राजा के प्रमाण मागने पर बालू में गढा हुआ हाथ उपस्थित किया और वह हाथ रानी का होने से रानी सीकोतरी साबित हुई। राजकुमारी राजकुमारी को भी उपस्थित किया गया। श्रेष्ठि ने कुमार को अपनी कन्या व्याह दी।

सदयवत्स वहा से वापिस लौटते हुए निर्जन नगर को जिसे देख आया था वहाँ गया। वहाँ राक्षस की आराधना कर वीर कोट नामक नगर बसाया। सदयवत्स के लीलावती रानी से वनवीर और सावलिगा से वीरभानु नामक पुत्र हुए।

[सदयवत्स ने चतुर्थी को संवत्सरी करने वाले जैनाचार्य कालकसूरि के हाथ से अपने बसाये नगर के जैनमंदिर की प्रतिष्ठा करवाई।]

इसी समय उज्जयिनी, जो कि अपनी मूल राजधानी थी, पर शत्रुओं के ६ महीने से घेरा डालने की बात सुन कर कुमार ने ससैन्य वहाँ जाकर शत्रुओं को परास्त किया। प्रभुवत्स राजा ने सदयवत्स को उज्जयिनी का राज्य दिया। वीरकोट का नवीन स्थापित राज्य राजकुमार को सौंप दिया गया।

[अन्यदा कालकाचार्य उज्जयिनीमे पधारे और पूछने पर सदयवत्स का पूर्वभव कह सुनाया कि तू विध्याचल की पल्ली के गोव्रक नगर मे व्याघ्र राजा की धारलदेवी रानी के गुण सुंदर नामक सरलस्वभावी

एवं दयावान पुत्र था। श्यामाचार्य के पास जीवदया व अभयदान का उपदेश श्रवण करके उसने सम्यक्त्व सहित श्रावकोचित १२ व्रत ग्रहण किये। गुणसुन्दर मुनियो को अन्नादि का दान और प्राणियोको अभयदान देने मे सदा तत्पर रहता था। एक बार उद्यान मे क्रीडा करते हुए उसे ४ पुरुष मिले। उन्होने कहा कि वैताल नगर मे देवी के बलिदान के लिये हमे पकड़ा गया था पर हम वहा से भाग कर यहां आ गये हैं। वहां के लोग बड़े निर्दयी हैं और मनौती मानकर थोड़े से स्वार्थके लिये भैंसे और विशेष कार्य से मनुष्य तक की बलि दे देते हैं। गुण-सुन्दर का हृदय करुणार्द्र हो गया। अत वहां जाकर वलि देनेवाले लोगो को भगाकर मनुष्यो को बचाया। और अपनी बलि देने के लिए कंठ पर तलवार का प्रहार करने लगा। देवी ने उसके धैर्य एव साहस से प्रसन्न हो उसका हाथ पकड़ा। तब उसने देवी को प्रतिबोध देकर सदा के लिये बलिप्रथा बंद करवा दी। मृत्यु समय मे आराधन करते से तुम इस जन्म मे सदयवत्स हुए। जीव दया व अभयदान के पुण्यसे प्रबल पराक्रम और मुनि दान के फल से सब प्रकार के भोग प्राप्त किये। अपना पूर्व वृतान्त सुन सदयवत्स को पूर्व-भव स्मरण हो आया।

राजस्थानी रूपांतर-राजस्थान मे प्रचलित सदयवत्स कथा मे नेदाव की प्रति सबसे प्राचीन है। अत. तुलनात्मक विचार करने के लिये यहाँ उसका सार दे दिया जाता है।

पूर्व दिशा के कोकण देशस्थ विजयपुर में महाराजा महीपाल राज्य करते थे। उनका पुत्र सदयवच्छ था। राजा के मत्री सोम के सावलिगा नामक पुत्री थी। योग्य वय होने पर महाराजा ने पंडित को बुला विद्याध्ययनार्थ कुमार को उसके सुपुर्द कर दिया। इसी प्रकार मन्त्री सोम ने सावलिगा को भी पढाने के लिए उन्ही की पाठशाला मे भेज दिया। और उसे पाठशाला के छात्रो से अलग रखकर पढाने का निर्देश कर दिया।

सावलिगा की पढाई परदे मे होने लगी। राजकुमार के पूछने पर

पण्डितजीने उसके परदे मे पढनेका कारण उसका अन्धी होना बतलाया। और कुमारी को कुमार का कोढी होना कह दिया जिससे परस्पर कोई सम्बन्ध न हो सके। एक दिन किसी कारण से पण्डितजी नगरमे गये थे और सबको पढ़ाने का काम कुमार को सौंप गये। पढते हुए परदे मे स्थित कुमारी ने कोई पाठ अशुद्ध बोला। तब कुमार ने कहा 'अन्धी! अशुद्ध क्यो बोल रही हो?' प्रत्युत्तरमे कुमारीने कहा--कोढी! जैसा पाटी में लिखा है वैसा ही पढ़ रही हू।' कुमार का भ्रम इस उत्तर से दूर हो गया। उसने सोचा गुरुजी के कथनानुसार कुमारी यदि अन्धी है तो पाटी पर लिखा वह पढने की बात कह नही सकती, और मुझे कोढी कहने का कारण भी क्या? अत हम दोनो एक दूसरे को देख न सकें इसीलिये गुरुजी ने भ्रम फैला रखा है। भ्रम दूर होते ही कुमार को कुमारी के देखने की उत्कठा बढी। और एक दूसरे को देख करके प्रेमसूत्र में बध गये। फिर परस्पर दूहा-गूढादि लिखते व कहते रहने के द्वारा प्रीति दृढ होती गई।

गुरुजी के बाग में खेत थे। उसकी रखवाली के लिये बारी २ से शिष्य वहा जाते थे। नियमानुसार सदयवच्छ अपनी बारी पर खेत पहुंचा और सावलिंगा उसे भाता (भोजन) देने खेत गई। वहाँ एकान्त होने से प्रीति विशेष रूप से दृढ हो गई। सावलिंगा ने किसीके भी साथ विवाह होने पर पहली रात उसके साथ रमण का वादा किया।

शिक्षा समाप्त होने पर यौवनावस्था देख, राजा ने सदयवच्छ का विवाह किसी राजकन्या से कर दिया। और सावलिंगा के पिता ने भी कुमारी की अवस्था विवाहयोग्य जानकर, ब्राह्मण को भेजकर पुष्पावती के सेठ धनदत्त से उसका सम्बन्ध निश्चत कर दिया। सदयवच्छ यह जानकर वेश्या के कथनानुसार स्त्रीवेष मे कुमारी से उसके घर जाकर मिला। तब उसे देवी मन्दिर मे मिलने का कुमारी ने सकेत किया।

निश्चित समय पर पुष्पावती से धनदत्त आया और उसके साथ सावलिंगा का विवाह हो गया। सदयवच्छ के साथ अपनी पुरानी प्रीति

एवं वचन निवाहने के लिये देवी मन्दिर मे अपनी पूर्व मनौती पूर्ण करने को पति से आज्ञा लेकर वहा पहुंची।

सदयवच्छ ने उस दिन दूना नशा कर लिया और देवी के मन्दिरमें जाके सो गया। नशे की अधिकता से उसको इतनी प्रगाढ निद्रा आगई कि सावलिंगा ने उसे जगाने के लाख प्रयत्न किये पर सब निष्फल गये। तब निराश होकर वह अपने घर लौटते समय अपने आने के सूचक चिन्ह एवं फिर मिलने का सकेत-सूचक दूहा कुमार के हाथ पर लिख दिया।

निद्राभग होने पर कुमार नें सावलिंगा के न आने का बडा अफसोस किया। दतौन के समय हाथ की ओर देखने पर कुमार ने हाथ पर उसका लिखा हुआ दूहा पढा। और अपनी गलती महसूस कर,योगी होकर दोहे की सूचनानुसार पोहपावती नगर पहुचा। रास्ते मे हाथ का लेख नष्ट न हो जाय अतः बावडी मे पशु की भाति मुंह से पानी पिया। इस प्रसंग मे पनिहारियों से वातचीत करते हुए कुंभारिन से पता लगा कर वह धनदत्त सेठ के घर पहुंचा और सावलिंगा से चार आंख होने पर दोनों अधीर हो उठे।

उस समय सावलिंगा ने अपने पति को कहकर नया महल या मदिर बनानेका काम शुरू कर रखा था। सदयवच्छ उसीके निर्माण-कार्यमे मजदूरी करने लगा। एक बार जोगीका वेष धारण कर भिक्षा लेने सावलिंगा के घर गया, जब उसने अन्य किसीके हाथ से भिक्षा न ली, तब सावलिंगा देने आई और पुनः चार आँखें होने पर स्तम्भित मे हो गये।

राजगवाक्षमें बैठी हुई राजकन्या ने यह स्वरूप देख उपालभ सूचक दोहे कहे। इन दोहों को सुनकर कुमार नाराज होकर चला गया। राजकन्या ने सावलिंगा से मिलकर दोनों का प्रेम-सम्बन्ध ज्ञात किया।

इधर सदयवच्छ ने सैन्य सग्रह कर पुहुपावती के राजा भोज को राजकन्या देनेका कहलाया। और उसके न मानने पर युद्ध कर,उसे हरा दिया। तब भोज ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया। कर-

मोचन के समय कुमार ने अन्य वस्तुयें न लेकर धनदत्त सेठ को बांधकर मगवाया और उससे सार्वलिगा देने का स्वीकार कराके छोड दिया।

सार्वलिगा और सदयवच्छका युगल जोडा मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ। कुछ दिन वहा रहने के पश्चात् सपरिवार अपनी नगरी लौट राज्यपालन करता हुआ विलास करता रहा। सार्वलिगा आदि रानियोंके साथ विषय-सुख भोगते हुए उसके ४ पुत्र हुए। यही कथा की समाप्ति होती है।

कथा के विविध रूपान्तर-उपर्युक्त कथा मे प्रेम और विरह प्रधानतः है, अर्थात शृंगाररस प्रधान है। सार्वलिगा ने भी अपनी प्रीति व वचन निभाया। इसके परवर्ती रूपातरो मे सदयवच्छ की नगरी का नाम किसी मे मुंगीपुर किसी मे आनन्दपुर और किसी मे पुहुपावती मिलता है। उसके पिता का नाम सालिवाहन व महीपाल, माता का नाम कही चपकमाला कही सौभाग्यसुन्दरी, एव गुरु का नाम सगुण महात्मा लिखा है। सार्वलिगा के पिता का नाम पदमसन, कही पदमसेठ, और माता का नाम लीलावती लिखा है विद्याध्ययन के लिये गुरु के पास कहीं सार्वलिगा पहले गई और कही पीछे, ससुराल का स्थान धारानगर ससुर का नाम हीरा, पति का नाम रतनपाल एव वहा राजा का नाम विजयपाल लिखा है। पुहुपावती मे सदयवच्छ के पहुचने पर कई कथा-नको मे घर में आग लगा कर सार्वलिगा का बगीचे में उससे जाके मिलना, कही वहाँ भी सदयवत्स का नही पहुच सकना लिखा है। वहाँ के राजा का नाम कही भिन्न ही लिखा है और उसकी कन्या के विवाह का कारण कन्या का सार्वलिगा से अनुराग हो जाना बतलाया है। कही स्वयर विधि से उसके साथ विवाह होने का उल्लेख है। कई रूपांतरो में सदवच्छका अपने नगर लौटने का कारण पिता अन्वेषण कर बुलवा भेजना लिखा है। और भी कई घटनाओ में अंतर व कमीवेशी पाई जाती है। अर्थात अनेक व्यक्तियो की सूझबूझ से इस कथा में बहुत कुछ समय समय पर जोडा एवं रूपांतरित किया गया है।

कई कथानको के प्रारंभिक भाग में उसके पूर्वभव का प्रसंग देकर

प्रीति का प्राचीन सम्बन्ध होना व्यक्त किया है। एक रूपातर मे अन्य अनेक कथानको की भांति शिव पार्वती का प्रसग भी जोड दिया गया है।

कथारूपो मे भिन्नता-अब गुजरात और राजस्थानी सस्करण मे मुख्य रूप से जो अन्तर है उस पर प्रकाश डालता हू।

(१) गुजराती सस्करण वीर एव अद्भुतरस प्रधान है राजस्थानी शृगार प्रधान है।

(२) गुजराती सस्करण मे कई घटनायें हैं। तब राजस्थानी कथा मे घटनाओ का प्राधान्य व अधिकता नही है, पर प्रेम सम्बन्धी कथन ज्यादा हैं।

(३) गुजराती सस्करणानुसार सार्वलिगा सदयवत्स की विवाहिता पत्नी है, तब राजस्थानी सस्करणानुसार वह रत्नपालकी विवाहिता पत्नी और सदयवत्स की प्रेमिका है।

(४) गुजराती सस्करणानुसार सदयवत्स उज्जैनी के राजा प्रभुवत्स का पुत्र है तब राजस्थानीके अनुसार विजयपुर, आणन्दपुर, मु गीपुर, या पुहपावती के राजा महिपाल या सालिवाहन का पुत्र है।

(५) गुजरात एव राजस्थान मे प्रचलित आधुनिक कथानक मिलता जुलता है अर्थात्-गुजरात मे भी प्राचीन कथानक को अब भुला दिया गया प्रतीत होता है। इनमे पूर्वभवो के प्रेम सम्बन्धो की कथा ७।८ भवो तक बढ चुकी है।

शृंगारप्रधान कथानक-कीर्तिवर्धन की 'सदयवत्स चउपई' और मारवाड राजस्थान के अन्यान्य गद्य पद्यात्मक 'सदेवत सार्वलिगा' नाम के कथानको मे प्रधान रूप में शृगार रस पाया जाता है।

सदयवत्स कथा एवं दो परिपाटी-राजस्थान की अनेक प्रसिद्ध लोककथाओ में "सदयवत्स सार्वलिगा" की प्रेमकथा का कई शताब्दियों तक राजस्थान में सर्वाधिक प्रचार अधिक लम्बे समय तक

पड़ती हैं। उपलब्धि प्राचीन राजस्थानी काव्य ग्रंथों मे पूर्ववर्ती केवल १-२ एक या दो भव की कथा का वर्णन पाया जाता है। आठ भव की कथा का सम्बन्ध पीछे से जोड़ा जुटाया गया प्रतीत होता है।

कथा द्वारा जैन मनका प्रचार एवं प्रसार सदयवत्स कथा का सस्कृत गद्य रूप कि जो गुजराती कथानक से प्रेरित होना प्रतीत होता है, उसके रचयिता हर्षवर्धन ने इस लोक कथा को अन्य जैन विद्वानो की भांति ही जैन स्वाग या चोला पहना दिया जान पड़ता है। जैसे कि सदयवत्स ने अपने बसाये हुए नगर में वीर जिनेश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा चतुर्थी की सवत्सरी मनाने वाले कालकाचार्य के हाथो से करवाई है। जैन कवि ने जैनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ा जुटाया है। जिसने सदयवत्स को इसके पूर्वभव की कथा सुनाई उससे सदयवत्स को जाति-स्मरण तब हुआ। हर्षवर्धन के उल्लेख के अनुसार सदयवत्स ने श्रावक धर्म स्वीकार किया था। किन्तु केशव (कीर्तिवर्धन) ने उसे राजस्थान मे प्रचलित लोककथा के रूप में ही रहने दिया है।

परिशिष्ट १-में-प्रकाशित 'सदयवत्स सावलिगा पाणिग्रहण चउपई की रचना किस कवि ने की है उसका उल्लेख अप्राप्य है। प्राय उसका रचयिता जैन होना सम्भव है। कवि ने किसी प्राचीन चरित्र के आधार पर यह रचना की है। पाणिग्रहण अधिकार के प्रथम अधिकार होने का उस चउपई में उल्लेख है। जैसे कि 'ए पहिलु हुव अधिकार, कवि जोई चरित्र आधार। इसकी भाषा १६ वी शती के अत भाग की अथवा १७ वी के प्रारम्भ के होना सम्भव है।

कवि केशव की रचना-केशव कवि की 'सदयवत्स सावलिगा चउपई' की रचना (परिशिष्ट २) विप्रलभ शृगार रस में ही भरपूर है। इसमे जो छद हैं दूहा (दोहे), चद्रायणा एव कवित्त, मनोवेधक है। एव सुभाषित, अन्योक्ति, अर्थान्तरन्यास कहावतें, और मुहावरो के द्वारा काव्य रसपूर्ण बनाया है। कवि ने कडी ४५४, ४५५, ४५८, मे वस्तु निर्देशात्मक मगलाचरण किया है। (पृ० १३५) और अत में फल

श्रुति दी है।

पूर्वभव का कथानक-संस्कृत कथानक मे पूर्वभव की कहानी दी गई है। वह कीर्तिवर्धन की चउपई मे नही है। सदयवत्स एवं सावलिंगा के प्रेमी युगल का सम्बन्ध नायक एव नायिका के रूप मे है। इसमें पराक्रम की कोई भी बात नही है। केवल पुष्पावती के राजा को पद-दलित करके, सावलिंगा को सदयवत्स प्राप्त करता है इतने पराक्रम का ही उल्लेख है। परन्तु इसमे कुछ अद्‌भुतता नही दिखाई देती। सदयवत्स शौर्यवीर के रूप नही दिखाई देता, किंतु प्रेमवीर के रूप मे दृश्यमान होता है।

सदेवन्त सावलिगा के आठ भव की कहानी कवि या लेखक इस कहानी के रचयिता का पता नही चलता।

कथानक का प्रारम्भ जगन्माता पारवती जी ने वनलीला देखने का हठाग्रह किया। इसलिए भगवान शकर उनको साथ मे लेकर वनमें चल आये। रास्तेमे एक नारियल नामक प्राचीन वाव देखने मे आयी। तृषा लगी हुई थी जिससे पार्वती जी ने भगवान शकर से पानी लाने के लिये प्रार्थना की। शिवजी ने प्रार्थना सुनकर पानी लाकर दिया। सती उमा पानी पीने की तैयारी करती है कि वहा शिर उठाने पर एक नर एव मादा बदर की जोडी देखी। पार्वती ने भगवान शकरसे पूछा कि ये वन्दर कौन से विचार मे इतने मग्न हो गये हैं। शिवजी ने उत्तर दिया कि यह बात बहुत लम्बी चौडी है, छोड दो इसे। उत्तर सुनकर यह रूठ गयी, और मारे क्रोध के जब भगवान शकर के शिर के बालो मे छुप गई। तब आखिर मे शिवजी वह बात सुनाने के लिये तैयार हो गये।

अष्ट भव के नाम-(१) ब्राह्मण-ब्राह्मणी (२) चकवा-चकवी (३) हिरन हिरनी (४) मयूर-ढेलणी (५) हस हसी (६) राजा-रानी (७) बदर बदरी, और बाद मे (८) नर-नारी

पहले भव को कहानी ब्राह्मण बाह्मणी-धारापुर नामका एक देहात था। उस गाँव मे दो ब्राह्मण रहते थे। दोनो नि.सन्तान थे। जिससे उन्होंने वनमें जाकर तपश्चर्या की। ब्रह्माजी प्रसन्न हुए दोनों को वर दिये। एक को पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ दूसरे को पुत्री-रत्न की प्राप्ति हुई। योग्य उम्र होते ही इन दोनो की शादी हो गई। युवक शादी के बाद विध्याध्ययन करके घर वापस आ रहा था। रस्ते के बीच मे ससुरसे भेंट हुई वह जामाता को अपने घर ले आया। कुछ दिनो तक वह ससुराल मे रहा। और बाद में ये दोनो पति पत्नी (युवक-युवती) अपने घर जाने के लिये निकल पडे।

किंतु रास्ते में ऐसी घटना घटी कि इन दोनो की तृषातुर अवस्थामें मृत्यु हुई। पार्वतीजी ने भगवान शकर से प्रार्थना की कि प्रभु इस जोडी को जिन्दा कीजिये। तो शकर भगवान ने कहा कि अब ये लोग कृपा करने के योग्य नही हैं। फिर भी पार्वतीजी ने हठाग्रह धारण किया और उन्हें जिन्दा करवाया।

यौवन के मद में मस्त बने हुए ये भट-भटाणी एक शिवालय में आये। विषयवासना बढ गई, इसकी तृप्ति करने के लिये देवल में जो शिवजी का लिंग (मूर्ति) था उसको उखाडकर कही बाहर फेंक दिया और अपनी मनोवाञ्छा पूर्ण की। इस अयोग्य और नराधम कृत्यसे भगवान शंकर क्रोधित हो गये और श्राप दिया कि तुम्हे सात भव (अवतार) तक वियोग सहना पडेगा।

शकर भगवान का श्राप सुनकर ये दोनो काशी में करवट लेने के लिये निकल पडे। रास्ते में एक गाव आया भट। (युवक) खुराक की तलाश में गया। जब वापस आया तब देखा तो पत्नी का पता नही था। अब क्या करें। इसलिये उसने काशी (वाराणसी) जाकर गले पर करवट लगवा दिया और मौत के शरण हो गया।

जब भट्ट खुराक की तलाश में गया था, उस समय वहा एक राजा आया और भट्टाणी का अपहरण कर गया। वह स्त्री रात्रि के समय

चुपचाप राजा के प जे में से छुटकर निकल पडी। और उसने भी काशी (बनारस) की राह पकडी। और गले पर करवट लगवा दिया। इस लोक को छोडकर चली गई।

कहानी दूसरी, चकवा चकवी-किसी एक जगल मे एक पेड पर एक चकवा और चकवी रहते थे। उसी जगल में एक बार अचानक अग्नि सचार हो गया। दावाग्नि का भीषण काड शुरू हो गया। और जिस वृक्ष पर ये दोना पछी रहते थे यह वृक्ष भी जलने लगा। किंतु दोनो को ऐसा लगा कि हमें आश्रय देने वाला वृक्ष जल जाय और हम यहासे भाग छूटें। यह बात ठीक नही है। ऐसा विचार करके ये दोनो पछी भी दावाग्नि मे आग के शोलो से जलकर भस्म हो गये-मर गये।

कहानी तीसरी, हिरन और हिरनी की-एक जगल था। वहा एक हिरन एव हिरनी रहते थे। ये वन में घूमते थे और अपना गुजर-बसर करते हुये आनन्द से जीवन व्यतीत करते थे। उस जगल में एक बार एक पारोधी आया उसने हिरनी को फँसा दिया, हिरनी ने बहुत आक्रदन किया। हिरनीका आक्रदन सुनकर उस शिकारीके मन मे दया उमड पडी। उसने हिरनी को मुक्त कर दी। अब तो हिरनी अपने पति हिरण की खोज मे निकल पडी। किंतु रास्ते मे एक पहाड के पास हिरन को मृत अवस्थामें पाया। हिरनकी मृत्यु देखकर उसने भी अपना शिर पटककर मृत्यु से भेंट की। वह भी चल बसी।

कहानी चौथी, मयूर ढेलणी-इस कहानी के बारे मे कुछ लिखा गया प्राप्त नही होता।

कहानी पाँचवी, हंस और हंसी की-हंस एव हंसी की एक जोडी जगल में रहती थी। उसकी रहने की जगह पर एक बार एक साँप आया। और उनको निगल जाने लगा। किंतु दैवसजोग से उनके कर्णपट पर भगवान का नाम सुनाई पडा। दोनों की मृत्यु हुई। किंतु इस पुण्य के प्रभाव से अगले जन्म मे (भव में) ये दोनो राजा एव रानी के रूप मे अवतरित हुये।

कहानी छटवीं राजा और रानी-एक नगर था उसका नाम देयपुर। वहाँ के राजा का नाम था सालवाहन और रानी का था दुर्मति उनके पुत्र का नाम था वल्लभ।

एक दूसरा रायपुर नाम का नगर था। वहा सुव्रत नाम का राजा था। उसकी गुणवन्ती नाम की एक कन्या थी। उसके पिताने उसका विवाह सबंध किया था वल्लभ के साथ। किंतु उसकी मा भाई और चाचाजी ने अलग २ स्थान एव अलग २ व्यक्तियो के साथ सगाई कर दी थी। खूबी यह थी कि इन सब रिश्तेदारो ने शादी की तिथि जो निश्चित की थी वह एक ही थी।

शादी के दिन चारो वर बरात लेकर सजधज के साथ आ गये। राजकुमारी आश्चर्य में पड गई। शादी किसके साथ की जाय। क्योकि यहा तो एक के स्थान पर चार चार वर आये हैं। इससे उसके मनमें बहुत दु ख हुआ। अपनी जिंदगी पर नफरत आयी और वह अग्नि में जल गई। दुनियाँ से विदा ली।

शादी करने के लिये जो यहा चार वर आये थे। उनमें से एक वर ने कुंवरी की मृत्यु से अपनी बलि देदी। दूसरा कही भाग गया। तीसरे ने उसकी हड्डियो की राख गगाजी में बहा दी। चौथा वल्लभ था उसने उसका पिंडदान दिया और पिंड भक्ष्य करने लगा।

जो व्यक्ति भागकर दूर देश चला गया था। उसके हाथमें अकस्मात एक अमृत का घट आ गया। उसको लेकर वह जिस जगह पर राजकुमारी जल गई थी, वहा आया। और राख के ढेर पर अमृत का सींचन किया। फलस्वरूप वह राजकुमारी एव उसके साथ जलजानेवाला राजकुमार दोनो जीवित हो गये। बाद मे चारो के बीच मे लडाई शुरू हो गई।

इन लोगो ने इस लड़ाई का फैसला करने के लिये एक पच चुना। और पच से न्यांय करने की प्रार्थना की। क्योकि पच में परमेश्वर का निवास है। पच ने सारा हाल सुन लिया। बाद में फैसला दिया कि

राख बहानेवाला पुत्र हुआ। कुंवरीके साथ जलजानेवाला तथा उसके साथ फिर जन्म लेनेवाला उसका भ्राता होगा। और वल्लभ को उसका हकदार पति ठहराया गया। यो आखिर में राजकुमारी की शादी वल्लभ के साथ हुई।

विवाह के बाद कुछ समय पश्चात् ये दोनो एक बार एक जगल में सैर करने निकले। वहाँ एक बाघ (शेर) आया। वह राजकुमार का भक्षण कर गया। राजकुमारी उसकी खोज में घूमती थी। इतने में वहाँ एक चोर आया उसने इस कुमारी को लूट लिया। उससे सब कुछ ले लिया। इससे दुखित होकर इस स्त्री ने एक कुए में गिरकर आत्म-हत्या कर ली। दूसरे भव मे ये दोनो बदर एव बदरी के रूप में अवतरित हुये।

कहानी सातवी बंदर और बंदरी- एक जगल में बदर और बदरी रहते थे। वहाँ से एक दिन शिव जी और पार्वती जी गुजरे। उस समय पार्वती ने बदर-बदरी की जोडी देखकर भगवान शकर से पूछा कि उनके सम्बन्ध मे क्या बात है। तो शिवजी ने उनके गत जन्मो की (भवो की) बातें कह सुनाई। बात सुनकर सती पार्वती जी ने उनको फिरसे मनुष्यावतार देने के लिये अनुरोध किया। प्रार्थना की। तो भगवान शकर ने कहा कि "इस मुहर्त मे यदि यह बदर एव बदरी इस वाव मे गिर जाय तो मनुष्य रूप प्राप्त होगा।"

बदरी ने यह बात सुन ली। और पतिदेव बदर को भी अपने साथ इस वाव में गिर जाने को कहा। किंतु बंदर ने न माना, बंदरी की बात को स्वीकार न किया। बंदरी अकेली वाव में गिर पडी। तो शिवजी के वरसे (कथनानुसार) यह बंदरी एक सुंदर स्त्रीके रूप में पलट गई। बंदर अब पछताने लगा किंतु अब पछताने से क्या होवे, "जब चिड़िया चुग गई खेत।" यह पुण्य क्षण तो अब व्यतीत हो चुकी थी।

इसी समय हीरासेन नाम का एक राजा अपने प्रधान के साथ वहा

आ पहुंचा वहाँ उसने इस रूपसुंदरी को देखा। वह प्रसन्न हुआ। और उस सुंदरी को रथ में बैठाकर अपने साथ ले चला। बंदर वन में फल लेने गया था। वह वापस आ गया। स्त्री को न देखकर वह रथ के पीछे हो गया। रानी राजा से प्रार्थना की कि इस बंदर को भी साथ मे ले चलिये। राजा ने स्वीकार किया। बंदर को भी साथ में ले लिया गया। स्त्री ने छः महीने के बाद राजा के साथ शादी करने का वादा किया।

राजा नगर मे आ गया। राजा ने इस बंदर को सुवर्ण की शृंखला से बाँध रखने की व्यवस्था की। राजा की जो एक सम्मानित रानी थी। उससे मिलने के लिये राजा जाता था। किंतु उस रानी से मिलने में बंदर रुकावट डालता था, रानी से नही मिलने देता था। इसलिये उसने रानी के बंदर का घाट घडने को युक्ति सोच ली। किसी भी तरह से उसका इलाज खोलना चाहिये। तरकीब की गई।

उस रानी ने इस बंदर को एक मदारी के हवाले किया। इस कृत्य से रूपसुंदरी एवं बंदर दोनों अप्रसन्न हुए, आखिर में रूपसुंदरी ने इस मदारी को फिर एक बार आकर अपना तमाशा दिखा जाने के लिये कहा।

छः महा की अवधि बीतने के पहले मदारी वहाँ फिर से आया उसने अपना खेल शुरू कर दिया। इसी बीच में रूपसुंदरी ने अपना अमूल्य हार तोड़ दिया। मदारी ने उस हार के मोती (मोक्तिक) बीनकर इकट्ठे कर देने के लिये बंदर को मुक्त कर दिया। उस बंदर ने राजा की माननीया रानी से वैर लेने के लिये फलाग लगाई, किंतु वह निशाना चूक गया और मृत्यु के शरण हो गया। बंदर की मृत्यु होते ही रूप-सुंदरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये और मर गई।

बंदर दूसरे भव में सदेवंत हुआ। सुंदरी सार्वलिगा हुई। शादी की अभिलाषा रखनेवाला राजा हीरासेन धारानगरी के पदमशा सेठ के पुत्र रुपाशा के रूप में अवतरित हुआ। और प्रधान, लाल ब्रह्मभट हुआ मदारी गोरख साधु हो गया।

कहानी ८ वीं सदयवत्स और सावलिगा- शालिवाहन नामक एक राजा था उसके पुत्र का नाम सदयवत्स था। उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के सावलिगा नाम की लडकी थी। वह रुप का भंडार थी। मानो रूपराशि यहाँ खडी हुई हो। उसके रुप लावण्य या सौंदर्य को देखनेवाले मोहित हो जाते, फीके भी पड जाते। अधिक सुंदरता के कारण उसका नाम रोशन हुआ। उसके अनुपम सौंदर्य की बातें सदयवत्स ने भी सुनी, इससे वह उसको देखने के लिये आकुल-व्याकुल हो गया था। मन भी अधीर हो गया था।

एक बार एक गोरख नाम का साधु भिक्षा के लिये उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के घर पर आया। उसने लडकी सावलिगा को देखा, और देखकर वह मोह के कारण मूर्छित हो गया। इतने में उसका गुरु भी वहां आ पहुचा। और उसको वहा से ले गया, इस गडबडी मे सदयवत्स भी वहाँ आ गया। और उसने अपने मित्र लाल बारोट (ब्रह्मभट) से पूछा कि यहा सावलिगा कौन है और कहां है ?

ब्रह्मभट लाल ने उत्तर दिया कि अगर सावलिगा के दर्शन करने हैं तो यह कार्य यहाँ नही बनेगा। किंतु एक रास्ता है कि आप उस स्थान पर चले जाइये कि इस नव डेरी पर सावलिगा गीत गरबी गाने के लिये जाती है, वहां आप जावेंगे तो दर्शन होंगे। सदयवत्स वहां पहुंच गया। वह स्त्रीमंडल के बीचमे जाकर खडा हो गया। और सावलिगा से कहा कि "अरी तूं तेरे घूंघटका ओजल दूर कर दें और तेरा मुखचंद्र दिखा दें।" तब सावलिगा ने उत्तर दिया "कि मैं जिस शालामें पढती हूं उस शाला मे आना।"

यद्यपि सदयवत्स सदेवंतकी पढ़ाई खतम हो गई थी। फिर भी पिताजी से आज्ञा पाकर वह शाला मे गया। किंतु वहाँ मेहताजी के भय से सावलिगा ने उसको समझाया कि अगले दिन चंपाबाग मे प्रीतिभोज का प्रबन्ध करो। उसमे मेहताजी को भी आमंत्रण भेज दो

इससे हम मिलें और शांति से बातें करनें का मौका भी मिल जायगा।

दूसरे दिन गुरुजी को आमंत्रण भेजा गया। इससे वह चपाबाग मे भोजन करने गये और सभी बच्चो को निकाल दिया और बाद मे इन दोनो ने एकान्त पाकर प्रेम से अनेक बातें की। दृष्टि से दृष्टि मिली और बातें करके तृप्त हुए।

किंतु यह सब प्रेम-विषयक बातें गुप्त न रह सकी, प्रकट हो गई। गुरुजी को भी जानकारी प्राप्त हुई तो वे दौडते वहा आ गये। तब दोनो शरमिंदे होकर वहा से चल दिये और जाते समय निश्चय किया कि दूसरे दिन सदयवत्स गुरुजी के बगीचे की रखवाली करने को जाय, और सावलिगा गुरुजी की आज्ञा से उसको भोजन देने जाय। निर्णय के अनुसार सदेवत ने गुरू जी से कहा कि आप सावलिगा को भोजन देने के लिये आज्ञा देने की कृपा कीजिए ताकि आपके बगीचे की रखवाली करनेवाला भूखो न मरे। गुरुजी ने स्वीकृति देदी। और सावलिगा को आज्ञा दी गयी। तो सावलिगा भोजन मे बत्तीस प्रकार की सामग्री लेकर वहा गयी बात कही गयी थी भात चावल देने की किंतु वह तो भांति भातिके उत्तम खाद्य पदार्थों की सामग्रिया लेकर गयी। अधिक प्रणयकलह के बाद सदेवत एव सावलिगा ने भोजन किया। दोनो ने आपस में या परस्पर प्रेम टिकाने का निभाने का वादा किया।

प्रतिदिन दोनो एक तोते के द्वारा प्रेमपत्र लिखकर परस्पर भेजते हैं। सावलिगा के पिता पदमशाह सेठ ने लडकी की शादी फौरन करनें के लिए निश्चय कर दिया। और रूपशाह एक बडी बरात लेकर बडे सजधजके साथ शादी करनेके लिये यहा आ भी गया।

सावलिगा ने सदेवत से सदेश भेजा कि आप स्त्री का भेष लेकर मेरे महल मे आ जाना। सदेवत भेष बदल कर वहा महलमे आया किंतु वहाँ उसकी लीलावती नाम की ननद आ धमकी। जिससे इन दोनो में बातें न हुईं। इससे सावलिगा ने सदेवत से कहा कि रात को भगवान शिवजी के मंदिर मे आ जाना। भला यह बात याद रखना। भूल

मत जाना।

सदेवत की पाटमदे नामक एक रानी थी। उसने पति को पर स्त्री दूर रहने के लिए समझाया किंतु वह न माना। और उसने रानी को मकी दी। भली बुरी सुनाई, रानी चुप हो गई।

शादी का समय हुआ तो सावलिगा ने एक युक्ति की। ब्राह्मण देव फोड दिया गया, प्रपच किया गया। और सावलिगा ने अपनी लवि-या नाम की चेरी को अपने वस्त्राभूषण पहिना दिये और लग्नमडप शादी के स्थान चौरी (शादी की वेदी) के सन्मुख विठा दी। इस तरह पशाह सेठ की शादी उस दासी के साथ हो गई।

रात को सावलिगा रूपशाह सेठ के पास आयी। और घूघट के पट ल दिया। उसका रूप सौंदय देखकर मोहित हो गया, और उसने वलिगा का हाथ पकड लिया किन्तु सावलिगा ने वहाना दिखाया कि ने एक शरत की है। प्रण किया है कि यदि मुझे रूपशाह पति के प मे प्राप्त होगा तो मैं अकेली आकर 'हे भगवान शिवजी तेरा पूजन रूगी। बाद मे पति से मिलूगी।'

सावलिगा की बात सुनकर रूपशाह सेठ ने कहा कि रात का समय और अकेली जाना चाहती हैं, यह बात अच्छी और ठीक नही है। हुत समझायी किंतु उसने सावलिगा ने नहीं माना। पूजन का थाल कर वह अकेली पैदल चलकर भगवान शकर के मदिर मे आ पहुची। देवत भीतर से द्वार बद करके नशे की खुमारी मे नीद ले रहा था। हुत कोशिश की, किंतु वह किसी प्रकार से जाग्रत नही हुआ। इससे वलिगा ने मदिर पर चढकर ऊपर के शिखर को उतारकर मदिर मे वेश किया। और मोह-निद्रा मे पडे हुए उस सदेवत को जाग्रत करने के ए अनेक प्रयत्न किये। किंतु ये सब प्रयत्न बेकार साबित हुए, निष्फल ए। बाद मे हताश होकर उसने सदेवत की हथेली में समस्या (निम्न-लिखित काव्य पक्तिया) लिखीं। जैसे कि

"कोरे घडे कुंवारि का, जेने खोले आंखाणुनी जार।
एवा शुकने तमो आपशो, तो मलशे सावलिंगा नार।
× × ×
सुणो सदेवतराय, अमल कर्या आकरे।
हु छु बालकुमार, जाउ छु सासरे ।।"

देह दर्द और हृदय के दर्द से पीडित होकर उसने हथेली में घाव के रूप मे काव्य-पंक्तियां लिखी। हतोत्साह हुई, और अपने घर पर वापस आ गई। तुरन्त वह पति के साथ पति के देश सिधार गई।

इधर सदेवत नींद से जाग उठा और सावलिंगा का मिलन न होने से शोधित होकर अपने महल में वापस लौट आया। फिर उसकी रानी पाटमदे ने उसको एक बनियेकी कन्यासे प्रेम करनेके कारण कई अयोग्य बातें सुनाई, बहुत कुछ कोसा। महेणे टाणे लगाये। इससे क्रोधित होकर सदयवत्स ने कडी प्रतिज्ञा की कि सावलिंगा से शादी करके उसको मुखिया रानी महाराणी या पटरानी बनाकर छोडूंगा। ऐसा कहकर वह अश्वशालामे पहुचा। एक अच्छा अश्व लेकर उस पर आरूढ होकर अकेला चल दिया।

सदयवत्स सावलिंगा के नगर के बाहर पहुचा। उसको तृषा लगी हुई थी। हाथ मे काव्य रूपी समस्या लिखी हुई थी उसकी रक्षा करने के हेतु, वह हाथ से पानी न पीकर पशु की तरह मुंह से पानी पीने लगा। यह देखकर वहाँ की पनिहारियाँ उसकी दिल्लगी करने लगी कि यह कोई गंवार है क्या? । किंतु वहाँ सावलिंगा की चेरी तथा उस नगर की राजकुमारी कनकावती उस समय नदी-तट पर आयी हुई थी। इन दोनो ने ताड लिया कि यह तो कोई चतुर बुद्धिशाली आदमी है। राजकुमारी कनकावती तो उसके दर्शन करके इतनी मोहित हो गई कि उसके मनसे निश्चय भी कर लिया कि मैं इस व्यक्ति के साथ शादी करूंगी, अन्य से नही।

ससुराल मे आकर भी सावलिंगा ने अपने पति के साथ बहाने बाजी

बढ़ा दी। और पति से यह दिया कि पीहर आते समय मैंने एक व्रत लिया है निश्चय किया है कि यदि मैं ससुराल में क्षेमकुशल पहुंच जाऊंगी तो मैं सात दिनों तक अकेली शयनगृह में नींद लूंगी।

पति रूपशाह ने इस बात को सत्य मान लिया। इस घटना से हमारे देश में उस समय समाज में व्रत मानता के विषय में कितनी दिलचस्पी थी इसका पता चलता है। कितना था प्राबल्य व्रतों के विषय में इसके हमें दर्शन होते हैं।

अब तो सदयवत्स ने एक मालन को साथ लिया और उसकी सहायता से सावलिगा से मिलने का निर्णय किया। सावलिगा ने मालन से कहा कि तुम सदयवत्स को साधु का भेष पहनवा कर मेरे महल में जरूर भेज देना।

अब मालन उस नगर की राजकुमारी के यहां चल दी। और पहुंची कुमारी के महल में। राजकुमारी कनकावती ने भी मालन को कुछ लालच दिया। और कहा कि यदि तू मेरी शादी सदयवत्स के साथ कराने के काम में सहायता प्रदान करेगी तो मैं जिन्दगी भरके लिये तेरी ऋणी रहूंगी तेरे उपकार को न भूलूंगी।

मालन दोनोंके संदेश लेकर सदेवंतके पास आयी और राजा सदयवत्स से कहा कि मैं सावलिगा के साथ आपका मिलाप करा दूंगी। किंतु साथ ही मैं भी आपसे एक वर चाहती हू, सदयवत्स ने कहा क्या कह दो। मालन ने कहा कि यदि आप मेरी बात के साथ सहमत होते हैं तो मेरी शरत यह हैं कि यहां के राजा वीरमदे की राजकुमारी कनकावती है उसके साथ भी शादी करनी पड़ेगी। है यह शरत मंजूर? राजा ने शरत को स्वीकार कर लिया। हां भर ली। क्योंकि उसका मन सावलिगा से मिलने के लिये अधीर हो रहा था। जिसके फलस्वरूप उसने यह शरत स्वीकार ली।

अब राजकुमारी कनकावती ने दूती मालन के द्वारा सदयवत्स के मनोभावों की सारी जानकारी प्राप्त कर ली। और अपना निश्चय

सैदयवत्स के साथ शादी करनेका यह उसने अपने पिता वीरमदेसे सुना। इस बात को राजा ने स्वीकार भी कर ली। साथ ही पितासे सावलिंगा की सब बातें कह सुनाई। और उनका निश्चय भी बतला दिया। राजा ने इस कार्य मे सहायता देने के लिए हा भर ली।

अब राजा ने सावलिंगा की शादी के विषयमें निर्णय करने के लिए रूपशाह सेठ को अपने पास बुलाया और सारी बातें बतला दीं। रूपशाह को भी अब पता चला कि सही रीतिसे उसकी शादी भी सावलिंगा के साथ नहीं हुई है एवं चेरी के साथ हुई है। दूसरा पता यह चला कि सदयवत्स एवं सावलिंगा इन दोनो की परस्पर अत्यंत एवं हृदय से भी चाह है। ये सारी बातें जानकर उसने सावलिंगा को सुपुर्द कर देने की सम्मति देदी। सदेवत को दे देने की भी रूपशाह ने हा भरी। अब राजा वीरमदे ने एक बडा लग्न-महोत्सव निश्चित किया और सदेवत के साथ ये दोनो स्त्रियो सावलिंगा एवं कनकावती की शादी कर दी।

कुछ समय यहा बिताकर राजा सदेवत दोनो रानियो को साथ मे लेकर बडे सजधज के साथ अपने देश वापस लौट आया।

राजा शालिवाहन को पता चला कि पुत्र आ रहा हैं। यह जानकर वह बडा प्रसन्न हुआ और बडी धमधाम से लेने के लिए सामने गया।

सदयवत्स की मा भी उमंग में आ गई। उसने भी अपने बेटे को कि जो दो रानियो से शादी करके आया हैं, पोंखे (शादी की विधिके अनुसार) लिये। सदयवत्सने निणयानुसार इन तीनो रानियोमसे सावलिंगा को पटरानी के पद पर स्थापित करके प्रण पूण किया। सदयवत्स ने कई वर्षो तक सुख से राजकाज किया। खाया पिया और मौज-मजा तथा शान्ति एवं आनन्द मे जीवन व्यतीत किया।

प्रबन्ध मे सामाजिक जीवन—नृपति एवं प्रजाजनोंके बीचका संबंध बहुतांयत से नगरों में एवं राजधानी में भी सदवर्ताव एवं प्रेम-भावना से युक्त रहता था। फिर भी राजा की अमाप सत्ता के सामने प्रजाजनो का कुछ बस नहीं चलता था। राजा किसी को मित्र नहीं"

प्राचीन सुभाषित के अनुसार, सदयवत्स के पिता प्रभुवत्स का आचरन या बर्ताव भयानक को नया मोड देता है। एक दिन पुत्र के पराक्रम पर संतुष्ट होनेवाले पिता दूसरे दिन प्रधान मंत्री के षड्यंत्र-शिकार बनता है। स्वयं युवराज-पद पर स्थापित किये गये पुत्र को (राज कुमार को) राज्य की हद छोडकर चले जाने की आज्ञा देते हैं। यदि राजा किसी पर संतुष्ट (प्रसन्न) होता है तब उसे 'पसाय' (सं. प्रसाद) देते थे।

राज्य की कार्यवाही में-अनेक प्रकारके प्रपंच एवं षड्यंत्र की कार्यवाही चलती थी, यह बात हम प्रधान के षड्यंत्र (पृ० १४) की कार्यविधि से ज्ञात होती है। बहुतायत से राजा लोग निष्क्रिय रहते हैं। क्षणतुष्ट एवं क्षण रुष्ट ऐसी राजा की उदास भावनायें भी गणना-पात्र है ही। प्रभुवत्स राजा को प्रजाजनों ने जो चीजें प्रदान की थी उनका राजा ने स्वीकार भी नहीं किया था। किंतु वापस लौटा दी थी। (कडी ३९१)

न्याय देने की पद्धति का दर्शन सदयवत्स राजा एक प्रसंग देता हैं (पृ ६४) वहाँ होता हैं। खास करके कानून के चक्कर में पडने के बजाय सरल समजदारी एवं व्यावहारिक बुद्धि का प्रयोग करके ही न्याय का फैसला या निर्णय लिया जाता था।

त्योहार या उत्सव-प्रसगऊपर नगर जनो द्वारा नगर-की जोसजावट या शृंगार ब दनवार होता था इसका भी कवि ने सुंदर बयान दिया है। (पृ १२-१३)

नगर में एक ओर जैसे गणिकागृहों की अनिवार्यता देखने में आती है, वैसे दूसरा ऐसा अनिवार्य स्थान द्यूतस्थान (जू-ठाण) प्रख्यात गिना जाता था ऐसा हमे पता चलता है (कडी ४०१) द्यूतस्थान द्यूत के क्षेत्रीय अखाडे) राज्य-सम्मत गिने जाते होंगे ऐसा प्रतीत होता है। कतिपय जुआरियोके नाम भी कविने अंकित किये है। (कडी ५०९-५१०)

वैसे ही प्रसिद्ध वारागनाओ के नाम भी (कडी ५४२, ५५२) क्रमबद्ध एव व्यौरेबार गिनाये हैं। आधुनिक युग के जिसकी गणना समाजमे होती है और इस समाजमे जितना महत्व का गिना जाता है उतना प्राचीन समय में गणिका एव द्यूतका स्थान होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

महाजन श्रेष्ठियोकीसत्ता-नगरो में उनके व्यापार के क्षेत्र मे अबाधित रूप मे रहती थी। उस समय के प्रचलित श्रेष्ठियो के नामो की जानकारी भी हमे प्राप्त होती है। (कडी ५३२, ५३५)

वारहट्ट और ब्रह्मभट-या चारन का स्थान राजा एव प्रजा के बीच मे स योग जोडने वाली शृंखला के समान था। किसी भी व्यक्ति के लिये वह 'प्रतिभू' यानी Surety किंवा प्रतिनिधि बन सकता था और वह राजमान्य भी गिना जाता था। (पृ० १२) सार्वलिगा को बहिन (भगिनी) समझकर एक गाव का वारहट्ट कि जिसको राजा ने पसाव (ग्रास) प्रदान किया था और वह उसका उपभोग भी करता था। उसने पाच दिनके लिए आश्रय दिया था। यह उसका उदात्त चरित्र उदाहरणनीय जान पडता है।

राजा की आज्ञा का पोलन करने वाले-'तलार' औलग (सेवक) उपस्थित रहते थे। (पृ० ८०-८१) द ड के भेदों मे शूलि, अ गच्छेद एव कारागृहवास जेलखाना इतने भेद जानने समझने के लिए प्राप्त होते हैं।

आत्महत्या इसके उपरांत स्वेच्छा से लोग स सार असार जानते ही जीवन से तग आकर काशी मे जाते थे, और वहाँ करवट लगवाकर जीवन समाप्त करते थे। इसके द्वारा समाज की पूर्वजन्मके प्रति कितनी अडग श्रद्धा रहती थी इसका हमे दर्शन होता है। मालवा प्रदेश में शिक्षा के रूप में किसी धातु या सिक्का गरम करके निशानी कर दी जाती थी ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

[illegible]

अंतिम पृष्ठ, सदयवत्स वीरप्रबन्ध । लिपि संवत नहीं है । प्राच्य विद्या मंदिर, बड़ोदा ।

कवि भीम-विरचित

श्री सदयवत्सवीर प्रबंध[1]

ॐ नमः । श्री शारदायै[2] नमः । श्री सद्गुरुभ्यो नमः ।

[मंगलाचरण]

(गाहा)

माई महामाई-मज्झे, बावन्न वन्न जो सारो ।
सो विंदु ओंकारो, स ओंकारो नमस्कारो ॥ १ ॥

जिण रचीय आगम निगम, पुराण सर-अक्खराण वित्थारो ।
सा ब्रह्माणी वाणी, पय[3] पणमवि सुपय मग्गेसु ॥ २ ॥

गयवयण गवरीनंदण, सेवइ सुहकरण असुह-अवहरणो ।
बहु-बुद्धि[4]-सिद्धिदायक, गणनायक पढम पणमेसु ॥ ३ ॥

गुरु लहुय जि कैवि कवियण, सरस-सुअत्थ सुच्छंद-बंधयरा ।
एकत्थ[5] ताण सव्वे, करजुअलं जोडि पणमामि ॥ ४ ॥

[नव रसात्मक सदयवत्स प्रबंध]

सिंगार हास करुणा, रुद्दो वीरो भयाण बीभच्छो ।
अद्भूत संत नवइ रसि, जसु जंपिसु[6] सदयवच्छस्स ॥५॥

१. 'सुदयवत्सवीर चरित्र' प्र.; 'सुदयवच्छचुपइप्रबंध' भा. २. 'श्रीशारदाय नमः' भा. ३. 'पय पूजवि हूँय मग्गेसु' भा. ४. 'सन्धि', 'बंधि' भा. ५. 'एकांत वाणि सव्वे', प्र. ६. 'जंपिस', भा.

[सदयकुमार परिचय]

(छप्पय)

मालवदेस-मज्झारि, नयरि ऊजेणि अणोपम[1] ।
पहु पहुवच्छ नरिंद, नारि[2] बहु लच्छि लच्छि-सम ॥
तिह सुअ सदयकुमार, सबल सामलि-भत्तारह ।
साहसि[3] पवर-प्रसिद्ध, जय जगि जयव जूआरह ॥
खित्ततणि[4] खित्तीय सोहकर, रायरीति वीर[5] जि विबुध ।
इम[6] भणइ भीम तस गुण थुणिसु, जो हरसिद्धि वर लबध ॥६॥

[उज्जयिनी नृप प्रभुवत्स]

(गाहा)

ऊजेणि अवणि-मज्झे, नयरीवर[7] नयर-सयल-सिंगारो ।
तेणि पहू पहुवच्छो, पत्थंतह पूरए अत्थो ॥७॥

[नगरी-निवासी ज्योतिषी विप्र]

तिणि नयरि एक निवसइ, विप्पो विज्जा-निहाण चउव्वेई[8] ।
जोइसिक-कला-कुसलो, निद्धण कणविंत्तिया जीवो ॥८॥

तस घरणि इक्क अवसरि, अखय गंत कंत एक तस्स ।
"पिय ! पहुवच्छ नराहिव, पच्चुसे[9] पत्थि हो पत्थि" ॥९॥

मनि धरवि घरणि-वयणं, विप्पो संपत्त[10] राय अत्थाणं ।
लेई अक्खय करपत्तं, आसीय-वयणं पयासियं तस्स[11] ॥१०॥

---

१. 'निरुवम' भा. २. 'महिल' भा.; 'बहुलच्छि' प्र. ३. 'साहसि जगि' प्र. ४. 'खत्ततणइ खत्तीय' भा. ५. 'कीरति विधुर नर' भा. ६. 'कवि भीम तासु गुण वन्नवइ,जो हरसिद्धि लबधवर' भा. ७. 'नारीवर' भा. ८. 'चउवेयो' प्र. ९. 'पच्चुसे पत्थि हो पत्थि' प्र. १०. 'संपत्त' प्र. ११. 'अत्थाणो' भा.

[आशीष वचनार्थं राजसभा-गमनं]

सुलिपुः (दूहा)

विप्प[1] सुविज्जउ ऊलखिउ, कीउ पहुवच्छि[2] प्रणाम ।
आदरि आसण अप्पीउं, "कहिन[3] देव ! कुण ठाम ?" ॥११॥

पुच्छं उच्यं. (छंद पद्धडी)

पहु[4] प्रच्छइ जंपइ विप्पराउः
"सुणि[5] नरवर ! अम्ह ऊजेणि ठाउ"।
"दिन एता[6] दिट्ठि न दिट्ठ देव !
त काई कारण ? कहिन हेव" ॥१२॥

"जां लगइ कुकम्म-वसि हुइ कोई,
ता सुपुरिस-सरिसी भेट न होइ ।
जव टलिउ देव ! दारिद्दनु भाउ,
तव पामिउ मइं पहुवच्छ राउ !" ॥१३॥

[प्रभुवत्स वचन]

(दूहा)

विप्प-वयणि राउ रजिउ, पूछइ वलीअ विगत्ति ।
"कवण कला गुण तूं[7] अ-तणइ?, कवण तुज्झ[8] कुल-वित्ति ?[9] ॥१४॥

[विप्र वचन]

(वस्तु)

विप्प जंपइ, विप्प जंपइः "निसुणि नरनाह ।
जयवंती ज्योतिष कला, कुलकम्मि अम्ह अच्छइ अग्गइ ।

१. 'पहुणा' आ. २. 'सवि जउ' आ. ३. 'कहुन' आ. ४. 'पहु पूछिउ' भ. ५. 'सणि' आ. ६. 'काइ' आ. ७. 'तदूम' आ. ८. 'सुत' आ. ९. 'विति' आ.

बरतारउ[1] संवच्छरह, नट्ठ जन्म नवि विति लगइ ।।
जं सुरपुरि जं नरभुवणि, जं जं हुइ पायालि[2] ।
नरवर ! निज मंदिर-थिकूं, तं जाणू तिणि कालि" ।।१५।।

(दूहा)

यिप्प-तणइ अति वड वयणि, वसिउ राउ-मनि रोस ।

[प्रभुवत्स वचन]

"जं बंभण ! तूं[3] वरलिउ, तं[4] जाणिसु तूं अ जोस" ।।१६।।

तिणि[5] अवसरि अगलि रहिउ, गलि गज्जइ गजराउ ।

[ज्योतिष ज्ञान परीक्षा । गजराज जयमंगल आयु प्रश्न]

"जयवंतु[6] जयमंगलह, एह कहि, केतूं[7] आउ ?" ।।१७।।
लगन लेई[8] तव ततखिणि, कहिय खडी करि झल्लि ।

[यमंगल फलादेश कथन]

"जइ पूछिसि पहुवच्छ पहु, मरइ ति कुंजर कल्लि !"।।१८।।

बंभण-केरइ बोलडइ, राउ चमकिकउ चित्ति ।
"जउ कुंजर कल्लि नवि मरइ,तउ तूं अ कहि,कुण गत्ति?।।१९

आगइ एक अणजाणतां, तइं धड बोलिउ बोल ।
आ तिहूं पाहिइं अधिक, जाणइ निरस निटोल" ।।२०।।

विप्प भणइः "नरवर ! निसुणि, देव मदु छि अनंत ।
थे जयमंगल हत्थीउ, तेअ थिइ दिणि अंत ।।२१।।

---

१. 'वरतक' भा. २.'वैयाल' भ. ३. 'तइं' भ. ४. 'सिउ जाणिस तु' जोस' भा. ५. 'तीणि' भा. ६. 'जइवंतु' भा. ७. 'किशूं' भा. ८. 'लिहुंत लहुंत तीणई' भ., 'स' भा. ।

चिहुँ दिसि चिहुँ थम्भे सरिस, जइ बहु बंधणि बद्ध ।
तोइ बि प्रुहरे [बंभण भणइः] "चल्लइ मत्त मदंध ॥२२॥

गरूअ गुफा भल भुंहिरइ, चिहुँ पक्खे पुंतार ।
इम रक्खंतइ राय ! सुणि, बि-पुहरि मंडइ मार" ॥२३॥

[प्रभुवत्स नृप कोप-कथन]

(वस्तु)

राउ जंपइ, राउ जपइः "वयण निसुणि[1] विप्प ।
मुझ परतन्या पुव्व लग्गइ, अधिक उच्छ बोलइ स वारूं ।
अलीअ न चल्लइ अम्ह-तणइ, सच्च होइ तुह कज्ज सारूं ।
जउ बंभण ! बि-पुहर-समइ, मत्त न मोडइ खंभ ।
तउ तूं[2] आगा तिलयनइ ठामि दिवारिसु[3] इभ ॥२४॥

(चउपई)

"जउ जोसी ! तूं ज्योतिष साच, तउ थिर थापउं माहरी वाच ।"
[फलादेश मिथ्या करणोपाय]
इम बोली तुरी पाठविउ, राइं गज-राखण आठविउ ॥२५॥

एकि भणइः "ए बांभण[4] बूड", एकि भणइः "ए[5] काचउ कूड"
एकि भणइः "ए पंडिउ अपाइ, किम छूटेसिइ राखिउ राइं ?"॥२६॥

गज-पाखलि पायक सइं पंच, ते[6] पुंतारि मुणइ प्रपंच ।
तीह मापी आंकुस नइ आर, राइं[7] मेल्हया राखणहार ॥२७॥

मत्ता-पाखलि पुहरा पडइ, एकि आंकुस लेई ऊपरि चडइ ।
इणइ[8] परि राखिउ सघली राति, पुहतउ तिहां पहुवच्छ प्रभाति॥२८॥

१.'निसुणि वर विप्प' आ. २.'तल तणइ' अ. ३.'दिवारिसु' अ. ४.'बूढ' अ. ५.'कीधउ' आ., ६.'जे' अ.'कुणइ प्रपंच' अ. ७.'धूणी धरा पाखया पुंतार' आ. ८. 'इम रख्यु गज' आ.

[विशेष गज-रक्षण-प्रबंध]

घली अधिकि वंधाविउ वंधि, सवा-भार लोह-संकल कंधि।
नवि सलसली सकइ थिउ ठामि, किरि[1] चित्र कि लिखिउ चित्रामि! ॥२९॥

राईं तइं तेडया पुंतार, "रे! रूडि-परि करिज्यो सार।
गाढा थईं राखउ[2] गजराज, वांभणि वि पुहर लहिणा आज" ॥३०

[उच्छृङ्खल गज-गमन]

इम करतां सिरि आविउ सूर, गज चालिउ पावरिसनूं पूर।
धाइ घसइ अनइ धडहडइ, किरि आसाढि अंबर गडगडइ ॥३१॥

त्रोडी संकल मोडया खंभ, त्रुहटइ चालिउ गरूआरंभ।
नवि लेखइ[3] आकुस नइ आर, धूणी घरा[4] पाडया पुंतार ॥३२॥

[उन्मत्त गज पथ-विहार-परिणाम]

गजि चउहटइ जईं मंडिउं गाह, पान-तणां सवि लाध्यां लाह।
फूल-तणा तिहां पूर्या पगुर, मइगलि मायइ कीधउं नगर ॥३३॥

पुहुतउ अंगिण सुगंधी-तणो, राज-वस्त मेली रेवणो।
लांखइ केसर अनइ कपूर, वास्यां तेल वहाव्यां पूर ॥३४॥

[लोक-संभ्रम]

तीणइ दीठइ दोसी दडवडइं, पारिखिने पगि पीडो चडइं।
फडीआ फोफलीआ सोनार,[5] नाठा लोक: न जाणइं सार ॥३५॥

हाट-मांहि थिउ हालकलोल, किरि कमलापति करइ कलोल।
पीतां लांख्यां पारिखि-तणां, कापडि सरिस किरिआणां घणां ॥३६॥

१. 'जाणे गज लखीउ चित्रामि' प्रा. २ 'राख्यो' प्रा. ३. 'मानइ' प्रा. ४. 'घरि' प्रा. ५. 'सूनार' प्रा

एकि अटालि मालि गढि चडइ, एकि पाखरि दह दिसि दडवडइ ।
एकि[1] छावडा अछइ छडछोक, ते सीकिड[2] -थ्या लूसइ लोक ॥३७॥
गिउ गयंद सुर-हटनी वाट, तिहा[3] मदिराना दीठा माट ।
मधु महुअडा द्रवणि जस द्राख, ते गजवरि आरोग्या लाख[4] ॥३८॥
आगइ पचायण पाखरिउ, आगइ पन्नग पखावरिउ ।
आगइ गज अ गि जमदूत, वली वारुणी भावि थिउ भूत ॥३९॥
सुडाहल पूरइ परचड, दतूसल जाणे जमदड ।
पाडइ विसमा पोलि प्रासाद, नर नारिनू[5] ऊतारइ नाद ॥४०॥

[गजनियन्त्रणे नृपागमन]

राउ असवार थई थिउ[6] केडिः "जे भड भला ते वहिला तेडि ।
जे आणी बधइ[7] गज ठामि, तेहनइ आपू गाम अनामि ॥४१॥
आपउ अ ग-तणउ शृ गार, आपू एकाउलिनउ हार ।
आपू अधिक वली पसाउ, जे वलीउ वधइ गजराउ' ॥४२॥
एकि भणइ 'आघो थाईइ', एकि भणइ. 'जमपुरि जाईइ' ।
एकि भणइ वरि रूसइ राउ, सरसिइ[8] एहना पखइ पसाउ'॥ ४३

[ब्राह्मण सीमन्तिनी-गृहागमन प्रसग]

नव[9] वारहि नयर ऊजेणि, नितु नव नवा महोत्सव तेणि ।
बभण एक तणइ तिणिवार, आघरणि अवसरि जयकार ॥४४॥
गयगामिणी धवल-धुणि करइ, वारु विप्प वेग्र उच्चरइ ।
मस्तकि मेघाडबर छत्र, वाजइ पञ्च शबद वाजिन ॥४५॥
भरीय सेसि सइ हथिइ माई, पीहरि—थी पस पूरइ जाई ।

१. 'जे छा छडा अनइ छड छोक' मा. २ 'पाछलि' मा ३ 'मदिरा-पूर्या' मा ४. 'राय' म ५. 'नरनरिंद' म ६. 'त्रिउ' मा. ७ 'बधइ बलीउ' मा. ८ 'हसिसिइ' मा. ९ 'नव वाहरि' मा

[अपशकुन परम्परा]

जां[1] घडि चालइ पहिलइ पाइ, ता आडी ऊतरइ विलाइ ॥४६॥

सडको खूलो चानो बाट, जातां वाडि विलागूं घाट ।
जा[2] घाटडूं विच्छोडो वाडि, ता तरु-मइंनी छीको विलाडि ॥४७॥

पग संचीनइ पाछी वलीइ, सूकइ काठि काग किलगिलइ ।
मनइ मनेरा हूई असुग, तिहना कारण जाणइ कुण ? ॥४८॥

एकि भणइ.'एह पडिसि आम',[3] एकि भणइ 'एह गलिसिइ गाभ'।
एकि भणइ . 'एह हवडा हाणि,एह असुग-तणइ परमाणि'॥४९॥

[गजराज कृत सीमन्तिनी-ग्राह]

गजर सुणी गज तिहां-थउ वलिउ, पेखणहार लोक सहु पलिउ ।
सगूं सणीजूं गिउं सहू वही, विप्र-घरणि[4] गयवरिं ग्रही ।॥५०॥

इम साही सु डिहि कडि यत्रि, जाणे लाठि[5] लगाडी यंत्रि ।
नवि मेहल्हइ नवि मारइ मत्त, पेखइ राइ राणा रावत[6] ॥५१॥

[सीमन्तिनी-पतिकृत मोक्षभ्यावना]

(छन्द पद्धडी)

सव प्राविउ धाइउ[7] ति नारी-भरतार,
बु बारव वभण करइ अपार ।
"को सुभट शूर साहसिक शुद्ध[8]
को धीर वीर वसह विशुद्ध ? ॥५२॥
कोइ जाइउ चउदिसि चपल अंग ?
को अकल अटल आहवि अहग ? ।

१. 'छेडि वीलइ' मा 'भागलि' मा. २. 'जा घाटक कुंच बीओ वाडि,तो म रमइका छीक निलाडि' मा० । ३. 'पडिसि' म. ४. 'नाहि वराहरि' म. ५.'माटि' म. ६.'सामत' मा ७ तिहिं' मा ८ 'सिद्द' मा

काइ खित्तीअ खल-खंडरण समत्थ ?
को अछइ छयल खिति खग्गहत्थ ?" ॥५३॥

[मार्गे कुमार सदयवत्सागमन]

इम करतउ जउ जुवटइ जाइ,
पूछिउ[1] ताम पहुवच्छ-जाइ ।

[सदयवत्स वचन]

"देव ![2] दया कर, कुण दूहवइ तुज्झ ?
थिर थइ भिइ-कारण कहिन मुज्झ ॥५४॥'
कुणि मारिउ ? डारिउ ? हरिउ रिद्धि[3] ?
कुणि लूसिउ ? लीधउ ? तू कहिन सिद्धि ?[4]"

[विप्र रक्षण-याचना]

तीणि वयणि विप्प गीअ[4] विहलमुच्छ,
"करि वाहर, स्वामी सदयवच्छ ! ॥५५॥

(दूहा)

आघरणि अवसरि घरणि, आवंती आवासि ।
मारगि अबला एकली, पडी महागज-पासि ॥५६॥
जम-मुहि किस्यूं[5] जीवीइ ?, चतुर ! विमासिन चित्ति।
सदयवच्छ ! सा वंभिणी, मारीय हूसिइ मत्ति !" ॥५७॥

[वीर सदयवत्स मत्तगजाक्रमण]

(छंद पद्धडी)

तव धायो धूंबड घसमसंत,
किरि आवइ केसरि करि[6] कसंत ।

---

१. 'तिहा पूछीय' मा. २. 'देव देव म करि' मा. ३. 'मरथि' मा. ४. 'बयु बुहम पुछ' मा. ५. 'केतू' मा. ६. 'कमकसंत' मा.

चर्वरीय फंटि फल्कंति[1] मालि,
कलकिल्यु[2] वीर थ्यु भृकुटि मालि ! ॥५८॥

मयमत्त[3] रत्तू जव दिट्ठ दिट्ठि,
तव असिमर कड्ढवि किद्ध मुट्ठि ।

मुहि मंडवि हक्किउ सबल हत्थि,
साहसीय[4] सुभट्ट सुंदर समत्थि ॥५९॥

नवि मेल्हइ नारिय सूंडि-अग्गि,
दंतूसल तोलवि वलिउ वेगि ।

इम हणिउ करडि करिमालि कंधि,
जिम त्रूटि[5] सीसि गिउं श्रवण-संधि ॥६०॥

[6](राग केदार एकताली)

राइं बोलाव्या बहू, जे भड गय-घड खंडंति ।
तेहू पाखलि परिभमइ, नवि वारण मुहि मंडंति ॥६१॥

मेगल मत्तालउ ए, नवि जाणइ पवरिस-पार ।
अंकुसि सरिसा अवगणी धूणी, धर पाड्या पुंतार ॥६२॥

[सदयवत्स कृत हस्ति-निग्रह]

सदयवच्छ सूरु सही, जीणइ वलीइं वंभण-नारि ।
मेल्हावी हणी हाथीउः, जग पेखइं जइ जयत जुआरि ॥६३॥

(छंद पद्धडी)

गडअडिउ गयंद कि पडयउ पुहव्व,
सुर अंतरिक्खि पेक्खिइं अपूव्व ।

१.'फलकइ कवालि' म. २.'कलकलिव वटाएा, थिउ भृगुटि मालि' म. ३. 'मयमत्तउ जव नयणि दिट्ठ' मा. ४.'साहसीक सूर' मा. ५. 'त्रूंटिवि' मा. ६. टूंक ६१ थी ६३ मा. प्रति मा नथी।

'जय जय' शवद जंपइ जगत्त,

पहुवच्छ पुत[1] पेखइ चरित्त ॥६४॥

[सीमन्तिनी प्राणजन्य मानद]

(चउपई)

ते बंभरण तेडिउ[2] तिणिवार, युवत्ति समोपी किद्ध जुहार[3] ।
बंभण-घरि विमुणउ[4] उच्छाह, 'सुद' सुद्द !' करइ[5] नरनाह ॥६५॥

[प्रभुवत्स-दत्ता धन्यवाद]

लाजंतइ जई किद्ध जुहार, राइं आलिंगण दिद्ध अपार।
बापिइं बेटउ बांहि धरिउ, राउ राजभवनि संचरिउ ॥६६॥

बारहट्ट बोलइ तिणि वार, सदयवत्स न सहइ कईवार।
भाटइं भेद परीठिउ[6] इसिउः "पशु मारइं पुरषारथ किसिउ?॥६७॥

(छंद तोटक)

मइमत्त कि मारिय लज्ज रयउ,
शर-टंकीय मुंदर शल्ल विगयउ ।
गयगंजण ! लज्जिजइ न्हि विमइ ?
किम किज्जय सद्द सुसमर तिमइ ? [7]" ॥ ६८ ॥

(गाहा)

पोढा करोय पहारो, मेनावइ मुच्छ मोडए मूढो ।
साहसीग्र सदयवच्छो, लज्जरिउ मारि मयमत्तो ॥६९॥

---

१. 'पवरिउ पेखइ पुत्त' म. २. 'तेडाव्यु ताम' मा. ३. 'प्रणाम' मा. ४. 'मनिईं' मा ५. 'सूदा साद' मा. ६. 'रीछयउ' मा. ७. टूक ६८ मा. प्रति० मां नथी.

[सदयवत्स युवराज-पदाभिषेक]

(चउपई)

ते महूरत ते मगलाचार[1], सेसि भराव्यउ सदयकुमार।
राउ अप्पइ राणि मनइ राज,सूदउ भणइः'न राजिइं काज॥'७०॥

घरि घरि तलीया तोरण बहू, ऊजेणी आणंधउं सहू ।
हऊउ हर्ष्य राजा-मनि घणउ, पेखि पवाडउ सूदा-तणउ ॥७१॥

[सदयवत्स विनय वचन]

"तुम्हि जगि जयवंता[2] हुयो देव !,करिसु सदा हूं तह्म पय-सेव
नयरि[3] निचिन्त रमू निशिदीस, तह्म पसाइं पहुवच्छ पहीस॥७२॥

रमूं भमूं जाऊं जूवटइ, चूरि[4] चार्चरि खेलूं चउवटइ।
लुहडपणानी लीला फिरूं, अधिपतिपणूं न अंगी करूं ॥७३॥

जिहां जिहां रामति हासा होड, जिहा जिहा कला कुतूहल कोड।
जोवा जाऊं तीणिइं ठामि, ईणइ संकटि पाडि[5] म स्वामि ॥७४॥

राज-काजि एक बंधव बाप, मारइ पुरुष न बीहइं पाप।
लीलावंत-तणइ मनि लाज,[सूदउ भणइः] न राजिइं काज"॥७५

[प्रभुवत्स-प्रसाद]

आपिउ एकाउलिनउ हार, आपिउ अंग-तणउ शृंगार।
आपिउ आसण-तणउ तुरंग, राजा-अंगि[6] न माइ रंग ॥७६॥

ते वभण तेडाविउ ताम, प्रति ऊठीनइ[7] किद्ध प्रणाम।
आपिउं वासि वसंतूं गाम, बहु[8] अरथ नइ अंबर द्राम ॥ ७७ ॥

---

१. 'मगलवार' आ. २ 'जइवइवंता देव' आ. ३. 'निरतर' आ. ४. 'चरि' म., 'तिम' म ५ 'पाउ काइ' आ. ६ 'रिदइ' म. ७. राजा ऊठी' म. ८.'अरथ सरीसु अंबर द्राम' आ.

वंभणनइ घरि भागी भूख, नाठूं दुरीय-सरीसूं दूख।
महाराजि जउ दीधउं मान, लोक-मांहि तीणइ[1]वाधिउ[2]वान ॥७८॥

(दूहा)

वंधी[3] तलीया तोरणह, गूडीय वन्नरवालि।
दीसइ दीवाली-तणा,[3] उच्छव हुई[4] अगालि ॥७९॥

पंच शब्द निनाद[5] रसि, वद्धावो वाजंति।
पड-सद्द[6] पूरी भुंवण, गयणंगण गज्जंति ॥८०॥

विप्प वेअ-धुणि उच्चरइं, करइं सुकवि कइवार।
रायंगणि राजा-तणइ, मिलिया मग्गणहार ॥८१॥

वर-मंडपि मंडीय गजर, वज्जइ मधुर मृदंग।
[7]रागरंग गायण गमक, नच्चइं नाचिणि चंग ॥८२॥

किहि कप्पड़ किहि दिइं कणय, किहि केकाण कच्छाहि।
धन देयंतो[8] किलकिलइ, पहुवच्छ मन-मांहि ॥८३॥

[9]आसीस दिइं वहिनर बहू, मा मनि रंग-रसाल।
भरीय सेसि सइंहथि-सिउं, वद्धावइ वर बाल ॥८४॥

(चउपई)

मणि माणिक मुत्ताहल-हार, [10]कापड-कणय कपूर अपार।
विवहारीए वधावूं किद्ध, राजा किहिनूं काईअ न लिद्ध ॥८५॥

---

१. 'तु' पा. २. 'लागउ' प. ३. 'घरिघरि' प. ४ 'दीपाछव' पा. ५. 'नयरि' प. ६. 'निरंदह घरि' प्रा. ७. 'पहिछेदे' 'रागरगि मालविकरइ, नाचइ पात्र सुरंग' प्रा. ८ 'वेचंतु' पा. ९. 'वहिन करइ ऊमारणां, मा मनि' प्रा. १०. 'हीर-चीर सोवन शृंगार' प्रा.

[सदयवत्स सन्मान-प्रप्रसन्न प्रधान]

सदयवच्छनूं सुणी वृत्तंत, मुहुतानइ[1] घरि यइठउ मंत्र।
"राउ आपता न लीधूं राज, [2]भूप-जमलउ थिउ युवराज ॥८६॥

आज-थिकउ इहनइ सिरि भार, राजा आरोपिसिइ अपार।
लहुडपणा लगइ लक्षण सार, आगइ जूठउ अनइ जूआर ॥८७॥

जे माणस एहनइ नितु नमइ, ते माणस एहनइ मनि गमइ।
जे माणस आगइ एहना, सरसिइं काज सवि तेहनां ॥८८॥

आज-थिको[3] हिव एहनी आस, आज थिकउ एहनउ वीसास।
आज-थिकउ राजा मनि एह, आज-थिकउ हिव[4] अम्हनइ छेह॥८९

आगइ "इह-सिउ" नवि मुझ रंग, जे मइं जीव[5]विणासिउ रंग[6]
अरय-तणउ अति क्रोधु लोभ, सर्गे-सणीजे[8] न रही शोभ ॥९०॥

[प्रधानकृत युवराज-विरुद्ध षड्यन्त्र]

हिव ते काई करउ उपाउ, जीणइ[9] एहनइं रूसइ राउ।
इसिउ अपूरव पाडउ रेस, कइ मारइ कइ काढइ देस ॥९१॥

कुटंब तणू[10] "सांभलिउं कहिउं, मुहुतइं सोइ जि कयन[11]संग्रहिउ।
मंति-पयहपणूं तउ आज, जउ हूं कालि कढावूं राज ॥९२॥

[प्रधानकृत भेद-प्रपंचारंभ]

तउ परधानि मांडिउ परपच, उडद अणाव्या पाली पंच।
सांझइ अरक[12] [12]आयमणी दार, [13]वीर ववावूं लेई[14]तीणि वार।९३

१. 'महितानइ' आ. २. 'तु हू जमलि' म. ३. 'पछो' मा. ४. 'राज-मनि' आ. ५. 'एहनइ नही मूं 'ग' मा. ६. 'जान' मा ७. 'रंग' म. ८. 'माहि' म. ९. 'जिम ,हिव' आ. १०. 'कुटुम्बि इस्यूं विमासी' आ. ११. 'वयण' मा. १२. 'सूर' मा. १३. 'वार' मा. १४. 'करइ' मा.

आपणि कीधउ कालउ शृंगार, कालउ अंग-तणउ आकार।
काला कापड कीधां भेटि, तउ राजा घण पइठउ पेटि ॥९४॥
रा एकांति मंति लेई गउ, "कांइ प्रधान, काल-मूंहुम्र थिउ ?।
एतां सघलूं ताहरूं राज, नवूं ति कांई कारण आज ?" ॥९५॥

जाणइ कामण मोहण कूड, जाणइ बुद्धि बोलतउ बूड।
जाणइ अंग-तणउ [1]अनुराग, [2]वातइ ततक्षिणि लेई ताग ॥९६॥

[मंत्री वचन]

"नही उच्छव तम्ह घरि तेतलउ, वइरी-घरि होसिइ जेतलउ।
'जयमंगल[3] मारिउ' महाराज!, इसिउ वधामणुं छाजइ आज ?॥९७

मदि[4] आव्या छूटइ मयमत्त, रोसि चड्या ते हीडइ रत्त।
आइ उपायि, वली धराइ, इम अजुगतिइ[5]न आलि मराइ।९८॥

जास पसाइं दमिया देस, जास पसाइं नमइ नरेस।
जास पसाइं दोहिलउ दुग्ग, लीधी पोलि त्रिभोगल[6] भग्ग ॥९९॥

जीणइ तात ! तम्हे[7] लिउ दंड, दमिय देस लीजइ[8] सवि खंड।
ते उलग आवइ अहिठाणि[9], जे जीता जयमंगल प्राणि ॥१००॥
मदि आविउ करि सारइ काज, वइरी-तणां विध्वंसइ राज।
पाडइ विसमा पोलि पगार,प्राण-तणउ नवि जाणइ[10]सार॥१०१॥

ऐरावण सुणीइ इन्द्र-नइ, जयमंगल हूंतउ तुम्ह-तणइ।
बीजउ कोइ न त्रिभुवनि कन्हइ,प्रापति पाखइ[11]न रहिवा लहइ॥१०२

---

१. 'आकार' म २. 'वात करंतु बोलइ नारि' म.। ३. 'मइ मइगल' म. ४.'मन्दिर'म्र. ५.'मजुगतउ' म. ६. "ति' मा. ७.'तु महारउ पंह' म्र. ८. 'लीजंता दंड' म. ९. 'अप्पाणि' मा. १०. 'लाभइ पार'म. ११. 'विण किम संहिवा सहइ ?' मा.

(दूहा)

भम्मूलिक चिंता-रयण, जउ करि चडइ सुरंक।
तां घरि किराउ ते रहइ ?, जिराउ बीय-मयंक" ||१०३||

[माशंकित राजा-चित्त]

(चउपई)

मुहूतइं मंत्र-भार जउ भरिणउ, तीणि राजा-मन धारिउ घूरिणउ ॥
न सहि कोई नीसासा-फूंक, जाणे पूरव पूरिउ डंक ॥१०४॥

जे वहु नेह धरंतउ वाप, ते माचु तीणइं कीधु साप।
रोस चडाविउ सघली राति,[1] पुहुतु तिहां पहुवच्छ प्रभाति॥१०५॥

[रोषपूर्ण प्रभुवत्स]

फूंकी धमी धमाविउ एम,[2] जिम ते ततक्षणि त्रूटइ[3] प्रेम।
वूड[4] बोलतां आविउ वंधि, सूदा-सरसी पाडी संधि ॥१०६॥

[सवत्सवत्स माता-वचन]

थिउ अवसर ऊलगनु जाम, माइं बेटउ बोलाव्यउ ताम।
'सूदा ! सुप्रभातनी वार, जई राजा-प्रति[5] करु जुहार" ॥१०७॥

[क्रुद्ध पिता मुख-दर्शन]

माता-वयणि समागिउ सुद्द, तां राजा-मुखि[6] दीठउ रुद्द।
सिर नामंतां बोलिउ राउ[7], हासा-मिसिइं भागां[8] हाड ! ॥१०८॥
नीचू नइं न-पाणीउ कूउ, तिह ऊपरि ढालइ[9] ढीकूउ।
वार वार पय[10] करइ प्रणाम, नीरत्तणू नीठाडइ[11] ठाम ॥१०९॥

---

१. 'पाछइ बोलाविउ परभाति' म. २. 'इम' म. ३. 'त्रोडइ तीम' म. ४. 'वूट' म. ५. 'राजानइ करइ' म. ६. 'मनि' पा. ७. 'साह' पा. ८. 'भजइ' पा. ९. 'मांडिउ' पा. १०. 'सिरि' पा. ११. 'नीवाडइ' पा., म.

(गाहा)

मा जाणिसि खल नमीय, जीहा जपेइ अमीय-सा वयण ।
डीकू[1] कुप विनग्गो, पय लग्गवि, सोमए जीय ॥११०॥

(चउपई)

जे आकारइ ऊलखइ अ ग, भगहि-तणउ जे बूझइ भग ।
[2]ते नर बोलिउ [3]बूझइ इसिउ, एह वातनूं[4] अचरिज किसिउं ॥१११

वीर विचारी जोइउ सरूप, भमहि-भावि ऊलखिउ भूप ।
कुमर ततक्षणि विमासइ चिंति, किसी कहीइ ज उत्तम रीति? ॥११२

(अडयल्ल)*

जिम जिम केसरि पइ ऊहटइ, जिम जिम विसहर नूली वटइ ।
दीन वयण जिम जंपइ सूर, देसि देसि कीघइ बहु पूर ॥११३॥

[सदयवत्स पिता-वदन]

अणबोलिइ ऊठिउ कुंआर, जातइ[4] "नरवर किद्ध जुहार ।
वारू लोक विमासण भरिउ, शिर नामी आघउ संचरिउ ॥११४॥

जे आपी अधिकारी हाथ, ते तिवार मुहि[5] लई नरनाथि ।
ते रणि रहइ जे हुइ लाजणउ, तेजी तुरय[6] न सहइ ताजणउ॥११५

[उत्तम-जन लक्षण]

संपदि हरिख न विपदि विषाउ, ए आगइ सतपुरिस सभाउ ।
जोउ करमनूं कारण आम, त्यजी[8] राज वनि जाई राम ॥११६॥

एक दिवस प्रभि किउ पमाउ, बीजइ सूदा रूठउ राउ ।
एकि राउल नइ बीजूं रान, सूदानइ मनि सहू समान ॥११७॥

---

१. 'जे' मा २. 'प्रीछइ' मा. ३ 'कारण' मा. * टूक ११३ष. प्रति० मां नथी. ४. 'जातउ' मा ५. 'लीधी' मा ६. 'किम वाहइ' मा. ७. 'राजद्वार मति' ८. 'प्रति' मा. ।

सभा-समाहि जे बोलिउ राइ, ते सूदउ जाणीनइ जाइ।
एउ सुपुरिस-नइ संबल साथ, एक हिऊं नइ बीजउ हाथ ॥११८॥

[सदयवत्स मातृ-वंदना]

वलीय वीर-मनि वसिउ विचार, जातउ जणणी करूं जुहार।
जस उअरि वसिउ दस मास, पाय प्रणामूं जणणी तास ॥११९॥

(गाहा)

जस ऊअरि वसीअ वासं, नव मास दिवस अट्ठ अग्गलिया।
पय पणमवि जणणी, ताम करिमु निवास विदेसम्मि ॥१२०॥

(अडयल्ल)

जई लागु जणणी-तणा पाय,
आसीस-वयण उच्चरइ माइ।
"कहि पुत्त! अज्ज चलचित्त कांई ?"
"अम्ह ऊपरि कीय[1] कुदिट्ठी राइ"॥१२१॥

[पिता रोष कथन]

"मइं" मारिउ आसण-तणउ मत्त,
तीणि कज्जि कोप बहु धरइ तत्त।
जे पामिउ कल्लि दीउ पसाउ,
ते सयल अजूता जुत्त आउ ॥१२२॥

(दूहा)

आयस राउ-तणा पखइ, जे मइं कीधू आल।
बाल-स्त्री ऊगारिवा, कुंजर सिरि करवाल ॥१२३॥

एक अबला नइ बंभणी, गब्भिणि गजि आरोडि।
जु देखी ऊवेखीइ, तु क्षित्री-कुलि[2] खोडि ॥१२४॥

१. 'कुदिट्ठ' अ. २. 'खित्ततणं' अ. 'आ' मा १ लीटी वधारेः 'त पामिउ कालि पसाउ दाउ, ते आज सयल हूऊ जिवाउ'.

बन्धेवा नइ कारणि, बहु माणस मेल्या राइ।
जउ मनि मारण चीतवइ, तउ करि केटयउ जाइ ? ॥१२५॥

[अन्यायी राजाज्ञापालन मूर्खता]

राउ-अन्याय जिसा सहइ, बेटा वधव बाप।
प्रहि ऊगमि तीह पहु-तणइ, मुहि दीठइ बहु[2] पाप ॥१२६॥

एकि अस्या छइ इह-तणइ[3], साहसवन्त सुभट्ट।
जे रणि सगमि अ गमइ, गुडीय महागज घट्ट ॥१२७॥

'रूठइ[4] जीवन जोखिम-ह, त्रूठइ पयड पसाउ।
[सदय भणइ] स्वामीपणा, तीह जूठउ जस-वाउ ॥१२८॥

जस असख सीआल सिउ, इक्क सरोवरि सीह।
पीइ जल जमला[5]-रहीय, लोपी न सकइ लीह ॥१२९॥

एक भलेरू भोगवइ, राजा-पाहिइं रज्ज।
अधिपति-पणु एतइ अधिक, जे सहू मानइ मज्झ ॥१३०॥

राय-धम्मु तिहि[6] रायनइ, रूडू[7] दीसइ रज्जि।
जे अन्याई[8] अप्प-पर, लेखइ समउ सहज्जि" ॥१३१॥

[माता वचन]

"देसाउरि दिन केतला, जाइस रूठइ राइ ?।"

[सदयवत्स वचन]

"देवि ! म[9]चिंतिसि दोहिलउ, वलिसु वहिलउ माई !" ॥१३२॥

---

१. 'वे बाधवा' प्रा. २. 'हूई' प्रा. ३. 'प्रभु-तणइ' प्रा.
४. 'रूठइ भेपिम नारि, तूठई नही य' प्रा. ५. 'जमला रहिया' प्र.
६. 'तिहराउ नउ' पा. ७. 'रूडइ-रायइ' प्रा. ८. 'मन्याय' ९. 'मरिसि' पा.

मवरिए मूं आले[1] पाडिऊं,[2] कडूमां कायन कुमारि।
पूजी धर-मंडनि पटी, जाणे[3] रोव ग्रमारि ॥१३३॥

[माता-दुःग-मूर्च्छा]

बेटा-केरे बोलडे, मा मनि वसिउ विमाद।
उत्तर आपेवा[4] भणी, नवि नीमरिउ साद ॥१३४॥

चित्ति चटकउ नीसरिउ, गहवर गनइ न माइ।
[5]ऊमासे नीसासडे, जाणे जीवी जाइ ! ॥१३५॥

पाला-केरे वीजणे, वारिणि-[6] छंटइ वाउ।
मइं-हत्थिइं सूदउ करइ, जणणी जीवेवाउ ॥१३६॥

[7]महूरति एक जि माउली-मनि मूरछा जि भग्ग।
"जावा दि जणणी ! भलूं:" [बेटउ बोल्लण लग्ग] ॥१ ७॥

[सदयवत्स वचन]

"जाऊं तउं जीवी ऊगरूं, रहूं तउ[8] रूसइ राउ।
फहि,[9] जणणी ! किम सांसहइ, ए एवडउ अन्याउ ? ॥१३८॥
[10]मंत्र मइलउ मती-अण, जे पइसिउ पहु-कन्नि।
सीण माडी ! मूं मारिवा, राउ सोधिसिइ रन्नि ॥१३९॥

(गाहा)

सं तं जपति कहा, दूअरण होइ सव्व सारिच्छा।
जम्मंतरे न होइ, जं नवि होइ जम्म'-[11]जम्मेहिं ॥१४०॥

---

१. 'सांभल्यु' प्रा. २. 'करूउ' प्र. ३.'जोवीं जइ' प्र. ४. 'ग्रारेवा छणउ' प्र. ५.'तं समलि सूदामही,जाण जणुणीम मागे' प्र. ६.'बीजो' प्रा. ७. 'घमूरति जणणी जवा दिइ नहीं' प्र. ८. 'इमइ' प्रा ९ 'रहइ माडी' १०. 'मंत्री मयल्लु-मइ-मलिण' प्रा ११. 'जमुवेहिं' इ.।

नह मास भेय जिणाणी,[1] दोगुहलो हट्टि-खंडण समत्थो ।
तह विहि मज्झ वलयउ, नमो खलो नहि रण-परिच्छो ॥१४१॥

(दूहा)

भद्दा भूप भूयगमह, ए मुह[2] दुहिलां हुँति ।
जे नवि जाणइ जालवी, ते वहिला विणसंति ॥१४२॥

[माता-दत्त शकुन-भोजन]

कारण जाणी कुमरनूं, वईसण मंडिउ मंड ।
सउण-भणी सीरामणी, प्रीस्यूं[3] दही अखंड ॥१४३॥

मट्ट[4] सुणवि धणि धवलहर, अंतरि[5] जोयुं जाम ।
कंत करइ सीरामणी, सासू-मुह थिऊं स्याम ॥१४४॥

जणणी जिमाडीय[6] अप्पिऊं, बीडूं बिहु करि लिद्ध ।
सदयवच्छ सामलि-तणी, भलो भलामण दिद्ध ॥१४५॥

[महयात्रा-गमनोत्सुका पत्नी सामली]

मा मोकलावी चल्लिउ,[7] असिमर[8] लेई हत्थि ।
पाछलि[9] नेउर सर सुणी, सामलि आवइ सत्थि ॥१४६॥

पय खंचवि[10] प्रमदा कहिउं,[11] "देवि ! म धरिसि दुहिल्ल ।"

[सूदा-वचन]

"सुणि सामलि!" [सूदउ भणइः] "आविसु वली वहिल्ल ॥१४७॥

(मडयल्ल)[12]

मनि अप्पणइ मुणिन मनि माणिणि ! ।
किय पाय पयि पुलिसि ? श्रो माणिणि ! ।

---

१. 'जणणीदो मुद्ध सोहृटि' इ. २. 'चुह' म. ३. 'दीधूं' मा. ४. 'सूर' मा. ५. 'उतरि ऊऊं' म. ६. 'यमाडो' ७. 'साचयुं' मा. ८. 'असिवढग' ९. 'दिण झिणाइ' मा. १०. 'पांची' मा. ११. 'कहई' म. १२. 'पान' म.

हूं गय-गामिणि ! गमिसू[1] गिरी-कदरि,
रहि रामा ! [2]अमिय-लोयणि ! मदिरि" ॥१४८॥

[सामली-वचन]

"जे सूर नर साखि करी, वापिइ बाधिया वेह ।
सुणि सूदा ! [सामलि भणइ.] ते किम त्रूटइ छेह ? ॥१४९॥

[नर-विहीन नारी-प्रतिष्ठा]

नर [3]विण नारी [4]एकली, लग्गइ कोडि कलक ।
अगगइ एक मइं संसहिऊ, मुख-उप्पम जि मयक ॥१५०॥

नर-पासइ नारी-[5]तणइ, राउल [6]जाणइ रत्न ।
रत्नि जि प्रीय-सरिसी [7]धुलइ, राउल मानइ मन ॥१५१॥

शशि-विण निशि, दिशि दिवस-विणु, जिम नदी विणु-वारि ।
[8]तिम सूदा ! [सामली भणई:] नर विणु न सोहइ नारि ॥१५२॥

माइं वाप वंधव [9]बहिनि, पोढी पीहर वेडि ।
[10]मइं मेल्ही जस- कज्जिहिं, कत ! न छडूं केडि ॥१५३॥

जे [11]सोहिलइ 'स्वामी' भणइ, दोहिलइ छडइ पूट्ठि ।
नारी रूपी निशाचरी, जाणे [12]देव ति दुट्ठि ॥१५४॥

स्वामी ! सुहिल्ले दीहडे, सहुको वलगइ सत्थि ।
भाई [13]भी छति भामिनी, जे आदरइ [14]अणत्थि ॥१५५॥

---

१. 'भामिसु' २. 'मृग लोयणि' भा ३.'पापई'भा. ४. 'तणइ' भा. ५. 'सनइ' भा. ६ 'मानइ' भा. ७, 'भलू' भा. ८. 'सुणि' भा. ९ 'बहू' भा. १०. 'जेह्न कारणि मइं परहरी' भा ११. 'सुहिलइ दोहडै दिइ' दुहिल्लिइ'भ. १२.'देवविघ' भा. १३ 'भोछइ' भ १४'मत्थि' भा.

[सदयवत्स-सामली प्रयाण]

अणबोलिउ चालिउ चतुर, नारी-[1]निश्चउ जाणि ।
सामन्नि सासू - पय नमी, साथिइ थई सुजाणि ॥१५६॥
पय लगता प्रीय जणाणि, "होयो अविचल-आयु" ।
एहि विवछिनू वयण सुणि, अमृत आरोगु माई[2] ॥१५७॥

(छंद पद्धडी)

गय-गमणी रमणी तुर गति गमति,
[3]झड अनिल लग्ग अ गिहि नमति ।
पय पकजि लक [4]तलि वडवडनि,
पति भत्ति चित्ति [5]धरि चडवडति ॥१५८॥

[मावलिगी सामली रूप-वर्णन]

जस जघ-जुअल वर रभ-थभ ।
[6]पिथल कि उरथल करिण कु भ ॥
कर पल्लव नव-शाखा अशोक ।
सोवन्न वन्न साम-शरीर रोक ॥१५९॥
मुख कमल अमल ससिहर-सरिच्छ ।
निलवट्टि तिलय ताडीक मच्छ ॥
कु डल कि चक्रि पायार मार ।
कोसीस निकर परिगर अपार ॥१६०॥
तिल फुल्ल[7] नास-सजुत्त मत्त ।
[8]त्रुटि दाडिम दत, अहर राग-रत्त ॥
अ जन सह खजन सरिस नेत्त ।
सीमत कुंत किरि [9]मयर-केत्त ॥१६१॥

---

१ 'निश्चल मन अ. २. 'ढ़ उ' अ. ३. 'कल अनल' आ. ४. तिचउ वडति' आ.५.'करि पउवडति' अ ६. 'प्रच्छल' आ. ७.'कुसुम नासिका' आ. ८. 'तुडि' आ. ९. 'मयरि' आ.

[सहनशील सामली]

[1]सामलि चालती मन रगि, भूखी निसी नवि जाणइ[2]ग्र गि।
मारगि नईं-नीझरण-निनाद, मधुरा मोर सुहावा साद ॥१७७॥

तरुग्ररु-तणइ [3]तनि सीली छाह, वाट-घाट विनगइ वर-वाह।
कंद [4]मूल फल ग्र व [5]ग्रहार, इणि परि गम्या दिवस दसवार॥१७८

[निजल वन-प्रयाण]

पुहुता परवत पइली तीर, ग्रागलि खारू रण, नही नीर।
सीसि सुर, तलइ वेलू ताप, सार्वालिगि [6]ग्रणि निसा प्रलाप ॥१७९॥

[सामली-प्रश्न]

(दूहा)

"नाह! कुर गा[7]रण थलि, जल विण किम जीवति ?"।

[सूदा उत्तर]

"नयण-सरोवर प्रीति-जल, नेह-नीर पीयति' ॥१८०॥

[सामली-प्रश्न]

"रत्ति न दीठु पारधि, ग्र गि न [8]लागु वाण।
सुणि सूदा! [सामलि भणइ] इह किम गया पराण ?' ॥१८१॥

[सूदा उत्तर]

"[9]जल थोडू सनेह घण, तरस्या वेऊ जणाह।
'पीय' 'पीय' करता सूकी गउ, मूग्रा दोय जणाह!' ॥१८२॥

---

१. 'चालतो रनि वनि मन रगि' ग्र २. भगि' ग्र. ३. 'तीरि' ग्र ४. 'फूल' ग्रा ५. 'इपार' ग्र ६. 'तव' ग्रा. ७. ग्रा ८.'रन्नि न देखू' ग्रा. ९ 'जणि' ग्रा

[तृषातुर-सामली]

(चउपई)

जिम हीमइं [1]कमलिणि कुरमाइ, जिम वसति परजालइ जाई ।
तिम जल विण सामलि-सरीर, [2]देखी करइ विमासण वीर ॥१८३

[अद्भुत प्रपा-दर्शन]

दह दिसि [3]निरखइ नयणे जाम, पाधरि परव भरइ स्त्री ताम ।
ते देखी नर हरखिउ हीइ, इसी [4]वाट विसमी न रहीय ॥१८४॥

वहिलउ थई पुहुतउ तीणि ठाहि-'जस भय-भंग नही मन मांहि ।
ऊभी अबला दीठी द्रेठि, माडया गोला [5]मांडव-हेठि ॥१८५॥

शीतल जल सरवइं सवि ठामि, जीणि दीठइ मनि [6]भाजइ श्राम।

[सूदा-वचन]

[7]"माई" भणवि शिर नामइ वीर, वहिलउ थई [8]नइ मागइ नीर१८६

"बाई ! वार म लाइ, स्त्री श्रीसी," तीणिइं बोलइ ते वईअर हसी ।
आऊं [9]अन-जाण पहुतउ आघ, जाणे किरि वउलावइ बाघ ॥१८७

[माता हरसिद्धि-प्रपा]

इणइ परविइं कीजय पाप, आई [10]'बाई म बोलसि बाप ।
पाणी पलीय न पाइ कोइ, एह परव हरसिद्धिनी होइ" ॥१८८॥

'लीजइ लोही दीजइ नीर', तिणि वातिइं [11]विलकिलिउ वीर ।
"देस्युं लोही, वार म लाइ, प्रमदा त्रिसीय पाणी पाइ" ॥१८९॥

---

१. 'पोइणि' अ. २. 'पेखी वयल विमासइ' मा. ३. 'नयणि निहालइ' मा. ४. 'वात विमासी' मा. ५. 'मंडप' मा. ६. 'हुव विश्राम' मा. ७. 'शरमनी नइ साहसवीर' मा. ८. 'नर' म. ९. 'मापन जाणइं माघ' मा. १०. 'माइ म बोलसि' मा. ११. 'व्याकुलीउ' मा.

नार वार करवउ करि भरी, सार्वलिगि साहसी संचरी।
जउ [1]तरणी फीटउ निप-ताप, "वोल्न आपणउ पालिन वाप."॥ १६०

[मूदा-रक्तदान प्रयत्न]

नर [2]नीसक, न वयणि विरग, अणीआलिय मुहि ऊजिउं अंग।
मच्छरि चडिउ छेदइ नस मास, न न्हइ लोही-तणउ निवास ॥१६१

[3]वामइं करि सिर साही वेणि, जिमणइ जिमन्दड ताकी तेणि।
जउ मस्तक [4]वाढइ मन-शुद्धि, तउ हसी हाथि[5]साहि हरसिद्धि ॥१६२

[प्रसन्न हरसिद्धि-वचन]

करि [6]झालीनइ कारण कहीः "साहसीक तू सूदउ सही।
अं मइ जोइऊ ताहरूं माह, तूं [7]अजीह ऊजेणी-नाह ॥१६३॥
ऊजेणी माहरू अहिठाण, बीजु पाटणपुर पहिठाण।
हूं वउलावा आवी वीर !, जोवा ताहरूं साहस धीर ॥१६४॥
हूं जोगिणि तूठी हरसिद्धि, मागि मागि मनवंछित [8]रिद्धि।
ताहरा [9]पवरिस नही कोइ पार तूं सूरा सविहूं-शृंगार" ॥१६५

[सदयवत्स देवी-वर-याचना]

"जूअ संग्रामि ठामि [10]बहू जइत्त, [11]परमेसर सू पामे पहित्त।
प्रभु ऊठीनइ लागउ पाइ, मया किह्लारइं म [12]टालिसि माई !" ॥१६६

[वर-प्रदान]

काली कक लोहनी छुरी, [13]साथिइ काली कउडी खरी।
ए बि आप्या 'वेटा' भणी, 'जय' जंपवि चाली जोगिणी ॥१६७॥

---

१ 'तिति नपानु भागु ताप' २ 'नीसक्पण नइ नव रग, भणी भासी गुहि उरइ.' म. ३.'वाम करिइ फरि' भा. ४ 'छेदइ मनसिद्धि' भा. ५. साहिउ'भा. ६.'सारी नइ' भा. ७ 'मभंग' म. ८ 'सिद्धि' भा. ९.'साहस न एहूं' भा १०. 'बहु' भा. ११. 'परमेसर तू पामे' भा. १२. 'मेल्हसि' भा. १३. 'बोजो भापो' भा.।

[1]जोगिणी वनी, टलो ते परख, हुई वीर-मनि विमणी वरख]
जे भव भगति न लाभइ सिद्धि, ते हेला [2]तूठी हरसिद्धि ॥१६८॥

रलीयाइत थिउ चालिउ राउ, वनिता चित्ति वसिउ विपवाउ।

[पति-दुःख वारण समली-क्षमावाचना]

"करूंअ वीनती वे कर जोडि, प्री ! माहरी पग-त्रधण छोडि॥१६६॥

तइं [3]मूं पाणी पीवा काजि, मस्तक ऊडविउ महाराजि ।
मइं आविइं गुण होसिइ एह,आगइ दूख,नइ सूकिसि देह!॥२००॥

[पीहरमा मूकवा विनति]

[4]पाउ करी मू [5]पीहरि आवि,मू मेल्ही नइ स्वामि ! सिधावि ।
जाता कोइ न करइ [6]पुचार, वली सम्हारइ करयो सार ॥२०१॥

[अवलाए चीतविउ उपाउ], तिहा [7]आव्या तउ राखिसिइ राउ।
दाखिन पाडी देसइ देस; [8]रहिसिइ तिम राखिसिइ नरेस" ॥२०२॥

वनिता-तणा वयण [9]नय-वाच, सदयवच्छि ते मान्यो साच ।
"[10]मेल्हिमु लेई पाद्रि पहिठाणि,जई [11]ऊलगि सु अवरि अहिठाणि२०३

ऊलग लेई नइ आणू करू, ता लग स्त्रीइ-स्यू केम्थउ फिरूं ? ।
जिहां उलगस्यिूं लहिसिउं तिहां लाख,
प्रमदा पीहरि न [12]मेल्हउ पाख" ॥२०४॥

प्रमदा-मनि पीहरनूं राज, [13]चितइ कत अनेरू काज ।
'मनि विहु जणा बोल जूजूउ', ए ऊखाणउ साचउ हूउ ॥२०५॥

१ 'योगिणि तणो वुनी जु' अ. २.'तूठी' आ. ३.'मू' अ. ४.'मया' अ. ५.'मझ' आ. ६.'ऊचार, वली वहिली' अ. ७. 'गया' आ. ८.'जिम पण' अ. ९. 'मनि' आ. १०. 'लेई मूकिस पाटण' आ ११. 'उलग्योड' अ १२.'मूकिस' अ. १३. 'कंतह मनि' अ. ।

नारि वारि करवउ करि भरी, सावलिगि साहसी संचरी ।
जउ[1] तरणी फीटउ निर-ताप, "बोल आपणउ पालिन वाप."। १६०

[सूदा-रक्तदान प्रयत्न]

नर [2]नीसक, न वयणि विरंग, अणीआलिय मुहि ऊजिउ अंग।
मच्छरि चडिउ छेदइ नस मास, न लहइ लोही-तणउ निवास ॥१६१

[3]वामइ करि सिर साही वेणि,जिमणइ जिम-दड ताकी तेणि ।
जउ मस्तक [4]वाढइ मन-शुद्धि,तउ हसी हाथि[5]साहि हरसिद्धि ॥१६२

[प्रसन्न हरसिद्धि-वचन]

करि [6]झालीनइ कारण कहीः "साहसीक तू सूदउ सही।
म्रे मइ जोइऊ ताहरू माह, तूं [7]अजीह ऊजेणी-नाह ॥१६३॥

ऊजेणी माहरू अहिठाण, बीजू पाटणपुर पहिठाण ।
हू वउलावा आवी वीर[8], जोवा ताहरू साहस धीर ॥१६४॥

हू जोगिणि तूठी हरसिद्धि, मागि मागि मनवंछित [9]रिद्धि ।
साहरा [9]पवरिस नही कोइ पार तूं सूरा सविहूं-शृ गार" ॥१६५

[सदयवत्स देवी-वर-याचना]

"जूअ सग्रामि ठामि [10]बहू जइत्त, [11]परमेसर सू पामे पहित्त।
प्रभु ऊठीनइ लागउ पाइ,मया किह्लारइ म[12]टालिसि माई !" ॥१६६

[वर-प्रदान]

काली कक लोहनी छुरी, [13]साथिइ काली कउडी खरी ।
ए वि आप्यां 'वेटा' भणी, 'जय' जंपवि चाली जोगिणी ॥१६७॥

---

१ 'तिति अपानु माणु ताप ' २.'नीसकपणु नइ नव रंग, अणी आसी मुहि उरइ.' अ. ३.'वाम करिइ करि' आ. ४ 'छेदइ मनसिद्धि' आ. ५. 'साहिउ'आ ६.'सरी नइ' आ. ७ 'मभंग' अ. ८ 'सिद्धि' आ. ९.'साहस न लहूं' आ. १०. 'बहु' आ. ११. 'परमेसर तू पामे' आ. १२. 'मेल्हसि' आ. १३. 'बीजी आपी' आ.।

[1]जोगिणी वनी, टलो ते परव, हुई वीर-मनि विमणीं वरव]
जे भव भगति न लाभइ सिद्धि, ते हेला [2]तूठो हरसिद्धि ॥१६८॥

रलीयाइत थिउ चालिउ राउ, वनिता चित्ति वसिउ विपवाउ ।

[पति-दुःख वारण सामली क्षमायाचना]

"करूं अ वीनती वे कर जोडि, प्री ! माहरी पग-अचरण छोडि॥१६६॥

तइ [3]मूं पाणी पीवा काजि, मस्तक ऊडविउ महाराजि ।
मइ आविइं गुण होसिइ एह,आगइ दूख,नइ मूकिसि देह॥२००॥

[पीहरमां मूकवा विनति]

[4]प राउ करी मू [5]पीहरि आवि,मूं मेल्ही नइ स्वामि ! सिधावि ।
जाता कोइ न करइ [6]पचार, वलो सव्हारइं करयो सार ॥२०१॥
[अवलाए चीतविउ उपाउ], तिहा [7]आव्या तउ राखिसिइ राउ।
दाखिन पाडो देसइ देम, '[8]रहिसिइ तिम राखिसिइ नरेस" ॥२०२॥

वनिता-तणा वयण [9]नय-वाच, सदयवच्छि ते मान्यो साच ।
"[10]मेल्हिसु लेई पाद्रि पहिठाणि,जई [11]ऊलगि सु अवरि अहिठाणि२०३
ऊनग लेई नइ आणू करू, ता लग स्त्रोइ-स्यू केन्थउ फिरूं ? ।
जिहां उलगस्यूं लहिसिउं तिहां लाख,
प्रमदा-पीहरि न[12]मेल्हउ पाख" ॥२०४॥

प्रमदा-मनि पीहरतूं राज, [13]चितइ कत अनेरूं काज ।
'मनि विहु जणा बोल जूजूउ', ए ऊखाणउ साचउ हूउ ॥२०५॥

---

१ 'योगिणि तणी बुनी जु' अ. २.'तूठी' आ ३.'मू' अ. ४.'मया' अ. ५.'मझ' आ. ६.'ऊचार, वली वहिलो' अ ७. 'गया' आ. ८ 'जिम पण' अ. ९. 'मनि' आ. १०. 'लेई मूकिस पाटण' आ ११. 'उलग्योइ' अ १२.'मूकिस' अ. १३. 'कउह मनि' अ. ।

करड' वात वे चालइ वाट, छाँडिउ' रण्ण नइ छाडग्रा घाट ।
आगलि ऊमटिउ' आराम, जिहा छइ सरल सदाशिव-ठाम ॥२०

जिणि वनि [1]बारह मास वसंत, दीसइ कोइ न [2]पामइ अन्त ।
नही पापीया-जीव प्रवेस, इसी [3]अछइ मरज्याद महेस ॥२०७॥
मोर मधुर-सरि करइ निनाद, कोइलि-[4]तणा सोहावा साद ।
सुसर शबद सूडा सालही, भमइ' भमर [5]माल्हइ मालही ॥२०८॥

[6]सुरही सीत सू आला वाउ, जे लागा तनि टालइ ताउ ।
सवे सदा-फल रूडा रूख, [7]जेहनइ दरसणि भाजइ भूख ॥२०९॥
जिणि वनि योगी-[8]यति विश्राम, जिणि दीठइ [9]मनि भाजइ श्राम
[10]पुहुतउ वीर तेह वन-माहि, हूउ हरिख बिहु मन-माहि ॥२१०॥

[वन-श्री वर्णन]

(छंद पद्धडी)

तिहा दिट्ठ तरुअर अति [11]कमाल ।
जावित्तीय जाईफल लज तमाल ॥
वनि अगर तगर चदन [12]किवार ।
ककोल कलब घनसार सार ॥२११॥

कदली दल कोमल फन [13]अलव ।
सहकार फणस फोफलि [14]बुलव ॥
तरुअर सिरि गुण गहगही गेल्लि ।
नवरंग निरूपम [15]नाग-वेल्लि ॥२१२॥

१.'बारइ' आ. २. 'चारवीद' मा. ३.'मायादी छइ' आ. ४.'नादि' आ
५ 'मालइ ते मही' मा. ६.'सरही' आ. ७.'जिणि दीठइ मनि' आ.८ 'तणा'
आ. ९ 'मुनि' आ. १०. 'पुहुता ते बेहु' प. ११ 'अति भमाल' आ.
१२ 'तिवार' प्र.१३. 'गलंब' आ. १४ 'कुलंब' आ. १५.'नाग वेलि' आ ।

[1]महमहइ मलय मालय महुल्ल ।
सेवत्ती जत्ती बकुल वेल्ल ॥
कणवीर कुसुम श्रीखंड सार ।
रयचंपु [2]पाडल जूहीय अपार ॥२१३॥

केतकी अट्ठदल कमल-वृंद ।
कृष्णागर वालु करल कंद ॥
वंकडीय कुलीय पयडीय पलास ।
[3]चिहु पखि वन पाखलि ति वांस॥२१४॥

तिहि-मज्झि सजल सरवर [4]सुरंग ।
उत्तुंग पालि पूरीय तरंग ॥
तिहां त्रिविध कमल कैरव कमोद ।
रस-[5]रुद्ध हंस पामइ प्रमोद ॥२१५॥

तरवरइं तीरि वहु वतक कक्क ।
चिहुं पखे [6]कुरलइ चक्कवक्क ॥
नवकुंड अमीय उप्पम ति नीर।
शीतल सुअच्छ गहिरूं गंभीर ॥२१६॥

[कैलासपति-मंदिर वर्णन]

[7]तस अग्गलि उमयापति-अवास ।
कैलास छंडि जिणि कीधु वास ॥
भड निवीड तुंग तोरण पयार ।
अपुव्व पुप्प दीसइ दूआर ॥२१७॥

---

१. 'महमहन्ति अति मलया अमाल,फूल सेवंत्री जाती विकल वास' अ. २. 'पाउलनु नहीं' आ. ३. 'वन पाखलि विहुपखि दाव-निवास' आ. ४. 'मज्झ' आ. ५, 'लीद्ध' आ. ६. 'करलइ' आ. ७. 'तिहिं' आ. ।

थिर पथरि मंडीय थोर थंभ ।
पूतलीय-[1]रूप्प विभ्रम कि रंभ ॥
मंडपि गवक्ख चिहुँ पक्खि चार ।
मणिमइ सलाका सिखर सार ॥२१८॥

कणयमइ दड ऊडइ सहित्त । ધ્વજપટ
लहलहइ धवल धज वड विचित्त ॥
[3]आसन्नउ आगलि सोहइ सड ।
પ્રતિહાર पड़िआर [4]नदी चडी प्रचड ॥२१९॥

[सूदा-सामली मन्दिर-प्रवेश]

(चउपई)

निर्मल नीरि पखाल्या पाउ, [5]मानिनी स्यूं मन-रंगिइं [6]राउ ।
जौं जाइ जगदीसर भणी, [7]देखी मडपि महिला घणी ॥२२०॥

[हरगोरी-प्रणाम]

बाहरि-थिकां बे जोडइ हाथ, प्रणमिउ प्रभु जडधर जगनाथ ।
गरूउ गजर गभारा-मांहि, अबला एक तिहाँ ईस आराहि ॥२२१॥

वारू वन ते पेखी मनि, आणदिउ ऊजेणी-धणी ।
पहिरी धोती सबल सांचरिउ, राणी-सरसु रा नीसरिउ ॥२२२॥

सामली पूछिउ [8]सूदा-पांहि, वनिता-वृंद [9]महावन मांहि ।
प्रीय ! प्रासाद-तणइ जालीइ, [10]ए कारण निरतिइ निहालीइ॥२२३

१.'अनोपम भ्रमति' मा. २.'कनक मचिइ कलस दंड' आ. ३.'आवास' आ. ४.'तन सोहइ' मा. ५.'प्रीय मानिनिस्यूं' मा. ६.'जाई' म. ७.'पेखइ' मा. ८.'प्री पासि' मा. ९.'हृदवामी' म १०. 'कुतिग नितविइ' मा. ।

[राजकन्या लीलावती दर्शन]

(गाहा)

शिव जोय समे उपवासत्त, ये मज्झि रयणि सर-मज्झे ।
जल-केलि करण मुक्क, नीरस तव्‍इ नील [1]पगुरण ॥२२४॥

तह पगुरण-प्रभावे, पल्लवियउ सुक्क तरुअरो तिवारो ।
तिणि पल्लवेण पुज्जीय शिव, वन्छति सदय भत्तारो ॥२२५॥

अवत्थयाय बालावत्थ, गहिऊण सुक्क वृक्षाण ।
पिक्खेवि रूवराई, पणमिसु सुपल्लवा गौरी ॥२२६॥

[सदय-पति-प्राप्त्यर्थ षोडशोपचार पूजन]

(चउपई)

गलते [2]कृत्तिका किद्ध सनान, धवली धोति-तणू परिधान ।
निर्मल नीरिइ भरवि भृंगार, ढालइ ईश अखडित धार ॥२२७॥

कापडि-स्यूं आलूंछइ अंग, वावनि चर्दान घरचइ चंग ।
बहु बिल-पत्र कुसुम करि लेउ, रचइं विविध-परि [3]पूजा देउ ॥२२८

कस्तूरी-[4]सिउ चदन घनसार, धूप अगर-तणउ उपचार ।
नव नैवेद्य [5]अनइ आरती, करइ कन-कारणि आरती ॥२२९॥

सवे समी रूडी रुद्राख, जपमाली स्यूं जपइ सु लाख ।
नीम न चूकइ निश्चउ घणउ, [6]लय अखंड लीलावई-तणउ ॥२३०

[लीलावती-सखीमंडल-कृत गीत-नृत्य]

आपी वापिइ [7]सोहलो सही, सवे समाणी वय सोलही ।
तीणि अवसरि ते माडइ [8]रंग, वाजइ गुहिरा मधुर मृदंग ॥२३१॥

१ ट्रक २२४ थी २२६'आ'. मा नथी. २.'करते' आ. ३. 'तेउ' आ. ४. 'घरत्ले' आ. ५. 'करइ' आ. ६. 'लिम सइ' आ. ७. 'साधिइ सोलसो वइ समाणी सवे.' आ. ८ 'अंग' आ.

भूंगल भेरि तिवलि नइं ताल, वाजइ वंम [1]किरडि कमान।
५ रूपक राग रगि आनवइ, चतुर-तणा ते चित्त चालवइ ॥२३२॥

हस्तक हाव भाव वहु धरइ, नव नव पाडि पागनि करइ।
आपापणी कला [2]भूटवइ, जे तपि खरा तेहनइ खूटवइ ॥२३३॥

तास भगति आणदिउ ईश, वछिन-दायक जे जगदीश।
तीणइ काई कीउ उगाउ, जिणइ आणिउ ऊजेणी राउ ॥२३४॥

[सूदा-प्रति सार्वलिगी-प्रश्न]

सार्वलिगि पूछइ पति-रेसि, तुय पहुती प्रासाद-प्रवेसि।
जई प्रभु कारणि करइ प्रणाम, अवला [3]मवि आवरजी ताम ॥२३५

स्त्री एकली अनोपम रूप, ए काइ शिव-तणू सरूप ?।
दीसइ नही सखीय[4] न साथ, ते कारण जा गइ जगनाथ ! ॥२३६॥

मइ को नागलोकनी नारि ?, कइ को रूडी राजकूआरि ?।
कइ कहि अमरलोकनी एह ?, सवे सुहामणि पडिउ संदेह ॥२३७॥

[सार्वलिगी-प्रति लीलावती-सखी-प्रश्न]

तीह-मांहि "सायिइ थई एक, जे [5]बूझइ वोलिवा विवेक।
पूछी वात विनय-सिउं तेणि, "कहु बहिनि! दिसि आव्या केणि?" ॥२३८

[सार्वलिगी-उत्तर]

"आव्या दिसि ऊजेणी-तणी": राजकुमरि सा वाणी सुणी।

[लीलावती-ध्यानभंग]

सखेपइ शिव करी प्रणाम, लीलावई लय छाडिउ ताम ॥२३९॥

---

१. 'परिहि' प्रा. २. 'प्रगटवइ' प्रा. ३. 'माणूजी' प्रा. ४ 'तम' प्रा. ५ 'ऊभी' प्रा. ६. 'ऊजवि' प्रा.

सार्वलिंगि-सिउं सांई लिद्ध, बहु-मान मन-शुद्धिइं दिद्ध ।

[लीलावती-प्रश्न]

'बहिन' भणीनइ साहो बांहिः "किम एकला पधार्यां आंहि ?"॥२४०

[सार्वलिंगी-वचन]

"नही एकलां, अछइ भल साथ, हूँ जुहारण आवी जगनाथ ।
तुम्हे तुम्हारू कारण कहु, पाखलि अबला ऊवर सि रहु ? ॥२४१॥

राजकुंअरि कुंआरी अजी, आवी राति राउलनइ तजी ।
कुण तम्ह माय बाप ? कुण ठाहि ?
कइ कारणि तू ईश आराहि ?" ॥२४२॥

सार्वलिंगि जउ [1]पूछइ सही, लीलावती तद कारण कहइ ।

[लीलावती-वचन]

"पूहुर पय मुझ पीहर वेडि, हूआ छः मास वसंतां वेडि ॥२४३॥

(गाहा)

धरवीर-[2]राउं धूआ, मुहुसाले मुज्झ राउ नरवीरो ।
वर वीर सदयवच्छो, वछूं शिव-पुज्जिय अयि सहीए ! ॥२४४॥

कलिजुगि.[3]कामुक-तित्थो, पत्थंतह [4]अत्थसारए सयलो ।
खट मास अवहि [5]अग्गइ, मण-वछिअ दिइ माहेसो ॥२४५॥

(दूहा)

ते मूं आज अवढडी, पूगी [6]शिव पूजंति ।
सांझ [7]समइ सूदउ मिलइ, कि [8]मूं मिलइ कियंति" ॥२४६॥

---

१. 'राउ लगनि' मा. २. 'धीग्रा' मा. ३. 'कामिक' मा. ४. 'सारइ सयल लोयस्मा' मा. ५. 'गमए' मा. ६. 'शवि' मा. ७. 'वरउ' म. ८. 'मूं मिलइ उयंत' म.

[सावलिंगी-प्रश्न]

सावलिंगि ते संभली, पूछइ [1]वयण विसेस ।
"तइं किहि दिट्ठउ,किहि [2]सुणिउ, सही ! ए सदय नरेस ?"॥२४७॥

[लीलावती-वचन]

"रायंगणि राजा-तणइ, बोलइं वंदिण-वृंद ।
धीर-भणी ते वन्नवइ, सही ! ए सदय नरिंद ॥२४८॥

वीर [3]माहारउ माउनउ, तात वदीनउ वीर ।
वीर भणी सूदउ वरू, कइ दवि दहूं शरीर ! ॥२४९॥

जिम जिम पाणि-ग्रहण-नउ, अवसर जाइ श्रजुत्त ।
तिम तिम माय-ताइ-[4]नइ, चिंता चित्त बहुत्त ॥२५०॥

माय बाप सज्जन सविहूं, वात विमासी एइ ।
बारू माणस मोकनी, बईठा बेटी देइ ॥२५१॥

कुमर किह्लारइं न श्राविसिइ, परणेवा परदेसि ।
तउ हासारथ होइसिइ, इम चीतवइ नरेसि ॥२५२॥

राय राणा भूमी भला, मागी रह्या महीस ।
माय बाप सहू बूझवी, सही ए सही न रीस[5] ॥२५३॥

तीणि कारणि तप श्रादरिउ, मइं महेसर-पासि ।
पूरी हंस श्रासि श्रनेकनी, [6]परतु छट्ठइ मासि ॥२५४॥

पुरुष न को पईसी सकइ, ए वनमांहि श्रजुत्त ।
श्रावइ कोइ किह्लार ते, जे हुइ [7]पुण्य-पवित्त ॥२५५॥"

---

१. 'वली' प्रा. २. 'सांभल्यु' प्रा ३. 'मह्यारु' प्रा. ४. 'तनि' प्रा. ५. 'म' मा टूंक २४३ नथी. ६. 'परता छठइ' प्रा. ७. 'पुनि' प्रा.

[सावलिगीं विमासण]

सावलिगि ते सभली, चित्ति चमक्कइ लग्ग ।
[1]मूदि जि सउण-विचार कीय, ते मूं परतखि पुग्ग ॥२५६॥

(चउपई)

लीलावतीइ कारण कहीय, सावलिगि ते संभलि रहीय ।
भ्रम चीतवइ अदीठइ भूप, मूदइ सहू संभलिउ सरूप ॥२५७॥

जाणी मूत्र तणूं जगदीस, सावलिगि तउ धूणिउं सीस ।
हर साहमूं जोईनइ हसी, लीलावती-नइं विमासण वसी ॥२५८॥

[लीलावती-प्रश्न]

"गोरी ! गुज्झ कहंतां कांइ, माथ् धूणी मरवयां कांइ ? ।
साचउं कहउं, सदाशिव आण, नहीतरि आहा आव्यां अप्रमाण" २५९

सूदइं सपथ दीजतउ सुणिउ, राजा-हृदइं बोल रणभुणिउ ।

[सामली-विमासण]

सामली वली विमासण पडी, वहितां वाट सउकि सांपडी ! ॥२६०

एक अण-कहइं तउ एहनूं पाप, बीजउ वली सदाशिव शाप ।
रवि [2]ऊगइ जु विहाइ राति, तउ ए प्राण तजइ परभाति ॥२६१॥

आगइ एक माहरइ काजि, मस्तक ऊडविउं महाराजि ।
आ बीजी पग-बंधण मानि, राजकुमरि प्रीउ पामिउ रानि ॥२६२॥

सावलिगि अति ऊतावली, अण-बोलतां हुई आकुली ।
लीलावतीइ [3]मांडिउ लाग, ए मइं कांइ पाडिउ पाग ? ॥२६३॥

[लीलावती-वचन]

"बाई ! कां [4]अण-बोल्यां रहउ, कांई जाणउ तउ कारण कहउ ।"

---

१. 'मूदइं सकल विचारिया', प्र. २. 'ऊगमणि विहाणी' प्र.
३. 'पाम्यु' आ. ४. 'म म रहउ ? जु जाणइ', आ.

[सावलिंगी-वचन]

"अबला जे तइं आराधिउ ईस, ते जाणे तूठउ जगदीश ॥२६४॥

वली म कांई पूछिसि पच्छइ, वहिनि ! वाहिरि ते ऊभउ अच्छइ "।
[1]सावलिंगि-सुवचन संभली, क्षामोदरी सवे खलभली ॥२६५॥

[लीलावती-सदयवत्स-दर्शन]

लीली-गई लीलावई नारि, आवी ऊभी देव-दुआरि ।
।नय नयणइ नर निरखइ जाम, [2]किरि मूरतिमय ऊभउ काम!॥२६६

(गाहा)

[3]लीलावय सारिच्छा, समवडि लीलस्स रायहंसस्स ।
उअरि वेणी-दंडो, पुट्ठिवि सोहइ ए हारो ॥२६७॥

[4](दूहा)

"लज्जा संकटि दिट्ठ, प्रीय बोल सवणु न जाइ ।
लिउ रे नयणा रिट्ठ, घउ, जा नवि अंतरि थाइ " ॥२६८॥

(चउपई)

चलिउ सूदउ सहू सांभली, सावलिंगि "साथि जई मिली ।

[सूदा प्रति सावलिंगी-वचन]

भलउ भावि वीनविउ भूपः "स्वामी ! तुम्हि [5]साभलउ स्वरूप॥२६९॥

•ईश-सूत्र अवधारिउ आम, किहां ऊजेणी ? किहां आराम ? ।
कीधी वाड हूउ कूपसाउ, ते जाणि जगदीश-पसाउ ॥२७०॥

इम जावा जुगतूं नही कंत !, आ वनितानउ सुणी वृत्तंत ।
एक हत्या, बीजउ हर-लोप, कहितां वात म करिसिउ कोप ॥२७१॥

१. 'लीला वतीइ' प्रा. २. 'जाण मूरित वंतुकाम' भा. ३. 'अहिली-
वयए समरि सा, समवइ लीलंमि राय हंसस्स' भा. ४. दूंक २६८ 'घ' मां नथी. ५. 'सीकिइ' म. ६. 'सांभलु' भा.

[सउकि (सुपत्नी) विवरण]

आदि-[1]सकति कीधउ आग्रहउ, स्वामी ! सउकि किसी हुइ? वहउ।
नाखण-तणी महेसरि घडी, तीणइ तउ उमया वीर [2]चौगटी ॥२७२

वेडि माहि अधिपति अधभाग, वेटा वधव लखमी लाग।
[3]सविहू-पाहिइ सर्परांणी सउकि, [4]वर वहिचवा चाली चउकि॥२७३

स्वामी ! कहिउं महारू मानि, सिरजी सउकि "मिली मू रानि।
नाहरी [6]काई म करउ लाज, अण परणइ अनरथ हुइ आज ॥२७४

दिनि एकइ आगमि छ मासि, राणी राउ वीनविउ विमासि।
कुमरि-तणू कारण जाणीइ, "[7]अति आग्रहु माडी आणीइ" ॥२७५॥

[धारापति(लीलावती-पिता) चिंता]

राणी-वयण विमासइ राउ, पुत्रि-तणी प्रीछवण उपाउ।
सदयवच्छ नवि [8]जाणइ शुद्धि, कालि कुमरिनइ तपनी अवधि॥२७६॥

धारानयरि-राउ धरवीर, सभा बईठउ साहसधीर।
सुधि पूछइ कुमरि-नइ काजिः 'कोई ऊजेणी आव्यउ आजि ? ॥२७७

लीलावतीइ लीधइ नीम, छमासि छइ थोडी सीम।
"आणइ भवि अनेरउ [9]वरू, कइ मूदउ कइ [10]जमहर करूं ॥२७८

फून धतूरा धरणि पडइ, कइ महेसर मस्तकि चडइ।
नीजी गति नवि तीह लहीइ": तिम कुमरीइ हठ लीधउ हईइ ॥२७९

[वंदीजन-कथित सदयवत्स-समाचार]

राजा वयण सुणी तिणि वार, वंदिण एक करइ [11]जइकार।
"हू ऊजेणी आविउ आज, सूदा सुधि साभलि महाराज !॥ ८०॥

१. 'सकनि लीधु' आ. २. 'चौघटी' अ. ३ 'सिवहु ' आ. ४. 'वर विहुंचावइ साडीउकि' अ. ५. 'वली' आ. ६. 'काई करसि' ? आ. ७ 'आग्रह करीनइ आहा' आ ८. 'शधि' आ. ९. 'वरइ' अ. १०. 'साहस करू' अ. ११.'कारवार' अ.

ऊजेणी [1]अमरापुरी, अन्तर नही नरिंद ।
ऊजेणी पहुवच्छ [2]पहु, अमरावतीइं इंद ॥ २८१॥

इन्द्र-तणा आसण जिसिउ, मयमत्तउ मच्छराल ।
[3]सूदइ सोइ हत्थी हणिउ, [4]कज्जिहि वंभणि-बाल ॥२८२॥

ते पेखवि [5]हरख्यु हईइ, कीयउ पुत्त-पमाउ ।
मुहुत्तइ मत जि [6]उद्दिसिउ, तिणि रोसाविउ राउ ॥२८३॥

सुद् ति न रहिउ सासही, राजा रोस बहुत्त ।
ऊजेणी [7]ऊजड करी, वीर विदेसि पहुत्त ॥२८४

चउकि चुहट्टइ जूवटइ, हूंतु वीर जूआर ।
नित नित मग्गणि मग्गीइ, [8]जिहि मुंहि नही नवकार ॥२८५॥

अम्ह सरीखा [9]अनेकि नर,-पाखलि पंखी बहुत्त ।
[10]ते सीदाता सदय-विण, ऊडी गया अनंत ! ॥२८६॥

[सदयवत्स-गुणप्रशंसा]

[11](छप्पय)

राय [12]कलां नल भूप, रूपि कदप्प-सरिच्छो ।
[13]वाचि जुधिष्ठिर राउ, साचि गांगेय परिच्छो ॥ mtm.
अभिमान
प्राणि जिसिउ भड भीम, माणि बीजु दुज्जोहण ।
दानि कन्न अवतर्यउ, बाणि अज्जुण [14]वइरोहण ॥

१. 'अमरावती' प्र. २. 'छइ' प्रा. ३. 'सूद्दि य् जि' प्र. ४. 'वंभणि-केरी वाल' प्र. ५. 'पुहुवच्छ पहु' प्र. ६. 'आठविउ' प्रा. ७. 'उज्जेण' प्र. ८. 'नहु जपइ' प्र. ९. 'तीणइ नयरि' प्रा. १०. 'सीदाइ' प्रा. ११. 'सटपद' प्र. १२. 'कुलागम भूप' प्रा. १३ 'वचनि' प्रा. १४. 'रिउ भीरत्ति' प्र.

[1]खित्ति साहसि गुयसि, लीला अंगि अणुपमो ।
इत्तिय गुणि पहुवच्छ-[2]सूनु, [3]न कोइ सुभट सूदा समो" ॥२८७

[धारापति-प्रश्न]

(दूहा)

[4]रा पूछइ : "सुणि वंदीयण ! कुण दिसि कुमर पहुत्त ?" ।

[बंदीजन वचन]

[5]"उत्तर ऊजेणी- थिको, गिउ सामलि-संजुत्त" ॥२८८॥

(वस्तु)

भूप चिंतइ, भूप चिंतइ, निय मन-मांहि : ।
"ए [6]कांई कारण शिव-तणू, सूदा प्रति जे राउ रूठउ ।
[7]कामुककुल जगि जाणीइ, लीलावई[8] जि तूठउ ।
वयणि विमासी चालीउ, राजा लोक-सिउं राउ ।
उच्छव ईसर-भंगणइ, संपत्तउ समवाउ ॥२८९॥

(चउपई)

[9]लीला सूदउ सामलि संचरइ, वनिता सवे विमासण करइ ।
[10]"कां जाई ? आठवइं उपाउ, तां राणी-सिउं [11]पुहुतउ राउ॥२९०

कोलाहल कीधउ कामिणी, बिइ वड़ वाहरि वद्धामणी: ।

[सदयवत्स-वधामणी]

"अवसरि भलइं पधार्या आज, कूंअरि-तणां हिव सरियां काज२९१

---

१. 'कीरति साहस सिद्धि, जस लीला वयण' मा. २. 'तणु' म. ३. 'कोइतेहं सुभट सूदा समउ' मा. ४. 'पहु पूछइ; कहि' म. ५. 'का लिउ ऊजेणी ! कय जु' मा. ६. 'काईम परम तणउ सत्त, पुत पुहवच्छ रूसइ' म. ७. 'कामिक लिगजु' म. ८. 'सावइ तुठो' म. ९. 'ता' म. १०. 'जां कांई' मा. ११. 'पाविउ' मा.

जस [1]काजि तप तप्पउ छमास, ते परमेसरि [2]पूरी मास।
"स्वामी ! दिगि आणी अवधारि, [3]आ सूदउ नइ सामलि नारि२६३

[धारापति आगमन]

माहेसर प्रति करी प्रणाम, रा चंचलि चडी चमक्कयउ ताम।
पूठउ-थिकउ [4]परि-पिउ सहू-पूलिउ, "सूदानइ जई सीकिइ मिल्यउ२६३

[बारहट्ट-वचन]

बारहट्ट बोलाविउ वीर : "सांभलि सूदा ! साहसधीर ! ।
ऊभउ रहउ, अवधारि सरूप, तूं भेटेवा आवइ छइ भूप" ॥२६४॥

बंदिएा तउ बोलाविउ जाम, पय [5]खचोनइ [6]रहिउ ताम।
ता राजा छांडी रेवंत, साई [7]दीघ्र सामनि-कंत ॥२६५॥

[लीलावती-पिता स्नेह-वचन]

सावर्लिगि नइ नामइ सीस, 'पुत्रि'-भणी [8]बोलावइ पृहवीस।
"माई महासति जे आगिली, ते तूं अ भगतिइं दीसइ भली" ॥२६६

बारू वृक्ष एकनी छांह, [10]राउ सूदु बे वईठा तांह।
ऊजेणी- अधिपतिनइं आधि, सदय-[11]भेटिइं हुई समाधि ॥२६७

[सदयवत्स विचित्र प्रश्न]

"ऊजेणी वसुधा विख्यात, सूदा नामि [12]अछइं सइं सात।
पएा-ओलखिइं म आदर करउ, वात विमासी वांहइ धरउ ॥२६८॥

ते किम [13]इम एकलउ भमइ ?, ते किम पालउ पंथि अवगमइ ? ।
तूं धारा-नयरी-नायक, हुं पाघरउ अछउं पायक ! " ॥२६९॥

---

१. 'कामिनी जि तप नप्पु' आ. २. 'पूगी' आ. ३. 'आ' आ. ४. 'बहु परि ध्यु पछइ' आ. ५. 'सूदा-केडि जइनइ मिलइ' ६. 'जोइ' म. ७. 'सीधु' म. ८. 'ते दिइ आसीस' आ. ९. 'तई दीठइं आवइ' आ. १०. 'राजा बेहू० म. ११. 'दीठइं' आ. १२. 'वसइं' आ. १३. 'एकलां वनमाहि' म.

आमेर (दूहा)

बारहट्टि [1]इणिइ अवसरि, वंदियरा बोलिउ इम्म : ।
"सूर! [2]ति सहू अम्हि सभलिउ, तूं अ राउ रूठउ जिम
ऊजेणी-अधिपत्ति तूं, आ धारा-[3]धरवीर ।
मेलउ माहेसरि कीउ, छडि विमासरा वीर !" ॥३०

बदिरिण-केरइ बोलडे, वसिउ सूद संकेत ।
परण्या पाखइ न छूटोइ, ए सहूइ हर-हेत ! ॥३०२॥

[4]मिउरा समत्थि म अवगरणइ, सूदइ सा महिलाउ ।
सार्वलिगि साधिइ सती, [5]तेह मुद्ध रखइ राउ ॥३०

[लीलावती गुण-वर्णन]

(गाथा)

नर नारि सार परिवारे, पवखलि [6]मिलिय नरिंद नर खंते ।
लीलावई लावण्य-चयणि, न वुली बोलीय बलिहार मज्झम्मि ॥३०४॥

अह लीलावई नामं, लीला-गई रायहंसरस ।
उयरि वेणी पडिबिंबं, पुट्ठीय पडिबिंबिउ हारो ॥३०५॥

[7]शिव जोग समे उपवासत्त, ये मज्झि-रयणि सर-मज्झे ।
जल-केलि-करणं मुक्कं, [8]नीरस तरूइ नील पंगुरणं ॥३०६॥ उत्तरीय

तह पंगुरण-प्रभावे पल्लवियउ, सुक्क तरूअर तिवारो ।
तिरिण [9]पल्लवेण पुज्जिय शिव, वंच्छति सदय भत्तारो ॥३०७॥

---

१. 'तेणइ' मा. २. 'तुम्हें सहू सामलिउ' मा. ३. 'नयरी धरि' म.
४. 'सूअण सवे मइ अवगण्या, मूढु मछइ सामइ' मा. ५. 'वेणइ' म.
६. 'तेह मरा जेहिमि' म. ७. 'शिव-योग उपवास समइ, पय-मझि' मा.
८. 'नी सस्य तरवि' मा. ९. तिणि पूजिसि, शिव-कठिमू' मा.

ुा ६२०१२.

[1]मउडद्वय मंडलीया, भूपाला सकल सूर सामंता।
ते [2]अवगणिय आणया, नीलवय लग लग्न सुद्दे ॥३०८॥
[3]अधिपति अधिकारी सावि, सेणाह्विव बारहट्ट बहु वंसो।
पाणे पाणि-ग्रहण सिद्ध, सरिस सुदयवच्छस्स ॥३०६॥

[सदयवत्स लीलावती-पाणिग्रहण]

(वस्तु)

राउ [4]रिज्झउ, राउ रिज्झउ, सिद्ध स हि कज्ज।
[5]सयल लोक आणंदीउ, वंदीजण सुयस तस बोलइ।
विप्र वेद-झुणि ऊचरइं, हसगमणि हरखति बोलइ।
ताडीय चउरा चंग तिहिं, बिहु राजा रहि आवासि।
अध-दल-सिउं अधिकारीउ, [6]मूंकिउ सूदा पासि ॥३१०॥
नाम [7]चल्लिउ, नाम चल्लिउ, मिलवि मनरंगि।
[8]राजासिउं राणी सवे, कुमरि-माई घरवीर-घरणि।
लीलावई-वर जोइवा, सावलिंगि-सिउं भेट-करणि॥
सदयवच्छि प्रमदा सविहू, कीधउ एक प्रणाम।
माई देई सामलि-तणा, [9]बोलइ बहु गुण-ग्राम ॥३११॥

[सामली रूप-वर्णन]

(षट्पद)

आगइ अहर रस-रत, अनइ अहर विलासीय।
आगइ लोयण लोइ, अनइ कज्जलिहिं वलासीय॥

१. 'मडा था' भा. २. 'अवणीय भागप नथी' भा. ३. 'श्रा मा था शब्द नथी. ४. 'रुठउ सिद्धि सहु' भा. ५. 'दिइ महेसति मग्गिउ, कंत ि लीलावतीय लघु ततखि तीण दिणि तुरित लगन लेउ दिन करण दउ' भ. ६. 'मेल्हिउ' ७. 'वलीय' भा. ८. 'राजा पुसिइं' भ. ९. 'बे लइ गुणग्राम' भ.

आगइ थणहर थोर, अनइ हाराउलि भारीय ।
आगइ काम गायम धारि, अनइ झंझरि झमकारीय ॥
आगइ काम कीय कामिनी, अनइ वंस तन सि ऊजली ।
पहुवच्छ-तणउ भमर रंगि रसि,इसी नारि सूदा मिली[1]॥३१२॥

[सार्वलिगा-सत्कार]

(षउपई)

आसणि वईसणि आदर बहू, [2]सार्वलिगि संतोसिउ सहू ।
बीडा आपइ आपण हाथि, जे धणि आवी धारणि साथि ॥३१३॥

सार्विलिगि सनमानी राइं, राणी सवि रलीयाइति थाई । आनंदित.
ऊठी अवला आयस मागि, संतोषी सामलि सोहागि ॥३१४॥

चाली चंद्रवदनि चमकंत, [3]फिरि कंदर्प लीलावई कंत ।
राजकुमारि रूपिइं रति-जिसी, सार्वलिगि सविहूं-मनि वसी ॥३१५॥

[लग्न-निमित्त मिष्टान्न भोजन]

घडी कडाहि गमि बहु रहु, आदर-सिउं आरोगिउं सहू ।
लगनवार लीलावई-रेसि, सदयवत्स वर भरीइ मेसि ॥३१६॥

[वर-तुरग प्रशस्ति]

(राग : धउल धनासी)

आसण-तणउ अणाविउ ए ।
नरवरिइं तरल तुरंग, ए सखी ! ।

साहस-पति पह्लाणविउ ए, [4]पलाणि पवंग ।
तीणइ वरराउ चडाविउ ए ॥३१७॥

१.'ट्रंक ३१२ प्रमा' नथी. २. 'लीलवइ' प्रा. ३. 'काम जिस्यु' प्रा.
४. 'प्रति मानहर' प्रा.

(छंद चामर, त्रिताल)

चडंति खेवि जे जडंति, ते तुरंग आणीउ ।
जे [5]सुद्ध सित्त सालिहुत्त, लक्खणे वखाणिउ ॥
पामालि हुंति [1]कोश्रयउ, हो मदीय आसणे ।
सोहंति सदयवत्स वीर, ते तुरंग आसणे ॥३१८॥

[2](धउल)

चिहुं दिसि च्यारि चमर ढलइ ए-आ-आ।
सिरवरि ए सोहइ छत्र, विप्र वेय-धुनि उच्चरइ ए-आ आ
आगलि ए, नाचइ नानाविध पात्र ।
वह बंदिए कलरव करइ ए ॥३१९॥

(छंद चामर, त्रिताल)

करंति वंदिणा अणिक्क, मंगलिक्क मालयं ।
विचित्त भित्ति, पत्त पाउ, राग रंग तालयं ॥
चडी तुरंगि, चंगी अंगि, [4]च्यार सुंदरी रसे ।
ति चालवंति, नारि च्यारि, चामरं चिहु [5]दिसे ॥३२०॥

[वर-यात्रा धवलगीत-वर्णन]

[6](धउल)

वर आगलि-थिउ संचरइ ए-आ आ ।
राणे ले ए सरिसउ राउ, पायदल पार न पामीइ ए-आ आ

१. 'सिद्धि खित्ति' मा. २. 'पयाकिउ' मा. ३. 'मदीइ सासणे' मा. ४. 'संसिर सोहइ छत्र प्रलंब कि चिहुंदिसिच्यारि चमर ढलइ ए बंदियण कलिरव करइं बहूत, कि आगलि यात्रा नाटक करइ' ॥ ५. 'तिचारि सारि सुंदरी,' मा. ६. 'दिसि किंनिरी' ॥ ७. 'वर आगलि थिउ चालइ ए राउ कि पयदल पार न पामीइ, ए। ततखिण वर नीसाए जे घाउ, कि हिंइ हीसइ गज सारसी ए ॥' म.

वालीय जउ ए नीसाण जे घाउ ।
हय दीसइं गयराय सारसी ए-भा भा ॥१२१॥

(छंद चामर, त्रिताल)

[1]करंति सारसी गइंद, सूंडि-दंडि [2]डंबरं ।
नीसाण [3]वाउ, ढक्क घाउ, ढोल वज्जइं ग्रंबरं ॥
प्रवित्त वाउ, [4]दिन्न राउ, वेगि वावरइ करो ।
[5]प्रेमि सदयवच्छ वीर, संपत्त तोरणइ वरो ॥३२२॥

(धवल)

गय-गामिणि गुण वन्नवइ ए-भा भा ।
ससिमुखीय सुकोमल महमहइ ए ॥
करइ सिणगार, हार एकाउलि उरि ठवइ ए ।
कंकण कुंडल झलहलइ ए ॥३२३॥

(छंद चामर)

नरिन्द इंद मत्त लोय, लोय-मज्झि [6]सोहिइ ।
पदिट्ठ दिट्ठ माणिणी. [7]मणंत रंगि मोहिइ ॥
भवानि-पत्ति-पाय-भत्ति, कंत लद्ध कामिनी ।
ति [8]सूद वीर, वन्नवंति, [9]गेलि गयंद-गामिणी ॥३२४॥

(धवल)

कंद्रप ए समउ कुमार, प्रहिणवउ इंद नरिंदवरो ए ।
मेसि भरंति कुमार, सदयवच्छो शृंगार करंति ॥
हरसिद्धि-भत्ति विप्र, वेदधुनि उच्चरइ ए ॥३२५॥

१. 'हय गय हीसइ सारसी कहि,' भा. २. 'ढोल ढक्का घाउ हुम्र साथ ग्रंबरं' भ. ३. 'दितिराउ' भ. ४. 'इणि परि सदयवच्छ वीर, संपत्त सरिसी-तणो वरो' भा. ५. 'मन्न रंगि' भ. ६. 'ते सूद वीर' भा. ७. 'गेलिइ गायवर भामिनी' भा.

[1](मोक्तिकदाम छंद तत कुंडलिव)

पउमिणि हस्तिनि, चित्रिणि दारा, मलिणि सारइ किद्ध सिंगारा।
रति-पति रंगि, मिलवि सहि रामा, पेखिवि सदयवत्स वरकामा ३२६

जे धाम-नरिंद-तणइ दलि सारा, गमइ मत्त पयोहर-भारा।
जे हेलि सा गिहिल्लि[2]चलइ चमकति,ते सुद्द नरिंद स्यू रंगि रमति३२७

जे नेय भय-दिट्ठ कि तद्द कुरंगि, [3]यत्त सरेह सुनेह सुरंगी।
जे [4]पकि चदनि अंगि गमति, ते [5]सुद्द नरिंद स्यू रंगि रमती ३२८

करइ नित मानिनी आणणि सोह,जे जाणि जुवाण तणइ मनि मोह।
जे पत्ति उरत्थलि नारि नमति, ते सुद्द नरिंद स्यू रंगि रमति।३२६

[6]ठवइ उरि हार कि तारय-श्रेणि, ढलति नितंब प्रलंबित श्रोणि।
जे ताविणि आवणि नित्त धुमति, ते सुद्द नरिंद-स्यू रंगि रमति ३३०

[लीलावती सखी-विनोद]

(षट्पद)

"हे सही ! कहि कुण कज्जि, मज्झ उन्हास अंगि बहु ? ।
[7]कुंकुमि कज्जलि कणय-कुसुमि, सिंगार किद्ध सहु ॥
भरीय सेसि सीमंत, [8]कत कदर्प रायवरि ।
गुडीउ साहण मयमत्त, नित्त सरि सज्ज कि [9]उपरि ॥
माणिसि मयक मधु रति मधुप, [10]पहुवच्छ-तनय मुज्झ मनि वसिउ।
उल्हवण अनल[11]न कित्तु रयणि, सदयवच्छ मुखनिहि जिसिउ३३१

अग्गइ [11]अहरा रत्त, अनइ वलि विलासीय, ~
अग्गइ लोयण लोइ, अनइ कज्जलिहिं कलासीय,

---

१. 'मौक्तिक कुंडलिउ' मा. २. 'वलइ' मा. ३. 'जेउप्प' म. ४. 'ते सुदव वत्स सिउ रगि रमति' मा ५ 'दिइ' मा. ६. जे तुरणी निच्छइ हरमति' मा. ७ 'कुमरिति' मा. ८. 'कत ठक परिय' मा. ९ 'सपरि' मा १०. 'पुहर मनि सनूक्कसु ११. 'न कितु रणमदि' मा.

अगइ [1]थणहुर थोर, अनइ हाराउलि भारीय,
अगइ गय मंधारि, अनइ [2]नेउर झंकारीय,
अगइ कामुकीय कामिनी, अनइ [3]वसंत निसि उज्जली ।
पहुवच्छ-तणउ भमर रंगि रसि, [4]इसी नारि सूदा मिली ॥३३२॥

[लीलावती वरप्राप्ति-धन्यता]

[दूहा]

लीलावई मनि चीतवइः "ईसरि किउ पसाउ ।
ऊजेणी-थिउ आणिउ, सदयवत्स पहु-जाउ ॥ ३३३[5]॥
जस कारणि मइं एकली, तप कियउ छः मासि ।
ते आशा [6]मुझ पूरवो, सामी लील-विलासि ॥३३४॥
हारि दोरि कंकणि-हिं, सयल शृंगार किद्ध ।
लीलावई मन रंगि [7]रसि, सदयवच्छ कर लिद्ध ॥३३५

[चतुर मंगल]

राय पखालइ पाय वर, सासू सेसि भरंति ।
विप्प अनइ वनिता सवे, मंगल चार करंति ॥३३६

(छंद पद्धडी)

मंगल चार करंति, हत्थ लेई [8]हत्थे लावउ,
अंतरपट उद्धरीय, किद्ध बिहु कर-मेलावउ ।
संझ सूर स जोई, नारि वर नयणि निहालइ,
करइ सुकवि कइवार, राय वर-पाय पखालइ ॥३३७॥

---

१. 'सिहण सुघोर' अ. २. 'झंझरि' मा. ३. 'वसंत-निसि' अ. ४. 'अनइ सवर सुदा मिली' अ ५ टूंक ३३३ 'मा' मां नथी. ६. 'पूरी हुई' मा. ७. 'पुहती वरमंडपि तिहि' अ. ८ 'मथवालउ' मा. ।

(वस्तु)

नारि लद्धो, नारि लद्धो, नाह नव रंग ।
नारी लद्धी नवल, भ्रमर वेगि [1]श्रा हुम्ति पामीय ।
भ्रथ [2]सपत्ति भ्रव रज्जम्यु, दिद्ध उदक सइहत्थि स्वामीय ॥
[3]वीर वलो चिता वहु, जिमजिम व्याहइ राति ।
हेम घणू हरसिद्धि भणइ, पुरिस [4]पुत्र प्रभाति ॥३३८॥

[विवाह-कुलाचार]

(चउपई)

[5]जउ मनरंगि विहाणी राति, दातण करइ कुं अर परभाति ।
ता [6]साला सवि श्राव्या सार, पुण्यवतना पुत्र अपार ॥३३९॥

[7]तीणइं ते ऊजेणी-धणी, वोला विउ 'बहिनेवी'-भणी ।
शिर नामी वईठा सुविचार, ऊगम लगइ[8] जिके जूग्रार ॥३४०॥

[द्यूत क्रीडा]

सदयवच्छ सविहुं दिइ मान, प्रीति-सरिसा श्रापइ पान ।
[9]तीणइ मेल्ही पूंजी पड माहि, जूग्र मागइं सवि सूदा-पाहि ॥४४१॥

ते वोलइं. "सूदा ! सुणि वात, करी सूय ग्रम्हस्यूं रमि रात ।
भूइं श्रापणी भलउ सहु कोइ,[10] पडि पियारी दुहिली होइ ॥३४२॥

सदयवच्छ लहुडपण सीम, जू श्राव्या [11] ता भणिवा नीम ।
रमिवा-[12]मसि असिवर ऊडवइ, हस्या [13]वीर कलकलिया सवइ ।३४३

1. 'भाहुत्ति' भा. 2. 'संपत्तिसु तस जुगत्त उदक दिउ' पा. 3. 'वीरवर' प्र. 4. 'पत्र' भा. 5. 'भलइ भावि जागीउ जूम्रार, दातण करवा काज कुंमार' भा. 6.'साला स्यु' प्र. 7.'उस हे ऊजेणीनु धणी' भा. 8. 'सेलूव'' प्र. 9. 'जण मेली बईठउ' भा. 10 'पडहु' भा. 11. 'तइं कहिवा' भा. 12. 'रसि' प्र. 13. 'वीतिवउ छलीया' प्र.

लिउ हथीग्रार हरावी सही, सूय पाखइ [1]न रमाडइ सही ।
गाठइ गरय न हाटि निखेव, सूदउ वीर [2]मनावउ सेव ॥३४४॥

[हरसिद्धि दत्त-वर द्यूत-जय]

सदयवच्छि समरी हरसिद्धि, रामति मिसि लूसी लिइ रिद्धि ।
पाडिउ [3]पइत [4]पहिलइ दाणि, साला हासारथ नइ हाणि ॥३४५॥

लीधा लाख हरावी हेम, ए ऊखाणउ साचउ एम ।
[5]गया अन्य काजि, अनेरू थाइ, ते घाठी कहि कहिवा जाइ? ॥३४६॥

सालाने वानइ ते वाठि, [6]वहिनेवी ते वाधीउ गाठि ।
[7]ऊठया सवे ऊनारा भणी, अड पसरावी सूदा-तणी ॥३४७।

[सदयवत्सकृत द्यूतद्रव्य-दान]

राजा नइ घरि जाणि जग, मागणहार-तणइ मनि रग ।
सदयवच्छि वरि माडिउ करण, हाथ ग्रोडावी अढारइ वरण॥३४८॥

बारहट्ट पुरोहित पढीग्रार, [8]सूदा सामलि ? [9]भलाव्या सार ।
तिह मन-शुद्धिइ दीघ्रू मान जुगता-जुगति दिवारउ दान ॥३४९॥

छ दरसण पाखड छन्नवइ, [10]दानि मानि मागण रजवइ ।
आपइ सविहू काजि सुवर्ण, किरि ग्रहिणवउ ग्रवतरिउ कर्ण ॥३५०

[11]राज मानि माणस ग्रति बहू, ग्रापी ग्ररथ सतोसिउ सहू ।
सूदउ वीर पडावइ साद, [12]ग्रढार वरण दिइ ग्रासिर्वाद ॥३५१॥

पहिलू [13]मोकलावी महेस, तउ ससरा प्रति [14]गिउ नरेस ।
ग्रायस मागी ऊभउ रहइ, ससरउ सदयवच्छ-प्रति कहइ ॥३५२॥

---

१ 'रमाडु नही' ग्रा २ 'मनावु' ग्रा ३. 'जइत' प. ४ 'चिहु' ग्रा ५ 'गणि काउ नइ' ग्रा. ६ 'तु पूजी पू जी वाधिउ गांठि' ग्रा ७ 'लेई राजा' पा ८. 'सूद वाल' प. ९. 'तोडाव्या सुविचार' प्र १०. 'मानिइ मागण मन प्र. ११ 'राज माहि' प्र १२ छ दरसण घरि पासि वदि' ग्रा. १३ 'जई मोकलावइ ईस' ग्रा १४ 'नामइ सीस' ग्रा

[लीलावती पिता-धारापति वचन]

"ऊजेणी-अधिपति ! अवधारि, [1]पसाउ करी अम्ह नयरि पधारि।
भोगवि अध-संपति अव राज, [2]मागि जि कांई जोईइ काज ॥३५३

दे उर बहु कीधु-देव !, तुम्ह जावा जुगतू नही हेव।
आगइ एक नारिनउ साथ, बीजी- सिउं हिव बाध्यु हाथ" ॥३५४॥

[सूदा-वचन]

सूदु ससरा आगलि साच, बोलइ बोल ते ब्रह्मा-वाच:।
"लीलावती नइ माथिइं लेमु, सामलि पोहरि पुहचाडिमु ॥३५५॥

करीय रहण पहिलूं परदेसि, तउ [3]आणिमु अबला विहु रेसि।
जउ सासरइ रहूं सुख-भरणी, तउ [4]लाजइ ऊजेणी-धणी ॥३५६॥"

[कवि-वचन]

जिणइ-तात तणइ अधबोल, छाडीउ राज करी तृण तोल।
ते किम सूदउ सासरइ रहइ ?, सामलि-सरिसउ-मारगि वहइ॥३५७

[प्रयाण]

वूल्या परवत विसमा घाट, आगलि इंद्र-वाहण-नउ थाट।
वाघ सिंघ वानर वनि मिलइ, देखी वीर सुभट खलभलइ ॥३५८॥

गुपुरिस नसीह नामइ सयर, ते-प्रति दीव हरसिद्धिनु वर।
मधुरइ सादिइं मोर कीगाइं, बावन-ना बंध ढीला थाइं ॥३५९॥

[गाढ अरण्य-प्रवेश]

आगलि अनोपम अति कांतार, काठ-समुद्र न लाभइ पार।
नवि जाणीय सवार असूर, वनमाहि पइसी न सकइ सूर ॥ ३६०॥

---

१. 'गया' प्रा. २. 'मागिन देब' प्रा. ३. 'आबिहु अबला' प्रा.
४. 'जम आइ' प्रा.

पुहुतु वीर ते वन मझारि, गाढइ करि करि साही नारि।
"स्वामी! घोर अघार अवधारि", विण वावी तिहा पाँचइ सालि३६१

मपत्त धान खडधान अपार, पखि जाति नवि लाभइ पार।
मूडा नइ सालीही गहिगहइ, अढार भार वन देखी मन रहइ।३६२

सजलि सरोवरि झीलइ हंस, परवत पाखिलि अति बहु वंस।
वंस घसाघस परवत जलइ, नई नीझरण गिरि-हिं ऊतरइ॥३६३॥

तिणि नीरि उन्हाइ आगि, गज वे मडलि जई लागी धागि।
केलि करमदा दाडिम द्राख, नालिकेरि लीब्रूइ-ना लाख॥३६४॥

[चक्रवाकी प्रति-सावलिंगा-अन्योक्ति]

वासु वीर नीरतटि रहिउ, सामलि सूदु बोलावीउः।
"स्वामी! ध्रा साविज अवधारि, काठइ बईठा करइ पोकार॥३६५
(टि ३१५-५१५)
च्यारि पुहर चक्रवाक इम रडइ, जाणे पाटणि पुहरा पडइ।
विहस्या कमल, विहाणी राति, प्रीति प्रीय पामिउ परभाति॥३६६।

सासइ पडयाँ ते साहमू जोइ, सावलिंगि मुख दीठउ रोइ।

(उपजाति)

विलोक्य बाला मुख चन्द्र-बिंब। कंठे च मुक्ता-मणि-हार तार।
पुनर्निशा विभ्रम-भीति हेति। सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी॥३६७॥

(चउपइ)

सू किउ नयर सही निटोल, मुक्तिउ वन ते बोलइ बोल॥३६८॥

[छूतकार-स्वरश्रवण]

जा अवगमइ पथ अति घणउ, ता सुर सुणिउ जूआरी-तणउ।
हाथ-माहिल्या हीरा सोइ, एक भणइः "ए जीता जोईइ"॥३६९॥

दह दिसि नयणइ निरखइ वाट, सुणिउ सुरंग माहि गहिगाट ।
गिरिवर-तलि वन गहन मझारि, गुरुई शिला दीठी गुफा-बारि ॥३७०

[सपत्नीक सदयवत्स-गुफाद्वार-प्रवेश]

शिला ऊघाडी साहसधीर, पइठउ विवर-मांहि वड वीर ।
गरव करइं गहिला केतला, भला मांहि भड मेटइ भला ॥३७१॥

ते पांचइ आलोचिउं ईम, "शिला ऊघाडी आविउ किम ? ।
नारी सरिसउ [1]नर वइरानि, एहू नर कोइ नही समानि ॥३७२ ॥

एक सूथ छइ नारी साथि, [2]बीजूं असिवर दीसइ हाथि ।
पाचे वईसारिउ पड-मांहि, रमि राउ [3]तूं जूउ रमिवा मांहि" ३७३ ।

[सूदा-वचन]

सूदउ सइं हथि काढइ मूंठि, गरव-वचन तिहां बोलिउ गूढि : ।
"राउत ! ए पड न जाणि, शिर ओडी नइ रमूं सुजाण !" ॥३७४

[चूत-पट उपरि-सूदा-विजय]

वीर-वचनि [4]राउत-मनि रीस, समरो सकनी ऊडवीउं सीस ।
पडु[5]पाडिउं पहिल्लइ दाणि, एक-तणूं शिर जीतूं जाणि ॥३७५॥

इणि परि ते जीतां शिर पंच, पांचे वीरे रचिउ प्रपंच ।
आपी [6]कुमर कटारी काढि, "स्वामी [7]सइ हथि माथां वाढि" ३७६

[सदयवत्स-वचन]

[8]"जे तम्ह-तणइ वासि वीसमिउ, जे [9]तम्ह-सिउ हूं रामति रमिउ ।
तिह शिर[10] वाढण किम कर वहइ?" सदयवच्छ[11] सविहूं प्रति कहइ ३७७

---

१. 'हीडइ रानि' मा. २. 'असिमर उभण' म. ३. 'ते जउत' प. ४. 'सूदा' मा. ५. 'पयता जे' म. ६. 'करि' मा. ७. 'सि-हथि मस्तक' मा. ८. 'जे जे मह्म-तणइ' मा. ९. 'मह्म सरिसु' मा १०. 'सारण' प. ११. 'वीरह' मा.

तउ ते पांचइ लागा पागि. "स्वामि ! जि काई जाएा ति मागि ।
[1]"सरव शिर ए माहरू सहू :मूदु भणइ"सिउ बोल्यउ बहु"?३७८

[2]सामलि नइ सिर नामइ सवे, [3]सा अम्ह सेवक भणी लेखवे ।
जा परि करइ परगएा तणी, ता ऊठिउ ऊजेणी धणी ॥३७९॥

पीधू वीर न पाणी पली, काढी कोडि तणी काचली ।
पोली सिउ गाढी गोपवी, खेडा-तणइ बोलीइ ठवी ॥३८०॥

[द्यूतकार वृतात-पृच्छा]

[4]सरधत एक बि लीधा साथि, पिरि सघली पूछी नरनाथि ।
"नाम ठाम [5]कुल कारण कहउ,रानमाहि कुण कारणि रहु?"॥३८

[6]ते बोलइ. "सूदा ! सुणि वात, घोर अ घारि घणा घर [7]घात ।
निशि [8]निरतरि चोरी भमु, सघलउ दीस [9]गुफामाहि रमु"॥३८२

[चोर प्रति समभाव]

सूदइ सहू प्रीछिउ सरूप, 'भाई भणी रहावइ भूप ।
ग्रास न काई देसि देव, [10]राखिइ थिका अम्हि करिसिउ सेव॥३८

रहाव्या पुरुष ते मोटइ प्राणि, सामीय ! [11]आ शिर ताहरा जाणि
सेवक'-भणी ग्रह्या करिजो सार,समरे सकटि वार किव्हार ॥३८४॥

रहिया वीर, राजा सचरिउ, साहसि जसि परवरिसि परवरिउ ।
चालइ सावलिगि नीचालि, तु देखइ परवत नइ पालि ॥३८५॥

---

१ 'शिर सरवसु ताहरां सहू" सूदय भणइ 'मम बोलु बहू"? म २ 'मावलिगि' मा ३. 'माता पुत्र भणी' मा ४ 'मरघता बि' मा ५. 'कु मा ६ 'भजउ ममउ सूलो से बाल' म. ७ 'फाल' म ८ 'नयरनरि'। ६ 'ईणि गुफि' म १० 'सांयि मा तहा' मा ११ 'ए' म.

[पर्वत-प्राकार प्रवेश]

परयत-शिरि पोढउ प्राकार, जस कमाड कोसीसां पार ।
दीसइ हट्ट, धवलगृह श्रेणि, रा मंदिरि जई [1]रहिमु तेणि ॥३८६॥

[अनाथ स्त्री रुदन-श्रवण]

(दूहा)

राती रोअंती सांभली, नीघरणीआई नारि ।
सूदइ सा पूछी विगति, घरणि [2]धावल हर मझारि ॥३८७॥

पूछी तां प्रमदा कहइः "[3]सांभलि साहसधीर ! ।
हूं निधि नंद नरिंदनी, सूद्द ! विलसजे वीर" ॥३८८॥

[नंद नरेन्द्र-निधि दर्शन]

सावलिगि नधि संभलइ, नारी निद्रा लिद्ध ।
सदयवच्छ [4]रवि ऊगमणि, पेखीय सयल [5]समृद्धि ॥३८९॥

घण मणि मुत्ताहल रयण, हीरा हेम अपार ।
अवलोई सूदु सहू, उरी दिद्ध [6]दूआर ॥३९०॥

[निर्लोभी सदयवत्स]

वलि बाकल पूजा पखइ, लच्छि न लीघी हत्थि ।
दीठी अण-दीठि करी, [7]संपय मूकी समत्थि ॥३९१॥

[पुण्य-प्रशसा]

(वस्तु)

पुण्य तूसइ, पुण्य तूसइ, सकति सुर सच्छि ।
पुण्य प्राणि वनिता वरी, [8]पुण्य पुन्व पयरहण लब्भइ ।

१. 'रहीमा' भा. २. 'धवल' भा. ३. 'सूणि हो' भा. ४. 'सूरि' म
५. 'संपद्धि' भा. ६. 'बार' म. ७. 'मूंकी सूदइ' भा. ८. 'पवर-पुण्य' म

दान दिइ ते धन्य नर, [1]अदयवत वीहइ न खभ्भइ।
पुण्य ज पुव्वय भव पसइ, [2]वछित सुख न होइ।
[3]पुण्यवत पुण्य ज करउ सुख मतोष सवि होइ ॥३६२॥

[नगरी भवलोकन]

(चउपई)

[4]सविह परि गढ जोयउ फिरी, चालिउ [5]वीर मनि चिंता करी।
परमेसर जउ करइ पसाउ, तउ ए रूडउ रहिवानउ ठाउ ॥३६३॥

दिवस च्यारि वनि [6]वहिउ नरेस, आगलि दीठउ वसतउ देस।
[7]पुर प्रासाद नइ घट्ट निव्वाण, गामि गामि गिरूआ अहिठाण ।३६४

वारू लोम्र-तणा तिहा वास, [8]पेखी पथिक करइ उल्हास।

[मार्ग भाट मिलाप]

जा वि जाइ [9]वहता वाट, ता सर-पालिइ भेटिउ भाट ॥३६५॥

[10]नर एकलउ अवारउ जाइ, पूछिइ प्रमदा पाली [11]पाइ॥
भाटि बोलाविउ "सुणि हो शूर' रहि राउत[12]अति थिउ असूर"५६६

भाट भोगवइ [13]गाम ति ग्रास, आदर सिउ आणिउ आवासि।
पेखी अ ग-तणाउ [14]आकार, ते आवर्जन करइ अपार ॥३६७॥
आकर्षण करवाना उपचार
तेडाविउ वालद तिवार, मर्दन देवा काजि कुमार।
ऊतावली हुईय अ घोलि, भोजनि शालि दालि घृत घोलि ॥३६८॥

---

१ 'अडवडत पण पुण्य थुंभइ' अ २ 'जि सुख शरीरि' आ ३ 'पुण्यइ ए पामीय सहु सपड सूदइ वीरि' अ ४ 'गाढा प्रहरि' अ ५ 'चीत चीतवणी' अ ६ 'वमिउ' आ ७ 'पूरव' अ ८ 'पेखीय हृदय आ ९ 'वसती' आ. १० 'दीसइ नर एकनु जि' आ ११ 'काइ ? आ १२ 'वड' आ १३ गामनु आ १४. 'अधिकार' अ

"नवरइ मंदिरि निद्रा ठाम, ऊठउ पथिक ! करउ विश्राम।"
जां वे जण बईठा एकंति, ता कामिणि बोलावी कंति : ॥३९९

[सूदा-वचन]

"सुणि सामलि ! बोलिउं माहरूं, कोस पंच पीहर ताहरूं।
दिवस पंच रहि [1]चंड-प्रदेशि, हूँ पूहचूं पहिठाण प्रदेसि ॥४००॥

अहिं ऊगमि पेखूं पहिठाण, जई जूं-ठाणइ मारू ठाण।
जे [2]सूरा समरथ जू-जाण, तीह-ऊपरि माइरूं मंडाण ॥४०१॥

लीलां लाछि हरावी [3]लिउं, तेहनउ ग्ररथ दोसीनइं [4]दिउं।
तूं पहिरेवा सरीखां सार, वुहरू वस्त्र विविध शृंगार ॥४०२॥

घाट-हुडी नइ वस्त्र विहीण, इम जाती तूं दीसिसि दीण॥
पहिरण पखइ पीहरि गमिसि, तउ माहरी माम नीगमिसि ॥४०३॥

[चारण-गृह-निवास सूचन]

चंदिण-तणइ बहिन क्षत्रिणी, क्षत्रिणी मानइ 'भाई' भणी।
ऐं नातरूं नवूं नहीं आज, भाट-भुवनि रहितां[5]नही लाज ॥४०४॥

[6]जे भड मांहि भवाडइ भला, जीवणि मरणि नही एकला।
[7]रूठारा मागी लिइं मंड, क्षामोदरि ! क्षत्री-गुरु चंड" ॥४०५॥

सामलि सूदानूं सुणिउं वयण, नारी नीर भर्यां वे नयण।
"पाणी वल जे पेखइ प्रदेसि, पंच दिवस प्रीय ! किमइं रहेसि?४०६

नारी 'देव'-भणी नर गिणइ, नरनइ नारी पय-लूंछणइ।
इम करतां 'नर न रहइ ठामि, ते नारी काइ सिरजी स्वामि"?४०७

---

१. 'छंड' मा. २. 'सूपा' म. ३. ल्योस' मा. ४. 'सोस' मा. ५. 'नवि' मा. ६. 'जे रणि चडया' मा ७. 'रूठरा' मा. ८. 'जे' मा.

[सूदा-वचन]

सूदउ भणइ "सामलि ! सुणि वात, नर जाइ जोयण सइं सात।
राति दिवस महिला मनमांहि, जिहां अबला तिहा आवइ ठाहि" ।४०८

[सामली-वचन]

"स्वामी ! ए उत्तर अवधारि, घरथी घणूं विसासइ नारि।
नर नवनवइ भवनि रसि रमइ, मुकुलिणी दीह दूखि नीगमइ" ॥४०६

[1]कणय रयण मुत्ताहल हार, 'हीर-चीर सोव्रण शृंगार।
ए [2]सहू समप्पइ अबला-हाथि, वीजा-सरिसउ आवइ बाथि" ॥४१०

तीणि उत्तरि ते अबला रही, वात एक [3]पुणि वरनइं कही।
"मामीय ! कहिउं माहरू मानि, प्रीय ! पाटण ते नथी समानी ४११

[सदयवत्सवचन]

[4]सदयवच्छ प्रभ पूछइ इसिउं :"कहि कामिणि! ते पाटण किम्यूं ? ।"

[सावलिगा वचन । नगर पाटण-वर्णन] 5 पि ल्लि ~ल्ड.

""[5]स्वामि ! सहारइ आपूं छेक, लागइ दव दीहाडउ एक ॥४१२।

जिणि पाटणि पोढा प्रासाद, मेरु-शिखर-सिउं [6]वहइ विवाद।
[7]गरूउ गढ ऊंचा आवास, किरि अहिणव दीसइ कंलास ॥४१३॥

माहि महेस विष्णु नइ ब्रह्म, सहू समाचरइ कुलोचित [8]धर्म।
[9]दिनकर-भगति-तणउ अति भाव, अविकउ परमेसरी प्रभाव ॥४१४

बावन वीर वसइं तिहा वासि, पूजइ जिनवर फलीइं आसि। टएड।
जिन-शासन गाढउं महगहइ, जीव-दया देखी मन रहइ ॥४१५॥ ढाल

१.'भाणि माणिक'मा. २. 'सहूइं आपणइ' मा. ३.'नरवर नइं 'मा. ४. 'लीटी' (४१२) 'मा' मा नथी' ५. 'सुदयवच्छ कहिं आयूं' मा. ६. 'मांडइ वाद' मा. ७. 'गडमड गुण' मा. ८. 'कर्म' मा. ६. 'दिन करनो भगति मति भावि' मा.

जे जोगिणि चउसठिनूं [1]गाम, चउरासी चेटकनूं तिहि ठाम ।
[2]व्यंतर भूत पिशाच नइ प्रेत, साचउ साकिणि-तणउ संकेत ॥४१६॥

गणपति क्षेत्रपालनी म्याति, दिवस पाहिइं रूडेरी राति ।
ठामि ठामि मडल [3]मंडाइ, ठामि ठामि नित गुणीश्रा गाइ ॥४१७॥

ठामि ठामि ढोणां ढोईंइं, ठामि ठामि जोणां जोईइ ।
सातइ [4]वसण [5]सांवलीइ जोउ, माहि घणा छइ नाणस तेउ ॥४१८

इकि लीलां लखिमी [6]लई जाइ, भोला भमहि सान वीकाइ ।
मणा न कामण मोहण-तणी, वरतइ धूरत-विद्या घणी ॥४१९॥

वसइ वासि छत्रीसइं कुली, मांहि [7]चुहु मुडधा नइ मंडली ।
चउरासी सूंरा :सामंत, च्यारि महाधर मंत्रि अनत ॥४२०॥

चउरासी चुहटांनी जुगति, वरणावरण तणी बहु विगति ।
उत्तम मध्यम लोक अपार, भामा भला न लाभइ पार ॥४२१॥

करइ राज सालिवाहण राउ, [8]वइरी-तणउ विधंसइ ठाउ ।
अऊठ पीठ पहिलूं पहिठाण,सामीय आलि-तणूं महिठाण"॥४२२॥

[पंच दिवसावधि सदयवत्स-गमन]

भाट भलामण दीधी भली, कीधी कंति अवधि अेतलो ।
"पच दिवसि आविसु तुझ पासि,मृगलोअणी ! घणूं म विमासि॥४२३

[9]सदयवच्छि तां जोयूं जिसिउं, नारीय नयर वखाणिउ तिसिउं
राजा रंगि अंगि उल्हसिउं, हंसगमणि नइं बोलइ हसिउं ॥४२४॥

---

१. 'ठाम' प्रा. २.पा लोटी 'म' मा नयी ३. 'मंडावइ'प्रा. ४.'विसन' प्रा. ५. 'संसालइ' प्र. ६. 'हरी' प्रा. ७.'मोटी वहुत्तरी' प्र. ८.'अरियण-गिरि दि दावउ पाउ' प्रा. ९. 'सदयवच्छ प्रतिति' प्रा.

[सार्वलिगा-वचन]

(वस्तु)

''कन सभलि, कत सभनि, कहइ [1]कमला लच्छि ।
जु मर्याद लुप्पइ मेरुहर, तेह न पालि पच्छउ करिज्जइ ? ।
सीह विछूडइ सकलह, ति किम देव ! दोरी धरिज्जइ ? ।
हत्थी अ कुस अवगणइ, किम साहीज्जइ कन्नि ? ।
तिम [2]तू प्रीय ! पधारता, [3]मज्झ विमासण मन्नि'' ॥४२५॥

(गाहा)

सुणि सदयवीर ! वयण सच्च'' [जपवइ सार्वलिगी ए ।]
प्रीय ! दिवस पच पच्छइ, तिहि गमिस जिहि ! [4]मुन पक्खेसि'' ॥४२६

[सूदा-वचन]

तिणि वयणि सुद्द जपइः ''मणिधरि रोसो हसेवि मुहकमले ।
तिहूअणि ते को ठाण, जिहि जुवई रहइ ? मह महिला ! ॥[5]४२७
वयण रासी नयण मई, हमगई उरि [6]करिद मागि ।
हीरा कणय पहाण, अ गगी जच्छ तया पक्खे जीवीय मरण ॥४२८

[सार्वलिगा-समाश्वासन]

[7]तीणि वयणि सुद्द वीरो, गहिबरिउ गलित चलितोमि ।
''गयगमणि ! म धरि[8]अ दोह, निवारि नयण नीर[9]भरीयमि''४२९

[सूदा-प्रयाण]

(अडयल्ल)

चलिउ रमणि रोअ ती वारइ, लोयण लूही सक्जल वारिइ ।
रवलि ! जु नाहू बोलिइ वारिहिं,ज[10]मनि होइ करइ तिणि वारहिं४३०

१ 'हम लच्छि' २ 'प्रीय ! तम्ह' प्र. ३. 'मुक्क' प्र. ४. 'न' प्र. ५. 'दू क ४२७' 'मा' मा नथी. 'करिद' प्र. ७ 'गलइ सूवल तोमि' प्र. ८. 'दुहिनउ' प्र. 'भरियीह' प्र. १०. 'पुणइ सुम करे तिवारि हिं' प्र.

[प्रतिष्ठान पुर-प्रवेश]

पामिउ पुर पहिठाण-प्रवेसह, नयणि निहालइ नयर-निवेसह।
तौ सरोवरि जल भरइं सुवेसह,चतुरि चतुर्विध नारि निवेसह॥४३१

[विरह-विलक्षित पुरुष प्रसंग]

आगइ विरहि [1]विलखो पाणी, लागी अंगि [2]तरस सपराणी।
कज्जल लग्ग दिट्ठ दुउ पाणि, पीधउं पुरुसि पशू जिम पाणी॥४३२

'नर नवरंग सही सने जल, किणि कारणि पशू जिम पीइ जल?'।
नारि-[3]नयणि करि लगउ कज्जल,तिणि [4]दीठइं नर भरइ न अंजल४३३

(दूहा)

ईणि नयरि जे [5]निद्धणह, तेह-तणी घर नारि।
बारू माणस जे [6]वसइ, तेह [7]नहु पाणीहारि॥४३४॥

पाणीहारिइं परखीउ, नर पीयंतउ नीर।
सदयवच्छ तं सभलि, चित्ति चमक्यउ बीर॥४३५॥

[अमंगल कबंध दर्शन]

पढमं पेखइ नयणि, पोलि प्रवेसि प्रवीण।
पुरुष एक पय-पाणि-विण, सरडु श्रवण-विहीण॥४३६॥

[गणपति मन्दिर प्रवेश]

तं पेखवि पाछउ वलिउ, गिउ गणपति-प्रासादि।
आणि असुउणि ज ईणि नयरि, पडीइ वडइ विवादि॥४३७॥

तिणि ठूंठइ ते ऊलखिउ, ए अम्ह पेखि वलंति।
आणि भलेरूं भेटणूं, देउल-[8]मज्झि मिलंति॥४३८॥

---

१. 'वल्परवइ' प्रा. २. 'तिहा सप्पाणी' प्र. ३. 'नर-करि' प्र. ४. 'भीज्जय-भय' प्र. ५. 'निम्मच्छ' प्र. ६. 'मछूइ' प० ७. 'तनहु' प्र. ८. 'माहि' प्रा.



(१) देखिये पृष्ठ ६२ कडी ४३२-३३
'पीधउ पुरुषि पशु जिम पाणी ।'
और (२) पृष्ठ १७०-१७१ कडी ३२९
'पसूआ जिम पाणी पीयइ ।'

पूग-पत्र-फल फूल सिउं, आणी अमृत आहार।
लीलां लेतउ उलखिउ, जाणी किद्ध जुहार ॥४३६॥

[ढूंठा-जन कृत सूदा-वन्दन]

सउण भणी [1]ते वंदीयां, लीधां पूगी पान।
'भाई' भणी बोलाविउ, दिइ मनशुद्धिइं मान ॥४४०॥

[ढूंठा जन आत्म-परिचय]

जूठाणइ जूय केतलूं ? [2]केतूं जाण जूआर ? ।
उडइ नइ उडिउं सहइ, ते अम्ह दाखि विचार ॥ ४४१॥

(वस्तु)

मित्र संभलि, मित्र संभलि, मुझह वीतक्क ।
हूँअ स्वामी सीघल-तणउ, कुंअर कोडि कंचण सहित्तउ ।
सइं गय हय सय पंच, लेइ ए पाटण पेखण पहुत्तउ ॥
ते हेला रसि हारिउं, नाक पागं करं कन्न ।
ईणि जूठाणइ जूअ रमइं, वलोया भइ बावन्न ।'४४२॥

(चउपई)

सूध न कांई देखूं स्वामि !, जूउन्दंड पडइ ईणि ठामि।
मसिवर एक-मूठि हारीइ, बीजा काजिइं बाजी सारीइ ॥४४३

[कामसेना गणिका जूठ-प्रसंग]

[3]वे जण पाटण-मज्झि पहुत्त, दीठउं देउलि लोक बहुत्त ।
"कहि भाई ! कोलाहल किसिउ ? ए अण-खाधइ पाणी रिसउ ४४४

"कामसेना जे नाचिणि नाम, लिइ पच सइं सोला द्राम ।
सुहणइ सोमदत्त माणिउ, ते इहां ऊहडी नइ आणीउ ॥४४५॥

१. 'सहु बंदीउं' आ. २. 'केता रमइं जूआर' आ. ३. 'तं सुणि' आ.

¹गणिकानी मा अतिहि रढ़ील, विवहारीउ मनाविउ मिल ।
डोकरी मडिउ गाढउ द्रोह, अर्ध आपतउ न छूटइ छोह" ॥४४६॥

[सदयवत्स वचन]

"²सदयवच्छ बोलइ : सुणि मित्र !, ए खोटू अति करइ अखत्र ।"

[ढूंठा-वचन]

"देव ! अनेरउ नथी अन्याउ, माती राडइ वीटिउ चाउ ॥४४७॥
एक भांडणिया ऊठी भाड, वीजउ महि मूकिउ साडी ।

त्रीजी राउल-वाई रांड, ³इणि कारण टलोइ मांड" ॥४४८॥

ते जोवा पुहुतु प्रासादि, डोकरि दीठी वढती वादि ।
"नर नवयोवन छइ नवरगि, ए बोलिस्यइ अम्हारइ ⁴अंगि" ॥४४९॥
एकदति बोलइ "सुणि साह !, अम्हि परठया छइ राउत आह ।"
सेठि-कुमर ऊचरइ सुजाण, "आपण बिहु जण एह प्रमाण" ॥४५०॥
तव तीणइ बिहु कारण कही, राउति वात विमासी सही ।
सदयवच्छि विचि लीधा साद, तेह-नउ निरवाल्यु वाद ॥४५१॥

[सदयवत्स-कृत चतुर न्याय]

एक सेठि हकारिउ ताम, "आणि विच्चे दिइ दर्पण ठाम" ।
सेठिइ जे जण बोलाविउ, अरथ आरीसउ लेई आवीउ ॥४५२॥
धन रेडी ओडिउ आरीस, एकदति तव दिइ आसीस ।
आधी थई लेवानइ अर्थ, "दरपणमाहि गिणी लिउ गर्थ ॥४५३॥"

[गणिका-कपट उपहास]

हाथि ताली देई हसिउ लोक : "राडइ लीधा टका रोक ! ।
अ तरि तेडावी डोकरी, काढी बाहरि बाँहि धरी ॥४५४॥

१, 'इतनी मति माइली रढोल' २. 'सुदय भणइ सुणि ढूंठा मित्र' म ३. 'ए मुंह' म ४. 'भगि' मा.

इकि छाणिइ, इकि छांटड छारि, इकि खोजवइं अनेरइ सारि।
एकदति तव [1]ओंपी इसी, राय राजा छवि राणी जिसी ! ॥४५५॥

तेह-नणइ छोकरि नही छेह, डोकरी देखी हरखी तेह।
वादिइ विवहारोइ हरावी, टका टीक रोक लेइ घरि आवी ! ४५६।

[गणिकाप्रति कुचरत्रीजन-घृणा]

आगगरणा धवनहर घसी, अवरना सवे आवी उद्रमी।
"कहउ, किसी-परि जीतउ वाद ?," बोली न सकइ वईठउ साद ॥४५७

जीणइ घणा घामव्या ति घाठी, कला बहुत्तरि-सिउ बुद्धि नाठी।
त्रिणि दिवस जि लाधणइ लाधी, घणे घावू ए कीधी घाघी ॥४५८

परख्या पाखइ पुरुष वीससी, नयर-माहि नर सघलइ हसी।
"काई रे छोडी ! पूछइ काज, हारिउ वाद [2]विगूती आज" ॥४५९॥

[सदयवत्स प्रति कामसेना-आकर्षण]

कामसेनि सभलिउं स्वरूप, ते राउतनूं [3]जोईइ रूप।
तेडिउ सघलउ सपरदाउ चातुरि चतुर जोएवा जाउ ॥४६०॥
पुहती मंडपि [4]मुंधा दीती, वाजिउ [5]गजर सघुडिउं गीत।
वशकारि सातइ सुर सारि, आलति कीधी आलतिकारि ॥४६१॥

उडोमान उडवीउ ताल, [6]झणझुणा करइ मृदग रसाल।
धुरी घूआनी घूरली आदि, रही रेग [7]रविनइ प्राथादि ॥४६२॥

नयण [8]वयण मन मस्तक नास, हावभाव [9]कटि-तणा कलास।
उर कर चरण लगइ वालवइ, इम जूजूआ अ ग जालवइ ॥४६३॥

---

१. 'देखी' मा. २. 'विगोई' मा. ३. 'जोयुं' मा. ३. 'जोवा नइ तिंहा' मा. ४ 'मधि मादित' मा. ५. 'गुहर सुद्ध सगीत' मा. ६. 'रणझिण' मा. ७. 'देवनइ' मा. ८ 'मयण' मा. ९. 'करइं' मा.

[कामसेना-विह्वलता]

उत्तर ऊजेणी-पति दिट्ठ, वईठउ मत वारणइ वलिट्ठ ।
कामसेनि [1] थई काम-विकाम, माणम कोइ न जाणइ माम ॥४६४॥

[2]तेउ चलावी भणी प्रवास, नूटी नाडि, न [3]सलकइ मास ।
नयर-[4]नरेसर वाहर करइ, इसिउं पाप भणए-फूटइ मरइ ॥४६५॥

[उपचार]

राजवेद जई जोई नाडि, एउ विकार नही ग्रम्ह पाडि ।
देस-विदेसी बीजा यहू, राजा-[5]ग्रायसि ग्राविउं सहू ॥४६६॥

एकि भणइः "ऊतारउ [6]ग्राच," एकि सेक दिवरावइं पाच ।
एकि भणइः "ग्रालस छाडीइ," एकि [7]भणइः "मडल माडीइ" ॥४६

एकि भणइः "ग्रम्ह हलूउ हाथ," [8]एकि भणइः "दिइ कडूउ कवाथ"
ग्रापापणी कला सवि कहइं, [9]गुणीया नइं थईद गहगहइं ॥४६

[गूर्जर वैद्य-निदान । ग्रनंग-रोग]

गूर्जर वैद्य तिह्वारइ हसिउ, जाणे धरणि-धनतरि जिसिउ ।
दीठइ रूपि सरूप ग्रोलखइ, वैद ग्रनेरु रा ग्रागलि भखइ ॥४६६

"एहनइ ग्रंगि ग्रगलउ ग्रनग, नरवर ! यो दीठउ नवरग ।
महूरति एकि मूर्छा भाजसिइ, मिलिउ लोक देसी लाजसिइ" ॥४७

तास वचनि कालमुहा थाइ, वलिउं चेत. [10]"वैद ऊटथा जाइ ! ।
वाहरि वरतइ भीडाभीड, प्रमदा पंचवाणनीं पीड ! ॥४७१॥

---

१. 'हूइ कामिनी काम' पा. २. 'सेई' पा. ३. 'लामइ' पा. ४ 'नरेस न' पा. ५. 'इसि ते' प्र. ६. 'ग्राच' अ. ७. 'कहइ' पा. ८. 'ए थाइ छत्रीमु काप' पा. ९. 'गुणीया गीकारकि' पा. १०. 'वेगि ऊठी' ?

[राजपुत्र-आनयन-उपाय]

नाचिणि [1]जस नायिकीदे नाम, ते तेडीनइ कहिउं काम।
"तूं [2]डाही डांखरी म जेडि, रवि-[3]मंदिरि जई राउत तेडि ॥४७२॥

उत्तरि बईठउ ऊंची पाटि, भड जे पाखलि वीटिउ भाटि।
केकि-कला सिरि भांटि झमाल, आगलि ऊडण अनइ करमाल ॥४७३

[वृद्धा एकदंति विरोध-दर्शन]

एकदंति तीणि वोल्लिइं वली, [4]रीसिइं पुरुष एक ऊछली।
"जिणि [5]हलुई कीधी आज, ते टीटउ तेडिइ [6]कुण काज ? ॥४७४॥

राय राणा [7]भूतलि [8]जेतला, विवहारीया कहूं केतला ?।
करइं साद कोडिसर केडि, केहा गुण तूं राउत तेडि ? ॥४७५॥

[गणिका-द्रव्यहरण-नैपुण्य]

पारखि-सिउं जउ कीजइ प्रेम, पाडी दिइ पीयारू हेम।
मोछी वानी तउ घणउ विराम, सारी लीइसूं [9]सारा द्राम ॥४७६॥

दोसी [10]कोर कापडा दियइ, लूगड-मांहि ति विमणूं लीयइ।
काज सुरहीउ सारइ घणूं, आपइ सदा सुरहू घूपणू ॥४७७॥

सोनी काजि [11]किह्वारइं [12]वाहि, सूध चउथ लिइं सूना-मांहि।
पहिलू घाट घडीनइ हाटि, घरि आवइ घडामण माटि ॥४७८॥

बांभण-सिउं बहु नेह म करइ, मास पक्ष पूठिइं परिहरइ।
भाट भलउ हुइ दोह वि च्यारि, जां जूवटइ न थालइ हारि ॥४७९॥

---

१. 'जे' मा. २. 'गाढी' मा. ३. 'मडपि' मा. ४. 'दीसइ' मा. ५. 'हूं हानू' म. ६. 'शूं' मा. ७. 'भूपति' म. ८. 'जे भना' मा. ९. 'माला' म. १०. 'कापड वारू' मा. ११. 'जिह्वारइ' मा. १२. 'पाहि' म.

तंबोलीनो थोडो तीम, जिहनइ पान पांचनो सोम ।
टीटा देखी टाले ढेंठि, साहमो जईनइ मनावे सेठि ॥४८०॥

माली आपइ [1]सुरहां फूल, जे वारू नइ अति बहुमूल ।
मोटा फोटा अनइ छड छेक, तेहनइ दीजइ पहिलु टेक ॥४८१॥

फटरसी नइ [2]फरफट कूंच, हाथ फिल्हारइं न मेल्हइ मूंछ ।
ते उनगूनइ म देसि अडाउ, कूडो [3]कग्गर नाउ नसाउ ॥४८२॥

[धनवान परीक्षण]

नाणावटि नाणूं [4]निरखीइ, तिम आपणइ पुरुष परखीइ ।
"[5]जिहा जिहा दीसइ द्रव्य जेतलउ, तिहा आदर कीजइ तेतलउ "४८३

[कामसेना-वचन]

कामसेना नइं चडिउ कोप, नायकदे प्रति दीध निरोप ।
"ए बूढी-तणा बोल म विमासि, राउत तेडो आणि आवासि" ॥४८४॥

गई रामा [6]रवि-मंडप भणी, कही व्याधि ते कामिणि तणी ।

[सदयवत्स-प्रति वचन]

"सुणि सावज्जल साची वात, कामसेना तूं-रात्ती रात ॥४८५॥

हूं पाठवी तीणइ तूं अ पासि, [7]पसाउ करी अम्ह आवि आवासि ।
परय मनेथि अछइ [8]अम्ह घणउ, ते वनिता [9]विक्रम तूं अ-तणउ।४८६

बार म लाउ, वहिलउ थइ देव !, टाला तणी [10]टली छइ टेव ।
मरइ अणूटइ मोटूं पात्र, तइ दीठइं दुःख फीटइ गात्र" ॥४८७॥

---

१. 'अरस्यु नेह मन' प्रा. २. 'फाफट' प्रा. ३ 'कद घस लाउ' प्रा.
४. 'परखीइ' प्रा ५. 'जेहनउ भाव दीसइ' [illegible] 'घि' प्रा.७. 'मपा'
प्रा. ८. 'प्रति' प्रा. ६. 'विभ्रम' प्रा. १०/[illegible] ' प्रा.

[ठूठा प्रति सूदा-वचन]

सुद्द भणइ. "सुणि ठूठा मित्र !, इणि मांडिउ एवडं चरित्र।
[1]इम तेडइ [2]तिम कारण कहइ, एहू वात विमासण लहइ" ॥४८८॥

[ठूंठा-वचन]

ठूठु भणइ : [3]"नवि जाणउ भेद, म्हारि राउ-तणइ मनि खेद।
[4]देहरा माहि दूहवी जेम, इस वीसरइ न डोकरि तेह ॥४८९॥

इणि वीसासी वाह्या वीर, इणि [5]खाइ पाडगा घर धीर।
[6]इणि वेसाउ विगोया भला, इणि रोल्या राउत केतला ॥४९०

वेसा-तणउ म करि वीसास, वेसा-वयण ते मुहि गली पास।
[7] मच्छ जेम मास-नइ धरइ, जीव तणउ जीवी अपहरइ ॥"४९१

[सूदा-वचन]

सूद्द भणइः "हूं अ जाणू सहू, वेसा तणी वात छइ वहू।
जउ भाई ! भय कीजइ एह, छयल्लपणानउ आविउ छेह" ॥४९२

[ठूठा-वचन]

"एह अनेरउ नही उपाउ, एहनइ विषय-तणउ विवसाउ।
इहनइ मनि माटीनी आस, इहनइ लहइ विदेसी वास" ॥४९३

[परिचारिका निवेदन]

परिचारिकि जे [8]पूठिइ वही, तीणइ घरि जईनइ कारण कही।
"ते धीरउ आवेवउ करइ, पणि ठूठीउ [9]कूटाइ करइ ॥" ४९४॥

१.'तिम म २.'प्रति' मा. ३.'मइ'मा. ४.'हारिउ वाद विगोइ जेह, इ वीसरइ' मा. ५.'ख्या छइ' म. ६.'इणइ व्यास विगोया घणा' मा. ७. 'थाणइ जेम मछिनइ' मा. ८. 'वहसी' मा. ९. 'पूछो रही' मा.

तउ बीजी बोलावी वात : "जई चालवि ठूंठउ चंडाल ।
मानी लाच लोभवि घणूं, कामिणि काज करे आपणूं" ॥४९५
[1]तउ तीणइ खिनकी-नइ मूंट, हूनावी बोलाविउ ठूंठ ।
लांच-तणउ देखाडिउ लोभ, कांइ ए स्त्रिी-कारणि दोम? ॥४९६॥

[ठूंठा ने लांचनुं प्रलोभन]

[2]लांच आंच नवि ठूंठउ सहइ, कांई कथन अरूख कहइ ।

[ठूंठा-वचन]

"कामसेनि-लहुडी चित्रलेख, तेह ऊपरि माहरी अभिलेख ॥४९७॥
ते जउ रातिइं मइं-सिउं रमइ, तउ ए गेहि तम्हारइ गमइ ।
बीजू [3]कांइ म बोलि आल, [4]ठूंठइ-सरिस न चालइ चाल ।४९८।
मनि आपणइ आलोचीय माच, वेशा ठूंठइ लीधी वाच ।
चतुरा राउ ऊठाडयउ तेहि, आणिउ गयगामिणि नइं गेहि" ॥४९९॥

[कामसेना आवासे मूदा-गमन]

नाचिणि नर आवंतउ देखि, आपणपूं मंवरी सुवेखि ।
कणय-कलस भरि निर्मल नीर, दिइ आचमण विच्छे दिइं चीर ।५००

[सत्कार]

आदर-सिउं अवास मझारि, [5]आणी आवरजइ वर नारि ।
भोजन भगति भुगति जूजुई, मिलियां राति सुरंगी हुई ॥५०१॥
घडइ मलकि जागिउ जूआर, दांतण करिवा काजि कूंआर ।
कामसेनि आयस उल्लासि, दांतण लेईनइ आवी दासि ॥५०२॥
"दांतण सारिइं, [6]ऊग्यू सूर, आविउ ठूंठः म करउ असुर ।"
बोइं आपी बोलइ बोल, "राउत ! रखे करउ [7]विगोल ।" ५०३॥

---

१ 'हुपाई' अ. २.'वाटे करीनइ सलको मूंट' पा. ३. 'पेशा-वचन' पा. ४. 'बहु पा. ५. 'इस्यु मणिइ ठूंठु चंडाल' पा. ६. ते आवर्जन करइ अपारि' पा. ७. 'समरइ' प. ८. 'पति काल' अ.

कामिणि [1]कपट न विमास्यूं चीति, खेडूं खडग विलायुं भीति।

[द्यूतस्थान-प्रति गमन]

५.८.२.२॥१

आरति टली ऊतारा-तणी, भड चालिउ जूम्र [3]ठाणा भणी ॥५०४

ता जूम्रार बईठा जूवटइ, जा लगइ अवर [4]कोइ ऊमटइ।
ता लगइ कूडी काढइ मूठि, [5]पडिय-सिउ बोलाव्या ठूंठि ॥५०५॥

तीणइ जाणिउ नवउ जूम्रार, ठिगि सघले [6]जई कीध जुहार।
पड चापी बईठउ चउपट्ट, नही नर बीजा [7]मानि मरट्ट ॥५०६॥

तीणि थानकि सपराणा सही, एकइ पुरुषि परीक्षा लही।

[सूदा-द्यूतचातुर्य परीक्षा]

आघउं थईनइ बोलउ हसिउ, "सूदा ![8]सूथ पूछीइ किसिउ ?॥५०७॥

राउत!रमतउ म करिसि काणि इणि पडि जीपिसि ओडथा प्राणि।
लाख-लगइ हूं पूरिस हेम, [9]'ओडि मरथ मनि माणे एम" ॥५०८॥

[प्रसिद्ध द्यूतकार उपस्थिति]

आविउ सूद्रक सकतिकुमार, आविउ वीरभद्र भेंकार।
आविउ कामसेन नइ कालूउ, आविउ [10]रिणवत रोसालूउ ॥५०९

आविउ वंकट नइ वाघलु, आविउ रीसट नइ राघलु।
इम जूटवइ जूआरी मिल्या, वीरइ वीर बईसता कल्या ॥५१०॥

---

१. 'कयन' अ. २. 'चमकिउ' आ. ३. 'वासा' आ. ४. 'को न' आ
५. 'पुरुष एकसिउ' अ; 'बइ भूंटि' आ. ६. 'विधि दीधउ ठाहार' अ.
७. 'मुनि' आ. ८. 'सूथ' आ. ९. 'तिम मोडे जिम जाणइ तेम' आ.
१०. 'रोपु' आ.

[सदयवत्स द्यूतजय]

सदयवन्छ नइ रायतिकुमार, [1]वि जरा न्डा रमइ जूग्रार ।
बावन वीर बहुत्तरि राएा उपरि-थ्या भड भागड दाएा ॥५११

हेला-माहि हराविउ राउ, [2]जीनु सोग्रन लक्ख सवाउ ।
तीएाइ बीजा ऊारि उद्रक, रमता थिउ साम्हउ सूद्रक ॥५१२॥

सूद्रक-सरसी समवडि जाइ, वीरिइ वीर न पाछउ थाइ ।
विहु जरा जगलू दीसइ जयत, सूदइ पोढ्ं पाडिउ पहित ॥५१३॥

काल-पास शिव जोगिरिए जेउ, जाएाइ [3]जूग्र तरा भल भेउ ।
ते नर हारी ऊठया ग्राथिः एक भएाइ ! "ठिग ठू ठउ साथि '।५१४

धन ऊमरडी ढिगलु करइ, म्रोडउ वईठउ खोलउ भरइ ।
ऊठिउ कुमर ऊतारइ जाइ, धन वेचतउ कुरिएइ न रहाइ !॥५१५॥

[द्यूत द्रव्य दान]

ग्ररा-मागंता ग्रोडावइ हाथ, सूदा-जम जाएाइ जगनाथ ।
[4]सूदउ सविहूं ग्रापइ जीप, जूय रमिवानूं एह जि कीप ॥५१६॥

[सावलिंगा ग्रर्थे वस्त्राभरण-विक्रय]

भउपट मल्ल चुहटइ सचरइ, दोसी हट्ट दीठइ सभग्इ ।
[5]मावलिंगिनइ सरखा सार, वुहुरइ नानाविध शृंगार ॥५१७॥

कस्तूरी केसर कप्पूर, [6]धूप धूपएाा ग्रनइ सींदूर ।
गार सुगध वस्त [7]घरा लिद्ध, ते वाधी दोसीनइ दिद्ध ॥५१८॥

---

१ 'ए वि' ग्रा. २. 'सूद्रर' ग्र. ३. 'जवटनु' ग्रा. ४. 'ग्रापइ सविहूं कारणि जीप, कूडे रमता पडइ केही कीप ?' ग्रा. . ५ 'पहिरवा पवित्र, नरवरि वुहुर्या वस्त्र विचित्र' ग्र. ६. 'धुति धूपनइ ग्ररिस' ग्र. ७ 'बहु' ग्रा

कामसेना घरि जण जेतला, ते जोता हीडइ तेतला ।
ता अढलक [1]आवइ आफणी, अणतेडिउ ऊतारा भणी ॥५१९॥

हसगमणि-नइ आपिउ हेम, माडइ लेखा अधिकू प्रेम ।
तीणइ [2]रड-मनि फीटी रीस, एकदति तव दिइ आसीस ॥५२०॥

भोग भगति आवर्जिउ इसिउ, च्यारि राति राउत तिहा वसिउ ।
दिन पचमइ व्याहाणा वार, हुई हथीआर-तणी [3]मनि सार ॥५२१॥

[म्यान मध्यगत अमूल्य काचली]

[4]असि ऊनारी जोइ जाम, अबला [5]ओढणी वलगी ताम ।
खेडउ झाटकता खडखडी, सूकी खोलो आगलि पडी ॥५२२॥

खोलि-माहि अमूलिक जिसिउ, तेह सरीखु कहीइ किसिउ ? ।
सवा कोडी-[6]तणी काचली, चद्रवदनि [7]देखीनइ चली ॥५२३॥

कामसेना [8]प्रभु लागी पागि, "स्वामी ! जि काइ जाणत मागि" ।
मनि आपणइ सुणी महाराजि, अलविइ आपी अबला काजि ॥५२४

[9]हूउ चतुर बोलिवा सचीत, तव जूय-ठाणइ चमकिउ चीत ।
जा [10]आराधण आरति हुइ, तिहा लगइ जई आविउ तोइ ॥५२५॥

[कामसेना कचुक परिधान]

कामसेनाइ पहिरी काचली, रगिड राज-भुवनि [11]समवली ।
कीधउ सोहतउ सिणगार, [12]उपरि एकाउलि मोती-हार ॥५२६॥

---

१. 'ऊनारा भणी, अणतेडयु आविउ आपणी' भा. २. 'द्रामइ' भा. ३.'सभाल' भा ४.'इसि' भा ५.'मोढणि दीधी' भा.६.'केरी' भ.७ 'तीणइ दीठइ' भा. ८. 'जई वलगी' भा, ९. 'हउउ चतुर चालया सचति,तव जूआणइ गिउ मन-भाति' भा १०.'आरोगण' भ ११.'साचरी' भा १२.'उरि' भ.

पात्र राउ ईमी पातली, [1]साधिइं संपरदाउ नइ सग्गी।
चतुरि चिहुंदिसि घालइ द्रेठि, चहुटइ साम्हउ[2]मिलिउ सेठि ॥५२७

[श्रेष्ठीए पातली जोई]

[3]सेठिइं सा बोलावी नारि, रंगिइं जाती राज-दूआरि।
हूडउ रतन-जडित कंचूउ, देसी नर निरखतउ हूउ ॥५२८॥

[चोरी मां गयेली कांचली ओलखी]

निरखी उलखीयां अहिनाण,[4]तु हूउ धुगति विमासइ जाण।
रा मंदिरि मानीतु पात्र, किम एहि-सिउ [5]पहावइ खाउ ? ॥५२९

[महाजन श्रेष्ठी पासे फरियाद]

पांच सात तेडी आवंत, मनि आपणइ विमासिउ मंत।
नुहि एकला जि पुरुष प्रभाव, [6]मिली महाजनि कीजइ राव ॥५३०॥

[महाजन श्रेष्ठी नाम]

तेडिउ तेजपाल [7]तारसी, तेडिउ [8]धांधउ नइ धारसी।
वहिलउ थई नइ वीरम तेडि, [9]जेसल नइ करणउ करि केडि ॥५३१
[10]तेडिउ संतिग [11]सामल सार, आवड,[12]आंहड अभयकुआर।
पाल्हउ [13]पासनाग जसनाग, माहव मोकन नइ वरणाग ॥५३२।
[14]धाईउ धीघु नइ जसराज, पेथु पूनुसाह महिराज।
[15]हादु हरपति अनइ हरराज, हामु जागु नइ मकराज ॥५३३॥

१.'मागइ ति' पा. २.'जोई बोलइ' पा३. 'चुहटइ' पा.४.'एह'पाप ५. 'खरावू' म. ६. 'मेल्या सामंत' मा. ७.'तेजसी' प. ८.'धांखिग' पा. ९. 'नही धुगति जे कीजइ नेहि' प. १०. 'सोसउ' प. ११. 'ना. साहारा' प. १२. 'भोमउ' प. १३. 'पासउ पामउ माल माइण वेहूव माइक साहास' पा. १४. १५.:'पा' ओटो 'प' मां नथी.

[1]राजु भोजु नइ वलीकु जगु, नाइउ नीसल नरमति नगु ।
धरणिग धारण ताहरू काज, ऊठउ महाजन मिलीइ आज ॥५३४

[2]आसड पासड पूनसी सेठि, मिलिउ महाजन वडली-हेठि ।
घमक्या सवि चुहटानी वाट, हूं हूं [3]करी सभेरइ हाट ॥५३५॥

['हाट-माहि पाडी हडताल']

[4]हाट-माहि पाडी हडताल, चाल्या [5]कामसेनाना काल ।
माथू धूणइ वुहरइ "माम, [6]गू गलि करी बीहावइ गाम ॥५३६॥

[7]नुमेठि मेलावउ करइ, [8]राउलि जई पोकारव करइ ।
[8]रायगणि जई ऊभा रहइ, [9]नामइ काथ, नवि कारण कहइ ॥५३७

[राजसभा-प्रवेश]

मान देई बोलिउ महाराज : "मिलिउ महाजन केहा काज ?" ।

[श्रेष्ठी वचन]

तउ श्रीमुखि बोलाविउ सेठि, "तम्ह ऊपरि कुण[10] जोइ कुद्रेठि?" ५३८
"स्वामि ! कुद्रेठि न जोइ कोइ, अम्हे वाणीए न वसिवू होइ ।
घे जोईइ [11]निर्भय नइ काजि, वारी हुइ ते ताहरइ राजि॥" ५३९॥

[संदिग्ध वचने आशंकित राजा]

सालिवाहन समम्या लहइ, नद लोकनइ निश्चिइ कहइः ।
"बीहता काई म[12]करिसिउ माम, निर्भय[13] थ्या भाखउ नर-नाम" ५४०

१. 'मा लीगी' म मा नथी २.मा सोटो 'म' मां नथी ३ 'करइ ' म. ४. 'हाटि गवे' म. ५. 'सान' मा. ६. 'गूगरि' मा ७. 'हाहुलि साडुनि त पोकरइ' म. ८ 'राउ भागलि' मा.९. 'सिर नामइ ' मा. १०' 'करइ' मा. ११. 'वारिजइ काजि, पवइ देव ! ताहरइ' म. १२. 'बोमु' मा. १३ 'पई हवइ माखव नाम' मा.

"नरवर ! नर तीह नाम न होइ, [1]कंद्रप-कटाक कहइ सहू कोइ ।
[2]तेह-तणइ उर-मंडण अत्थि, सरव समोप्पइ हूं [3]तिहि हत्थि ॥"५४१

[राजा शालिवाहन-वचन]

राइं मा बोलावी रमणि : "कहि, कांचनी समोपी कवणि ? ।
पूछ्या-तणउ [4]पडूत्तर नाप, तू सूली घाल्यां नही पाप ॥"५४२॥

[कामसेना-वचन]

तीणि[5]वचनि चमकी तइ चिंति, "स्वामी!सांभलि अम्ह घररीति ।
उत्तम मध्यम लाग्या मला, साघ चोर कहीइं केतला ? ॥५४३॥

आठ पुहुर एकि आवइ जाइ, भोला भूपति ! पूछइ कांइ ? ।
वाट, वृक्ष-फल, नइनूं नीर, नयर-[6]सोहा सिरिग-तणूं शरीर ॥५४४

[7]संतति सुपुरिस-केरी दानि, स्वामी ! सविहूं सरीसा मानि ।"

[अप्रसन्न राजा]

तीणि वचनि रीसाव्यउ राउ, कामसेनाइं कीधउ कुपसाउ ॥५४५।
रूडइ [8]बोलिइं नापइ राउ, मारी झूटी पूछउ माउ ।

[चोरी नुं माल]

राज-दूतइ रा-आयस लही, गयगामिणी चोर जिम ग्रही ॥५४६॥

निवड बंधि बाधी-नइ नारि, मारइ महिला विसमे मारि ।
इम विनडी ती न कहइ वात, सूली-तणी पूर्छमु हुई सात ॥५४७॥

१. 'कूडूं कपट' मा. २. 'तेहनुं उरि जे मंडण मछइ' मा. ३. 'ते पछइ' मा. ४. 'तू उत्तर' मा. ५. 'वातइं सा चमको चीति' मा. ६. 'सालि' मा. ७. 'सुपुरिस दाता घणां छइ' म. ८. 'पूछो कहइ' मा.

वाजि [1]काहल लोक घरा मिल्या, एकदंति-नइ कहिवा चल्या ।

[एकत्रित गणिका-नाम]

एकदंति ऊठी उह्लसी, मिली [2]मेलि गरिएका-नइ किसी ॥५४८॥

हीरू हासलदे [3]हरखली नारी, सीगालदे सोमलदे सवि वारि ।
काऊं करणू नइ काहूली, नागलदे नामलदे भली ॥५४९॥

साऊ [4]सहिजू नइ सहिवली, वाछू मीणलदे वरजली ।
[5]नागू नायकदे नागिणी, माजू माह्लणि [6]नइ कमिणी ॥५५०
राजू रतनादे रूपिणी, भाऊ भावलदे रखिमिणी ।
लुहडी वडी [7]विलासिणी घणी, [8]राज-भुवनि ग्रावी रुणझूणी॥५५१

[गणिका-समुदाय राजसभा-प्रवेश]

[9]रायनइ सवे दिइं ग्रासीस, सु दरि [10]गाढउ ढाकिउ सीस ।
"राज! [11]राइ-परि सिउ रोस?,कामसेनाइ कुण कीधउ दोस?॥५५२
सूली भणी चलावी स्वामि !, ए ग्राचार ग्रछइ तम्ह गामि ।"

[राजा-वचन]

राउ रीसाविउ बोलइ इसिउ, "का रे [12]राडु! पूछउ किसिउ?॥५५३॥

सातउ चोर, नइ थाइ साध, ग्रनइ वली पूछउ ग्रपराध ? ।
नयर-सेठि-केरी काचली, घर [13]फाडिउं घरवा रत [14]फली ॥५५४

१. 'लागि' प्रा. २. 'श्रेणि' प्रा. ३. 'कामलि किसा, सेतू सीमिणी ज ल्हणि जिसी' प्र ४. 'सूहवदे' प्र. ५. 'नाकू' प्रा. ६. 'कारेमिणी' प्रा ७. 'मुहासणि' प्रा. ८ 'रागइ राज भुवनि मवि वली' प्रा. ९ 'बूटी' प्रा. १०. 'माफइ माढड' प्रा. ११. 'काय किस्यु ए' प्रा. १२. 'कान कहियउ' प्रा १३. 'भाडू' प्रा. १४. 'वलो' प्रा.

[तलार-मह सदयवत्स-युद्ध]

तं सभलि ¹तव चडिउ तलार, बोलाव्या ओलगू अपार।
कोटि धरीनइ बहु वांधिउ वंधि,²असि लोह-सिउं आहणु कधि ।५६३

चिहु दिसि चउरा पायक मिल्या, लउहड लाकड लेई वल्या।
एक तणी ऊदाली डाग, सूदइ सविहूं भागा आग ॥५६४॥

'हणि ! हणि !' भणी, लिद्ध हथीआर, हाकइ ताकइ³धाइ अपार।
जे सुभड भला ते पाखलि⁴फिरइ, आघउ⁵थईनइ घाउ न करइं।५६५

हठिइ चडिउ तलार हाकलइ, जे जीव राखी 'रहज्जो' कलइ।
झूंटि धरी मनाव्यउ झाक, कोटवालनू वाढयूं नाक ॥५६६॥

"जा बापडा ! म बोलिसि वर्व, गाढा सविहूं ऊतारूं गर्व ।
मा ओलगू जि विहूं बलउ लहइ, तिह मारता किम कर वहइ ? ॥५६७

मोकलि जे गाढा बलवंत, ⁶मोकलि जे सूरा सामंत।
मोकलि राउत रणि वाउला, मोकलिजे अगि ऊनावला" ।५६८॥

[तलार-विमासण]

बली तलारि विमासिउ इसिउ, "छेदिइ नाकिइ ⁷छूटीइ किसिउ ?
अउ नरवर वीनवीइ आम, तउ मू ठाकुर⁸फेडेमिइ ठाम ॥" ५६९॥

[राजा-प्रति निवेदन]

अण मोकली जणाविउः⁹"स्वामी!,¹⁰दैत्य कि दाणव आउ सग्रामि।
कामसेना-ना वाढया वध,अम्ह-सिउ कीधी आलि¹¹'मणाव"॥५७०॥

---

१. 'तुहि' प. २. 'खडग' आ. ३. 'धीर' आ ४. 'ममइ' आ. ५.'थई कोइ नवि आगमइ'' आ.६. 'अ गि जे भाउला' आ.७ 'भीवइ'आ. ८. 'फोडवि' आ. ९. 'राउ' प. १० 'दैव' प. ११. 'मनू ष' प.

[चोल-स्थाने संमिलन]

कोटवाल-नूं कारण सांभलिउ, चुहटुं चाली जोवा मिलिउं।
तिहि साथिइं-थिउ आविउ सेठि, मूदउ दीठउ सूलो हेठि ॥५७१॥

[सदयवत्स-उपस्थिति-जन्य श्रेष्ठी-वचन]

देखी मूदु सेठि टलवलिउ, मांन उपगार विमासी वलिउ।
"[1]सुणि साहसिक पुरिस सुपवित्त, [2]ए कुण आल चडाव्युं मित्त?"[1]५
मूदु भणइः "ए आल म मानि, मइ कीधूं नर-वहिस निदांनि।

[आत्म-वृत्तान्त-वचन]

"समलि मित्र! माहरू गूझ, थोडइ कहिइं घणूं तूं बूझ ॥५७३॥
हाथि ताली देई जाऊ देखतो, किम [3]भूभू आ क्रवेखतो?।
कामसेनि-नूं विणसइ काज, पुरुष अनेरा आवइ लाज ॥५७४॥
[4]नूकइ अवधि दिन ५ प्रभाति, महिला मरइ, नही मनि भ्रांति।
भाट-गामि छइ मुझ मानवण, कागल जाइ तउ हुइ जाण ॥५७५॥
मुझ पहिनाण-तणइं आलापि, कागल लेई कागलीया आपि।
दोसी-तणू [5]निरोपम नाम, जिहां थापिणि मूंकया छइ दाम ॥५७६
ते हूं मागीनइ मोकलावि, जे तू चीति [6]वहइ ति चलावि।
उढउ अधिकउ [7]न बोलइ बोल, नर निरतउ मोकलइ निटोल ॥५७७

[पालंका-प्रदत्त श्रेष्ठी]

सेठि विमासी जोईं [8]वान, ए [9]को बाहू बीर विख्यात।
इणइं[1] अम्ह कीधउ उपकार, [10]हिव वलतउ वालूं विवहार ॥५७८॥

१. 'सुण सुण साहसीय सुपवित्त' भा. २. 'सुणहिइ भास विसायूं' भ.
३. 'हइ' भ ४. 'दुंकइ' ब. ५. 'निरो—' भा. ६. 'वसइ' भा.
७. 'म' भा. ८. 'तो' भा. ९. 'मूं'

[प्रर्थ- सदुपयोग]

जिणि अर्थिइं न भाजइ भीड, जिणि न टलइ परनी पीड।
मागण मित्र काजि टालीइ, ते संपति सघली वालीइ !॥५७९॥

अरथिइं सघलां सीझइ काज, अरथि आपणि कीजइ राज।
अरथिइं सविहिं ढांकीइ अखन,[1]देई अरथ विछोडि सुमित्र ॥५८०॥

[वणिक्-सहनशीलता]

मेलइ वाणिया विवसा जोडि, वेला [2]लाधी वेचइ फोडि।
जीव-तणउं जे जीवीय कहइं, तेहनउ वाढ वाणीउ सहइ ॥५८१॥

बांध्या राउ विछोडइ वंध, पडी कुवेला ऊडइ कंध।
ठाणि गाढिम नवि सीझइ अर्थ, तिणि वेलां वाणिउ समर्थ ॥५८२

[3]मरडी मूंछ सेठि संचरिउ, राउत वली विमासण-[4]भरिउ।
"ईण विछोडया वेसिइं द्राम,तउ माहरी परिण[5]भागी मांम"॥५८३॥

[सदयवत्स साहस]

पाछउ तेडिउ भाई भणेः "एक वात संभलि अम्ह तणी।
मुझ छूटेवा-तणी अछइ आहि,कांइ वित्त वेचावूं तुम्ह पाहि? ॥५८४॥

[6]मांह हुकारिउं न करइ किह्वार, तउ मोटु मानूं उपगार।
[7]न्याय नीति नरेस संभालि, कामसेनि नइं [8]कंदल टालि ॥५८५॥

साव चोर आवइ इह वारि,चडिइं चोरि[9] कां विनडीइ नारि ?।
ए एतलूं करीनइ काज, कागल कापड मोकलि आज॥"५८६॥

---

१. 'वेचो' मा. २. 'आवी' मा. ३. 'मोडी' मा. ४. 'पडिउ' मा. ५. 'जासइ नाम' म. ६. 'जु मु वारु करइ विचार' मा. ७. 'न्यायनी वात' मा. ८. 'कइ घस' म. ९. 'का नडीइ' मा.

(वस्तु)

राज-मंदिरि, राज-मंदिरि, सेठि संपत्त । २७५२७
ता राउ रोसिइं धडहडइं, कोटवाल कारण परीछयउं ।
एक चोर [1]नवि अंगमइ, सइं हथि सेनाहिव हि होच्छयउ ॥
नीणि अवसरि पय लगि करि, पहु वीनविउ [2]राउ ।
घडीइ चोरि [3]स्त्रीय विनडीइ, एहु देव [4]अन्याउ ॥५८७॥

[हृदयवत्स-वचन]

'अधिपति ! चोर एह नवि घटइ, ईणि कंचूउ जीलउ जूवटइ ।
[5]"आणी चोर आपउ कालि, ता लगइ ईणइ थानकि मूं झालि" । ५

[प्रधान आलोचना]

पहु-परधानि आलोचिउ इसिउं:[6]"मूंकयउ चोर आवेसिइ किसिउ
इणइ चोर सिउं आवइ हाथि ?, ए[7]उच्छ्वल लीजइ हाथि ' ॥५८

"स्वामि ! किम्हारइ न आवइ एह, तउ हूं [8]अवधिम धारउ छेह ।
पहिलूं सेठि थाम[9]भुरसिइ, पछइ मवालाग[10]द्रम्म आपसिइ । ५६

ईणि आव्यइं ऊभंवल थाइं, ईणि आव्यइं ऊठी घरि जाइ ।
करूम वीनती पहु परधान, ए एतलूं दिउ मुझ मान" ॥ [11]५९१॥

---

१. 'ना गमई' अ. २. 'निघाउ' अ. ३. 'स्त्री' अ. ४. 'घाइ पाउ' अ. ५. 'जंपि आणी आवू' आ. ६. 'काढिइ नारी' आ. ७ 'अछोडलु' आ. ८. 'अविधउ' आ. ९. 'पूर्यात' आ. १०. 'विस घोस' आ. ११. आ टूंक 'ब' मां नथी.

दीधउं मान सेठिनइ सही, कामसेनि [1]कदर्य न सवि रहइ।

[वत्सवत्स प्रति श्रेष्ठी भावना]

मित्र [2]तणइ मनि पूगउ रंग, साहसि कि ओडविउं अंग ॥५६२॥
"जा जा मित्र म आविसि पछइ,अर्थं[3] अनतउ अम्ह घरि अछइ ॥"

[बारहट्ट-गृहे सावलिगा-परिस्थिति]

जा नयरि-थिउ [4]नावइ नाह, तां गयगामिणि माडिउ गाह ॥५६३॥
भाई भणी [5]बोलाव्यु भाट, वडी वार [6]लगी जोई वाट।
[7]टलीं गोल तव त्रूटी आस,[8]करउ पर-तनउ पीहर वास" ॥५६४॥

[बारहट्ट-वचन]

"बाई ! बोल म बोलि इसिउ, पीहर-वासु पर तनु किसिउ ?।
[9]अति ऊतावलि हुइ मसूर, एता सही सुलक्षण सूर ॥ ५६५॥

[सूरजन-प्रशसा]

सूरउ सूरिज गलीइ राहि, सूरउ अगनि उदकि उह्लाइ।
सूरउ सीह अजाडी पडइ, सूरउ दैवत सूरा-नइ नडइ ॥५६६॥

मरवा-तणा मरम छइ कोडि, [9]इम मरतां तम्ह लागइ खोडि।
जउ चूकिसिउं स्वामी-सघात,[10]तउ हत्यानउ मोडउ हाथ" ॥५६७॥

---

१. 'कटव' प. २ 'तण्उ जइ पूरिउ' मा. ३. 'अनूषउ' प. ४. 'मावइ' मा. ५. 'बोलावइ' प. ६ 'लग' प ७. 'टली गो मनु छाँडी' मा ८.'करु' मा.९. 'अम्ह मरता तम्ह मावइ' मा. १०. तुउ तुम्ह मोडउ हत्थ' मा.

[सामलिगा-प्राणत्याग निश्चय]

[1]गई समशानि सजाई करी, भाट-तणइ मनि पईठी [2]डरी ।
नीचु ऊंचु चडइ अपार, करइ वेग नइ लाई वार ॥५९८॥

[सावलिगा प्रतीम प्रार्थना]

देखी दिवस-तणी [3]गति खीण, करी सनान दान दिइ दीण ।
करइ साखि त्रिकम नइ तरणि, "जनमि जनमि [4]सूदा-पय शरणि'।५

(दूहा सोरठी)

सूद ! तम्हारी साथ, पिउ आतरू [5]अति ऊरतउ ।
हिव जोसि जगनाथ, साहसि सामलिग्रा-[6]धणी ! ॥६००॥

ऊने अंतरि एहि, तउ पहिलू पामिउ नही ।
बाहुण [7]विहि-वसि होइ, न रहइ नीजामा पखइ ॥६०१॥

नीसरि सूदा साथि, जीव ! मा हारी प्रीय-पखइ ।
ते जाणइ जगनाथ, नाह- विछोडया माणसा ॥६०२॥

ऊभी आस करेहि, अवला आहेडी-तणी ।
वरि पईठउ वि मरेहि, केसरि नइं ए किम नीसरइ ? ॥६०३॥

नाह ! तम्हारा नेह, किम ओसीकल एक भवि ? ।
जइ दस वार हि देह, ए आपणउ ज होसीइ ! ॥६०४॥

माणिक मूठि [8]भरेही, पडइ तउ प्रापति न पामीइ ।
नाह [9]नावरइ देहि, दरसणि देखेवू पिउ ॥६०५॥

---

१ 'जइ' मा २. 'मरी' मा. ३. 'दिसि मा. ४. 'मु' सूदा-सरणि' मा ५. 'छइ प्रति घणू' मा ६. 'भणइ' म. ६०१ 'म' मां टूक नथी ७. 'विचिविहि सेहि' म ८ 'जसहि प्रापति [illegible]' मा ९. 'नावरे' म.

पासा-लूधी एक, पीहरि मेल्ही [1]परणी नइ।
[2] प्राज [3]ऊचाट ग्रनेकि, तिहनइ थाइ ऊापना ॥६०६॥

सूदा ! सउकि सु रास, मनि माहरइ काई नही।
सहि समोवड [4]लाख, कीधा प्राज [5]ग्रणोसरा ॥६०७॥

जिणणी काजि दीह, ग्रांक्या ग्रावेवा तणा ।
तिह लिखी तीं [6]लीह, करी [7]कुडेरू दाफिसिइ ॥६०८॥

(चउपई)

जां सहस-[8]किरण-नइ करइ प्रणाम, जां 'नारायण' भाखइ नाम।
तां घसमसनउ [9]धायउ धीर, ग्रागलि दीठउ ग्राविउ [10]वीर ॥६०९॥

[सदयवत्स-पागमन-पानन्द]

हुउ हरिख गहगहीउं गाम, वंदीजन [11]फीटउ वदनाम।
पातउ हूंतउ थायरिा मोस, ते ग्रम्ह देविइं टालिउ दोस ॥६१०॥

राज-वत्र नइ[12] रूडां ठाम, माणी ग्रवल समोप्या ताम।

[प्रतिज्ञा-पालनार्थ पुनर्गमन]

रहिउ राति निज नारी-ठाहि, चालिउ वली विहाणा-मांहि ॥६११॥

मुंक्यां हाटि ग्रछइ हथीग्रार, तिहि लेसां [13]तउ लागइ वार।
लागी वारइं विणसइ काज, ते लेईं ग्रावउं छउं प्राज ॥६१२॥

---

१. 'परह नइ' मा. २. 'तिह नइ प्राज ग्रनेकि ऊचाटइ' प. ३. 'साव' प. ४. 'साथ' मा. ५. 'प्रणीसरा' मा. ६. 'नहो' मा ७. 'कुमेह' मा. ८. 'कर' प. ९. 'प्राविउ' मा. १०. 'प्राविउ वीर' मा. ११. 'टलोव वरदनाम' मा. १२. 'मूंडा' मा. १३. 'लेवां मूं' मा.

वाचा अविचल वीर दयाल, [1]मांटीनउ मांटी मछराल ।
आवी ऊभउ सूली हेठि, [2]राउति कसरावण कीधउ सेठि ॥ १३ ।

[श्रेष्ठी- सम्रता]

सेठिइं मांडिउ अति अंदोह, [3]आविउ छयल लगाडी छोह ।
जिम किम जाणत तिम नर वहत, लोक-मांहि पण-महत्त ज रहत ॥६१४॥

हाकइ हसइ करइ किलकिली, आव्यां मोटा माणस मिली ।
"ए कावली तणी कुण मात्र ?, मइ पाडया छइ मोटा खात्र" ॥६१५॥

[वचू-चौर्य]

मानी चोरी हडहड हसिउ, राय-राणा-मनि विस्मय वसिउ ।
एहू वात विमासण जिसी, साचू जूठू जोईइ कसी ॥६१६॥

कामसेनि [4]तेडावी ताम, "राय-मुहूतइ पूछी जाम : ।
'कांइ एहनूं छइ अहिनाण, जे पेखी दीजइ प्रमाण ?" ॥६१७॥

[करवालाङ्कित सदयवत्स नाम]

कामसेनि आण्यउ करवाल; त [6]देखी चमकिउ भूपाल ।
[7]वेगिइ अख्यर जोइ जाम, तां "श्रीसदयवत्स"-नूं नाम ! ॥ १८॥

[शालिवाहन-सदयवत्सपरिचय]

जाण्यउ खड्ग जमाई-तणउं, राइं वयणि [8]विमासिउं घणूं ।
[9]आपोपइ थाइ असवार, आविउ उपरि करि गजभार ॥६१९॥

---

१. 'मुणस मनइ' मा. २. 'सही कसोकस' मा. ३. 'आवी मोटा राडी मिली' मा. ४. 'बोलावी' मा. ५. 'रायमुहइं सिउ मूयइ माम? मा. ६. 'देखत माडीइ मडाण' मा. ७. 'वेगि' मा ८. 'विणसइ' म. ९. 'आपणपइ ' मा

माट-पांहि पूछावइ भूपः "कहि, खांडानूं किसिउ सरूप ? ।
मूं-सिउं जूटवइ रमिइ जूआर, खांडउं लेई वालयउ भार ॥६२०॥

ऊभां [1]करि न डाढ काढीइ, ऊभां सिंह [2]न नह वाढीइ ।
ऊभां साप न मणि मोडीइ, ऊभां सुद्द न खांडूं जोडीइ" ॥६२१॥

[चोर-धारण युक्ति]

पहु [3]पूछइः "सांभलि परधान !, तूं तां वड्डु गुण-बुद्धि-निधान ।
ते प्रपंच ते बुद्धि कराइ, जांणइ ए जीवतउ धराइ" ॥६२२॥

तउ मुहुतइ आठविउ मर्म, जे हाथीया सीखवीआ सर्म ।
[4]ते ते दोई नइ चांपीइ, "[5]सुंडाहलि सरिसउ झांपीइ ॥६२३॥

तउ मयमत्ता मयगल गुडचा, जे [6]भड भला ते उपरि चडचा ।
आंकुसि हण्या न आघा थाई, [7]पसूम तणी परि नाठा जाई ॥६२४॥

सिंगी-[8]नाद तीणइं कोधुं ईम, जिम [9]हाथी छांडी ग्या सीम ।
हाथी-तणी जि हूंती हाम, तेहू [10]पोढी भागी माम ॥६२५॥

दलनायक [11]द्यु रोसायकी, पाखलि थिउ बोलइ पायकी ।
'स्वामी ! [12]सइंहथि वींडू आपि, [13]ऊभा-ऊभि लिउं शिर कापि ॥६२६॥

१. 'गज' प्रा. २. 'बाघ नमुह' प्रा. ३. 'जपइ' प्रा. ४ 'ते जोई जोई नइ' प्रा. ५ 'सुडिइं-स्यू झाली' प्र. ६ 'बोइं भला' प्रा. ७. 'ढोर तणी' प्रा. ८. 'तणी परि नाडइ' प्रा. ९. 'मसा' प्रा. १०. 'मोटेरी' प्रा. ११. 'स' प्रा. १२. 'सव्हारइ' प्रा. १३. 'जिम हेलो' प्रा.

[चोर वचन]

घोडउं मागिइं बोलइ चोरः "हाक्या ऊभा आंगणि मोर।
जन्म लगइ जे खावूं राज, हिव घोडूं लेई करसिइ काज" ॥६२७॥

थंभण वाल [1]अनइ स्त्री-पीड, संकटि समइ प्रजानी भीड।
बीडां वाट [2]जोइ तिणि वार, तिहिं मुहि [3] आणी घालउ छार
॥६२८॥

तीणि बोलिइं दलनायक [4]बलिउ,परिगह असि ऊभा लेई चलिउ।

[युद्ध वर्णन]

[5]ढमढम विसमा वाजइ ढोल,उर धमकमइं ति कायर [6]निटोल
॥६२९॥

झव्व झव्व झबकइ भालोह, घसमसंत घसमसिया जोह।
[7]घूसण-तणां कसण कसकसइं, गाढइ गुणि सीगिणि त्रसत्रसइं
॥६३०॥

[8]सावलोह सिरि तोमर तीर, भाले [9][10]सिउं भेदीइ शरीर।
[11]जे मच्छरि मुहि आवी चडइ,ते पायक पग आगलि पडइ॥६३१।

ऊदाली लीधां हथीयार, कोटवालना जीवन सार।
वे भडनउ [12] गाढउ भडिवाउ, तिहिं टाली नवि [13]घातइ घाउ
॥६३२॥

दल-नायक बल बोली बहू, आपू थिउ आरोली सहू।
घोडे-स्यूं घोल्या असवार, अश्व पायक नवि लाभइ पार ॥६३३।

---

१. 'बीयनो' प्र. २. 'जि जोइ बार' प्रा. ३. 'छाणी' प्रा. ४. 'परप-सिउ अमासो बल्यु' प्रा. ५. 'हमढम ढमक्या' प्रा. ६. 'कोल्ह' प्रा ७. 'जे दीठइ सहु पामइ मोह' प्रा. ८. 'सांग' प्रा. ९. 'सवे' प्रा. १०. 'नवि' प्रा. ११. 'खाघे प्रा वांध जे मुहि' प्रा. १२. 'मोटउ' प्रा १३. 'वाजइ' प्रा.

हुडहुड चोर हाकतां हसिउ, घुरि सेलहुत सूली-[1]तलि घसिउ ।
[2]थोडइ वादिइं विगूतउ घणउ,केवलउ एक कांचली-तणउ ॥६३४॥

भागी माम भला भड-तणी, राउत सवि कीधा रेवणी ।
ऊलिउ माणस-मांहि तलार, [3]दल विदलिउ नमिउ गजभार ॥६३५॥

[बावन वीर सह युद्ध]

तां सविहूं-नुं ऊतारिउ नीर, [4]हवइ हकारउ बावन वीर ।
आव्या वीर सवे ऊपडी, झलकइं भांटि त्रिपा खीग्रडी ॥६३६॥

(वस्तु)

तीणि अवसरि, तीणि अवसरि, कलह-पीय तेणि ।
नारदि न्यानि परीछिउं, मृत्य-लोइ को करइ कदल ।
एक गमइं [5]नर एकलउ, [6]मिलीयति बीजइं गमइं घणा दल ॥
पंच वीर [7]पय भरि करीय, वली विलायउ वट्ट ।
केवु [8]तव कंचू-तणइ, संकटि पडिउ सुद्द ॥६३७॥

(चउपई)

नारद-वयण सुणी नर पच, आपापणा करइ परपंच ।
नर निरतइ नीसरीआ विमर, [10]जिहनी आलि न सहीइ अमर ॥६३८॥

घर छांडो गयणंगणि गम्या, पुर पहिठाण ऊपरि भम्या ।
सघलूं सेन विमासइ इसिउं,परवति पांख नीसरी किसिउं? ॥६३९॥

---

१. 'सिउ कसइ' आ. २. 'थोडु वाद विगोउ' आ. ३. 'दल वीनम्यु' प्र. ४. 'तउ बोलाविया' आ. ५. 'कंतेणि' आ. ६ 'मइ' आ. ७. 'बीजइ गमइ दल सहित नरवर' आ. ८. 'बीस सेई भर वल्यू' आ. ९. 'कांचू तण-तणउ' आ. १०. 'जेहनां प्राण रूप छइ अमर' आ.

जा सूडु नइ [1]सूभ्रा जडया, तां पाचइ आवी पाग पडया ।
पायक छता न भूभइ नाय, हवि तूं जोइ अम्हारा हाय ॥६४०॥

आगइ एकनइ धरिवा आहि, [2]अनइ पच पुहुता पड माँहि ।
अति ऊचाउइ अ जन देह, किरि महि-मडलि आव्या मेह ॥६४१॥

घोर अंधार अ धारू करइ, दिनकर-[3]तरणा किरण आवरइ ।
सेवा लीयउ [4]वरतावइ सीत, वइरी-तणां कपावइ चीत ॥६४२॥

मूली-भजण भजइ अ ग, जिणि दीठइ पायक हइ पग ।
अजउ अमउ वेहू मड भला, [5]ऊडी तइ सिरि तोलइं शिला ॥६४

इस्या वीर सूदानइ साथि वावन सरिसा आवइ वाथि ।
भणी धार नवि लागिइ अ गि, बीजू भूभि न आवइ [6]रंगि ॥६४४॥

ऊभा भड भ्रू टि लिइ लोह, तीह आगलि कुण जीपइ जोह ? ।
राइ तइ हयवर हाथी बहू, [7]आघउ थिउ आरोली सहू ॥६४५॥

निवड निहाय घरणि घमधमइ, वू बारव गयणगणि गमइ ।
सेहा रवि नवि सूभइ सूर, रणि विसर्या वाजइं रण-तूर ॥६४६॥

मयमत्ता द तूसल मोडि, [8]थानकि-थका ऊपाडया कोडि ।
घोडे-सिउं घोल्या असवार, रथ पायक नवि लाभइ पार ॥६४७॥

---

१. 'साधिइं जडया' मा. २ 'पांचइ 'अण' मा. ३ 'तणु' तेज सहरइ' मा. ४. 'वडावइ' मा. ५. 'ऊपरि-थ्या वे तोलइ'' मा ६. 'छगि मा. ७.मा दूंक 'मा' मा न थी. ८. 'दीइं घाव करयहइ'' मा.

ऊभा वीर सवे ऊपडी, पहु परधान विमासरण पडी ।
"निश्चिइं नर ए रूपि इसिउं, पांडव-मांहि पुरुषोत्तम जिसिउ ॥६४८॥ ९।

प्राण विनाश सहु परिहरउ, [2]माम-मांहि ईरिण सिउं सल करउ ।
जिणि गोरू कीधा [3]गजमार, जिहनी [4]झड न सहइं भूझार ॥६४९॥

बीजी "[5]वुद्धि न आवइ वंधि, वलीउ चोर तु कीजइ [6]संधि ।"
सुणीवात व्यापारी-तणी, चालिउ चोर-नइ मिलवा भणी ॥६५०॥

पंच [7]जणे-सिउं पालउ थाइ, आयुध [8]मेल्ही आविउ राइ ।
सदयवत्स चालीनइ वीर, साहमु पुहुतु साहस-धीर ॥६५१॥

साईं लेई लागउ पाइ, तां वांसइ अवली गम राइ ।
ते देखी हरख्यु नरनाह, साचइ सदयवत्स [9]हुइ आह ॥६५२॥

[युद्धे सदयवत्सवीर-परिचय]

जाणी अंग-तणउ आकार, खांडइ सदयवत्स श्रीकार ।
तां ऊलखिउ उजेणी-स्वामि, तउ नरवरि बोलाविउ नामि ॥६५३॥

सूदु वयणि विमासइ ताम, नरवर बोलाविउ लेई नाम ।
हिव एह-सिउं उलवण रही, सुधि-तणी वात पूछी सही ॥६५४॥

[सावलिंगा पिता-वचन]
"कहइ, कुमरि छइ केणइ ठामि ?,"
"तम्ह बेटी वंदीजणगामि" ।
[सूडा-वचन]
पंथ वीर थानिक पाठवइ, मूउ अवर वुद्धि आठवइ ॥६५५॥

---

१. 'राउ' भा. २. 'साहमा जईनइ सेवा करउ' भा. ३ 'मार' भा. ४. 'झट' भा. ५. 'वाह' भा. ६. 'कंधि' भा. ७. 'वलइ-सिउ' भा. ८. 'मुठी' भा. ९. 'जे भा.

(छंद पद्धडी)

जं वयण पयासइ सदय सार,
तिणि सालि-राय साणंदकार ।
बोलाविउ सुत सकतिकुमार,
करि वच्छ ! [2]सजाई म लाइ वार ॥६५६॥

[सार्वालगा-आनयन आदेश]

छइ कुमरी [3]कविजन-तणइ आवासि,
[4]आणू करेवि [5]आणउ आवासि ।
सु तस ततक्षिण कुमरि किद्ध,
पालखी [6]परियह सरिय लिद्ध ॥६५७॥

[उत्सव]

५८२ ७५५

हुई तलीया तोरण हट्ट वट्ट ।
संपत्ता [7]शकति-रूपिणि भट्ट ।
चउमासि जल-राशि जिम्म ।
फिरि कमल नयरि पुहतु तिम्म ॥६५८।
पय लग्गवि वहिनर किउ प्रणाम ।
आसीस अखय भणि दिट्ठु ताम।
सिंघासणि संथप्पी सुवेस ।
बहु उत्सवि पट्टणि किउ [8]प्रवेस ॥६५६॥

(गाहा)

संपत्तो सदयवच्छो, ससुरालय सार्वालगि-संजुतो ।
अदिणुण अणागए रवि, [9]चिंत्ति न चाहिज्ज ए वीरो ॥६६०॥

---

१ 'ता तणइ सुधि' आ.२. 'वेगि लाउ सि वार' आ. ३. 'बंकीजन' प. ४. 'माणु करि' आ. ५. 'माणू सम्ह' आ. ६. 'सुखासण' आ. ७. 'परि दुआर, संपत्त भूयण सकतिकुमार' आ. ८. ट्रंक 'आ.' मां नथी. ९. 'वित्त मावधारा मां पच्छितह पूर ए मत्पो' आ.

कीय मित्त मण-गमंतय, विप्पो वणिक्क इक्क खित्तिउ ।
तिहि [1]परिसत्त-परिछण, अवलोइ कम्म घण घोर ॥६६१॥

जूवटद्द वत्त विसुणीय, पंथी पासंमि [2]एक्क अप्पुत्री ।
नित्त मद्दू नित धाह, विवहारी तणइ तं सुपुरो ॥६६२॥

[3]निच्च निच्छ तवइ [4]नवे जणि, जा लिज्जइ चरणि च'पिवि हेइ
मज्झ'मि ।
तां ते पुरिस पहिल्लो, पुहुच्चइ ए मदिरे [5]मडउ ॥६६३॥

(दूहा)

[6]इम मवगमी अणेइ दिण, थिउ वाणाउ विलक्ख ।
जे परिगालइ [7]पिंड इह, तिहि दिउ' वित्त लक्ख ॥६६४॥

[शवदाह प्रसंग]

(चउपई)

सुणी वात किलकिलिउ वीर, सदय नरेसर साहस-धीर ।
मित्र-तणउ मेलावउ लेऊ, तीणइ नयरि [8]आव्या तेऊ ॥६६५॥

जां आवी ऊनाह किद्ध, रांधिणिनइ घरि [9]रांधण दिद्ध ।
तां नयरी डांगरा-निनाद, साते सेरी तेह'जि साद ॥६६६॥

---

१. 'पुहुतरा' प्र. '२. 'एय' प्रा. ३. 'नित्त नित्त' प्रा. ४. 'नव जण जाळय करइ चरण संपत्रि' प्रा. ५ मेरु' प्रा. ६. 'इम इम गमीय पणेग प्रा. ७. 'पंडिमह' प्रा. ८. 'आविउ घइ' प्रा. ९. 'रांधवा' प्रा.

छइलिइ जई १छीतउ डांगरउ, "कां रे २अति गाढा गांगरउ ?।
ाउ आपे वापडा वि लास, जउ ए दही देखाडउ रास" ॥६६७॥

,सेठि विदाधिउ बोलइ वयणः राठत ४रवत थयां बे नयण।
"जउ लहुडा वालइं तूंह वाप, तउ अम्ह कांई अधिकूं आप"
॥६६८॥

"अधिक ऊद्यानी ए कुण वात ?, ५एक-तणइ कुमरि दिउं रात।
जे ए वडउ टालइ ऊचाट, तिहि-सिउं ६भव मगपणनी वाट" ॥६६९

[शाकिनी-संतापित विप्र-कन्या]

करी सेठि-सरसी दृढ वात, चाल्या ७तिहि ऊचलिवा तात।
तां पुरोहित-घरि जागर पडइ, कुमरि कूंआरी शाकिनि नडइ
॥६७०॥

वरस दिवस लगइ वाजइं डाक, ऊपरि गुणीया हाको हाक
वापिइं बेटी छांडी आस, टालइ दोस परणावूं तास ॥६७१॥

सदयवच्छि जई जोई द्रेठि, आवो पात्र वईठउ पग हेठि।
"जास हाथि हरसिद्धि-हथीयार, तिह-सिउं अम्ह केहउ अहंकार?
॥६७२॥

नीरी करी ८दइसई दीकिरी, साथिईं वि तिह कारणि वरी।
आव्या सेठि-तणइ अहिठाणि, ता ते मडूं ९पडय् ूं भंपाणि ॥६७३॥

---

१. 'लछोर' आ. २. तम्हे 'गाढइ' आ. ३. 'विदोगिई' आ. ४. 'रांति रगत थियां नयण' आ. ५ 'तेह नइ' आ. ६ 'भावह' आ. ७ ' च्यारिकुंवर विख्यात' आ. ८ 'घोस' आ. ९ 'जडिउं जंपणि' आ.

काढो कुकई काँवलि वंधि, एकइ[1] खोखू[1] कोधू[1] कंधि ।
सूकट लेई लाखिउ समसानि, महाजन भणइः "ए विस्मय मानि" ॥६७४॥

सेठि अणावि अगर नइ आगि, ऊठी काजि आपणइ लागि।
राति निचींतु निद्रा करे, बोल्या बोल सवे सांभरे ॥६७५॥

[सूदा वचन]

सूदउ भणइः "सुणउ अम्ह मित्र !, ए दीसइ छइ देव [2]चरित्र।
इणिइं कोई वसिउ वेताल, [3]आज लगइ इणि मंडिउ आल ॥६७६॥

[प्रथम प्रहर कार्य]

(छप्पय)

पुहुरि पहिल्लइ विप्प, राउ जागंतु जोइ।
तां निसि भरि नारी, मसाहणि सूली-तलि रोइ॥
"परिठवि पुठि दया, [4]पर दया मर पत्तउ।"
कामिणि पूछीय कज्ज, कंधि घरि ऊभउ हुंतउ॥
भोजन दियंत मिसि डाकणी, खाइ मांस मच्छरि घडीय।
उत्तम तिवार असि वावरो, करिय चूडि त्रुट्टवि पडी ॥६७७॥

[द्वितीय प्रहर कार्य]

बीजइ पुहरि प्रधान-पुत्र, बलवंत वईट्ठउ।
तां उल्हाणउ अगनि, तेज दूरिट्ठिय दिट्ठउ।

१. 'खोखट' पा. २. 'दैव' प्रा ३. 'दाणव देत हसिई विकराल' प्रा.
४. 'परदई' पा.

पामक कज्जि पहुत, प्रेत परवरियउ पल्यलि।
विचि खीचड कलकलइ, वद्ध बावीस कुमर तलि।

मुझ स्वामि होमसइ पच नउ, एकऊ गहीय बीजा गहिसि।
धसि लिद्ध धगतउ लक्कडू, तीणि ऊडी म्या सइ सहस ॥६७८॥

[तृतीय प्रहर कार्य]

तृतीय श्रीजइ पुहुरि, दंत्य नयरी दिसि दिक्खइ।
वितर[1]वसइ बधि, पूठि ठ्यु परिकम्म पेखइ॥

सत [2]कमाड ऊघाडि, राय-सुति सूती लीधी।
प्राणी आपण पासि, युवति जागती कीधी॥

"मुझवरि कद समरि जीण [3]ऊगिरइ, पिहु श्रीजउ समरू सुभट
[4]पड छांडि ऊभु [5]असिवर सरिसु, कीय ककाल विखड घट ॥६७६॥

[चतुर्थ प्रहर कार्य]

चउथइ चतुर चकोर, वर वसघर जगाइ।
ता [6]ऊट्ठवि मङ्ग मुरेडिउ, जूअ-जीअ [7]उट्ठवि मगगइ।

मुइ भणइ, "तन सार, पट्ट [8]कवडी न कड तह।"
तीणि ततखिणि आण्यउ पाट, जिणि राय रमतह।

सिर-कमल हराविउ हेलि रसि, प्राण प्रेत-गृह टालिउ।
त्रिहु मित्र [9]अजगिगइ, एकलइ [10]तिह ति पिंड प्रजालिउ ॥६८०॥

---

१. 'वइसइ' प्रा २. 'कमाड' प्रा ३. 'ऊगरइ' प्रा. ४. 'पडछांडि प्रा. ५. 'सूर जिणिउ' प्रा ६. 'सिर मोडवि मइड' प्रा. ७. 'उदांग' प्रा. ८. 'कुडीय' प्रा ६. 'प्रजाग' प्रा. १०. तेणि मइं पर' प्रा.

(चोपई)

जाग्या मित्र पेखइ परोहडूं, तां तोणि वलइं बालिउ मडू ।
च्यारि पुहर सेविउ समसान, ऊठी कीधूं सविहूं सनान ॥६८१॥

[श्रेष्ठी-प्रति प्रतिज्ञा-पालन-कथन]

करी सनान बोलाविउ साह, "[1]आपि वित्त, नइ करि विवाह ।"
सेठि भणइः "तम्हि कूडूं किद्ध अम्ह देखतां दाघ नवि दिद्ध" ॥६८२।

मिल्या रोस-भरि राउलि गिया, राइं रूडी परि पूछिया ।
विण संकेत न मानइ सेठि, "कांई [2]उदाहरण दाखु द्रेठि" ॥६८३॥

[शवदहन-प्रमाण निदर्शन]

पहिलइ पुहरि जि जागिउ ताह, तोणिइ आणी आखी बांह ।
वाढी [3]चोरि जि चूडा काजि, ते कूडूं मानिउ महाराजि ॥६८४॥

"ए राणी-नउ हुइ हाथ", सुणि वात सोधइ नरनाथ ।
दीसइ नही निशाचरि भमी, किरि आकासि भणी ऊगमी ॥६८५॥

बीजे तउ बोलिउ तिणि वार, कां रहीहि राजकुमार ? ।
सहवुं काजि सोधावइ सामि !, [4]देव न दीसइं कोणइ ठामि ॥६८६॥

नयर-नराहिव सोधइ कुमर, पर प्रासाद अनइ वर विमर ।
एकइ तां वीनविउ अधीस, [5]पउढया पोलि [6]बाहरि वावीस ॥६८७।

सुणी वात स पुहुत्त दूत, सूतउ [7]ऊपाडिउ अपूत ।
जाणइ वितर विलग्यु वली, ऊठया कुमर सवे खलभली ! ॥६८८॥

---

१. 'मागि वित्त अनइ' प्रा. २ 'दाखण दीठु' प्रा. ३. 'दोरी चूडी-नउ' प्रा. ४. ट्रंक ६८५ 'प'मां नथी ५. 'पढया' प्रा. ६. 'वीर' प्रा. ७. 'ऊगम्यु सूत' प्रा

१२ ै। गा मादीसर पासि, वईसार्या प्रभि मापण पासि।
तउ वेटा बोलइ "सुणि तात !, ए संकट नी विसामी वाट ॥६८६॥

[2]कुलदेव तिके धीपी सार, पूंठिइं पाठवीमा पडिमार।
पाणीवल जउ मावइ पछइ, तउ ते [3]सवि सपार्या मछइ ॥६६०॥

[4]वांसइ वितर [5]करि करवाल, लीधू लाकड झापी झाल।
तीणइ भइरवि भडकाव्या भूत, [6]सवि ऊठी आकासि पहूत ॥६६१॥

एक एक पाहिइं ग्रवि भगा. अधिपति-तणा कुमर [7]एतला।
सवि [8]ऊगार्या साहस धीरि, पोलि लगइ पहुचाडचा वीरि ॥६६२॥

तउ भोजा-प्रति पूछइ [9]पहू, कारण कहिसिइ कुमरी [10]एहू।
सात कमाड तणि करि सार, किम ऊघाडचा विमर [11]द्वार ?
॥६६३॥

तीणि वात थमिउ [12]विनवाद, कुमरी काजि करावइ साद।
निद्रालूई नराहिव-वच्छि, पिता पासि ते पुहुती [13]नच्छि ॥६६४॥

[कुमारी-स्वानुभव कथन]

[वस्तु]

"तात ! सभलि, तात ! संभलि, वान ति जि वीत।
हरी निशाचरि निशि समइ, निद्द-भरि निज सयणि सुतीय।

---

१. 'पाध्या पाधीसर पाकासि, बइसारइ प्रग' पा. २. 'काई भूम देवी' पा.३. 'सपला' पा. ४. 'वाह्या' पा. ५. 'करि' पा. ६. 'तिम ऊडया जिम एक महुंता' पा. ७. 'केतला' पा ८. 'ऊगाह्या' पा. ९. 'एहु' पा. १०. 'वहु' पा. ११ 'विचार' पा. १२ 'रा विसवाद' पा. १३ 'मच्छि' पा.

कांमिइं वरि कांई को समरि, [1]लेई विवरि खित्तिय ।

पडछाहि ऊभउ सुभट, ते मइं समरिउ स्वामि ! ।
तीणि ततखिणि दंत [2]दलि, एणइ पुहचाडी ठामि ॥६६५॥

[चउपई]

हणिउ दैत्य जोवा [3]जण घणा, अधिपति पाठविया अति घणा ।
विवर-मांहि ते पडिउ प्रचंड, दीठउ दाणव-देह विखंड ॥६६६॥

जस भुइं पुहरि पोलि दीजती, जस भुइं कोडि जतन कीजति ।
ते-भय भव सुधि टालणहार, ए म कुमरी करि अंगीकार॥६६७॥

सदयवच्छ बईठउ ते सूर, जउ बोलइ तउ भावइ [4]भूर ।
श्रीजउ पुत्री जउ [5]जण लेउ, [6]सुणीय हुई मनि हरखिउ तेउ॥६६८॥

चउथइ ठामि जि जागइ सुभट, ते नरवरि बोलाविउ निकट ।
"तम्हे तम्हारूं कारण कहउ, प्राणइ राजि धणी-थिया रहउ"
॥६६९॥

तउ सूदइं [7]मोकलावि मित्र, [8]अति डाहउ अधिकारी-पुत्र ।
कहो अहिनाण अणाविउ पाट,सोनानउ श्रीकारिउ घाट ॥७००॥

पासा पाट सोगठां सार, देखी नरवर थसिउ विचार ।
[9]लिउ भंडार-तणी सुधि सहू, पछइ पूछउ कारण कहू ॥७०१॥

---

१. 'लिउ' प्रा. २. 'हणिउ तेण' प्रा ३. 'रणझिण्णा राइं' प्रा. ४. 'मूर' प्रा. ५. 'जल' प्रा. ६. 'भणी हुउ' प्रा. ७. 'मोकलिउ' प्रा ८. 'उत्तम ठामि' प्रा.

ताला-नउ हर हालिउ नही, पासा पाट मढाणा किही ? ।
अति आदर-सिउं पूछइ राउ, "कहउ देव ! ए कवण उपाऊ ?" ॥७०२॥

[1]सूदइं प्रेत-पराक्रम [2]कहिउ, तीणि राजा [3]रोमांचिउ रहिउ ।
एह सू खित्ति नही समानि, एक एक-नइ [4]विममा मानि ॥७०३॥

(वस्तु)

तीणइं अवसरि, तीणइं अवसरि, [5]कहइ कर जोडि ।
[6]विनयग्गल विवहारीउ, महाराज प्रति मान मागइ ।
"ऊगारउ अम्ह घरि घटइ", सदयवच्छ पय-कमलि लागइ ॥
तिह पुरिसत्तण पेखि करि, मणि [7]आणंदिउ साह ।
[8]लिउ देव ! सविसेस करि, वित्त अनइ वीवाह ॥७०४॥

[विवाह]

(चउपई)

विप्पि कीधउ कन्या-दान, सेठि-तणइ परणिउ परधान ।
राउत-नइं [9]राइं दीधी पुत्रि, हरसिउ सूद, मंडाणइ मित्रि ॥७०५॥

जे जे सासर [9]अनइ खखाल, अठ पुहर जे [10]सघाइ आल ।
इस्या भूछ भडि पूरा कीघ, ग्रास वास [11]मुहि माग्या दीध ॥७०६॥
[12]लीधा [13]हयवर नइ हथीआर, कीधा सुभट-तणा शणगार ।
कणय-कप्पड उलगू अनंत, लेई चालिउ लील।वई कंथ ॥७०७॥

---

१. 'सूदउ' आ. २. 'कहइ आ. ३. 'रोमाञ्चु रहइ' आ. ४. 'एकनी आधिकी मानि' आ. ५. 'कहईम करजे' आ. ६ 'विनय सगइ' आ. ७. 'साणंदिउ' आ. ८. 'मधि वति नी' आ. ९. 'वज' आ. १०. 'सोधइ काम' आ ११. 'तुहि' आ. १२. 'कीधा' आ. १३. 'हवइ दवनइ' आ.

करी कटक संचरिउ सूर, वाज्या रण-काहल [१]रण-तूर।
जिहां श्री [२]नर-इंद निवास, तिहां समहूरतइ माडिउ वास ॥७०८॥
[३]वीरकोट, [४]तिहां नगरी नाम, दीधूं देखी उत्तम ठाम।
नई नीझरण अनइ आराम, [५]चारू लोक तणा विश्राम ॥७०९॥
लोभ दिखाडी वास्या लोक, आपइ [६]साथ समाहुण रोक।
पुण्य-श्लोक प्रजा-प्रतिपाल, भू-मंडण भूसण भूपाल ॥७१०॥
आणी वास्या [७]वन्न अढार, तिणि पुरि उच्छव [८]जयकार।
कर्म आपणउ सहूको करइ, राम-तणी परि राज [९]उद्धरइ ॥७११॥

[पुण्य महिमा]

[वस्तु]

पुण्य रूसइ, पुण्य रूसइ, सकति सूर सिद्ध ।
पुण्यइ प्राणि वनिता वरइ, पुण्यइ पवर पयरहण लब्भइ।
ठाण-भट्ठ निर्द्धंत नर भडवडत, सुउण पुणि घुज्झइ ॥
पुव्वह भव-तणा पखइ, न सुख शरीरि ।
पुण्यइ एउ पामी सहू, संपति सूदइं [१०]वीरि ॥७१२॥

[सार्वलिगी लीलावती आनयन]

[चउपई]

सार्वलिगि [११]लीला जिहां ठवी, ते [१२]लेवा प्रधान पाठवी।
हुंती सुसरालइ जे वेउ, आणउ करी अणावी तेउ ॥७१३॥
राणी बिहुं [१३]प्रति दीइ बहु मान, रगि रमतां [१४]हूआं आधान।
क्रमि क्रमि जउ पुहता दस मास, [१५]पुत्त-जनमि तउ पूगी आस ॥७१४॥

---

१. 'नइ' आ. २. 'नंद राय' प. ३. 'वीर कोटि' आ. ४. 'तस' प्र. ५. 'चारू' प्र. ६. 'साध' प्र. ७. 'वर्ण' आ. ८. 'जय जय कार' प ९. 'हरइ' प्र. १०. टूंक 'आ' मा नथी. ११. 'लीला वइ' आ. १२. 'तिहां' मा १३. 'प्रतिइं प्रति' प्र. १४. 'हवू' प्र. १५ 'जन्मि-जनमि' आ

[वस्तु]

[1]राउ हरखिउ, राउ हरखिउ, [2]सुत-ह संपत्त ।

सव नयरी श्राणद हूय, पंचशव्द वाजित्र वज्जइ ।
माय ताय [3]जुहार कीय, गरुय वीर गंभीर गज्जइ ।।

श्रवसरि पय प्रणमीय, सदयवच्छि तिणि वार ।
माडी [4]श्रासीसह दिइ, राउ सिरि समोप्युं भार ।।७२८।।

[स्वजन मिलन]

[चउपई]

कुंश्रर सवे श्रावीनइ मिल्या, मान-सहित गाढा जलहल्या ।
राज करइ राय-सिउं सवे, भणइ गुणइ उच्छव तिह घरे[5] ।।७२९।।

[वस्तु]

पुण्य तूसइ, पुण्य तूसइ, शांतिशर शच्छि ।

पुण्यइ प्राणि वनिता वरी, पुण्य-पवर पवर पयरहण ।
लब्भइ ठाण निद्धंतर नर, पुण्य-घोसि चडवडंत पण ।।

पुण्य जि पुव्वह भवतणां, परखइ न सुख शरीर ।
पुण्यहिं ए सहू पामीयइं, संपत सुद वरवीर ।।७३०।।

इति श्री कविभीमविरचित श्री सदयवत्सवीर प्रबंधः
सम्पूर्णः ।

---

१. 'राय' भा. २. 'पुत' भा. ३. 'जोहार कीछ' भा. ४. 'करइउ परिणा राय समोप्यइ भार' भा. ५. टूंक ७२९ 'भ' मा नथी ।

अंतिम पृष्ठ । सदयवत्स वीरप्रबन्ध । लिपि संवत १५९० (देखिये ग्रंथ पृष्ठ १०५)

अंतिम पृष्ठ : सदयवत्स वीरप्रबन्ध · लिपि संवत १४८८ [पोथी असमग्र] (देखिये ग्रंथ पृष्ठ १०५)

'अ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवत्स वीरचरित्रं समाप्तं।

संवत १४८८ वर्षे फाल्गुन ..... भौमे श्री " पत्तने लिखितं विद्वज्जन मनः प्रमेमोऽयं विनोदमात्रम्। [प्राच्य विद्यामंदिर। नं० ४२६२]

'आ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवच्छ चुपइप्रबंध समाप्त। शुभम् भवतु।
श्री सं. १५६० वर्षे मागशर वदि ५ रवी (पं. श्रीचंद लिखितं) (जैन साहित्य भंडार, पालीताणा)

'इ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवच्छ कथा समाप्ता। श्रीरं भवतु। कल्याणमस्तु। संवत १६६१वर्षे आसु सुदि १ दिने धनक्नाम संवत्सरे। महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंघजी विजयराज्ये, श्री खरतरगच्छे भट्टारक, श्री जिनचंद्रसूरि गणि पं. श्री २ श्री चारित्रमेरुगणि तत् शिष्य पं. श्री १ सीहा तत् शिष्य चेला हीरा लिखितं। श्री फलवधीमध्ये।

[फलोधी जैन भंडार]

परिशिष्ट १

सदयवत्स सावलिंगी पाणिग्रहण चुपई

। दूहा ।।

सरसति सामिणि पाय नमी । मागु' एक पसाय ।
सदयवच्छ-गुण गायता । सुभ मति देयो माय ।।१।।

मात मया मभनइ करे । आपे अविरल वाणि ।
सुझ प्रसादि गुण वर्णवु' । मूरख हुं अणजाण ।।२।।

जउ तु' माता मुखि वसइ । तु हूं करु' कवित्त ।
सदयवच्छ नरपति-तणउ । भविय ! सुणु इक चित्ति।।३।।

कवण नगरि ? ते किहां हूउ ? । किम तिणइ पामिउ' राज ? ।
लघु वेसिइं ते किम फिरिउ ? । किम कीग्रां तिणि काज ? ।।४।।

।। चुपई । ।

ऊजेणी नगरी सुविशाल । गढमढमंदिर पोलि पयार ।
वाडी वन अति रुलीग्रामणां । वावि सरोवर तिहां छइ घणां ।।४।।

नवतेरो नगरी विस्तारि । वास-तणउ नवि लाभइ पार ।
गूख जालीग्रा मन्दिर घणां । पार न पामु' देउल-तणां ।।५।।

चुरासी चुहुटां ग्रति चग । नगरी जोतां ग्रति ग्राणंद ।
कलहटकोलाहल हुइ घणा । पुहुचइ कोड सहूको तणा ।।७।।

घरि घरि दान दीइ ग्रति घणां । दालिद छेदइ दुखीग्रा-तणां ।
ब्राह्मण वेद करइ उच्चार । सहू राखइ मापणा ग्राचार ।।८।।

पवरस सावलिंगा पाणिग्रहण चउपई । [लिपिसंवत नही है] देखिये ग्रंथ पृष्ठ १०६ । प्राच्य विद्या मंदिर वडोदा ।

पृष्ठ । सदयवत्स सावलिगा पाणिग्रहण चउपई । [लिपि संवत नही है ।] देखिये ग्रंथ पृष्ठ १३४। प्राच्य विद्या मंदिर, बडोदा ।

बावन सईं भइरव तिहां वसइ । चउसठि योगिणि हुड हुड हसइ।
सूली-भंजन नामी ओड । चोर खापरु संकल-मोड ॥९॥

पहुयच्छराय करइ तिहां राज । सकल लोकनां सारइ काज ।
न्याय रीति ते पालइ खरी । तस कीरति दहदिसि विस्तरी॥१०॥

तास धरणि सुमंगला नारि । रूपिइं रंभा-नइ अवतारि ।
सतीशिरोमणि नारी तेह । राजा-सरिसु धरइ सनेह ॥११॥

तास उअरि हूउं आधान । मुक्ताफल जिम सीप समान ।
पूरे मासे सुत जनमीउ । स्दयवच्छ तस नाम ज दीयु ॥१२॥

बीअ-तणउ जिम वाधइ चंद । सविकहिंनि मनि अति आनंद ।
वाधइ दिनि दिनि तस धरि वाल । रूपवत नइ अति मयाल ॥१३॥

राय तणइ धरि छइ परधान । पुष्पदंत नामि गुणग्यान ।
मदनसिंह नाम सुत ज तणु । रूपगुणे ते रुलीआमणु ॥१४॥

राजकुमरनी सेवा करइ । मित्राचार सदा परिवरइ ।
वेश्या मदनसेना तिहां वसइ । पुष्पदंत वित्त तिहा उल्लसइ॥१५॥

दिवस राति गणिका-सिउं रहइ । सदयवच्छ ते भेद नवि लहइ ।
एक वार ते गूखिइं चडी । राजकुमरनी दृष्टिइं पडी ॥१६॥

ते देखी कामातुर थयु । सदयवच्छ तस मंदिरि गयु ।
राजकुमर देखी हरख धरइ । मदनसेना बहू आदर करइ ॥१७॥

सदयवच्छ रयणी तिहां रहइ । पुष्पदंत हीयइ दुख वहइ ।
प्रहि ऊगमि निअ मंदिरि गयु । मंत्रिपुत्र हीयडइ दुख थयु ॥१८॥

पुष्पदंत देखी नवि सहइ । कूडकपट ते हीयडइ वहइ ।
'एहवु कांई करूं उपाय । ए कुंअर छंडावुं ठाय' ॥१९॥

राजकुंयर यौवन-वय हूउ । राजा पासि जुहारीणे गयु ।
कुंअर देखी हरखिउ भूपाल । यौवन-वेसि हुउ ए वाल ॥२०॥

राजामंत्री करइ विचार । "यौवन वेमि हुइ कुमार ।
ए सरखो तुम्हें कन्या जूउ । एता दिवस तुम्हे नवि कहिउ॥२१॥

सदयवच्छ मनि मानइ जेह । राजकुमरि निरखु हिवि तेह ।
देशविदेसि जोई मंत्रीस । पूरु कुंअर तणा जगीस" ॥२२॥

राय-आदेसि मंत्रि सज्ज थयु । सदयवच्छ ते साथिइ लीउ ।
मंत्रीमर नइ राजकुमार । चाल्या रायनइ करी जुहार ॥२३॥

अनुक्रमि मेदपाटि ते गया । आहडि नगरि पुहुता थया ।
विहू डाहा विहू गुणवंत । ईश्वर-देहरइ जाई पुहुत्त ॥२४॥

शिव प्रणमी तइं बइठा बारि । शिव पूजण आवइ नरनारि ।
सदयवच्छ निरखइ एक चित्ति । कोइ न मानी आपणइ चित्ति॥२५॥

जितशत्रु रायतणी कुंअरी । रूप अनोपम जिसी अपछरी ।
शिव पूजनि ते आवी नारि । साथि सखी-तणइ परिवारि ॥२६॥

वसंतसिरि नामि कुंअरी । शिव पूजो पाछी संचरी ।
कहइ मत्री, "मनि मानइ एह ?। गुण लक्षण नवि लाभइ छेह"॥२७॥

सदयवच्छि मुख मोडिउं ताम । "मत्रीसर ! मूंकु ए ठाम" ।
तिहांथिकी मारुआडिइं गया । जेसलमेरि पुहुता थया ॥२८॥

देहरइ जई तइ बइठा तेह । तिहां नारी बेहु निरखेह ।
महोपाल पुत्री गुणमाल । सखी सहित तिहा आवी बाल॥२९॥

सदयवच्छ तस निरखइ रूप । ते देखी मुख मोडइ भूप ।
'मत्रीसर ! मेहलु एह ठाण' । गूजर देसि गया गुण-भाण ॥३०॥

अंबावतीइ पुहुता छेह । देहरइ जई तइ बइठा तेह ।
वसंतसेन तिणि नयरि राय । मनमोहनी कुंअरी तस ठाय ॥३१॥

पूजा विष्णु-तणी ते करइ । दासी पाचसात-सिउं फिरइ ।
सदयवच्छ-नइ मंत्री कहइ । 'एहवी नारि अवर नही लहइ'॥३२॥

सदयवच्छ मनि मानइ नहीं। तिहांथिकी वली चाल्या सही।
कुंकणदेसि पुहुता तेह । श्रीपुर नयर तणउ नही छेह ॥३३॥

कामसेन तिणि नयरि राय। निरखइ देहरइ बइठा जाइ।
तिलकसुंदरी राजकुंअरी । देहरइ आवी सखी परवरी ॥३४॥

देवभवनि ते पूजा भणी । मलपती आवी गजगामिनी।
निरखी सदयवच्छ तव रहइ। पुष्पदंत तइ वलतुं कहइ ॥३५॥

॥ दूहा ॥

"देशविदेशि बहू फिरिया । निरखी नारि अनेकि ।
अति सुन्दर गुणि आगली। जे लहइ सकल विवेक ॥३६॥

तुझ मनि एकइ नवि वसइ। तु किम सीझइ काज ?"।
पुष्पदंत इम वीनवइ । 'चलउ अब ती-राजि' ॥ ३७ ॥

नगरि अवंती आवीआ । नरवर कीउ जुहार ।
पूछइ नरवर मंत्रि तइं । "कहु सुत-तणउ विचार" ॥३८॥

तव मंत्री वलतुं भणइ । "वात सुणउ, तुम्हे राय ।
कहुं चरित्र कुंअर तणउं। सुणतां अचरिज थाइ ॥३९॥

च्यारि खंड प्रथवी फिरया। नारि-रूप नही पार ।
अति सुंदर गुणि आगली। कला-तणउ भंडार ॥४०॥

मोटा नरपति जे अछइ। तेहनी निरखी बाल ।
कुंअर-मन मानइ नही । किम किजइ भूपाल ?" ॥४१॥

इस्यां वचन नरपति सुणी। बोलइ वचन विरुद्ध ।
'कुंअर सुरकन्या वरइ । सावलिंगि वर सुद्ध' ॥४२॥

॥ चुपई ॥

तात-वचनि कुंअर चमकीउ। सावलिंगि ऊपरि चित धरिउ।
'हवि हूं कामिनि एह जि वरुं। कइ प्रवेस अगनि मांहि करुं !'॥४३"

मदनसिंघ गइं कहि कुमार । 'तात वचन सालइ जिम साल' ।
सकलमरम मित्र प्रति कहइ । मदनसिंघ हीयडइ संग्रहइ ॥४४॥

तेहनु काई करुं उपाय । सावलिंग जिम ठावी थाइ ।
मंत्री वुद्धि विमासण करइ । हवि ए काम किणी परि सरि?॥४५॥

॥ दूहा ॥

हीम्रा मनोरथ त करइ । जे करवा असमरत्थ ।
तरुअर स्वर्गिइं मुहुरीया । तिहा पसारइ हत्थ ! ॥४६॥

॥ चुपई ॥

दान्ऊवार मंडाविउ राय । वाटघाट वली विसमइ ठाइ ।
देरासरना योगी यती । बाभण भाट अनइ वहूमती ॥४७॥

देइ अन्न नृप पूछइ भेद । इणी परिइं एहनु लहु विछेद ।
ततक्षण कुंअर सजाई करइ । अनपान सहूइ परवरइ ॥४८॥

दिवस केतला इणि जाइ । ब्राह्मण एक पुहुनु तिणि ठाइ ।
'कहु जोसी किणि थानकि रहु?। सकल वात अम्ह आगलि कहु'॥४९॥

तेह कहइ हवि पूछइ भेद । वलतु उत्तर दिइ विच्छेद ।
'सुणु वात, मंत्री नृप तुम्हे । सघलउ उत्तर देसिउ अम्हे ॥५०॥

दखिण देस विचक्षण नारि । तेहना गुण नवि लहीइ पार ।
मुंगीआपुर-पाटण पइठाण । शालिवाहन राजा आहठाण ॥५१॥

देवलोकनी उपम लहइ । देखी सुर नर मन गहगहइ ।
वास-तणु नवि लहीइ पार । नवतेरी नगरी विस्तार ॥५२॥

लीलावई राणी गुणवंत । सील शिरोमणि सहज दंत ।
तास कूखि जूअल अवतार । पुत्री पुत्र सकोमल सार ॥५३॥

शकतिकुमार बेटानुं नाम । शालामती बेटी अभिराम ।
रूपवंत नइ रलीयामणी । विद्या सर्वकला अति घणी ॥५४॥

यौवनमइ ते कुंअरी हूई। तात पासि जई ऊभी रही।
पुत्री देखि पिता गहगहइ। वर चिंता ते मनमाहि वहइ ॥५५॥

ए सरिखु वर अम्ह-नइ मिलइ। मनह मनोरथ सघलु फलइ।
कही वात ब्राह्मण सचरइ। मन्त्रीसर ते मनमाहि धरइ ॥५६॥

एह वात मनमाहि राखीइ। हुआ विना ते नवि भाखीइ।
काज सरइ अथवा नवि सरइ। लोकमाहि हासा विस्तरइ ॥५७॥

कुअर कहइ, "मन्त्री !तुम्ह सुणु। सारउ काज तुम्हे अम्ह तणउ।
तुम्हविण किम्हइ न सीझइ काज"। सदयवच्छ कहि छाडी लाज॥५८

सीघ्र थई तइ पुहुतु तिहां। मुगीपुरपाटण छइ जिहां।
पाणीपथा घाडा लेय। पवनवेगि चालइ छइ जेय ॥५९॥

सवा कोटि दीधु वरवीर। जोईइतु वली लेयो धीर।
दाइ उपाइ करयो काम। वहिलु वलण करयो आम ॥६०॥

मदनसिंह चालिउ तिणि वारि। सदयवच्छ नइ करी जुहार।
"हेज म छण्डु कुअर! तुम्हे। निश्चिइ काज करवु अम्हे" ॥६१॥

इम कही चालिउ मन्त्रीस। वाटिइ वहइ राति नइ दीस।
अनुक्रमि पुहुतु पुर पहिठाणि। शालिवाहन राजा प्रहिठाण॥६२

देखी नगर-मन्त्री गहिगहिउ। मदनसिंह हीअडइ हरखीउ।
नगरी जोता दृष्टि पडी। कामसेना गणिका गुखि चडी॥६३॥

मोहिउ रूप देखी अपछरी। कुंअर वात सवे वीसरी।
तिणि मंदिरि ते पुहुतु जाम। वेशा आदर दीइ ताम ॥६४॥

मदनसिंह गणिका सिउ रहइ। घणा दिवस इणिपरि निरवहइ।
सकल द्रव्य वेशा नइ दीउ। कुमर तणउ काज नवि कीउ ॥६५॥

एक दिवस कुमरी घर बारि। कामिनि गाइ मंगल च्यारि।
वाजइ पंच शवद वाजित्र। नाटिक नाचइ नव नव पात्र ॥६६॥

सुणी शब्द मंत्री पूछे य । "ए उच्छव हुई कुण गेह ? ।
घउघडोग्रानी वेला नही" । सवे वात गणिकाइ कही ॥६७॥

"सावलिंगि नृपपुत्री-तणउ । लगन लीउ पंथी ! तुम्हे सुणउ ।
कामविणाय गछइ ठउ एह"। सुणी वयण दुख पामिउ देह ॥६८॥

पूछइ मंत्रीः"कवरणह ठाम?" । काममेना गणिका कहइ ताम ।
"रयणायरपुर नगर विसेसि । रत्नसारराजा तिणि देसि ॥६९॥

रत्नसेखर कुंग्रर तस तणउ"। हुमि वर, पंथी ! तुम्हे सुणउ ।
पन्नर दिनि होसिइ वीवाह । मंत्रीसर मनि पडीउ दाह ॥७०॥

मंत्रीसर तव चिंतइ इसिउं । "दैव ! सूत्र ए हूऊ किसिउ ? ।
मि मूरखि ए कीधुं किमिउं? । घरि जई मुह किम दाखसिउं?॥७१॥

नरपति-काज काई नवि सरिउं । एता दिवस रही सिउं करिउं ? ।
हविऊं काई करुं उपाय । जउ किम्हइ काज सिद्धइ थाइ ॥७२॥

चीठी तीम लखी मंत्रीस । नरपति ब्राह्मण नइ मंत्रीस ।
तेणइ नगरि ते चीठी लेय । तव परोहित-घरि ग्राविउ लेय ॥७३॥

करी प्रणाम वइठउ परधान । तव परोहित दीइ बहुमान ।
"बहु कुंग्रर,किम ग्राव्या इहां ? । कुणयानकि?क,मंदिर किहां"?॥७४

मदनसिंह बलतुं इम भणइ । एक चित्त थई परोहित सुणइ ।
"मालवदेस नयर ऊजेणि । पाय न छीपइ नासि तेणि ॥ ५॥

पहुवच्छ राजा पालइ राज । लोक सवेमा सारइ काज ।
सुमंगला पटराणी तास । सदयवच्छ सुत लीलविलास ॥७६॥

योवनवइं कुंग्रर देखीउ । राइ मंत्री बोलावीउ ।
कहइ, कुंग्रर-नइ गमती जेह । मंत्रीसर परणावुं तेह ॥७७॥

तु मंत्रीसर साथिइ लेय । मही सघली कन्या निरखेय ।
कुंग्रर मनि एकइ नवि गमइ । ऊजेणी वली ग्राव्या तिमइ ॥७८॥

सुणी पिता रोस मनि धरइ। कहइ कुंअर देवकन्या वरइ।
सार्वलिगि वरसिइ सही वारि। रंभ तिलोत्तम नइ अवतारि"॥७९॥

तात वचन श्रवणे सांभली। सार्वलिगि नामि मनि रुली।
ते विण अवर न परणुं नारि। एह विण हुँ न रहुं संसारि"॥८०॥

तिणि कारणि अम्हे आव्या इहां। कहु पुरोहित ! ते कन्या किहां ?।
अम्ह परोहिति तुम्ह घरि मोकल्या। चीठी लेई तुम्ह भणी चल्या॥८१

पुरोहित चीठी दि परधान। वांची लेख लहिउ अनुमान।
"तिम करयो जिम सीझइ काज। घणुं किसिउं ? तुम्ह-नइ
छइ लाज" ॥८२॥

पुरोहित कहइ, "तुम्हे सांभलु वात। हवइ किसिउं न चालइ रात।
मास दोइ पहिला आवता। मेलापक जोई थापता" ॥८३॥

पुरोहित कुंअर मंत्रि-घरि गया। करि प्रणाम तिहां ऊभा रहिया।
"बुद्धिसागर मंत्री ! तुम्हे सुणु। एह लेख वाचउ तुम्ह-तणु" ॥८४॥

वांची लेख लहिउ सवि मरम। तव मंत्रीसर भाजइ भरम।
जिणि कारणि तुम्हे आव्या हेव। एह काज तुम्ह नु हुइ देव॥८५॥

अवर कहु तुम्हे जे वात। रूपवंत कला गुणमाल।
छल वल करी देवारं अम्हे। काज करीनइ जाउ तुम्हे" ॥८६॥

मंत्री नृप मंदिरि लेई जाइ। राज-सभा जिहां वइठउ राय।
चीठी दीधी करी प्रणाम। नरपति लेख वंचावइ ताम॥८७॥

सुणी लेख नृप हरखिउ घणु। वलतु लेख लखिउ आपणु।
"जिणि कारणि पाठवीआ तुम्हे। सकल वात जाणी नृप अम्हे॥८८॥

कनकसेन राजानु पूत। जेहनी आण वहइ रजपूत।
सार्वलिगि-कुंअरी नणइ वरी। एह वात तुम्हे मानउ खरी" ॥८९॥

ए कुमरी जु बीजु वरइ । सदयवच्छ कुंअर सही मरइ ।
सुद्धि करं कुंअर प्रति एह । जिम जाणइ तिम करसिइ तेह" ॥९०॥

तु कुंअर अवंती जाय । दिन आथिमतइ भेटिउ राय ।
देखी कुंअर हरख चिति धरइ । सदयवच्छ आलोचन करइ ॥९१॥

"जिणि कारणि मोकल्या तुम्हे । ते सवि वात सुणावु अम्हे ।
सीह?सीग्र?कहु हवि वीर" । कुंअर कहइ "जंबूक" धुरिधीर॥९२॥

सकल वात मंत्रीसर कहइ । सदयवच्छ अंतरि दुग वहइ ।
"विषम काम नइ थोडा दीह । हुइ काम जु थाउं सीह" ॥९३॥

मदनसिंह तइ कही तब वात । "तुम्हे आवु अम्हारइ साथि ।
सालिवाहन-कुंमरी हु वरं । नहीतरि अगनि-प्रवेस जि करं"॥९४॥

सुणी वचन नयणा जल भरइ । "एहवां वचन काइ उच्चरइ ?
जिहा तुम्ह जीव अम्हारु तिहा । एह बोल अम्हारु इहां" ॥९५॥

करी मंत्रणु दोइ सज्ज थया । अस्व रत्न साथि दोइ लीआ ।
देवतणी गति चाल्या जाइ । सांझि पुहुता तेणइ ठाइ॥९६॥

मुंगीआपुर पाटण छइ जिहां । शालिवाहन राजा छइ तिहां ।
नगर-मध्य जई ऊभा रह्या । देखी नगर होअइइ गहगहिया ॥९७॥

देखी लोक सहू करइ विचार । "किहांथी ए आव्या असवार ?
अमररूप ए आव्या इहां निभुवन-मांहि नथी एहवा किहां॥९८॥

अस्वरत्न ए नही संसारि । भूपति सयल तणइ घरि वारि ।
मनुष्य रूप एहवां नवि होइ । नरनारी जंपइ सहू कोइ ॥९९॥

पूछीइ लोक "ऊतारु किहां ?" । "जे परदेसी आवइ इहां ।
चांदू मालिणि तइ घरि हेव । तुम्ह ऊतारा थानक देव !" ॥१००॥

चांदू मालिणि तइ घरि गया । दोइ कुंअर जई ऊभा रह्या ।
चांदू-नइ तव कहइ दासि । "ऊभा कुंअर दोइ आवासि" ॥१०१॥

सुणी वचन आवी घर वारि । तेनलइ कुअरइ करिउ जुहार ।
"अम्हे ऊतारा थानक कहु । मालणि कहइ "इणि मंदिरि रहु"॥१०२

कुअर कठि मुगताफल हार । ते मालणि नइ दीधु ऊनारि ।
"सुणु बहिनि, अम्हे ताहरा वीर । परदेशी पहिरावु चीर" ॥१०३॥

मालणि हीअडइ हरख न माइ । पलिग तलाई दिइ समुदाय ।
पुष्पमाल आपइ तिणि वारि । जिमण सजाई करइ अधिकारि॥१०४

सत्तार भक्ष भोजन ते करइ । राजकुअर जिमवा सचरइ ।
सोवन थाल कचोला सार । बेहू कुअर बिठा तिणि वारि॥१०५॥

चादू मालिणि प्रीसइ हाथि । बे कुअर बइठा इक साथि ।
निज करि करी पवन ते करइ । कुअर नइ मनि आनद धरइ॥१०६

आरोगावी आप्या पान । इणी परिइ दीइ सनमान ।
चूआ चदन अगर कपूर । कस्तूरी परिमलगुण भूर ॥१०७॥

सुख सज्जाद पुहुढया जाम । चादू मालणि पुहुती ताम ।
चादू पूछइ मननी वात । "एणइ नगरि किम आव्या भ्रात?" ॥१०८॥

सवि सखेपि ऊत्तार देय । कारण-तणु कहिउ सवि भेय ।
सावलिगि कुअरी ए वरइ । कइ निश्चि अणखूटइ मरइ ॥१०९॥

सुणी वयण मालणि मुरकाइ । "निरास्वाद आव्या इणि ठाइ ।
जिणि कारणि आव्या मझ वीर । सावलिगि दीधी वडवीर॥११०॥

नेमु लगन लीउ तस तणु । [चादू कहइ] कुअर 'तुम्हे सुणु"।
मदनसिंह मालणि प्रति कहइ । "करु उपाय कुअर जीवतु रहइ१११

एक अम्हारु करु तुम्हे काज । सावलिगि देखाडु आज" ।
तिणि वयणे रीसिइ धडहडी । कुअर-नइ कहि कोपिइ चडी॥११२॥

"तुम्ह कारणि मझ मरि ठाइ । अम्ह मंदिर वली लूसइ राइ ।
एह वात अम्हि नवि थाइ। तुम्ह वाति मझ जीव ज जाइ"॥११३॥

कुंअर हाथि अछइ मुंद्रडी। सवा कोटिनी हीरे जडी।
चाढूनइ वली दीधी तेह। "कहइ, तुम्हथी हुइ काम ज एह?"॥११४

मुद्रा देखि हीइ गहगही। "एह काम हवि होसि सही।
तु तुं माहरुं लेजे नाम। सार्वलिगि आपउ एणइ ठामि"॥११५॥

ततक्षण मालिणि करी सिणगार। जाई पुहुती राजदुआरि।
धरमीतरि + + +   + + +   + + + ॥
+ + +   + + +   + + +
+ + +   + + +   + + +ण जिमण करीसि इहाँ ॥१२४॥

अरहटि वइठउ गाइ गीत। तिणि राणीनुं मोहिउं चीत।
राणी तणउ चित्त तव चलिउ। मनमथ सैन्य अति सलसलिउं॥१२५

सु दीनवचन ते आगलि चवइ। वली वली राणी वीनवइ।
तीणइ वचनि ते पुरुष ज हसिउ। एक वार तइ कारण किसिउ॥१२६

निरास्वाद पापिइ छूडीइ। थोडइ केइवइ सत न छांडीइ।
जे माणस नवि लाभइ छेह। तिह सिउं किमइ न कीजइ नेह॥१२७

घलतुं राणी वोलइ इसिउ। जेहनुं मन जे साथि वसिउ।
तेह तणउ नवि त्रूटइ नेह। जां लगइ जीव हुइ इणि देह॥१२८॥

कहिउ अम्हारु तुम्हे करु। माहरइ साथि पंथि अणुसरु।
मारुं राजि एणइ काजि। पछइ होसिइ आपणुं राज॥१२९॥

द्रव्य आपणइ छइ अति घणउ। मनोरथ सारउ तुम्ह तणउ।
इसी वात ते सरसी करो। जोज्यो हेज स्त्रीनु चित धरी॥१६०॥

इम करतां राजा आवीउ। भोजन समुद सव ल्यावीउ।
राणी कहइ "सुणउ महाराज। वात एक मनि आवी आज॥१६१॥

● प्रतिमा, एक पत्रनी त्रुटि होवाथी कडी, १२६ थी १५३-५४ अंक सुधी खंडित छे. —सम्पादक.

तुम्ह देही सुकोमल जाण । थया एकला करम विनाणि ।
काम काज तुम्हे ढीलइ करु। माहरइ जीवनइ होइ छइ मरु ॥६२॥

नफर एक राखीजइ भलु। जि हुइ चीत सदा निरमलु ।
राजा कहि, "सुणि राणी वयण। एहुवु पुरुष राखीजइ कवण ? ॥६३॥

आपणनइ तेहवु न मिलइ कोइ। माणस मेहली साथि होइ ।
निराधार एहवु कुण मिलि। राति दिवस जे साथि पलइ ?" ॥६४॥

राणी कहइ, "राजा साभलु। आ पुरुष विदेसी छइ एकलु।
मि सघली एहनइ पूछी वात। एहनइ कोइ नथी संघात ॥६५॥

वीतक सुणीआं एहनां घणां। जिम वीतक हूआं आपणां।
आपणी वात एणि सवि कहि। ते साभली अचभइ रही ॥६६॥

खिश्रो एक अवंती वास । अछइ घरणी गंगा तास ।
गगा-मात अवंती वसइ । आणु करवा आवी अछइ ॥६७॥

आणु नही करावुं अम्हे। पाछा घरे पधारु तुम्हे ।
लोक कहइ आवी छइ माइ। ए किम ठाली पाछी जाइ ? ॥६८॥

गंगा-मात पीहरि संचरइ। केता दिवस तिहां निस्तरइ ।
तव कायथ नामि कल्याण । आणुं करवा करइ प्रयाण ॥६९॥

घाटिइ वहिता हुई राति । तेह तणी हवि सुणयो वात।
नगर अवंती उत्तम ठाण । चुसठि योगिणीनुं अहिठाण ॥७०॥

बावन सइं भइरव कलकलइ। ठामि ठामि तिहां दीया बलइ।
सिद्ध-वडइ आविउ एकलु। रोती नारि शबद साँभलिउ ॥७१॥

[वस्तु]

तेणि अवस तेणि अवसरि गंधमगणि ।
नारीरुदन ते हि सांभिलिउ । करइ आक्रंद बहू परि ।
ते निसुणइ ऊभउ रहिउ । सुणी साद चीतवइ चित्त धरि ।
साहस धरी तिहा आवीउ । रुदन करइ जिहां नारि ।
इणि वेलां गोइ इहां । ते मझ वहइ विचार ॥७२॥

[दूहा]

बलतुं नारी इम भणइ । "सांभलि साहसधीर ।
कहुं वीतक जे माहरुं । तुं सांभलि धरधीर ॥७३॥

एणइ नगरि एक नर वसइ । तेह तणी हुं नारि ।
पतिवरता पालुं सदा । आण बहू निरधार ॥७४॥

ते विण भोजन नवि करुं । न पीउं वारि लगार ।
त्रणि काल पग पूज करि । नाम जपुं भरतार ॥७५॥

चोरी-आल ज तेहनइ । सूली दीधु कंत ।
दिवस त्रणि इणिपरि हूआ । किम्ह न जाइ जंत ॥७६॥

अन्नपान मि आणीउं । जाणिउ दिउं आहार ।
मुखि एहनइ पुहुचउ नही । किम करि दिउं आहार ? ॥७७॥

तिणि कारणि हुं टलवलुं । सांभलि साहस धीर " ।
वचन सुणी नारीतणां । दया ऊपनी वीर ॥७८॥

कंधि चडावी आपणइ । कहइ करि निश्चल चित्त ।
"भगति करे भरतारनी । किसी म राखसि भ्रंति" ॥७९॥

[चउपई]

पुरुप कधि नारी तव चडी। काती लेई मडा-नइ अडी।
मांस भखइ तइ हउहउ हसइ। पुरुप तणइ मनि कुतिग वसइ ॥८०॥

आमिप खड विढूटउ तिसिइ। पुरुप पुठि त्ते लागु इसिइ।
तव ते ऊचु जोइ जाम। आधु मडु भखो रही ताम ॥८१॥

नारी तिहा अचोडी करी। नाह तउ जाइ ऊजेणी पुरी।
तव केडिइ ते नारी धसइ। नगर-पोलि देवराणी तिसइ ॥८२॥

पोलि तणी जे बारी अछइ। ते उघाडी दीठी पछइ।
एक पग तव भीतरि दीउ। बीजउ बाहिरि तिणि स्त्रीइ लीउ ॥८३॥

पग-विहूणउ आडु पडइ। तिणि वेदनि ते अति आरडइ।
पुन्य माटि लिउं प्रगटिउं इसिइ। खेडीदेवति आवी तिसिइं ॥८४॥

"अहो पुरुप तुझ कुण दुख दहइ?। ससतु धाई, मभनइ कहइ।
किणी परि खाधउ तुझ पाय। किणि परि नगरि पुहुतु आय ॥८५॥

कथा पाछिली सघली कहइ। देवि कहइ तु उभु रहइ"।
ततखिणि देवति वाचा हुई। नवपल्लव पग आविउ सही ॥८६॥

हरखिउ हीइ विमासइ इसिउ। नारी प्रणु पुन्य इहां बसिउ।
फरम-उदय आविउ माहरूं। नारी पुंन्यि थयुं वर हुउ ॥८७॥

इम चीतवतु घर-भ गणि गयु। जाइं वारणइ कान ज दीयु।
ऊभउ कुतिग जोइ जिसि। सभलजो तिहा वात ज तिसिइ ॥८८॥

घरमाहि दीवु परजलइ। आमिष खड करी करी गलइ।
बेटा प्रतिइ कहइ तव मात। ए आमिषनी कहइ मझ वात ॥८९॥

बरस साठि मझ हूआ इहां। अेहवु स्वाद न दीठउ किहां।
सांभलि माता वात एह तणी। ए तु जाघ जमाई तणी ॥९०॥

बेटा बेटी तेहथी जोइ । जमाई वाहलु अति होइ ।
तिणि कारणि ए मीठउ घणु । कह बेटी माता तुम्हे सुणइ ॥९१॥

बेटी नइ तव माता कहइ । "कुण यानकि ते वेदन सहइ ? ।
आपण वेहू जईई तिहा । ऊगाडी नइ आणीइ इहा ॥९२॥

जउ प्रभात किमिइ थाइसि । आपणा हाथ थिकी जाइसि" ।
इस्यां वचन श्रवणे सांभली । तव तिहां-थउ नाहठउ सलभली ॥९३॥

थयु प्रभात तइ घरि आवीउ । सर्व रिद्धि ते वाभण दीउ ।
मन वइराग धरी चालीउ । फिरतु फिरतु इहा आवीउ ॥९४॥

वइरागिउ दिन रयणी रहइ । तिणि कारणि हरिना गुण ग्रहइ ।
माया मोह सवि छाडी कर्म । हवि ए चालइ तपसी धर्म ॥९५॥

तेह-भणी साथिइ लिउ एह । जिम सुख हुइ आपणइ देह ।
तु तिहांथी अणइ चालीआं । मथुरांइ अनुक्रमि आवीआं ॥९६॥

यमुना नदी वहइ असराल । धरम तणी जिहा वरतइ चाल ।
नारीय भणइ "सामी सुणु । आदिनवार अछइ अति भलु ॥९७॥

ए तीरथ छइ निरमल नीर । पापरहित कोजइ शरीर ।
राय तणु चित निरमल जाण । पहिरी पोत नइ करइ सनान ॥९८॥

राणीइं ठेलो नाखिउ तिसि । पूरमांहि तव चालिउ तिसिइं ।
रायनइ छइ तरवा अभ्यास । चालिउ जाइ न सेहलइ साहास ॥९९

वहितु गयु घणी मुंइ राइ । नगर तणइ परसरि तव जाइ ।
चिंतइ नारी जोज्यो काज । जेह-नइ अरथि चूकु राज ॥२००॥

दुख धरतु नगरी-मांहि गयु । राजसभा जई ऊभु रहिउ ।
तिहां ते आदर पामिउ घणु । हवि राणीनी वात ज सुणु ॥२०१॥

पाप तणउ फल तेहनइ भयु । रूप हतुं ते कोढी थयु ।
पीप तणा ते रेला बहइ । तेहनी गंधि कोई नवि सहइ ॥२०२॥

कर उमाहि वईसारइ धरी। रूई तणी पुहुल ते करी।
देस देसाउर इणिपरि फिरइ। करड लेई नइ माथइ धरई ॥३॥

गाइ गीत राग आलवई। तेणइ जननां मन रजवइ।
लोक सहू इम बोलइ वाणि। सती नही ए समवडि जाणि ॥४॥

देश विदेसि फिरतां रहइ। दान मान ते गीतथी लहइ।
इम करता तिणि नयरि जाइ। आगिल थी आवी जिहा राइ ॥५॥

राजसभामाहि लेई जाइ। सरलइ सादि आलवी गाइ।
तेणइ राजा-मन रजीउ। घणउ गरथ अरथ तस दीउ ॥६॥

स्त्री-नइ राजा पूछइ वात। कहउ तुम्ह हुउ किम सघात ?।
रूप-तणु तुज नही छेह। एहवी किम तुझ स्वामी देह ?" ॥७॥

"सात वरसनी हुई जाम। मावापि दीधी एहनइ ताम।
रूपि मदन समाणउ जोइ। करम-वसि हवि कुष्ठी होय ! ॥८॥

औषध तणउ न लाभइ छेह। एहनु तुहिइ न वलिउ देह।
तीरथ करवा-नइ नीसरी। भली एह राजनि चिति धरी" ॥९॥

वलतु अजितसेन ऊचरइ। "कहु वात जउ सहू चित धरइ।
एहना सील-तणउ नही पार। यमुना माहि नाखिउ भरतार ॥१०॥

वात कही सघली आपणी। तव लज्जा गई नारी तणी।
जोउ सतीतणु सनेह। अरध आयु जिणइ आपिउ देह ॥११॥

जेहनइ मनि अस्त्री वीसास। जाते दीहे सही निरास।
अस्त्री कूडकपट-की भली। अस्त्री नुहइ कहिनइ भली" ॥१२॥

वात सुणता तव लडथडी। मूरछा आवी धरती पडी।
नारी प्राण गया तिहा सही। सुणी सभा सहु अचिरज हुई ॥१३॥

ते नर मूरख हुइ समान। अस्त्री कारणि तजइ पराण।
सावलिंगि ए वातज कही। राजा सरिखु मूरख सही ॥१४॥

सदयवच्छ नव बोलइ हसी । "एह वात तुम्हे कीधी किसी ? ।
सुपुरिस वाचा-लोप नवि करइ । सकल रिद्धि जन तेह परवरइ॥१५॥

सावलिगि ! निसुणउ तुम्हे वाणि । तुम्ह कारणी आव्या इणि ठाणि ।
तात वचनि घर छाडी दूरि । तिम आविउ जिम-जल निधि पूरि ॥१६॥

तुम्हविण किम जईइ तिणि ठाणि ? । लोक हासारय अनइ बहू हाणि ।
मान तिजी जीवई नरनारि । निफल जनम तह ससारि" ! ॥१७॥

सावलिगि कहइ, "मासी सुणु । ए उपाय सघलु अम्ह तणउ ।
इणि वाति अम्ह आवइ लाज । पिता-तणउ सवि विणसइ काज १८

वर वरीउ किम थाई दूरि ? । ए दुख मोटु जलनइ पूरि ।
इहाँ साप इहाँ मृगराज । ते परि सकल थई अम्ह आज ॥१६॥

पिता वचन किम परहुं करु ? । किणीपरि हत्या आदरुं ? ।
दया मया करी दीधी वाच । सदयवच्छ प्रति बोली साच ॥२०॥

लगन तणइ दिनि जायो तिहाँ । वकदूआर अछइ अम्ह जिहाँ ।
साभ समइ तुम्ह थई असवार । ऊभा जइ रहियो तिणि वारि ॥२१॥

तिणि वारि हु आविसु सही । एह वातनु सासु नहीं" ।
वाचा देई कुंअरि घरि जाइ । सदयवच्छ मनि हरख न माइ ॥२२॥

सावलिगि फलहर्का फिरइ । सदयवच्छ जोवा सचरइ ।
नयणि नयण मेलावु होइ । नेह-मरम नवि जाणइ कोइ ॥२३॥

लगन-तणइ दिनि आवी जान । तेहनइ दीजइ भाभा मान ।
घणइ महोच्छवि कीउ प्रवेस । उतारा आपइ सविसेस ॥२४॥

जिमण तणी सजाई करइ । ततखिण जिमवा तेडा फिरइ ।
सवि राउत कीजइ एक ठामि । रहिउ वीसरिउ सो धावइ साम २५

(दूहा)

सदयवच्छ तिणि अवसरि । अश्वि थयु असवार ।
मंत्री-सुत साथि करी । ऊभउ बंक दूआरि ॥२६॥

प्रच्छन्नगति जाई रह्या । कोई न जाणइ मर्म ।
अन्तराय फल भोगव्यां । विना न छूटइ कर्म ॥२७॥

(चउपई)

तिणि थानकि जई ऊभा रहइ । तेहनु भरम कोइ नवि लहइ ।
भोजन-सार करइ नरराय । कोइ सुभट रखे चीसरी जाइ ॥२८॥

आदर देई आणउ इणि ठामि । अम्ह-सरसा आरोगइ ताम ।
गुंडु नापित तिहां फरइ । कुंवर देखि बहू आदर करइ ॥२९॥

सीघ्र थई पुहुचु घरि धीर । भोजन करवा तेडइ वीर ।
तुम्ह तणी सहू जोइ वाट । जु आवउ तु बइसइ ठाठ ॥३०॥

ऊत्तर करी बुलाविउ तेह । किम आवउ अम्हे नरपति-गेहि ? ।
अम्ह असबाब न राखइ कोइ । नापित रिदय विचारी जोइ ॥३१॥

नरपति-सिउं जई नापित कहइ । "दोइ सुभट एक ठामि रहइ ।
माहरा तेड्या नावइ राय । तु नरपति आवइ तिणि ठाइ" ॥३२॥

नरवर वचन न लोपिउ जाइ । सदयवच्छ आविउ तिणि ठाइ ।
नापित हाथि अस्त्र तिणि दीया । अवर ज वस्तु समोपी गया ॥३३॥

नापित जाति हुइ सत-हीण । सकल सनाह पहिरिउ तंखीण ।
एक अश्व ऊपरि जई चढइ । बीजउ दोरी हाथिइ धरइ ॥३४॥

तिणि अवसरि आयमीउ सूर । जोवा मिलीउं माणसपूर ।
लगन तणी सामग्री करइ । सार्वलिंगि वाचा चिंति धरइ ॥३५॥

लही अवसर चाली तिवार । आवी ऊभी बंक दूआरि ।
नापित तणउ न जाणइ मरम । गुंडु तिहां न भाजइ भरम ॥३६॥

सार्वलिगि थई असवार । लेई चालो नगर-दूआरि ।
रयणि माँहि छाँडिउ निज देस । अवर देसि कीधउ परवेस ॥३७॥

रत्नादे पति ऊगिउ जाम । तव कुमरीइ निरखिउ ताम ।
"फटि पापी ! कीधु कुणकाज ? । मनना गया मनोरथ भाजि ॥३८॥

अश्व तणउ अधिपति किहा रहिउ । कइ मारिउ कइ जीवनु धरिउ ।
गु डु मरम कहइ तिणिवार ? 'तँ जीवनु छइ गुणवार' ॥३९॥

सवल मरम तव नापित कहइ । सार्वलिंगि होअडइ सग्रहइ
तेहनी हवइ किमी तुम्ह आस ? । अम्ह-सरिसिउ तुम्हे करु विलास ॥४०

फटि पापा ! निरगुण चडाल । ताहरा जीवनु आविउ काल ।
अम्ह सरिसु बछइ सयोग । हुइ हाणि तुझ आवइ रोग" ॥४१॥

वड हेठली लीधु विसराम । नापित हूउ निद्रा-वसि ताम ।
छेदिउ नाक लेई नइ छुरी । इम सीखामण दीधी खरी ॥४२॥

कूकू करतु नासी गउ । पुरुष वेस तिणि नारी लीयु ।
एक अश्व कुअरी असवार । बीजउ हाथि कीउ तिणि वारि ॥४३॥

तिहा थिकी आघी सचरइ । नगर छोडि उद्यानि फिरइ ।
झूरइ कामिनि मन-ह्-मझारि । सार्वलिंगि दुख नावइ पार ॥४४॥

मनमाहि चितइ ' किसी परि करु ? । कुण थानकि जाई अणुसरु ?"
सार्वलिगि तव करइ विलाप । "केहा भवनु लागु पाप ? ॥४५॥

बेहू पक्षयी दूरिइ टली । मन आशा एकइ नवि फली ।
गयु कुमार गयु भरतार । सदयवच्छ विण जोविउ धार ॥४६॥

दुख धरती आघी सचरइ । वडहेंठलि जई वासु रहइ ।
वृक्ष डालि बाधिया वि तुरी । वड-हेठनि जागइ सुन्दरी ॥४७॥

गरुड पख तिहा वासि रहइ । तेहनइ च्यारि पुत्र गहगहइ ।
चुणि काजि ते जूजूआ जाइ । राति आवी प्रणमइ पाइ ॥४८।

पूछइ पिताः "तुम्ह लागी वार । ते मुं आगलि कहु विचार"।
आप-आपणा दाखइ मरम । सुणी बात अम्ह भाजउ भरम ।।४६।।

"दक्खण दिसि पाटण पहिठाण । सालिवाहन राजा अहिठाण ।
तस घरणि छइ लीलावती । सार्वलिगि पुत्री गुणवती ।।५०।।

रतनपुरीनु राजा चलु । रतनसेखर नामि गुणनिलु ।
तेह-सरिसु मिलीउ वीवाह । आवी जान हूइ ऊछाह ।।५१।।

कुंअरीइ वाचा अवस-सिउं करी । लगन-वेलां वाहिरि संचरी ।
गुंडुं नापीतइ वसि पडी । राति समइ चालां चडवडी ।।५२।।

थयु प्रभात नइ सूर ऊगीयु । कुंअर ठामि नावी निरखीउ ! ।
नावी पूछिउ वडइ विछेद । सदयवच्छ-नु कहिउ सवि भेद ।।५३।।

जेतलइ नावी नीद्र-वसि थयु । नाक कान तव बाढी लीउ ।
तिहां-थकी तव नासी करी । नावी आविउ पाछल फिरी ।।५४।।

चिंतइ कुमर विदेसि फिरुं । सार्वलिगिनी शुद्धि ज करुं ।
जउ जोतां मझनइ नवि मिलइ । तु करवत मेहलावुं गलइ ।।५५।।

मदनसिह नइ कहिइ वात । घेरे तुम्हारइ पुहुचउ रात ।
ए देही तुम्ह-सरसी अछइ । तुम्ह-विण सिउं करवी छइ पछइ ? ।।५६।।

इसिउं कहीनइ ते नीसर्या । कासी तीरथ भणी संचर्या"।
बीजा तणी वात साभलु । रतनसेखर जे आविउ भलउ ।।५७।।

लगन तणउ अवसर वही गयु। मातु पिता-हीअडइ दुख थयु ।
सकल लोक वाणी विस्तरी । सार्वलिगि कुंणइ अपहरी ? ।।५८।।

जान तणउं मेहली संघात । अवधूत वेसि चलि परभाति ।
करी प्रतन्या चालिउ तेह । निश्चि मरूं जउ न मिलइ एह" ।।५९।।

एहवी वात कही जेतलइ । बीजउ पखी बोलिउ तेतलइं ।
"मालव देसि अवंती नामि । पहुवच्छ राज करइ तिणि ठामि ।।६०।।

सुमंगला पट्टराणी सुणउ। सदयवच्छ, कुंअर तस तणउ।
बार वरसनु कुंअर थयु। तव ते नारी जोवा गयु ॥६१॥

जोतां कोइ चिति नवि वसइ। राइ कुअर बोलाविउ तिसि।
"जो को नारी चित नवि धरइ। तु निश्चि इंद्राणी वरइ ॥६२॥

सावलिंग कइ परणइ सही"। इसी बात मुखि नरवइ कही।
पिता-वचन मन-माहि राखीउ। तव कुंअर अदृष्टउ थयु ॥६३॥

तु तिहां सहू मनि दुख धरइ। घरि घरि शोक निरंतर करइ।
नगर मांहि सवि उच्छव रह्या। ते जोई अम्हे आव्या अरहा" ॥६४॥

एवडी वात कही जेतलइ। श्रीजउ आवी कहइ तेतलइ।
"पूरव दिसि छइ उत्तम ठाम। चद्रावती नगरीनुं नाम ॥६५॥

जितशत्रु राय राज तिहां करइ। सैन्य सहित आहेडु करइ।
बार वरसना बालो वेस। बत्रीस लक्षण अवधू-वेसि ॥६६॥

रायतणी ते नर्जरि पडया। कद्रप-रूप अभिनवा घडया।
हठ करी राजा पूछइ तिहां। "अवधू-वेसिइ जाउ किहां?" ॥६७॥

सदयवच्छ बलतु इम कहइ। "सावलिंगि अम्ह हीअडइ दहइ।
मझ सरसी वाचा तिणि दीध। ते अस्त्री नइ कुणइ लीध ॥६८॥

जउ ने कामिनि हुं नवि लहु। तु शिर ऊपरि करवत वहुं"।
"अरे कुंअर तुं खरु अयाण। अस्त्री कारणि तिजइ पराण! ॥६९॥

पुष्फावती कुंअरी अम्हतणी। ते कन्या करु तुम्ह तणी।
तुम्ह-नइ सुंपुं सघलु राज। घरे अम्हारइ आवु आज" ॥७०॥

सदयवच्छ बलतु इम भणइ। "राजतणी खप नही अम्ह तणइ।
सावलिंग ते वन-मांहि फिरइ। माय ताय तइ सुख परहरइ ॥७१॥

सोइ कारणि दुख देखइ सही। सुख भोगवुं हुं किम रही?।
इ मर्जादा लोपइ किमइ। तुंहि सत्य न चूकुं अम्हइ!" ॥७२॥

इसिउं कही कुअर चालिउ । [कहइ पंखी] हुँ इहाँ आविउ ।"
कामिनि वात सवे सांभली । चुयु पंखो बोलइ वली ॥७३॥

"कुंकण देश शंखपुर गामि । नरसिंग राज करइ तिणि ठामि ।
मतिसागर मन्त्री तस तणु । वात तेहनी तुम्हे सुणु ॥७४॥

आंखि नवि देखइ परधान । कुष्ठी-राजा रूप निधान ।
अहनिसि अरति छइ अति घणी । मंत्रीसर नइ राजा तणी ॥७५॥

जे डाहा वेदन-ना जाण । ति सवि तेडाव्या तिणि ठाणि ।
मंत्र तंत्र औषध उपचार । पणि ते कहियी नही उपगार ॥७६॥

तव नरपति दीधउ आदेस । ढंढेरु फेरु कहु वसेस ।
'नृप मंत्रीनुं जे दुख हरइ । अरधराज्य नइ कन्या वरइ' ॥७७॥

वली मंत्रीस्वर कन्या देय । वित सारु उपगार करेय ।
ते निसुणी हुँ आविउ इहाँ । राजा मंत्री दुखी तिहाँ ॥७८॥

आप तात जाणउ उपचार । अम्ह आगलि तुम्हे कुहु विचार" ।
पंखराय वलतुं इम भणइ । [सार्वलिंग चित देई सुणइ] ॥७९॥

"अम्ह विष्टानु संग्रह थाइ । जे लेई तिणि नयरि जाइ ।
सीतोदक-सिउं खरडइ देह । जाइ कुष्ट नही संदेह ॥८०॥

उष्णोदक-सिउं अंजन करइ । ततखिण दृष्टि चिहु दिसि फिरइ ।
दीर्हि तारा देखइ सही । एह वातनुं संसय नहीं" ॥८१॥

बीजइ पुहुनु पूछइ वात । अम्ह आगइ तुम्हे भाखु तात ।
सदयवच्छ सामलि तु कहु । मलवा वात सवे तुम्हे लहु" ॥८२॥

पंखराय वलतुं इम कहइ । सार्वलिंगि सवे संग्रहइ ।
शंखपुरी मिलसि सहू कोइ । सूदु सामलिनु वर जाइ ॥८३॥

ए सविनु मिलिस्यइ संयोग । मानव भव सुर लहसि भोग ।
तिणि अवसरि ऊगिउ ते सूर । नाठाँ तिमिर जिम जलहल पूर ॥८४॥

लेई विप्टा शंखपुरी जाइ । सीह-दुग्रारि पुहुती थाइ ।
तिणि ग्रवसरि ढंढेरु फिरइ । सावलिगि जाई ग्रणुसरइ ॥८५॥

छवी ढढेरु घाली नारि । जण लेई ग्राव्या राजदुग्रारि ।
नरपति-नइ जई करइ प्रणाम । तव ग्रादर दीइ बहू ताम ॥८६॥

"वैद्यराय ! किणि थानकि रहु ? । ग्राज ग्रम्हे घनवंतरि लहिउ ।
तुम्ह ग्रावि ग्रम्ह-सरीग्रा काज । पूरव पुन्यि प्रगटया ग्राज ॥८७॥

एह व्याधि जिणि थाइ दूरि । ते उपचार करु जे गूर ।
पछइ कहण न पावइ कोइ । तेह भणी सहू निमुणउ लोइ ॥८८॥

सकल लोक कुमरी-प्रति कहइ । एह व्याधि तुम्हथी नही रहइ ।
जे जाणउ ते ग्रौषध करु । व्याधि एह तुम्हे दूरि हरु" ॥८९॥

थाप्यउ मनि तव हरख ग्रपार । जे जाणउ ते करु उपचार" ।
नरपति ग्रगि लेप तव करइ । खिणि खिणि रायतणउं दुख हरइ ९०।

तिणि ग्रौषधि तव गई व्याधि । राजा-सयरि हुई समाधि ।
मत्रीसर कर जोडी कहइ । "ग्रति घणउ नयणां ग्रम्हनइ दहइ ॥९१॥

मि उपचार करया ग्रतिघणा । निःफल हूग्रा सविहइ तणा ।
पूरव पुन्यि मिल्या तुम्हे ग्राज । निश्चिइ सरसि ग्रम्हारुं काज" ॥९२

"तु उष्णोदक सिउं ग्रंजन करइ । तिमिर नयण तणां दुख हरइ" ।
दिवस सात-मइं नाठा व्याधि । नरपति मत्री हुई समाधि ॥९३॥

वैद्यराय प्रति ग्रादर करइ । सार वस्तु ते ग्रागलि धरइ ।
धनवंतरी परतखि ग्रावीउ । नृप मत्री दुख दूरि कीउ ॥९४॥

विनय कर नरपति इम भणइ । "पुनी एक मछइ ग्रम्ह-तणइ ।
वनमाला नामि गुणवंत । सील शिरोमणि सहिजि संत ॥९५॥

कृपा करु ग्रम्ह ऊपरि ग्राज । ते कुंग्ररी, परणउ गुणराज ।
तु ग्रम्ह वाचा निश्चिं पलइ । दुख-दालिद्र सवि दूरि टलइ ॥९६॥

मंत्रीसर निज कन्या देय । मदन-मंजरी नामि जेह ।
मया करी अम्ह मोटा करु । अम्ह कुंअरी तुम्हे निश्चि वरु ॥१९७॥

उच्छव लगनं लीउ तिणि वारि । नगरी वरतिउ जय-जय-कार ।
वैधराय दोइ कुमरी वरइ । मुखि नरपति मंत्री उच्चरइ ॥१९८॥

गाई कामिनि मंगल च्यारि । नृपमंत्री मनि हरख अपार ।
अरधराज आपइ नरपाल । मंत्रीपद दीई सुविशाल ॥१९९॥

हय गय रथ पायक परिवार । रिद्धि तणउ नवि लहीइ पार ।
सोवन थाल कचोलां जेह । पलिंग तलाई आपइ तेह ॥२००॥

एक मंदिर दीइ नरराय । दंपति कारणि रहिवा ठाय ।
वर परणी चालिउ निज गेहि । निज मंदिरि जई पुहुता तेह ॥२०१॥

अष्ट भोग कुमरी परिहरइ । तजी सेजि संथारु करइ ।
तेहनु मरम न जाणइ कोइ । इणि परि दिन ते नीगमइ सोइ ॥२॥

तत्र कामिनि मनि विसमय थाय । अहनिस शोक वहइ ए कांइ ? ।
सकल भोग ते दूरि करइ । तपसीनी परि ते रहइ ॥३॥

एक वार ते पूछइ मरम । सावलिंगि ते भाजइ भरम ।
"भोग तणउ मि कीधु नीम । मित्र न पामुं तां मझ सीम ॥४॥

दाण-मांडवी अछइ जिहां । निज सेवक मोकलीआ तिहां ।
कुमरी सीख दीइ अति घणी । सदयवच्छ मेलापक तणी ॥५॥

जे जडीआ योगी अवधूत । तपसी लिंगायती नइ भूत ।
रूपे परावृत फेरी फरइ । एहवा वाटिइ जे संचरइ ॥६॥

विणु समझि मेहलउ कोइ । एहवइ वेमि जे जे होइ ।
छलबल करी करी आणेयो इहां । रखे कोइ चाली जाइ किहां ॥७॥

केता दिवस इणीपरि जाइ । वरिउ कंत आविउ तिणि ठाइ ।
अवधू-रूपि दीठउ तेह । विरहि करीनइ सोसिउ देह ॥८॥

दाण-मांडवी आगलि जाइ। अवधू-वेसि आणिउ तिणि ठाइ।
नव-योवन देसी सुकमाल। पूछइ, "किम मेहलिउ जंजाल?" ॥६॥

निज मन तणी वात ते कहइ। "सावलिगि कुमरी चिति दहइ।
तिणि विरहि लीधु ए वेस। हीडुं तेणइ देस परदेस ॥१०॥

सहीय मरम तव नेपुं करइ। घरभीतरि ते लेई धरइ।
सुखि समाधि रहइ तिणि ठाइ। जे जोईइ ते देई पठाइ ॥११॥

सदयवच्छ आघु नीसरिउ। दाण-मांडवीआ तेणे धरिउ।
"कहु योगी, चाल्या कुण देसि?। किम तुम्हे छांडिउ सयल
कलेस?" ॥१२॥

सदयवच्छ बलतु इम भणइ। "कामिनी-विरहु छइ अम्ह तणइ"।
संखेपि करी ऊतर देय। जाणी मरम चलाविउ तेय ॥१३॥

सावलिगि आगलि लेई जाइ। देखी कत होइ चमकाय।
सावलिगि पूछइ तव भेद। "अवधू! ऊतर दिउ विछेद ॥१४॥

सालिवाहन नृप-कुंयरी जेह। सावलिगि नामि छइ तेह।
मालणि मंदिरि वाचा करी। ते सुंदरि कहनइ घरि हरी! ॥१५॥

तिणि कारणि अम्हे लीधु योग। छांडिया विषय तणा सवि भोग।
तिणि कारणि अम्हे लीधु नीम। न मिलइ कामिनि तां छइ सीम" ॥१६

सावलिगि कुमरी इम कहइ। "नारी काजि कवण दुख सहइ?।
सवि मूरख-मांहि तुझ रेह। विण-हरणि दुख दाखइ देह" ॥१७॥

सदयवच्छ तव बोलइ वाणि। "ए संसार असारि ज जाणि।
वाचा सार एणइ संसारि। ते वाचा दीधी तेणीइं नारि ॥१८॥

सावलिगि जउ जीवइ नारि। वाचा-लोप नही करइ संसारि।
ति विण अवर नारि नवि वरूं। जइ गंगा करवत अणुसरू ॥१९॥

जीभ खंडि करि तजुं पराण। इणि वाति सांसु म म जाणि।
'जनमि-जनमि मझ नारि तेह'। इम करवत वाहसु देह" ॥२०॥

सुणी वयण तव सामलि हसी । कनक-तणी परि जोयु कसी ।
कंत-तणउ नवि लाधु छेह । मझ कारणि दुख दाखइ देह ॥२१॥

"अरे कुंअर ! तुं म करि अकाज । सार्वलिगि तुझ मेलिसु आज ।"
तिणि वयणि हीअडइ हरखीयु । ऊतारा थानक तव दीयु ॥२२॥

प्रथम कंत वोलावइ तेह । 'तजी शोक तुम्हे जाउ गेहि ।
सावलिंगि तुम्हनि नही मिलइ' । सुणी वयण हीअडइ दव बलइ॥२३॥

तेहथी रूपि अधिक आगली । राजकुमरि परणावु वली ।
गुणमाला-नरपति कुंअरी । परणावी मोकलीउ पुरी ॥२४॥

हरख वदन तव नयरीइ जाइं । मात पिता नइं लागु पाय ।
अति आनंद हूउ तस घरी । सयल कुटुंबनइ सारी पुरी ॥२५॥

मदनमंजरी मंत्रि-कुआरि । मदनसिंह परणाविउ नारि ।
तिहां सहूनइ हरख ज करिउ । सार्वलिंगि सदयवच्छ वरिउ ॥२६॥

सदयवच्छ नइ सामलि कहइ । "इणि थानकि रहिवुं नवि लहइ ।
जउ नरपति ए लहसि मरम । सकल वातनु भागइ भरम" ॥२७॥

सकल सैन्य-सिउं चाल्यो राय । सालिवाहन नृप-केरइ ठाइ ।
मात पिता मनि दुख अति घणु । करता होसि मुं बेटी-तणुं ॥२८॥

नारि-वचनि चालिउ वरवीर । सदयवच्छ मनि साहस धीर ।
नयरि पासि जब पुहुता जाण । वागां जांगी ढोल नीसाण ॥२९॥

निसुणिउं दूत-वचनि तिहां राय । तव बेटी-नइ साहमुं जाइ ।
पहुवच्छराय-तणउ सुत जेह । सार्वलिंगि वर परणिउ तेह" ॥३०॥

इसिउं सुणी मनि हरख न माइ । सार्वलिंगि तइ मिलवा जाइ ।
सालिवाहन नृप पालु पलइ । सदयवच्छ साहमु आवी मिलइ ॥३१॥

सार्वलिंगि तव प्रणमइ पाय । मात पिता मनि हरख न माइ ।
"कहु कुंअरी! तुम्ह-तणउं चरित्र । तु अम्ह काया हुइ पवित्र ॥३२॥

कीधां करम न छूटइ कोइ । राजा न्दिय विचारी जोइ ।
अम्ह चरित्र नवि लाभइ पार । कुमरीइ कहिउ सवि सुणीउ
विचार ॥३३॥

लगन जोई कीजइ वीवाह । तु हुइ हरख, नइ भाजइ दाह ।
तु हवि अम्ह मनोरथ फलइ । पुत्री-विरह दुख दूरिइ टलइ" ॥३४॥

सालिवाहन नृप मांडिउ जंग । नरपति घरिउ छ्व बहुरंग ।
दान मांन दीजइ अतिघणां । हुइ उछव वीयाहा तणा ॥३५॥

वर घोडइ हुउ असवार । गायइ कामिनि मंगल-च्यारि ।
लूण ऊतारइ वर कामिनी । वद्धावइ वारु भामिनी ॥३६॥

नर नारी तिहां बोलइ घणा । जोयो फल ए पुन्यह-तणां ।
सदयवच्छ नइ सामलि नारि । सरिखु योग मिलिउ संसारि ॥३७

वर-राजा तोरणि आविउ । इंद्र सरीखु सोहावीउ ।
वर पूंखी आणिउ मांहारइ । सिंहासनि जई आसन करइ ॥३८॥

विप्र समय वरतावइ जामि । कर-मेलापक हूउ ताम ।
सोवन-चउरी करइ नरेस । तिणि थानक कीधउ परवेस ॥३६॥

वर-कामिनि तिहां फेरा फरइ । ब्राह्मण बईठा वेद ऊचरइ ।
करे भाट तिहां जय-जय-कार । विनइ करी दिइ दान अपार ॥४०॥

कर-मेहनामणि नृप दिइ दान । हय गय रथ परघु बहुमान ।
पाय लागी नृप दि आसीस । "दंपती जीवयो कोडि वरीस !" ॥४१॥

वर लाडी परणी घरि जाइ । हीअडइ अति आनंद न माइ ।
सदयवच्छ सामलि वर नारि । विलसइ सुरक न लाभइ पार ॥४२॥

सालिवाहन लीलावई तणी । मननी इच्छा पुहुती घणी ।
सदयवच्छ सामलि-सिउं रहइ । राति दिवस अंतर नवि लहइ ॥४३॥

केता दिवस इणि परि जाय । सदयवच्छ चिंतइ मन-मांहि ।
मात पिता दुख होसि घणउ । करता होसि अंदोह अम्ह-तणु ॥४४॥

सावलिंगि नइ कहइ वात । "दुख धरतु होसि मझ तात ।
विरहि करी निज छंडइ प्राण । तु हवि जईइ पुर पहिठाणि ॥४५॥

इहा रहिवा-नु युगतु नही । सुदा रहोइ विचारु सही ।
सासरडइ रहिता हुइ लाज । पिता-पखनु विणसइ काज ॥४६॥

[दूहा]

स्त्री पीहरि नर सासरइ । संयमीआं सहि वास ।
मान-रहित निश्चिइ हुइ । जु मांडइ थिर वास ॥४७॥

जं जं घोवत मिठडु । सज्जन तांह विदेश ।
अंब घरंगणि मुहुरीउ । करूअतण पामेसि ॥४८॥

[चउपई]

इम विनी चालिउ तिणि वारि । ससरानइ जई करिउ जुहार ।
"कृपा करु, अम्ह दिउ आदेस । नयरि ऊजेणी करुं प्रवेस ॥४९॥

पिता अम्हारु बहू दुख धरइ । अहनिसि माता शोक ज करइ ।
सवि सुख छांडिया तेणे दूरि । ते दुख-सागरि पडीआं भूरि ॥५०॥

तुम्ह प्रसादि अम्ह पुहुती आस । परणिउ कुमरी लीलविलास ।
आज अम्हारी वाचा पली । मन-वंछित कामिनि अम्ह मिली" ॥५१॥

वलतु राजा एहवु कहइ । "तु रूडुं जउ इहा रहइ ।
पुण्य-प्रभावि अम्हनइ मिलिउ । कलप-वृक्ष अम्ह आगणि फलिउ ॥५२॥

इम कांइ तुम्हे दाखु छेह ? । खिण एक मांहि छांडु नेह" ।
कर जोडी नइ करइ प्रणाम । देई आलिंगन चालिउ ताम ॥५३॥

सावलिंगि मोकलावा जाइ । माता पिता-ना प्रणमइ पाइ ।
सीख लेई-नइ चाली साथि । सदयवच्छ स्वामी नरनाथ ॥५४॥

सालिवाहन बुलावा भणी । आवि तेतलइ सोम आपणी ।
करी जुहार नइ पाछउ वलइ । पुत्री-विरहि मीन जिम मिलइ ॥५५॥

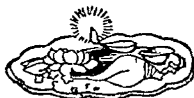
मयरि ऊजेणी पुहुतु वीर । सदयवच्छ नृप साहस धीर ।
मात-पिता-ना प्रणमी पाय । आलिंगन दिइ आघु थाइ ॥५६॥

सावलिंगि सासू-पाए पडइ । आलिंगन देती अडवडइ ।
सविकर्हिनि मनि हूउ आणंद । जिम चकोर खग देखी चंद ॥५७॥

निज कुटंब-मेलापक हूयु । ए अधिकार हूउ छइ जूयु ।
सुमंगला मनि पुहुती आस । सुख भोगवइ तिहां लील विलास ॥५८॥

मनगमता पाम्या सयोग । पाच प्रकारिइ विलसइ भोग ।
ए पहिलुं हूउ अधिकार । कवि कहि जोई चरित्र आधार ॥३५॥

॥ इति श्री सदयवच्छ सावलिंगि पाणिग्रहण चुपई ॥
॥ समाप्तमिति भद्रम् ॥



परिशिष्ट २

मुनि केशव (कीर्तिवर्धन) रचित

सदयवच्छ सावलिंगा चउपई

[दूहा]

स्वस्ति श्री सोहग सुजस, वद्धित लील विलास ।
दायक जिण-नायक नमुं, पूरण आस उल्हास ॥१॥

[1]सरस वचन द्यो सरसती, सकल कला दातार ।
सुप्रसन्न प्रणमुं सदा, वरदाई सुविचार ॥२॥

जे क्युं जगि दीसइ अछइ, आसति मति गुण ग्यान ।
सो प्रसाद सदगुरु तणो, धुरि धरूं तस ध्यान ॥३॥

रस नव ही अति सरस हुई, अपणी अपणी ठांमि ।
उतपति सवि श्रृंगार की, सहु जन-कूं अभिराम ॥४॥

रसिया विण श्रृंगार रस, शोभ न पामइ [2]मुद्ध ।
कामिणी विण कामी पुरुष, दीसइ वृद्ध [3]विबुद्ध ॥५॥

तिण रस को कारण [4]त्रिया, वली नायक सु प्रधान ।
कवियण तिणि कारणि कहइ, रसिक-हेतु धार ग्यांन ॥६॥

रस बंछइ जिको रसिक, सज्जण सगुण सुहाउ ।
सदयवच्छ की वारता, सुणु रसिक सिरराउ ॥७॥

[चुपई—राग मार]

थ दिसि सोहग सु प्रकास । कूंकण विजयपुर विविध विलास ।
रमणी पदमणी गुणवत । योगीजण जिहां सुख विलसत ॥८॥

१. 'सरस वचन कपिगुण सुमति' २. 'मुद्ध' ३: 'विशुद्ध' ४. 'त्रिषा'

[1]महीपाल पालइ तिहां राज । राज करइ जाणि कि सुरराज ।
ख्यात त्याग निकलंक [2]नरेश । सोहग वास ,विलास [3]विशेष ॥९॥

तस कुल-मंडण साहस धीर । निरमल गुण गंगा नुं नीर ।
सदयवच्छ तस सुत सुविचार । जाणिक हरिकुल मदनकुमार ॥१०

[दूहा]

गुण-रागी त्यागी गुहिर, सोभागी सकलाप ।
सदयवच्छ सोभागिलो, [4]पल पल चडत प्रताप ॥११॥

तन-सुख मन-सुख नयण सुख, सुख वयणे ही सार ।
सुख [5]क्रमि-क्रमि महाराज-सुत, सहु जण-नइ सुखकार ॥१२॥

बीजोही बालक सदा, दीठों जावइ दाइ ।
राजकुंमर रलियामणो, कहो किणने न सुहाइ ? ॥१३॥

[चौपई]

तो राजा नइ बुद्धि-भंडार । सोम नाम मंत्री सुविचार ।
सावलिंगा नामइ तस जाणि । पुत्री जीव-पराण-समान ॥१४॥

[दूहा]

मधुर चालि लोचन मधुर, मधुर रूप मति मांण ।
मधुर बोल बोलइ मधुर, रीझइ रांणो राण ॥१५॥

हिव इक दिन प्रह सम हुवइ, सुंदर सदयकुमार ।
पिता-पाइं प्रणमइ जई, जुडियो जिहा दरबार ॥१६॥

[चौपई]

देखी नयणे सुत दिदार । महाराज मनि थयो विचार ।
पुत्र भणावी करूं सुजाण । विद्या विण नर पशू समाण ॥१७॥

१ १. 'सालिवाहन करइ तिहां राज' २. 'निसंक' ३. 'सुसक'
४. 'दिनदिन' ५. 'माणइ'

(श्लोक)

[1] प्रथमे वयसि ना धीतं, द्वितीये नार्जितं धनं ।
तृतीये नार्जितो धर्मः, चतुर्थे किं करिष्यति ? ॥१८॥

(दूहा)

सूरवीर अति साहसी, रूपवंत दातार ।
विद्या विण विलखइ वदन, जिम प्रिय [2]मन विण नारि ॥१९॥

सहु सज्जण सहु आपणा, सगनइ ही सनमान ।
[3]एकणि विद्या-तणइ वसि, धरम धरा धन ध्यान ॥२०॥

(उक्तं च)

[4]विद्या धेणूं जिहा नरां, किस्यो अगूरो त्याह ? ।
[5]खिण दूझइ खिण दूझपी, विमूकसी मूझाह ॥२१॥

(चोपई)

इम जांणि महाराज ति वार, ओझो तेडाव्यो मतिसार ।
भणिवा घाल्यो तिण लेसाल, सीखइ कला सकल सुकमाल ॥२२॥

हिव इक दिन मंत्रीसर सोम, देखि सुना उल्लहसीयो रोम ।
ए गति मति रूप तोहि ज मार, जो जांणइ कपुं सास्त्र विचार ॥२३॥

रूपवंत नइ गावइ गीत, इक वल्लभ नइ हुवइ सुविनीत ।
इक विद्यानइ न करइ मान, चतुर मनइ मानइ राजान ॥२४॥

---

१ माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
सभा मध्ये न शोभन्ते हंस मध्ये बको यथा ॥

२ 'ज्युं त्रिय विग भरतार' ३. 'एकेण विद्या बाहिरा' 'नरदी से जिय स्वान ।'

४. 'विद्याहीणा' ५. 'मुक्हीन विसूरति, जो वीसइ मबरोह'

अेक सोनूं नइ वलि होई सुगंध, सीह अनइ पाखर संबंध ।
अेक सुता नइ सास्त्र-सुजाण, तो वाधइ अधिको विन्नाण ॥२५॥
इम जांणी [1]ओझो मतिसार, तेडाव्यो मुंहतइ तिण वार ।
आसण वैसण आपि उदार, वचन कहइ करि निज आचार ॥२६॥

(दूहा)

कर जोडी मुंहतो कहइः "सुणि, ओझा ! सुविचार ।
एह भणावो अम्ह तणी, पुत्री रति अणुहार ॥२७॥

भणइ घणा लेसालीया, ओझा तुम्ह लेसाल ।
तिहा-थी ए मुक्त राखवी, गुपतपणइ ए बाल" ॥२८॥

हरखइ हाकारो भणइ, ओझो धरि अधिकार ।
जिम आग्यो तिम पाठवुं, रंगइ राजकुमारि ॥२९॥

(चोपई)

हिव सुभ लगन मुहूरति धरी, भणिवा घाती सा कुंअरी ।
छांनइ तिणि ओझा नइ पासि, दिन प्रति करइ कला-अभ्यास ॥३०॥
तिणि ओझानइ अति अभिराम, गृह पासइ इक छइ आराम ।
वृक्ष अनेक अछइ जेहमइं, जिण दीठा दिन सुख मां गमइं ॥३१॥
जाई जूही मुचकुंद सकुंद, पुहकरणी-जल-मइं अरविंद ।
वोलसिरी पसरो चहुं ओर, मदोन्मत्त नाचइ जिहां मोर ॥३२॥
मालती तरु महकइ [2]महुकार, [3]गूं गूं सवद करइ गुंजार ।
खिण वईसइ, खिण ऊडी जाइ, [4]रति वाछिक जिम आतुर थाय॥३४
नालिकेरी जंमीरी द्राख, [5]लूपी लूं वि रही जिहां साख ।
कोईल टहुकइ अंब संयोग, [6]जिम-नव-गोय करइ प्रथम संयोग ।

१. 'छेडो' २ ,'सहकार'३, 'खटपद गुंगुं करइ गुंजार' ४. 'रीति वंछति' ५, 'लूंवि रहिया जिहां साख' ६. 'जिम कामणी करइ प्रथम संयोग' ।

शालि-खेत्र तिण बाग-मझारि, [1]ओझा आरोगइ सुविचार ।
शालि तणी रखवाली भणी, वारी मांडी [2]जण-जण तणी ॥३५॥

(दूहा)

लेसाल्याँ-सिरि [3]वड थयो, [4]भणतइ राजकुमार ।
पाटी देई अवरां प्रति, सगलो कहइ विचार ॥३६॥

हिव यौवन-वय आवीयो, सदयवच्छ सुविचार ।
अंग अंग प्रति उल्लहसइ, [5]कज्ज दरसण दिनकार ॥३७॥

अवरहिं गति मति पिण अवर, अवर रूप गुण ग्रोर ।
आवो वय यौवन अवर, [6]जाणि कि छइ सवि ठोर ॥३८॥

मांन दान महीयल महत, गरूअ वांन गुण ग्यान ।
माया जोबनि आवतां, ए पांचे परधांन ॥३९॥

वय जोवन अरू निपुण-पण, घरि धण विनय अथाह ।
ए च्यारे तउ पामीयइ, जउ तूसइ जगनाह ॥४०॥

[7]गति मति छति गुण-गण निपुण, राव तणइ परभाव ।
ओझो पणि अधिकउ गिणइ, दिन दिन दोठो दाव ॥४१॥

(चोपई)

इक दिन पूछइ ओझा भणी,कुंवर वात तिणि कुंवरी तणी ।
"लेसाल्या सहु बाहरि भणइ, मांहि भणइ कहु तुम्ह तणइ" ॥४२॥

कहइ ओझोः "सुणि सदयकुमार, जे छइ माहरइ गेह-मझारि ।
अे पुत्री साम मनोश्वर तणी,सावंलिंगा संज्यम तिणि भणी ॥४३॥

राजकुंमर देखइ नही तिणइ,ते छइ अंधी, मांहि ज भणइ ।"
इम कहिनइ भाख्यो सहु मर्म्म, बीजो वधुंही न भाख्यो मर्म्म ॥४४॥

---

१. 'ओझा आरोगण सुख सार' २. 'चेलातणी' ३. 'वट' ४. 'भणतो' ५. 'मदन महा मसराल' ६. 'जाणिकि सेस न ठारे' ७. 'घरि धव विज्जू थयाह' कडी ४२ केटलीक प्रति० मां नथी ।

कुमरी मनि पणि अलजो थयो, सदयकुमर-नइ देखण तणो।
गुरुजी-नइ पूछइ सा इसइ, "कुमर वहु नावइ इहाँ किसइ ? ॥४५॥

ओझो कहइ "सामलि कुंवरी, कोढी कुंवर देही अति बूरी।
कुंवरी न देखइ कोढी मुख, बाहरि तस राखुं तहु दुख" ॥४६॥

हिव इक दिन ओझो मतिसार, जात्रा लागो नयर मझारि।
जातइ भाख्यो सूदा भणी, सहुनइ दई पाटी आपणी ॥४७॥

पणि मत खोलउ ए ओरडी, आधो-नइ रहिवा दीज्यो ऊंडी।
तह त्ति कुमर ओझा नइ भणइ,पुरि पुहुतो ओझो तिणि खिणइ।

(दूहा)

तिणि अवसरि सूदा तिहाँ, सावलिगा-रो साद।
सुणि भणता, बोल्यो सदय, अधिक धरि उनमाद ॥४९॥

"हे अंधी ! खोटउं भणइ, खरउं न भाखइ कांइ ?।
फूटी चखि तुझ वारीलो, तिम ही ज गहीजे, मांहि" ॥५०॥

कहइ कुमरीः "सुणि कोढीया[1], खोटउं न कहुं वयु हि !।
पाटी-मइं लिखीउं अछइ, वाचूं छूं हूं त्युहि" ॥५१॥

सुणि सूदो संकित थयो, [2] "आखइ वात स्युं एह ?।
अंधी कहु, किम वाचसी [3]लिखीउं छइ जे लेह ?" ॥५२॥

[4]इम चिंतवि आकुल अधिक, करि करि ऊंचो वास।
दीठाँ निज चखि कुंवरनाँ, कांति वयण सुविलास ॥५३॥

---

१. 'खरो भणावो कोढिया, लिख्यो छइ जिममाहिं' २. 'भाखइ' ३. अक्षर लखिया गेह'
४. "इम चितवी खोली ओरडी, देखी कुंवरी रूप।
कुमरी देखइ कुमर नइ, अन्यो अन्य देखे स्वरूप ॥"

[1]हा हा रूप सुख, चखि हसइ, विकसित सुगति विलास ।
सदयकुमर संसय पडचउ, ईषत अधिक उल्हास ॥५४॥

[2]जे नर रूपइं आगला, ते नर निगुण न होई ।
केसर केरी पंखडी, सहि सुरंगी जोई ॥५५॥

(चोपई)

दीठी अपछर नइं अणुहार, सदयवच्छ कुंमरि तिणिवार ।
चित्र-लिखी जांणइ पूतली, रंग चंग चपकनी कली ॥५६॥

कइ रंभा इन्द्राणी जांणि, [3]कइ गोरी आई घरि मांणि ।
कइ रतिपति-रामा रति रूप, चितइ मनि ए किस्यूं सरूप? ॥५७॥

(दूहा)

सर वीणा, पद-तल कमल, वयण अमी विस्तार ।
चरितालां लोचन चतुर, नयण न खंडइ धार ॥५८॥

तनु सरली, पूरण रली, सकल रूप सुकमाल ।
कलप-वेलि कहीयइ तिको, एहि ज रूप रसाल ॥५९॥

इण सम संसारि त्रिया, कीनो नवि करतार ।
विगताला वयणइ वदइ, अमीय वयण सुविचार ॥६०॥

(चोपई)

अति सुंदर सोहइ आकार, अद्‌भुत तनु सुकुमाल उदार ।
सकुलीणी वाली सुविचार, कामवेलि कवली अणुहार ॥६१॥

फूल तूल मखतूल अमूल, कोमल स्यांमल केस समूल ।
चिहुर-[4]मूल वध्यो चांदलो, सेस सीस मणिमय त्रिदलो ॥६२॥

१-'हा हा रूप मुखचंद्र हंसे, विकसित युगत विलास । आहा रूप मवों मह्नइ'
२- केटलीक प्रति मा० नथी । ३. 'कइ गोरी अरधंग वखाणि' ४: (हड)

ओपइ भाल विशाल अनूप, नभ-दीपक टीली ससि रूप ।
अहि पुहुप अनु करि सुभवास, मधुकर आइ करइ आवास ॥६३॥
चकित चकित थकित मृगबाल, लोचन परि लोचन सुविशाल ।
निरमल नीकी जस नासिका, जांणि अखंडित दीपक शिखा ॥६४॥
माखण मुखमल परि सुकमाल, कंचण वरण सरीसा गाल ।
गुरु प्रिय वयण वयण सुमार, अमृत पूरण करण उदार ॥६५॥
चिहुं दिसि चलकइ कुंडल नूर, जाणि कि [1]सेवइ ससि नइ सूर ।
मधुर अधर वर चग सुरंग, हिंगलू नइ परवाली रंग ॥६६॥
दंत-पंति दीपइ ऊजली, कइ मोती कइ दाडिम कली।
नह केसरि आंगुलि पांखुरी, कर वे नालि सु वाहां खरी ॥६७॥
उरवर जोवन राजइ आप, पूरण परिघल तेज प्रताप ।
कुच दुंदभि जोडि वाजंति, कंचुकी दल-वादल छाजंति ॥६८॥
केसरि-लंक नितंब विशाल, केलि-गरभ जघा सूकमाल ।
रकत कमल पल्लव परि पाइ, अति कोमल सुचि रंग सुहाइ ॥६९॥
[3]मयमत्ती उनमत गज गेलि, चालि हरावइ हंसां ढेलि ।
ठमकि ठमकि रिमझिम पय ठवइ, वेखो तस वसि कुंण नवि हवइ ?७०

(दूहा)

मानिनी मोहन-वेलडी, मुखि मलकइ महकार ।
दंतश्रेणी दीपइ तिमइ, चपला-को चमकार ॥७१॥
गिरुआ गुण-गण तिणि निपुण, संकेतइ संचारि ।
चतुराई घरि चूंपस्यूं, कीधी ए किरतार ; ॥७२॥

(दूहा-सोरठीया)

रमणी सा संसारि, जस त्रिहुं भुवन ओपम नहीं ।
अवला अवरि विचारि, कहीयइ निच्चइ कवीयण ॥७३॥

---

१. 'वसइ' २. 'करकज' ३. 'मयमती हाथिगोनी चालि, हालि'

(चापई)

अद्‌भुत रूप अनुपम गात, इणिस्युं सुख बोलइ दिन राति ।
देखिदखि तस रूप विलास, कु मरो पणि फिर देखइ तास ॥७४॥

(दूहा)

नयण-वाँण नारी तणे, सदयवच्छ सुकुमाल ।
वीध्यो अति व्याकुल अधिक, तेह थयो असराल ॥७५॥

गाहा-रस कवियण वयण, मधुर बाल सलाव ।
हाव भाव हरिणाँखीयाँ, कमु न हरइ मन भाव ? ॥७६॥

उर लागा अति आकरा, नयण वाँण अणीयाल ।
नयण निमेख लीये नही, मगन थयो महिपाल ॥७७॥

ताँ लज्जा ताँ सूरपण, ताँ विद्या ताँ माम ।
नयण-बाण नारी तणा, होयइ न लग्गा जाम ॥७८॥

सज्जण दुज्जण सुधिकरण, प्रथम उपावण प्रीत ।
सुखकारण संसार सहु, नयण-ह केरी रीति ॥७९॥

(दूहा-गाहा)

अण जांणीयाण संगो, नयण कुव्वति धरति बहु पिम्मो ।
लग्गा कह विन फुट्टइ, अलख गई परम सा भणीया ॥८०॥

पुव्वि करेइ पिम्मं, पच्छा पुण गिन्ह ए मणो तस्स ।
सज्जण जण सुहजणण, चक्खु परम वसीगरण ॥८१॥

(दूहा)

नयण पदारथ नयन रस, नयणे नयण मिलत ।
अणजाण्याँ-स्यूं प्रीतडी, पहिलाँ नयण करत ॥८२॥

नयणाँ सोइ सराहीये, जिण नयण-में लाज ।
बड़े भये अरु विख भरे, कहो सजन, किण काज ? ॥८३॥

सयण ठगारे ठगी गई, दे गइ चोट अचूक ।
वहोत भांति ओखद कीए, मिले न दोउ टूक ॥८४॥

नयन नयन पें जात है, नयन नयन-की हेत ।
नयन नयन की वात है, नयन नयन कह देत ॥८५॥

नैंनां कह्यो नैंनां सुएयां, उत्तर दीयो नैन ।
नयन नयन सूं मिल गए, कहे कोमूं वयण ? ॥८६॥

उतावला न अलूभीइ, सनैः सनैः सब होय ।
सदेव वाडी रुखडाँ, सफल फलंतां जोय ॥८७॥

नयणाँ केरी प्रीतडी, बूझे वीरला कोई ।
जे सुख नयणे पाईइ, ते सुख सेज न होई ॥८८॥

सज्जन दुर्जन सज्जन करणं, प्रथम उपजावण प्रीति ।
सुखकारण संसार सहू, नयणां केरी नीति ॥८९॥

नयण मिलतां मन मिले, मन मिले वयण मेलत ।
वयण मिलंतां कर मिले, इम काया गढ भेलंत ॥९०॥

जोर रखवाला पंच जण, समदां जेहा सयण ।
कायागढ़ तोहि मिले, जो भेदे समये नयण ॥९१॥

नयण समो वेरी नीको, प्रयक्ष लागे घ्याय ।
आग पराइआं तणी, आप अग लगाय ॥९२॥

नयण वाण जिणकुं लगे, ओखद-मून न तांह ।
ससक ससक मरी मरी जीवे, उद्धत कराह कराह ॥९३॥

नयण बाण जिणकुं लगे, कीधो ओखद तांह ।
कुच टको पर पेटी भुज, अधर-पान पग बांह ।९४॥

नयण मिलंतइ मन मिलइ, मन मिलि वयण मिलंति ।
वयण मिल्यइ सहु संपजइ, कारिज सिद्धि चढ़ंति ॥९५॥

(चोपई)

कुंमर कहइ : "इम घरीय उमेद, इतरा दिन नवि लाधो भेद।
जीवन विण योवन सुविलास, आज सफल मुझ थया सु प्रकाश ॥९६॥

(दूहा)

अतरा दिन ओझा मुझइ, भोलगो भोलइ भाव ।
हिय मे तुझ बोलण तणी, ढोल पलक न खमाय ॥९७॥

धन माणस तेही ज धरा, सहुकवि दइन सु-साखि ।
चाहि करइ तिण-मुं चतुर, हिसि बोलइ हित दाखि ॥९८॥

हाम राम मासा मुरारि, सयणां तणो सभाव ।
बोलण हसण धुन छज्जही, जांणे मूरिख राव ॥९९॥

तन-विलसण मन-उल्हसण, वयण सयण सम वाणि ।
चख-निरखग धन विद्रवण, मानव-भव सुप्रमांणि ॥१००॥

सयण सरूप सोहामणो, मेला विण किणि ज्ञान ? ।
कायइ विण भेलइ कियइ, जांणे चोली पांन ॥१०१॥

हास भाम नही जास मुखि, गया जंम्मारो त्यांह ।
जांण कि महकी माल्लती, सूना जंगल-मांहि ! ॥१०२॥

विरस-स्यूं नही जस विरस, चाहक-स्यूं नही चाहि ।
गहिला योवन-नी परि, गयो जम्मारा त्यांह ॥१०३॥

पालइ निनु अति प्रेम रस, आंखि वयण अदीण ।
अवसरि मेलो अप्पही, ते साचा सुकुलीण" ॥१०४॥

थयण नयण सयणह तणे, इंगित नइ आकारि ।
कुंमरी ज्यांण्यउ कुंवरनउ, चित थयु सुविकारो ॥१०५॥

(चोपई)

वार-वार मन कुंवर विचार, कुमरी जांण्यो एस विकार ।
कुमर चित आवइ जेतलइ, सांम्हो तन कुमरी मोकलइ ॥१०६॥

(दूहा)

'आउ' नहीं आदर नही, नेह-हीण निरखंत ।
तिण दिसि कदे न जाईये, जा कंचण वरसंत ॥१०७॥

आउ कहे आदर दीये, आसण वेसण सार ।
उठि मिले मन मेलिनइं, तिहां जाईये सो वार ॥१०८॥

नयण नयण मिलिया नि हसि, पूठे मन परधांन ।
नयण नयण मन मिल्यां, सयण थया सुविहांण ॥१०९॥

(चोपई)

निरख्यो कुंअर कुंअरी नयण, मोहाणा मनि जाग्यो मयण ।
पल पल देखइ नयन पसारि, खिण विहसइ खिण बिलखी नारि ॥११०॥

आलस मोडइ भांजइ अंग, मरट धरइ लेवा मन द्रंग ।
खिण नीसास करे ऊससे, कांमदेव जागत कसमसे ॥१११॥

धांम चरण अंगूठा नखे, खिणि नीचो जोइ भूमि लिखे ।
कुमर-नि जरि साम्हो ते देखि, संभालइ निज चीर विशेषि ॥११२॥

प्रेम प्रकास करइ मनि रली, कुमरी तस विरहइ आकुली ।
कुमरइ दीठो तस आकारि, धनि धनि ए नारी संसारि ॥११३॥

आतुर हुवइ बोलइ अकुलाइ, कुंअर-वतइ खिणि नवि रहिवाइ ।
प्रीति नीति मन धरि आपणी, गाहा रस बोलइ ते गुणी ॥११४॥

(गाहा)

विण दीहे ग्रह भणायं, विण महुरे होइ ग्रमीय सारिच्छं ।
रे कव्व-रेण-महियं, ग्रह पुंवुं मो सही देहि ॥११५॥

[सावलिंगा वाक्यं] (दूहा)

ग्रमीय-निवासो ग्रहरि सुणि, गुण ग्रास्सथ सम जास ।
चख-मिमल मन विहलपण, तिण जगि हुवइ परगास ॥११६॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

पत्थर विणाए घसीयं, विण गंधेण सीतलं होइ ।
कान्हा मात्र सहितं, सखो मो चंदनं देहि ॥११७॥

[सावलिंगा वाक्यं]

चंदन चतुर विचारि लइ, चतुरंगां चतुरंग ।
चंदा विण चंदण दीयुं, पडहो वजाडइ ढ्रंग ॥११८॥

(चोपई)

इस बोलइ खोलइ मन वात, हसि घसि रसि जब बोलइ गात ।
ग्रालिंगन चुंबन जब करइ, ग्रोभो ग्रावइ तिणि ग्रवसरइ ॥११६॥

कुंवरइं गुरू दीठो ग्रावंत, मत जांणइ ग्रांणइ मन भ्रांति ।
हलफल करि ग्रावइ घर-बार, मूंकत मनवि लहइ लगार॥१२०॥

(दूहा)

माणा-खडहड खग-झड, वाल्हां-तणा विछोह ।
एतां वातां जे सहइ, तिण-रा हियडा लोह ॥१२१॥

रेहा नेहा मन-तणा, प्रिय तिय नयण सुहाउ ।
ए छूटंतां दोहिला, जइ सिरि जाइ तो जाउ ॥१२२॥

(चोपई)

सदयवच्छ व्याकुल अति घणूं, हिव वरण फिरीयउ मुख तणउ ।
तिण अवसरि ओभइ मतिसार, दीठा कुमर तणा आकार ॥१२३॥

ओभे ते दीठी कुंअरी, सदयवच्छ विरह करि भरी ।
घास भास दीठो तस चेत, ओभइ जांण्यउ विगुठो वेत ॥१२४॥

यतः

आकारैरिंगितैर्गत्या, चेष्टया भाषणेन च ।
नेत्र वक्त्र-विकारेण, ज्ञायतेऽन्तर्गतं मनः ॥१२५॥

(दोहा)

ओभइ सगलो अटकल्यो, मनमां विहुं-रो मेल ।
मुहि क्युं ही भाख्यो नही, एह विधाता खेल ॥१२६॥

गिरूआ सहजइ गुण करइ, जो अवगुण लख होइ ।
सांगी वांको ही लखइ, मरम न छेदइ तोहि ॥१२७॥

(चोपई)

ओभे मरम विहुनो लह्यो, तो पणि मुखि क्युं ही नवि कह्यो ।
सावलिग नो थयो वियोग, सदयवच्छ[1] मन हूवइ शोग ॥१२८॥

आसण बेसण पांन फूलेल, मूक्यां काम-कतूहल वेलि ।
न करइ क्युं ही बीजूं कांम, जप-माला फेरइ तस नाम ॥१२९॥

(दूहा)

खातां पीता खेलतां, क्युं ही तृपति न थाइ ।
सदयवच्छ सावलिगा-तणो, खिण विरहो न खमाइ ॥१३०॥

---

१. 'भवया सवि भोग'

भणण गुणण भोजन भगति, हास भास हित हाँम ।
सदयवच्छ नवि संभरइ, इक निस-दिन तस नांम ॥१३१॥

सौकि तणो संगम सुणी, नीद पुरातन नारि ।
निमख लगइ ही निस भरइ, भोटइ नही भरतार ॥११२॥

यतः

एक द्रव्याभिभापित्वं, परमं वैरि-कारणं ।
विशेषेण सपत्नीनां, भापाया सरलता कुतः ?॥१३३॥

(चोपई)

चटा जिके भणता चट शालि, एकेकणि रखवाली शालि ।
श्रोभइ कुमरी-नइ दीयो आदेस,राखण तिण वनि कीयो प्रवेश १३४

ओभो भाखइ सूदा भणी, "कुमर ! आज वारी तुम्ह-तणी" ।
मांन्यो कुंमरइ वचन ज तेह, अंतरगति थयो अंदेह ॥१३५॥

(दूहा)

आज किहिनइ स्युं हतो, रखवाला नो हेउ ।
करतां एम विचारतां, कांइ धरइ नही चेत ॥१३६॥

हूं उणिरौं उवां माहरो, साद सुणंता सार ।
इतरो हो सुख अम्ह-तणो, सांख्यो नही करतार ॥१३७॥

नयण रहो, मन ही रहो, रहो सुवयण विचारि ।
सयण रहइ जिण दिसि तिका, वांइ खोस्यइ करतार ?॥१३८॥

(चोपई)

मन दृढ़ करि पुहुतो मतिमंत. तिण वनि तिहाँ सुणिज्यो विरतंत।
तिणिखिणि तिहाँ जाइ ऊभो रहइ, तिणिखिणि वयणसयण सर दहइ ॥१३६॥

(दूहा)

कइ कोइल कुहका करइ, कइ वंशी वीणानाद।
सुणि सूदो संकित थयो, अनि चित-माँ उनमाद ॥१४०॥

(चोपई)

चतुर चूंप पेखइ चिहु ओर, चातक जिम पेखइ घनघोर।
तिहाँ-थो ते आयो सँचरइ, सा दीठो चंपक-आंतरइ ॥१४१॥

(दूहा)

न्याँनी नयनाँ सारिखो, नहीं कोई संसारि।
विकसइ प्रिय-जन देखिनइ, सो वरसे ही सार ॥१४२॥

विहु आँणइ विहु मेलवइ, विहु मंडइ उपचार।
अलगो ही नैडो करइ, ए विधि-तणउ विचार ॥१४३॥

तन मन जीवन दिन सफल, आज कीया करतार।
वीछडीया साजण मिल्या, पुंहुतइ पुन्य प्रकार ॥१४४॥

(चोपई)

कुंमरी पिण चिता थी घणी, हुँती निज प्रिया मिलिवा तणी।
ते आँणी मेल्यो जगदीस, गई आरति, पूगी सुजगीस ॥१४५॥

प्रिय दिट्ठो भर प्रेम प्रकास, अंगि अंगि वाध्यो उल्हास ।
रूंकट कंचु अति उल्हसइ, प्रिय संगति हुई तिण हसइ ॥१४६॥

(गाहा)

पुर पट्टणे निवासं, पंडिय पासं च निश्चला रिद्धि ।
तरुणी नयण विलासं, पामिज्जइ पुन्न-रेहाइ ॥१४७॥

(दूहा)

जोराबरि लीधो हुंतो, विरह मदन निवास ।
फिर मदनइ पते पुरलीयो, ए विधि-नो सुविलास ॥१४८॥

वेउ मन मिलिया वहसि, साँई आई दीध ।
घण दिवसो विरहो हुंतो, नयणे तृपति न कीध ॥१४९॥

(चोपई)

अति सुंदर मदिर आराम, निपुण नाह वामा अभिराम[1]।
देखि देखि एकंतइ ठाम, कहु किणनो नवि जागइ काम ? ॥१५०॥

यतः

दृढ़-कच्छा कर-वरसणा, बोलँता मूंह मिट्ठ ।
रण सूरा जगि वल्लहा, ते मइं विरला दिट्ठ ! ॥१५१॥

(चोपई)

बिरह-चित्त हुंती ते गई, कामिनी पणि कांम वसि थई ।
वंक नयण मुखि वंका नयण,इणिअहिनाणि [1]जाँणि मयण ॥१५२॥

१, 'जागे'

कुंमरइ ताव तिणि कुंमरी तणो, कर पकडयो मनि ऊलट घणो।
दीण मधुर वाला दाखवइ, मुखि सोहग अमृत रस स्रवइ ॥१५३॥

मन आनंदि कीयो वसि थाय, थयो अंगि उनमाद अमाप।
स्परशलिंगन चुंबन सार, बंहि-रति सात करइ तिणवार ॥१५४॥

(दूहा)

"सावलिंगा !" सूदो कहइ, "एह वयण अवधारि।
ए अवसर आराम ए सरुन करा सुविचार ॥१५५॥

(गाहा)

जच्छ विजलं न छाया, छाया जलं न सीतलं होई।
छाया जल-मजुला, ए सजोगो दुल्लहा होई" ॥१५६॥

[सावलिंगा वाक्यं]

नयण चमक्कयो वयण रस, सगुणां एम सुहाइ।
'नाउं अज्जाणां-ह-स्यूं', चम्मो चम्म पसाइ ॥१५७॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

अंब पक्के बहु भांति, कि टूक इक खाइये।
थाडी वन-फल होइ, तो तोडि चखाइये।

गागर पांणी होइ, तो पंथी पाईये।
परिहां, रख्या कहि कहो होइ, मरेई जाईये ॥१५८॥

१: 'मुरस-हदि प्रीतडी चाम्यो चाम पसाइ'

सो जीवन सु-पसाउलो, सो तन धन गुण-ग्राम ।
पर-काजे पूरा करे, श्रीन तणो तस नाम" ॥१५६॥

[कुमरी वाक्यं]

"लूखो सूखो खाई-नइ, आधी काढइ ऊख ।
काची कली न तोडीयइ, जो लागइ लख भूख" ॥१६०॥

तिणि खिणि वायु-तणइ वसइ, ऊड्यो कुमरी-चीर ।
सूदश्रो तस तन देखिनइ, आतुर थयो अधीर ॥१६१॥

वाये ऊडइ पंगुरण, कुंमर चलीयो चित्त ।
प्रथम राति वाचा तिणंइ, सदयवच्छ-स्यूं दत्त ॥१६२॥

(चौपई)

शीतल जल चंपक-सुवास । छाया सेज कुसुम सुविलास ।
पोढया बेउं प्रेम पियास । उर मेली अधिको उल्हास ॥१६३

श्रोभे चटडा मेल्हया चारि । लेवा तिहां बेऊंनी सार ।
जोई तिहां खिण इक नवि रहइ । पाछा आइ ओभा-नइं कहइ ॥१६

(सेसालीया वाक्यं)

"गुरुजी ! उइ सूश्रो उवा सूई । कुसुम सेज पाथरे सूइ ।
प्रहरे प्रहर बिलंबीया । सागरे खालि खनि सूईय ॥१६५॥

(दूहा)

सांझ समइ जाग्या सही, अंतरगति एकलास ।
बोल्ह्डतां बोलइ वयण, सावलिंग सु-विलास ॥१६६॥

'सूदा !' [सावलिंगा कहइ], 'एह' ज अधिक सनेह ।
राखो भाखो मत किहां, दाखो कदहि न छेह ॥१६७॥

ए चंपक आराम ए, वलि मन-मेलो एह ।
जिहां तिहां चीत धारिनइ, धरिज्यो अधिक सनेह ॥१६८॥

(चोपई)

स सनेही आया पटसाल । ओझो चित संकयो ततकाल ।
पूछइ ओझो कुमरी प्रतइ । ऊरी मई आपुण-रे मनइ ॥१६६॥

(श्लोक)

पद्म-पत्री विसालाक्षी, कर्णे सोभंति कुंडला ।
येन कार्ये वने गता, सकांम सफलं कृतं ? ॥१७०॥

[सावलिंगा वाक्यं]

"अजेस कुंमर अयांणो, कर ग्रहि लीडंति छंडिया सांमा ।
त्रिया एह सभायो, ना ना करता वाधए प्रेमो ॥१७१॥

(चोपई)

सांझ समइ आया निज गेह । विहुआं विरह त्रियाकुल देह ।
सावलिंगा भोजाई पासि । वईठी अवर सखी सुखी वास ॥१७२॥

निज भत्रीजो लेई उछंग । खेलावइ अधिकइ मनरंगि ।
खिणमइ लावइ अधर पियास । मिडइ कांम जणावइ तास ॥१७३॥

आंचल मुखि आपइ उल्हसइ । मुख-स्यूं मुख मेलीनइ हसइ ।
नणंद प्रति भोजाई कहइ । "लाज सहु तुम्ह अलगी रहइ ॥१७४॥

(गाहा)

वाला मुख म लाइस वालं, अपजस वज्जसी नयर मझालं ।
वालो लहसी अवर सवादं, ते वालो तजसी खीर-सवादं ॥१७५॥

(चोपई)

"किस्यूं करो ? रहो सांसतां, दूरि करो बालक-मुख हूं ॥
पूरण लख्यण थयां तुम्ह-तणां,' वयण कहइ कुमरी आपणां ॥१७६॥

(चोपई)

[सावलिंगा वाक्यं]

(दूहा)

धण जोवण भींग्रल छिले, विरह अंगि न समाइ ।
सखी सलज्जी गोठडी, कहता किणहि न जाइ ॥१७७॥

सखी सलल्जी गोठडी, नीलज नयण निहीर ।
तुम्ह ज्यूं अम्ह पयोहरां, कदे वहेसी खीर ?" ॥१७८॥

(चोपई)

तिण अवसर तस बंधव सार । सिंह आवइ तिण महल मझारि ।
सावलिंगा जाइ अलगी रहइ । तव भाभी सहु वारता कहइ ॥१७९॥

"सुणि पीतम ! बाई तुम्ह तणी । कामवंती मनि इच्छा घणी ।
जोवन विरहइ अे व्याकुली । परणावो पूरो मन रली" ॥१८०॥

सिंह सुणि मनि थयो विचार । ब्राह्मण इक तेड्यो तिण वार ।
सात दिने साहो थापीयो । पुहपावती पुरि कागल दीयो ॥१८१॥

सावलिंगा परणावण काजि । सिंहइ सगला कीया समाज ।
उच्छव मंडया अधिक उछाह । निस दिन कुमर निहालइ राह ॥१८२

खातां पीतां भोग विलास । रलीयाली तरुणी रंग रासि ।
हय गय रथ सोहण परिवार । राय न करइ सूदो तिण वार ॥१८३॥

(दूहा)

रजवट, घट, हय गय तणा, नव परणी वर-नारि ।
सूदो सावलिंगा विना, क्युं, नवि मांनइ सार ॥१८४॥

सगलइ, गज लाभइ सदा, खांन पान सनमांन ।
पिण, रेवा तिण हेवा नहीं, तिम तसु कुमर निदांन ॥१८५॥

मन वंको मन वावलो, चंचल चपल सुचार ।
पेसव मन जिहां रय करइ, ते गति अलस अपार ॥१८६॥

सो घर सो पुर नगर सो, ज्यासूं सयणा चार ।
जिण-सूं मन लागो रहइ, सो कोईक संसारि ॥१८७॥

सारीसो राचइ सदा, सारीसि सद भाई ।
सारीसा संगम विना, फल कच्चइ मन जाई ॥१८८॥

महीयल जण वहुला मिलइ, अद्भुत रूप उदार ।
मनगमता माणस विना, सूनो सहु ससार ॥१८९॥

आधइ दिन-प्रति सदय नृप, लुवध थको लेसाल ।
विण कुमरी व्यापइ विषम, विरहानल असराल ॥१९०

जिम चातक जलहर सदा, चाहइ चंद्र चकोर ।
कुंवर सुकुमरि न देखतो, ईपइ च्यारों ओर ॥१९१॥

ना घरि, नां पुर नारिस्युं, नवि नेसालइ नेह ।
विण तिणि खिर वेवइ नही, सूदो सुख-ची रेह ॥१९२॥

दीठो सुदय दयामणो, इक दिन ओझइ आप ।
मिसि करि सुदय दयामणो, एहवो करइ अलाप ॥१९३॥

[ओझा वचन]

"आज कालि नावइ इहां, सावलिगा पड़वाह ।
सात दिवसमां तेहनो, मंडाणो वीवाह ॥१९४॥

(चोपाई)

सुणि सूदो इम वयण विचार । आतुर मिलिवा थयो अपार ।
तिहां थी आयो वेस्या तणइ । धन आपि मांनइ अति घणइ ॥१९५

राजपुत्र आयो इम जांणि । आपइ आदर करइ प्रमोण ।
सवि शृंगार विछावइ सेज । हाव भाव-सूं मंडइ हेज ॥१९६॥

ततखिण बोलइ सुदय नरेस । "काम नही रतिनो, सुणि वेस !।
अवर काजि आया अम्ह आजि" । कहइ वेस्या:"फुरमावो राजि"।१९७

अरथ किस्यू आवेस्यइ पछइ, वात जणावो पुण ते अछइं ।
राजि तणि नवि आवइ कामि, जलि जावो गुण ते सुणि सांमि॥१९८

(दूहा)

ओ वाल्हो निय सयणो, ओ · बंधव अभिरांम ।
लाखीणो अवसर लहइ, आवइ आपुण कांम ॥१९९॥

यतः

अपसर चुक्कइ रस गयइ, आदर करइ अयांण ।
जे रिण गुण-विण वाहीयां, ते किम लग्गइ वाण ॥२००॥

(चोपई)

"तेह तणो मंडवो वीवाह । हुँ जाई न सकूं तिण राह ।
जनम जीव मुझ तो परमांण । देखूं जो ए कुमरि सुजांण" ॥२०१॥

वेस्या कहई हीयडो उल्हस्यो । "एह वातनो दोहिलो किस्यो ?।
[ति कहइ] वयण हीयइ निज धरो"। कुंमर कहइ, "ढील सी करो ?" ॥२०२॥

"कुंमर ! वेश करो स्त्री-तणो । आवइ तसू ऊलट घणो ।
वेस्या वे सार्वलिगा पासि । आवे बोलइ वचन विलास ॥२०३॥

(गाहा)

पायस रूद्रा रयणी, पिय परदेस विम्महा पंथो ।
पर पुरुषांणइ नेहं, पामिज्जइ पुन्न-रेहाइं ॥२०४॥

(चोपई)

सार्वलिगा सुणीयो तस वयण । फिरि वोली वंकी करि नयण ।
मनि भावइ पणि नवि जांणवइ । तेहवो वयण कहइ ते हवइ ॥२०५॥

(गाहा),

पिय-मिलणी कुल-छनणी, अपजस-पडहो, वज्जमी नयरे।
सरसव-पमाण सुखं, दुखं तह होइ मेरु-सारिच्छं ॥२०६॥

(चोपई)

मुह गारी वेस्या नइ तिणइ। पाछी फिर आई तिण खिणइ।
फिरतो बोल्यो सदयकुमार। हरखि निरखि ससनेही नारि॥२०७॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

(गाहा)

नव सत्ता ससीवयणी। हार आहार वाहणा नयणी।
जलचर मग्गा गमणी। सा सुंदरि कच्छ पामेसि ? ॥२०८॥

(दूहा)

जाण्यो ए तो वल्लहो, जिणि-सूं कीधो बोल।
निरखि मुख कि कहइ माननी, एक ज वयण अमोल ॥२०९॥

नगर मज्झे सालूरं, सगति रूप पाडिया विंवं।
[........ ....] ॥२१०॥

[सावलिंगावचन]

(दूहा),

"देहरू नगरी-मंही अछइ, जस सालूम्ह नांम।
सगति रूप देवी जिहां, तिहां पामिसि ते ठाम" ॥२११॥

सुणि वांणी हरखित थयो, करि संकेत सुकत्य।
वेम देई वेस्या तणो, आयो निज घरि जत्थ ॥२१२॥

मोरां जिम मेहां तणी, ईपइ वाट ऊछाह।
राह तिमइ जोवत रहइ, कदि आवइ दिन ताह ॥२१३॥

(चोपई)

दिन जाणी आणी उल्हास । आज हुस्यइ कुमरी मुझ पासि ।
आवइ ठाँमि इक चूंप घणी । करइ सझाइ अमर्ना तणी ॥२१४॥

(दूहा)

भाफ विजयादिक अमल, चूरण करि खखचोल ।
सदयकुमर बैठो जई, देवल अधिकइ लोल ॥२१५॥

(चोपई)

लगन दिवस आइ तस जान । सावलिगा परणी सुभ वांन ।
सयण भुवण ति नारी नइ नाह । आया अंगि अधिक उछाह ॥२१६॥

चूवा चंदन मृगमद घनसार । सू धा पहिरया तन सुखकार ।
सखरो सीसा अधिक सुचंग । परिमल कुसुम सुवास पलिंग ॥२१७॥

तिण उपरि बैठो जई आप । मदनराय केरी सिर छाप ।
जाग्यो मयण दीठी प्रिय नयण । कहइ,"अरहा इम आवो इथ अण"२।

(दूहा)

नाहइ तिण नारी-तणइ, कर करीयो उरंसार ।
सावलिगा तिण अवसरइं, सको चित्त मझारि ॥२१६॥

[सावलिगा स्वगत वचन]

"बालपणइ बोल्यो हुतो, वयण सुदयन्ूं सार ।
ते जो निर्वहूं नही, तो मुझ नइ धिक्कार ! ॥२२०॥

सुंदर निपुण सरूप सुभ, नितु मद नेह निधाँन ।
निज वाचा पालइ नही, ते माँणस के हुइ ग्यांन ॥२२१।

'जावो धन घरणी घरम, गुण 'गाढिम मति प्रेम ।
'सति आ सति आवो सहू, पिण वाच म जाज्यो तेम ॥२२२॥

मुझ वाचा साची करु', संगति सदयकुमार ।"
इम चींतवि प्रीतम प्रतइ, वाचइ वचन विचार ॥२२३॥

(चंद्रायणा)

"अंव पका वहु भाँति, मरु'गी डालीयाँ ।
मेरे हीयडे हाथ न घालि, कि द्यु'गी गालीयाँ ।
गहिला मूढ अबूझ, अयाए कि वावला ।
परिहां, हु' मालरिए रखवाल, कि आँवा रावला ! ॥२२४॥

सुरिए वोल्यो सारथ सुतन, एहो वयरण म आखि ।
अम्ह अमोलिक अंव ए, लीधा जाँरगइ लाख" ॥२२५॥

(चंद्रायणा)

रहु मूघ ! अयाए, बात न अखीये ।
एणि समइ रस-रीति, कि प्रीति सु रक्खीये ।
बात न अखइ कोइ, किमा खासहू जरगा ? ॥
परिहाँ, कुरण रावल रखवाल, कि आँवो अम्ह तरगा ?"॥२२६॥

कहइ सावलिगा कांमिरणी, "आई युं ही ज इरण हीय ।
मैं आप्यो तिरण वचननो, सुरिए परमारथ प्रीय ॥२२७॥

(चोपई)

बालापरणे हु' रमती बाल । सगति-पूज करती प्रहकाल ।
देवी तूठी प्रेम प्रकार । "सु'दर वर पाँमिसि सुविचार ॥२२८॥

सुरिए कु'मरी ! तू' रति-अवसरइ । पहिली जात्र अम्हारी करे ।
जात्र विना जो करसि संभोग । पति मरिस्यइ पडिस्यइ घर सोग २२९

आवू' हूं तिरिए एहवी बात । सगति-तरगी मुझ करिवी जात्त ।
सेवक महइः "वेगा हुवइ । रंगरली रयरगी वालिवइ" ॥२३०॥

कुमरी कहइः "हिव डांस्यो काम । प्रह जाई करिस्यू प्रणांम ।
"नां हिवणाँ जावो ' कहइ नाह । सार्वलिगा ओठि लीधउ राह ॥२३१

(दूहा)

निज मंदिर सुंदर निपुण, नाह व्याह उच्छाह ।
तजि तृण जिम ए सहु सुरत, पाली बोल प्रवाह ॥२३२॥

आसा करि यूं ही रहइ, वहसि न पालइ बोल ।
पुहवी ते पापी प्रथम, मांणस कवड्डी-मोल ॥२३३॥

बोलइ थोडा बोल, विहचइ निरवाहइ घणा ।
ते मांणस-री मोल, लाखेही लाभइ नही ॥२३४॥

(चोपई)

ऊमगि मगि चालइ मयमत्ति । राति अंधारी अतिभय भ्रंति ।
चोर खापरो नइ कोडीयो । देखि कुंमर साहस मनि कीयो ॥२३५॥

बोली तिण अवसरि सा बाल । करि करि ऊंचा सगति विसाल ।
हाकां करि मुखि बोलइ हसइ, धूकल करि कूदइ घसमसइ ॥२३६॥

'मांगि, मांगि तूठी हूं माय ।' तिण खिण बे प्रणमइ तस पाय ।
"जो मांग्यो तूं आपइ दान । जीमण आपि मलीदो दान ॥२३७॥

(दूहा)

नक-मोती दीधो नवो, देवी रूपइ दाखि ।
भोजन करिज्यो भगतिसूं, मोल इयै-रो लाख ॥२३८॥

परघो कज्जल सावलो, परघो कुंकुंम-वन्न ।
चोरै ले पाछो दीयो, ए चिर मी नरत्तन्न ॥२३९॥

ढाहा जोअणे गुण निपुण, फडीयो निपुणै हत्थ ।
मोती हूं घण मोलनो, मिल्यो गुंजाहल सत्थ ॥२४०॥

(चोपई)

सोवन-नेउर निज पगनणो। देवी दीय तउ माहि घणो।
देवहरइ आई तिणवार। दीठो वैठो सुदयकुमार ॥२४१॥

पासि जाई ऊभी खिणभणी। बोलइ नही, थई वेला घणी।
कुमरी कर लीधो तस हाथि। तो पिण कुंमर न घालइ बाथ ॥२४२॥

(दूहा)

नवि बोलइ चालइ नही, न धरइ तिलभरि नेह।
'गुणि साहिब! [कुमरी कहइ], अजी किमूं अंदेह? २४३॥

भीम भुयंग भेदीयो, छलीयो किणहि छलाव।
घम टेरं घूमइ घणूं, ज्यूं तरवर बसि वाव ॥२४४॥

अहि खील्यो गारूड अधिक, नवि वाहइ विस झाट।
हाथ लाचि रहीयो हिवइ, सूदो केही माट? ॥ २४५॥

"सूदा! [सावलिगा कहइ], हिवइ पूरो हांम।
हूं आई हेजा लबी, किसी रीस विण कांम? ॥२४६॥

"सूदा! [सावलिगा कहइ], समरइ केही रीस?।
चूक पडयो बगसो चतुर, विलसो सुख सुजगीस ॥२४७॥

तजि निज मंदिर नाहलो, सखर तुलाई सेज।
तुझ कारणि आई प्रिया, जोवइ हिवइ सीजे ज ॥२४८॥

मुझ मुझ बेउ मंन तणी, अधिकी हुंती आस।
अवसर मूंकी आजनो, नाह! कांइ हुवइ निरास? ॥२४९॥

आज लगइ तुझ मुझ अछइ, परघल प्रीति अपार।
एक रुखो आदर भणी, आज जिस्यो अधिकार" ॥२५०॥

मेल किस्यो भूमयो कहयो, भांमिणि सेती भाउ।
बोलायो बोलइ नही, झखि झखि सहु जण जाउ ॥२५१॥

(दूहा)

म जाणसि वीसरीयं, तुह मुह-कमलं विदेस गमणंम्मि ।
सूनो भमइ करंको, जत्थ तुमं जीवियं तत्थ ॥२५२॥

जम्मंतरे न विहडइ, उत्तम महिलाए जं कियं पिम्मं ।
कालदी कण्ह-विरहे, अज्जवि कालं जलं वहइ ॥२५३॥

(दूहा)

नेह सुकुल नारी तणो, नवि विहडइ प्रिय दिट्ठ ।
ज्युं सूदा-सावलिंगा-तणो, जांणे रंग मजीठ ॥२५४॥

म जांणे प्रिय मेहणो, दूरि विदेस गयांह ।
विमणो वाधइ साजणां, ओछो होइ खलांह ॥२५५॥

जोगीसर जोगासणइ, मंत्री जिम आलोच ।
तिण परि सूदा ! ताहरो, आज पडयो सो सोच ॥२५६॥

आज निहोरा अति घणा, नवि लायइ सूदो नाम ।
घात न मंडइ कावली, करि लिखीयो चित्रांम ! ॥२५७॥

उंचो लेईनइ जोईयो, सूदा सुदय नरेस ।
जिणि उरि दोइ नारिंग फल, सो तूं कत्थ लहेसि ? ॥२५८॥

"सूदा ! [सावलिंगा कहइ], हवइ एवडो स्यो हठ ? ।
मोडी आई मांनिनी, तिण धरयो मन मठ ! ॥२५९॥

"सूदा ! [सावलिंगा कहइ], कुमर न जांणे कत्थ ।
जिणि कारणि मइं लाईया, छाती चंदन हत्थ ॥२६०॥

नीद्रइ कवण न छेतरया ?, जोवन कुण न विगुत्त ? ।
जो प्रिय भीडइं उरह-स्यूं, तोही सुवइ नचित ! ॥२६१॥

जिम सालूरां सरवरां, जिम धरती अरु मेह ।
चंपावरणा वल्लहां, इम पालीज्जइ नेह" ॥२६२॥

उर भीडइ चुंबन करइ, वलि वलि करइ विपास ।
सूदो अमलि सके लीयो, नारी थई निरास ॥२६३॥

बोलायो बोलइ नही, नयणे नीद निपट्ट ।
जाती ए गाहा लिखी, कुमरि मेल्हि कपट्ट ॥२६४॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], साची प्रति संसार ।
देसइ देव मिलावडो, पुहपा-नयर-मझारि !" ॥२६५॥

मुख नीसासा मूंकती, नयणे नीर प्रवाह ।
गाहा लिखी पाछी वली, मूंकी मन उच्छाह ॥२६६॥

(चोपई)

आई सावलिगा आवास । फीकि मनि थई अधिक उदास ।
प्रीय कहइ, "करि आया जाअ ? । विलखा किम दीसो ? कहो वात" ॥२६७॥

कुमरि कहइ, "पाली मइं वाच । तोही सगति न मानी साच ,
मूल नगर तुम्ह पुहपावतो । देवि कहइ मुझ तिथि तिहां हतो ॥२६८

देवल नवो करावो तिहां । मूरति करो सरीखी इहां ।
तिहां मानिसि यात्रा तुम्ह तणी । तब लगि मत भेटे तूं धणी ॥२६९

विलखी हूं तिणि सुणि वालंभ ! । दिन एहवा जायइं किम अंत ? ।
हिवइ हालो नगरी आंपणी । यात्र करां जिम देवो तणी" ॥२७०॥

भोजन भाते जीमी जांन । उपरि दीधां फोफल पान ।
भगति जुगति भल भूषण भेद । ले चाल्यो निज नगर उमेद ॥२७१॥

हिव चाल्यो ते सदयकुमार । अमल ऊतार हूओ तिणवार ।
नीद गई विकसी दुइ नेत । आलस मोडि थयो सावचेत ॥२७२॥

विकस्या कमल सुपरिमल वास । पोली दिसि पूरब सुप्रकास ।
तिणि खिणि मति विकसि पणि तास ।
'हा' मुझ मूक्यो तिणइ निरास ! ॥२७३॥

(दूहा)

पीपल पांन जु रुण्ण्या, निसि अंधारी लोई।
रहि रे हीयडा ! मुट्ठि करि, इहां न आवइ कोई ! ॥२७४॥

किहां नारी ? तूं किथि गयो ?, रहि हीया, म म झूरि।
पीड न जाणइ तांहरी, सहू निज कारिज सूर ॥२७५॥

करियल करियल उर आफरयो, वलि रस्याथनो नेह।
तिसो नेह नारी-तणो, झटकि दिखाडइ छेह ॥२७६॥

निज प्रिय मारइ हत्यसूं, अनाचार आचार।
नि-सनेही नारी-समो, सुणीयो नही संसार ॥२७७॥

नीची गति मति निरति रति, नीचइ-सोती नेह।
ऊंच तणो आदर नही, अचरिज त्रियनो एह ! ॥२७८

(यतः)

सीयां तीयां पांणीयां, इयां त्रिहुं एक सभाव।
ऊंचा ऊंचा परिहरइ, नीचां उपरि भाव ॥२७९॥

(दूहा)

रवि-चरीयं गह-चरीयं, तारा-चरीयं च राहु-चरीयं चं।
जाणंति बुद्धिमता, महिला-चरियं न जाणंति २८०॥

जल-मझे मच्छ पयं, आकासे पंखीयां पय-पंती।
महिलाए पहिय मग्गं, तिन्नवि लोए न दीसंति ॥१८१॥

(चंद्रायणा)

जांणकि रंग पतंग, को दिन दुइ च्यार हुइ।
पावस मास सु पूरन, वलहां ठारहइ।
पूरव प्रेम प्रवाह, कि वहतां ही वहइ।
परिहां, निश्चल नारी नेह, कदेही नां रहइ ! ॥२८२॥

मुखि कहइ 'तूं मुझ यार', अरु नहु प्यार हइ ।
जांणइ मुगधा लोग, किए सहु सार हइ ।
मन तन अवर, अनेरा सूं करइ ? ।
परिहां, नारी तणो सनेह, न को जन मन धरइ ॥२८३॥

मांडइ प्रीति अखंड, कि जांणइ साच हइ ।
आउंगी तुझ पासि विलास, कि मेरी वाच हइ ।
मेल्ही तास निरास, कि और स्यूं भोगवइ ।
परिहां, एकणि वार अपार, चरित ओय केलवइ ॥२८४॥

एक समि मइं आस, आस की पूरवइ ।
ताकूं दाखि सराप, कि आप सती हुवइ ।
खिणिक दोस, खिणि रोस, खिणिकि इकर्मां वहइ ।
परिहां, काती कुत्ती जेम, फिरती तिम रहइ ॥२८५॥

(दूहा)

जोहा मुखि जाती रहइ, नेह न धारइ चित्त ।
तल काठइ गल लेइ नइ, एहवउ नारी-चित्त ॥२८६॥

अणमिलतां आयी मिलइ, मिलतां धरइ जु मांन ।
ए गति नारी नी अछइ, सुणिज्यो चतुर सुजाण ॥२८७॥

तिय वेसास मत को करो, तियाँ किसकी-नाँहि ।
मुझ मूक्यो इहाँ विलवतो, रंग रली रस-मांहि ॥२८८॥

धिग तेहनइ धिग मुझनइ, धिग मन जनम धिक्कार ।
वाचा करि आइ नहीं, नीलज नारि निवकार ॥२८९॥

रोस भरी नइ उठीयो, जंपइ सदयकुमार ।
................, तिसो त्रियनो पियार ॥२९०॥

आयो तिहां ऊठिनइ, सदयकुमर निज गेह ।
पग लडथड भड घूमतो, नारी-स्यूं निस नेह ॥२९१॥

गलइ हार लागी रह्यो, नयणइ रंग तंबोल ।
कज्जल अहरे देखिनइ, बोलइ निज त्रीय बोल ॥२६२॥

"विण लग्गइ गलि हार, कि कंत किहाँ पावया ? ।
नयणे भख्या तंबोल, मुखि नहु भाविया ।
कज्जल काली रेह, कि दीसइ अहर-तले ॥
परिहाँ, जइ खाई जइ पर मांस, कि मूंढ म वांधी गले ! ॥२६३॥

(दूहा)

सुणि सूदो मनि संकीयो, ईपि सहूव आकार ।
अत-रंग आलोचिनइ, वाचइ वचन विचारि ॥२६४॥

'रहु रहु' 'मूंच' अयांण, कि हासा जि न करो ।
आपण जाघ उघार, लाजां नाँ मरो ।
बालक पट्टा चीर, कि पत्थर किम ताडीयइ ?
परिहा, गायइ गिल्या रतन्न, उदर क्युं फाडीयइ ? ॥२६५

[पुनः स्त्री वाक्यं]

"हमस्यूं छाँडि कि प्रीति, अनेरा-स्यूं करइ ।
हम हइं तुम्हचे दास, श्रोर जि न मनि धरइ ।
उहा हइ नेह अछेह, इहा नहु लेखीयइ ।
परिहा, रोटी मोटी कोर, पराई देखियइ' ॥२६६॥

(दूहा)

सुणि वाणी नारी तणी, बोल्यो सदयकुमार ।
दुख मन ए भूली गये, ठाँमि ठाँमि करतार ॥२६७॥

(चंद्रायणा)

सारग नेत सुचंग, काँम नहु श्रावीया ।
सोवन गयो निगंध, बास नह पावीया ।

नागरवेलि कीय निफल, सफल कीय ग्रांबिली।
परिहाँ, रांकां दीध रतन्न, विधाता बावली! ॥२९८॥

(दूहा)

कर भारी पांणी भरी, ग्रम्ह दांतण नइ सत्थ।
दासी लेइ आणी दीयइ, कुंग्रर-ह-केरइ हत्थ ॥२९९॥

कर बेवे भेला कीया, चलू करेवा चाह।
तेणि समइ नारी तणा, ग्रत्थर दीठ उछाह ॥३००॥

चख लगी तिण चाह-सूं, न लीयइ निमख-मेख।
"सूरति मूरति ग्रागलि सही, जिम भाविक सुविसेष ॥३०१॥

सावलिगा ग्राई सही, पाली पूरी प्रीति।
निरभागी जाण्यो नही, तिण ए ग्रख्यर नीति! ॥३०२॥

फाटि फाटि रे तूं फाँटि तूं, हीया! हिवइ मर हेसि।
उ देवलउ वा कांमिनी, वलि कत्थ लहेसि? ॥३०३॥

हीयडा! फूटि पसाव करि, केता दुख सहेसि?।
सावलिगा विरहि सगुण, जीवी काहु करेसि? ॥३०४॥

(गाहा)

रे हीय वंकि न लज्जसि, नहु जाणी जेण ग्रागयां सामा।
ग्रनह किं न कहिज्जइ, सो भूलो चंप लोवि तुम्ह ॥३०५॥

रे हीया! वज्जह घडीयं, ग्रहवा घडीयं खिवज्जु सारित्थं।
वलह-वियोग काले, किं न हुयं खंड खंडेण? ॥३०६॥

रे नयणां! तुम्ह धिग हूग्र, नवि लखी ग्राई नारि।
पेम उपायो पहिल थी, किण कारण विण कारि? ३०७॥

(दूहा)

करवतड़ा करतार, जो सिर दीजइ ताहरइ ।
तो तूं जाणइ सार, वेदन वोछड़ीयां-तणी ॥३१०॥

हसत वदन हे आलवी, हरखवंत हितकार ।
नवरंगी नारी सुणो, किहां पांमिय करतार ॥३११॥

चंदा-वयणी मृग-नयणि, वे पख-वंस-विसुद्ध ।
हंसि हंसि नेह ज दाखवइ, मेलि विधाता मुद्ध ॥३१२॥

बहु गुणवंती शशि-मुखी, रंगि रमे रस-लुद्ध ।
चंपक-वरणी अति चतुर, मेलि विधाता ! मुद्ध ॥३१३॥

बीन हुवइ कर देखि, वेदन अंगि न खमाइ ।
नीकालइ नीसास-मिसि, पिणि नवि आघो जाइ ॥३१४॥

एक दुखीआं वैरागीयां, जो नीसास न हुंति ।
हीयडो रन-तलाब ज्यूं, फुट्ट वि दहदिसि जंति ॥३१५॥

(चोपई)

नारी मालमु लोक परिवार, हय गय रथ पायक विण पार ।
चंदन चीर पटंबर वास, सूंघा वास सुवास विचार ॥३१६॥

माय ताय निज राज भूं काज, बंधव मित्र कुटंबह लाज ।
सहू मूकया वोर सेवइ वाग, कंचुक जिणि परि मूकइ नाग ॥३१७॥

नीकलीयो मूंकी नरदेव, सार्वलिगा-री करिवा सेव ।
कर धरि एक करवाल सहाय, प्रिया-नेह बीजो संगि थाइ ॥३१८॥

(चोपई)

इम कहिनइ आपु संचरइ, पुहपावती नयर दीठो नरइ ।
पुर बाहिरि सरवरनी पालि, सूतो देवल पहीय वियाल ॥३३७॥
.... , पंथोडा देवल सरण ॥३३८॥

(दूहा)

"कहा मुझ मंदिर मालीया, हय गयह सम हजार ।
मा हुँ ज सूतो एकलो, जोज्यो नेह विचार ॥३३९॥

सूरवीर साहस सवज, जस जस रस जग-मझि ।
नर ते पणि नेहइ निपट, विकल हुवइ विण-बुज्झि ॥३४०॥

गति मति छति सत महत गुण, दीपति सुन्दर देह ।
खिण खिण सगला खूटनइ, नारी—केरो नेह" ॥३४१॥

नीसासा मूकइ सवल, निसा विहावइ निट्ट ।
घर घण देखु नाह विण, घण विण नाह न दिट्ठ ॥१४२॥

विरहानल वेध्यो विहल, साल्यो कुंमर साल ।
विलवइ सूतो भूय विण, सदय थया विहवाल ॥३४३॥

सो कोवि नत्थी सयणो, जस्स कहिज्जंति हियय दुखखांइ ।
आवंति जंति कंठि, पुणो वितयेव तत्थेव ॥३४४॥

(दूहा)

केलि देलि मिलि करण, सगुणी यति ससनेह ।
रस-लूधी रमती रमणि, देहि विधाता तेह ॥३४५॥

सिरज्या किमि संसार-मइ, विण त्रिय-रसइ छयल्ल ।
रूप कला गुणनइ भनइ, कौं नवि कीधा वयल्ल ? ॥३४६॥

केता सुणि विह कूकूग्रा, सांमी करूं पुकार ।
मेलि केलि करती मुझनइ, नवल सुरंगी नारि ॥३४७॥

(चोपई)

इम अनेक तिहां करती विलाप, पुण्यवंत लागा किरि पाप ।
कसमस करि ऊगायो भाण, गई राति फूल्यो सुविहाण ॥३४८॥

ऊटयो सदयकुमार दुख घणउ, उमाहो पणि देखण-तणउ ।
करि दांतण कुरला ससि सार, तिहाँ थी आयो नगर-मझारि ।३४९।

गांम नांम सगलो पूछीयो, कुंभकार घरि डेरो लीयो ।
ततखिण गृह सार्वलिगा तणइ, चुणीयइ अंग रहण आपणइ ।३५०

लागइ तिहां सिलावट घणी, वनि जे अरथी रोजी तणी ।
सार्वलिगा नइ तस भरतार, चोपड खेलइ मेइलइ मझारि ॥३५१॥

फिरयो पुर-मांहि कुमर प्रभाति, देखण तणी न पूजइ धाति ।
कुमरी देखण अलजोयो घणो, कोध्यो वेस मजूरां-तणो ॥३५२॥

सेवे जिहां खेलइ नर नारि, लागइ जण जिण महल अपार ।
पूछि मजूरी लागो तेह, खेलत ग्रीय दीठी ससनेह ॥३५३॥

(दूहा)

वैलंनां दीठी खरी, सार्वलिगा ससनेह ।
हरखित बोल्यो हेजस्यूं, जाणा विण निज देह ॥३५४॥

"सार्वलिगा!" सूदो कहइ, ग्रो चंपलो चितारि ।
नयणां तणा पसाव करि, भइ वइदानो गारि ॥३५५॥

महल सहल मइं मुकुले, खेलत पासा रारि ।
तुरित ग्रीया सुणि वचन, ते सकी चित-मझारि ॥३५६॥

जांण्यो रते जणावसी, कोइक एहवी किज्ज ।
पासा मिस बोली प्रिया, राखण लज नइ फज्ज ॥३५७॥

"रे रे पासा गमण करि, बाधी जोडी म मारि ।
पासो तो परवसि पड्यो, सकइ तो सीस ऊगारि" ॥३५८॥

(चोपई)

इम कहिनइ बोल्लइ 'पो-बारि',प्रियनइकहइ,हिवइ सारी मारि ।
सूडो वयण सुणी तेहनइ, मतउ करइ विच त्रिय नेहनइ ॥३५९॥

महल-थकी वेस निवारि, निज डेरे आयो तिण वार ।
आई वेस कीधा अद्भुत, मारि लगोटो लगाइ भभूति ॥३६०॥

करि कुतका आरि कोतिक काजि, सेवइ भेख अणोपम महाराज ।
धरि कर-महि खप्पर सुविसेस,घावि तिणइ घरि कहइ 'अलेख' ३६१

कण घातण एक आई दास , धुरि 'माई मूंडी' कहइ तास ।
एक भवरले आई भीख, तिण नूं पणि ते दीधी सीख ॥३६२॥

हाकां करि कूदइ हल फलइ, गाल वजावइ नइ ऊछलइ ।
सार्वलिगा-विण घरनउ साथ,कण घइ पणि नवि मडइ हाथ ।३६३

न ल्यइ दान किणही हाथ नो, थयो दुमन मन सहु साथनो ।
मुंही जांण न द्यॉ तेहनइ, 'जिम ल्यइ तिम आपो एहनइ' ॥३६४॥

यतः

अतिथि यस्य भग्नाशो, गृहात्प्रतिनिवर्तते ।
स तस्मै पातकं दत्वा, पुण्यमादाय गच्छति ॥३६५॥

(दूहा)

ततखिण सार्वलिगा तुरत, सरस सुरंगी साल ।
लेइ आवी देवा भणी, हाथे थाल विसाल ॥३६६॥

उवां दायक उवो लायक, उपर नीचइ हत्थ ।
कर को नवि पाछो करइ, जांणकि लोभी सत्थ ॥३६७॥

नारी निरखे ना हले, नारी निरख्यो नाह ।
प्रेमोदधि पेखत तिहां, उलट्यो घणूं अथाह ॥३६८॥

ओर ओर निरखइ नही, न करइ अवर विचार ।
उ उणमइं डवा तेहमइं, थिणत थया सुबिकार ॥३६९॥

लख देखइ लख जण हसइ, लख बारइ लख हेलि ।
लुबध थका नवि क्युं लखइ, मिलिया नयण मेलि ॥३७०॥

नां ओ ल्यइ नां उवां दीयइ, इयुंहि कर जोडि ।
ते भख लेवानइ तुरत, कागा पडइ करोडि ॥३७१॥

तव तिहां तिण राजा तणी, कुंअरी उपरि गेह ।
काग पडंता देखिनइ, आपइं वचन सु एह ॥३७२॥

"इण नगरी मुरिख वसइ, पंडित वसइ न कोइ ।
कर उपरि कागा भखइ 'को को' 'करइ न कोई' ॥३७३॥

वांणी सुणी तिणकुं अवरनी, कुंवरइ धरीयो कोप ।
बीजो को बोल्यो नही, इणिनइ केही ओप ॥३७४॥

पुहपावती-थी निज पुरइ, जाउं करूं बल जोर ।
मो रूठइ इण कुंयर नइ, लागां पाप अघोर ॥३७५॥

घोल करी निज धग्ग विन्हे, ग्रायौ नगरी वहार ।
धीतवतां ईं चित्त-मइं, ग्राइ मिल्या ग्रसवार ॥३७६॥

हीसा नेह हय घट घटे, फटक नही को ग्यान ।
सुत वांसइ मूत्रयो पिता, स ग्राई मिल्यौ परधांन ॥३७७

पुन्य प्रकार पोते प्रवन, हुई तम पूगी हाम ।
ग्राइ मिलइ चित चाहतां, मनवंछित सहु कांम ॥३७८

पूछइ निज परधान तूं, लिखिग्रो कुंवर लेख ।
पुरे भोजराजा दिसे, वांचइ विगति विशेष ॥३७९॥

दूत जिकूं ग्रम्ह दाखवइ, सो जांणे सहु वाच ।
नही तो ऊडंतो लखे, नगर-मुहे नाराच ॥३८०॥

प्रभु-कागल ले दूत सों, ग्रायो पुरि ग्रधिकार ।
सामि कांमि ग्राखइ करी, ग्राप तणउ ग्राचार ॥३८१॥

"मुझ राजा सुणि राजवी!, इम ग्राखइ ग्रम्ह साथि ।
कुमरी तुझ वांधी करो, ग्रापे एणइ साथ ॥३८२॥

खुसांय वे-न्हुनीये करी, जो न कीयउ ए काज ।
तो तूं जांणे तो भणी, रूठो सही जमराज!" ॥३८३॥

सुणि राजा ग्रति कोपीयो, सहीयो वयण न तास ।
सीह कदेई नां सहइ पाखर ग्रनइ पर-ग्रास ॥३८४॥

यतः

तेजी न खमइ ताजणो,……… ॥३८५॥
ग्रा जा रे चर जाइ तूं, तोस्यूं केही रीस ? ।
ग्रायो जांणइ सदय नं, पूरण भोज जगीस ॥३८६॥

(चोपई)

भोजराज रण-भूंभण काज, कीधो सगलो ही तव साज ।
गिर समवडि गड हुति, मदोन्मत्त बहु मधुप भ्रमंति ॥३८७॥

काठी अति ऊंचा कूदणा, ते तेजो देखीता भला ।
चंचल चपल चलत चतुरंग, चग तुरंग कि गंग तरंग ॥३८८॥

पयदल सबल विमल च त्रवंत, चढीयो नृप दल मेलि अनंत ।
सदयकुमार चढियो इणि वार, सिंधूडइ वाजंतइ सार ॥३८६॥

कंचुक कवच कराइ कसमसइ, धरे धीर पणि अंग धसइ ।
साँमल वरण धरण मद धीर, सुभट घटा घन घट गंभीर ॥३६०॥

(दूहा)

अनए रावण सम समुद, मदवारण मातग ।
चडीयो तिण गज सदय नृप, सिर सिंदूर सुरग ॥३६१॥

वेऊं दल मिलिया वहसि, मिलिया वे रणभूमि ।
परसिरि खुरसांणे चडे, हूग्र हथियार सधूम ॥३६२॥

धगति इंद्र सुरगण सकल, सूरिज थयो सकस्स ।
धर कंपइ गिर थरहरइ, इसीयां सूरां रस ॥३६३॥

धर धूजइ दल धूंकलइ, कायर चित्त कंपाइ ।
सूर पतंगा रंग-स्यूं, भुकि भुकि माभि भंपाइ ॥३८३॥

धड कूदइ सिर ऊछलइ, गूथी हर वरमाल ।
सगति रगत पाँमी करी, धाइ-तिण धकचाल ॥

पगि गृगाँग तोमर पर कुंत, तीर वहइ किरि गगन ग्रहूंत।
गुमट-गुमट गज-गज पग-पास, वदइ माग रगता भिप राग ३९५

वहइ वेपू डी दग धार, सदय मटक तपग तिणवार।
गाजे कटक गयो तव भागि, छूटो गोज सुदय पगि लागि ॥३९६॥

आण्यो सदय भोजइ निज पुगे, परणाई सा निज कुंअरी।
कर मूंकावण करकेकाण, यह पण कुंअर न करइ प्रमांण।३९७

कुंवर कहइ एहने घरवार, जे छइ नर नारी परिवार।
पील्हो गहु घाणी मंहि घालि, मन राग्वो एहनी तिन जाति ॥३९८॥

सदय कहइ थो मुझ समनेह, वींझी घनदत्त मेव सगेह।
वात गेर कीधी तव ताम," सेठि वाधि आण्यो नृप पासि ॥३९९॥

सेठ कहइ "ल्यो धन भण्डार, सूंन विना ए वडी मारि।
भोजराज परघानि फिरइ," इसी वात साहिब किम करइ ॥४००॥

भापइ कुमर सुणो नृप वात, सावलिगा नारी विख्यात।
जो वतेइह तो छूटो एह, आपू धन नइ सूं(गेह ॥४०१॥

भोजराज घनदत्त-नइ कह्यो, सेठइ पणि ते सहु सर दह्यो।
समझाया सुत वधव यांति, सगले ही मांनइ ए वात ॥४०२॥

(श्लोक)

त्यजेदेक कुलस्यार्थे ग्रामार्थे च कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे सकलं त्यजेत् ॥४०३॥

(दूहा)

"पायो सुख इणथी नही, करे नवि धरीयो तिण नेह।
धतग्राही परि बोलब्या, इणि दिन भपणइ गेह" ॥४०४॥

(चोपई)

इम आलोचि दोधी सा बाल, नर नारी मिलिया सु-रसाल।
परहत्थ चढी ए कीधी मोल, जोज्यो इहा विधाता-खेल ॥४०५॥

(दूहा)

किण-रो ही किणनइ दीयइ, आंणइ वलि तसु पासि ।
जन कोई न विलखि सकइ, जे विधि तणउ विलास ॥४०६॥

(गाहा)

राउ करेई रंको, रंको पुण करइ राउ सारिस्सो ।
जंन घरिज्जइ हीयए, विहिणा तं किज्जए सव्व ॥४०७॥

कह मंती कह राया, कह उभायस्स तहय अभयणं ।
कह पुप्फावई मिलणं, पिच्छिवह विहिए रि सासंती ॥४०८॥

नियड करेइ दूरे, दूरत्थं चेव आणए नियड ।
जह सो वाय नरिंदो, मिलीयो विहि विलसीया तत्थ ॥४०९॥

जं चंदणम्मि अहिणो, संभा समयम्मि माप्ररंवत्था ।
मिलियो बहु दिवसाउ, तहेव कुमरो रमारम्भं ॥४१०॥

(दूहा)

"मूदा ! [सावलिंगा वहूइ"] पत्र मुवासर ग्राज ।
प्रीतम मिलिय धृति हुई, कज्जों सहु सरीया ज ॥४११॥
पूनिम-चंद मयंक जिम, दिसि च्यारे फनीयाँह ।

(चोपई)

ले रमणी उच्छक ग्रति घणइ, चाल्यो कुमर नगर ग्रापणइ ।
चढि साथि सेना ग्रति घणा, मुणि लीयइ ततग्गिण सावली ॥४१२॥

मादल संख दमा मा वीणा, मगन गीत ग्रनइ जुग मीन ।
पुत्र सहित युवती स्त्री गाई, विप्र तिलक मुखि वेद सुहाई ॥४१३॥

हाथी, पूरण घट कन्यका, दधि फल पुष्फ दीप वन्हिका ।
वेस्या सूहव स्त्री सुकमाल, पुलकित नयणी वयण रसाल ॥४१४॥

हरित द्रोब ग्रक्षत ऊजला, सपलांण तेजी ग्रति भला ।
भद्र पीठ चामर नइ छत्र, गोरोचन घृत मइ सितपत्र ॥४१५॥

इम ग्रनेक तम नगर मझार, सकुन थया ग्रति घण सुखकार ।
दखिण-थी वामी दिसि जाई, मंगल तो कारिज सिध थाई ॥४१६॥

(दूहा)

ग्रंगत घूणह मंडलह, जउ निग्गमण करति ।
जे घण नाह विवज्जीया, घरि कदही नावंति ॥४१७॥

जउ मंडल दाहिण सरइ, नयर-प्रवेस घरांह ।
तिहा जयमंगल सिर विजर, रिद्धि वृद्धि नरांह ॥४१८॥

ग्रांम प्रवेसि त्रिया-कजि, भय करइ नीसारि ।
दाहिण सुण होए रमो, लीजइ सार विसार ॥४१६॥

वायस जिमणा उत्तरइ, हुवइ सावडू ज स्वांन ।
सावलिगा '[सूदो कहइ], पगि पगि पूरिस प्रधांन ॥४२०॥

एको वेढी लूकडी. अर सावडू सियाल ।
सावलिगा [सूदो कहइ], फलइ मनोरथ माल ॥४२१॥

डावो राजा जीमणी जइ भैरख किल लाइ ।
सावलिगा [सूदो कहइ] अफल्या वृक्ष फलांइ ॥४२२॥

वानर नकुल रू चीवरी, वले दाहिणो चास ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], फलइ मनां-री आस ॥४२३॥

सड वह सार सखर तुरी, डावा लाली हुंति ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], अफल्यां वृक्ष फलंति ॥४२४॥

स्याल सूण काली चडी, वायस राजा तेम ।
ए सुंदरि वामा सदा, दीयइ अचिंत्यउ प्रेम ॥४२५॥

(दूहा)

जंबू हास मयूरे, भैरदा हेत वै हेव नोन लेय ।
वसण मेच पसिद्धं, दाहिणे सत्र चास वर्स नीपती ॥४२६॥

खर खमावि सहर जीमणों, डावा लाली हुंति ।
कंत मलेज्यो संवलो, संवल तेह दीयंति ॥४२७॥

कूभ वरे वो चीवरी, हणमंत नइ हिरणांह ।
एता लेई जीमणा, बीजा सहु वामाह ॥४२८॥

डावा उपरि जीमणो, जो वहि भैरव हुंति ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ, कारिज सवे सरंति ॥४२६॥

जो परभाते स्वेत चिट, वामी दाहिण जाइ ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], लाभइ राज-पसाइ ॥४३०।

डावा भला न जीमणा, लाली जरग सोनार ।
फेकारी बोली छुटी, चिहु ं दिसि एक विचार ॥४३१।

भलप भणंती उदो, जोगणि जीमणी जाई ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], संपति सुख बहु थाई ॥४३२।

(गाथा)

धामोय खरो, वामोय वायसो, महथ चेव मेलंकी ।
वामा धूम्रड रडियं, पुन्नाहि विण ना पावंति ॥४३३।

(श्लोक)

करे दंड धरइ सोम्यं समभाव प्रसन्न-दृक् ।
'धर्म लाभं' वदम् सम्यक्, श्रेष्ठः श्वेताम्बरः स्मृतः॥४३४।

विप्र. सतिलकः श्रेष्टः, सदंडो मुनिपुंगवः ।
नापितो दर्पण-करो, रजको धौतशिकः शुभः ॥४३५।

(चौपई)

इम अनेक शुभ शुकने करी, आयउ सुदयकुमर निज पुरी ।
विलसइ दिन दिन सुख सुविलास, रलियाला निस दिन रंग रास४३

(गाथा)

जहर मैं न लग्गि भमरो, रेवातईय कुंजरो रमए ।
सावलिगा मरिदो, रमइ तह चेव दिण रत्ति ॥४३७

मांणस-सरे स हंसो, रमंति कमलांणि नीर पूरम्मि ।
महिणीहि चंदण वणे, ए सितह चेव सस ए राया ॥४३८॥

(दूहा)

रति-स्यूं जिम रतिपति रमइ, इंद्राणी जिम इंद ।
महादेव गोरी परइं, विलसइ सुख आणंद ॥४३९॥

संसारी सुख अनुदिनइ, बिलसइ ते वरो यांम ।
सखइ न ऊगों आथम्यो, करइ कतूहल काम ॥४४०॥

(चौपई)

वरस मास सम दिन सम मास, दिवस मास प्रहर परि उलास ।
प्रहर पलक पल खिण सम जांण, बोलावइ सुख मइं गुणजांण ४४१

दिन दिन प्रीति वधइ अति घणी, ओछी नवि हुवइ मन तणी ।
अधिक अधिक वाधइ जंस प्यार, ए सुणिज्यो उत्तम आचार ॥४४२

(श्लोक)

सज्जनानां गुणज्ञानां, महतां मानसोद्भवा ।
सर्व्वदा सुखदा प्रीति, वर्द्धते क्षीयते न च ॥४४३॥

(दूहा)

घण-लच्छी सु-गुणी तरुणि, सयण सरस सुख प्रीति ।
पुन्य बिना नरि पामीयइ, कहइ कवियण ए नीति ॥४४४॥

कबहू रति हासी सुरस, कबहीं करइ गुण ग्यांन ।
कबहू बहु प्रेमि करी, बूझइ मन संधान ॥४४५॥

कबहू बोलइ वक्र विधि, कबहु कोक की वात ।
कबहु पहेली बहु कहइ, विलसइ सुख बहु भांति ॥४४६॥

कबहू हय फेरइ हरखि, कबहूं गज रमणीक ।
सांमी ना वइसी करी, बूझइ प्रेम त्रिभोक ॥४४७॥

(यतः)

पीयरस तीव-रस सप्रसन्न रस, हय-रस हीयइ न जास ।
संफल-वंबा सुणह-ज्यूं, गयो जंमारो तास ॥४४८॥

उवा रजवटि उह रसिकता, दोउं मनज विलास ।
सावलिगा उर थकी भए, पुत्र च्यारि सुप्रकाश ॥४४६॥

रीति नीति राजा रमइ, पासइ च्यारे पुत्र ।
मानूं हेमाचल मिने, दिग्गज च्यारि पउत्त ॥४५०॥

सदयवच्छ राजा सुपरि, भांमणि-स्यूं बहु भाव ।
प्रतप्पइ च्यारि पुत्र-स्यूं, दिन दिन दोढइ दाव ॥४५१॥

(चोपई)

श्रीखरतर गच्छ गयन दिणंद, प्रतपइ श्रीजिनहर्ष सुरिंद ।
शिष्य तास बहु विबुध विचार, दीपक दयारत्न दिनकार ॥४५२॥

मुनि कीरति वरवन शिष्य तासु, बंधव जे राखण रंग रासि ।
गुरु अनुमति निम्र मति उल्हास, एह कीयउ मइं प्रथम अभ्यास ४५३

पामइ नर पदमिणि सुविलास, पदमणि पामइ नर सुख वास ।
भणतां लामइ वंछित भोग, सुणतां प्रीतम-तणउ संयोग ॥४५४॥

वालम प्रेम तणी विरहणी, जेहना वलि परदेसइ धणी ।
रति-वंच्छक जा निसुणइ सदा, पांमइ पदि पदि सुख संपदा ॥४५५॥

(दूहा)

९ ७ ६ १

संवत निधि मुनि रस ससी (१६७९), विजयदसम ससिवार।
चर चाहि चोपई रची, मुनि केसव सुविचार ॥४५६॥
वेधक जो वाचइ सुणइ हुई तस वंछित हांम।
ज्यूं सावलिगा सुख लह्यो, सदय मिल्यो सुभ धांम ॥४५७॥
तब मइ यह रचना रची, कविजन परम कृपाल।
सुणि कि सीखहु रसिक जन, कीज्यो दया दयाल ॥४५८॥

इति श्री सदयवत्ससावलिंगा चउपई सम्पूर्णी।



टिप्पणी

मंगलाचरण में क्रमानुसार ओंकार, ब्रह्माणी, सरस्वती, गौरीनंदन गणेश और, 'पूर्व सूरि' कहने योग्य कवियोको प्रबंधकारने वंदन किया है।

कडी १ - **महामाई**-महामातृका ।

६ **खित्तीय** क्षत्रिय । पहु-प्रभु ।

७ **पत्थतई**-प्रार्थयताम् । प्रार्थना करने वालो का अभिलाष (अर्थ) पूर्ण करता है ।

८ **चउवेंई**-चतुर्वेदी–चौबे ।

९ **निदए**-निर्धन । **कणविलिया जीवो**-कण वृतिआजीवी । देखिये कडी २४, कुलवित्ति ।

घरणि-गृहिणी । **नराहिव** -नराधिप ।

पच्चूसे प्रत्यूषे । प्रभात में ।

१० **पयासिय**-प्रकाशित ।

११ **सुविज्जउ**-सुविद्य ।

१२ **प्रच्छइ**-पृच्छति । **जवइ**–कथयति । कथ् धातुका प्राकृत आदेश । **दिट्ठि** दृष्टि ।

१६, **बरलिउ**-उक्तवान् । तुम जो बके हो ।

२० **बिहु-पाहिइ**-तीन पैर वालेसे (अधिक) ।

२२ **सरिस** सदृश । देखिये, 'सुपुरिस-सरिसो' कडी १३ ।

२३ **भुहिरइ** (स) भूमिगृहम्-भूमिहर (गु) भोयरूं ।

२४ **अलीग्र** (स. अलीक)-मिथ्या । (गु) अेले, आले,-आलें । देखिये 'आलि,' कडी ९८ ।

२५ **तिलय नइ ठामि**-तिलकनइ ठामि-ललाटे ।

२७ **मुणइ**-संज्ञा धातुका आदेश। **गज-पाखलि**-गजके पक्षमे आसपास

२९ **सलसलो सकइ**–हाली चाली सकइ ।

लिखिचित्रामि-(स.) चित्र+कर्म (प्रा) चित-अम्म, चित्राम।

३१ धाइ-'धाइ' वाचिये। (सं धावति) किरि-उत्प्रेक्षाके सूचक पद।

३२ सकल- (सं.) शृङ्खला। हार-श्रणी।

३३ पगर-(स.) प्रकर-समूह।

३४ रेवणी-(स.) रेव् धातुसे।

लाख इनासइ। 'न' का 'ल'।

३५ दोसी-(प्रा. दोसिस,स. दूष्य-वस्त्र,दूष्येन व्यवहारिन स. दौष्यिक.)

कप्पड के व्यापारी।

परिखि-परीक्षक। सुवर्ण चांदी के।

फडीया-(फा) अन्न विक्रेता। फोफलीआ-(स) पूग फल (प्रा.)

पोफल (जू.-गू.) फोफल, उनके व्यापारी। सार- (स.) सहकार,

(प्रा.) सहआर, सार, साहाय्य, रक्षा।

३६ हालकलोल-(प्रा. हल्लकल्लोल)

पोता-(स पोतानि) वस्त्र। किरियाणां-(स.क्रयाणकानि)

३७ पाधरि-(स) प्राध्वरे। सरल मार्ग में। लूसइ-लूटे।

सीकिइ-थ्या-(स) शिकदे।

३८ गयद-(स) गजेन्द्र। सुर-हट-सुरा के हाट।

३९ पचायण-(स) पचानन, सिंह। पाखरिउ-स्वारी किया हुआ।

४० सुंडाहल-(स) सुंडाफल, दन्तूशल।

४२ पसाउ-(स.) प्रसाद, भेट-रूप पदार्थ।

४४ नववारहि-(सं.) द्वार। देखिये, गीता। 'नवद्वारे पुरे गेहे'।

आधरणि-(सं.) अग्रगर्भिणी,पहली बार गर्भ धारण करनेवाली

कुलस्त्री।

धवल-धूंरिण-धवल, मंगल गीत के ध्वनि (धूणि)।

वेग्र-वेद।

४६ सइहथिइं-(स) सीमन्त केशो का ग्रथन। देखिये कड़ी ८४।

पस पूरइ-(सं.) प्रसृति। मगज श्रीफल और अन्य द्रव्यों से हस्ततल का पूरना।

४७ घाट-रेशम का वस्त्र।

४८ असुरण-(सं.) शकुन, (प्रा. सउण) अपशकुन। देखिये कडी ८१।

५० गजर-(स.) गर्जना। सगूं सणोजूं-सं. स्वकम्, सगूं। सं. स्नेह जं-सनेह,सणेहजं) देखिये कडी ९०।

५१ राउत-सं. राजपुत्र, प्रा. रा+उत्त।
वसह विशुद्ध- (सं. वंशस्य) विशुद्ध वंश के।

५३ आहदि अहग-युद्ध अभंग।

५४ जूवटइ-(सं. द्यूत+वर्त्म, प्रा. जूयवट्ट) द्यूत मार्ग, द्यूतस्थान।
पहुवच्छ-जाइ-प्रभुवत्स जातः, प्रभुवत्स का जाया, सदयवत्स।
दूहबइ-(स.) दु:खयति। डारिउ-डर बताया।

५५ बाहर-साहाय्य।

५७ जम-मुहि-यममुखे।

५९ असिमर-'असिवर' चाहिये। असिओंमें श्रेष्ठ। देखो कड़ी १४६

६० करिमालि-(सं.) करवालेन।

६२ मेगल-(मं.) मदकल, मदसे कल मनोहर हस्ति। और 'मदगल,' जिसके गंडस्थल से मद गलता है।
पवरिस पार-(सं.) प्रवर्षका पार।

६४ पुहब्ब-(सं.) पृथिवी, प्रा, पुहवी, पृथ्वी।

६५ समोपी-(सं. समर्प) सोप दी। जुहार-(सं. जयकार) प्रणाम।
बिमणउ-(सं.) द्विगुण, (प्रा.) विउणउ, दुपट्ट।

६८ लज्जरयउ-पढ़िये। लज्जित हुआ। देखिये कडी ६९।
तीसरी पंक्ति-सुधार के पढ़िये। गजगंजण। लज्ज जइ (लज्जि क्रिमइ।'
चतुर्थ पंक्ति-सुधारके पढ़िये। 'किम वि जय-सद्द सुसमर तिमइ

७० राणिमनइ-'राणिम नइ' पढ़िये,राजत्व, राणाका पद 'राणिम'।

७१ पवाडउ-(सं.) प्रवाद प्रशस्ति ।

७१ पसाइं-प्रसादेन । कृपा से । पहीस-(सं.) पृथ्वीश ।

७३ चाचरि-(सं.) चत्वर, अगन मे । लुहड (लहुड) पणा (सं.) लघुत्वत्वेन, छोटेपण । श्रंगी-कार्‌ अगीकर्‌ । देखिए कडी ८७ ।

७९ गुडीय वन्नर वालि-(सं. वन्दनमाला) देखिये । नंददासकृत मानमंजरी । "क्षुद्रावलि जनु मदनगृह.बांधा वंदनमाल" । छोटी धजा और तोरण ।

श्रगालि (सः) अकाले ।

८० वद्धावी (स.)वर्धापन, (प्रा) वद्धावणी वधावा निमित्त । पडसद्दे-(सं) प्रतिशब्द, पडघा ।

८१ कइवार-सत्कार ।

८३ कणय-(सं.) कनक, सुवर्ण । कच्छाहि केकाण-कच्छ देश के प्रसिद्ध अश्व ।

८४ मुत्ताहल-(सं) मुक्ताफल, मोती ।

८६ मुहुत्ता-(स.) महामात्र, अथवा महत्तर से संबंधित मुख्यमंत्री । महूतक, महेता, मुथा आदि अपभ्रंश रूप प्राप्त है।

भूप जमलउ (सं.) यमल, बराबरीके, एक जोडीके, एक सरीखे ।

९१ रूसइ (सं.) रुष धातु रोष करे ।

९२ मतिमयइपणु-(स.) मंत्री पद । इधर पष्ठीके द्विभाव प्रयुक्त है । 'ह' (स्य) और 'पणु' (सं त्वन, पण) ।

९३ पाली-एक नाप जिसमे सात सेर कच्चा रहता है ।

अरक-(स.) अर्क-सूर्य ।

९५ कालमुहुअ-(स. कालमुख.)श्याम वर्णः ।

९६ ताग- अत ।

१०० अहिठाणि-'आ' प्रतिका पाठ 'अप्पाणि' विशेष युक्त है । सं. अधिष्ठान । उलग-सेवा ।

१०३ सुरक-सु रक सु-शत पढिये । सुतरां रंकः अत्यंत रंक, ऐसा अर्थ

भी हो सकता है।

चिंतारयण-चिंतारत्न, चिंतामणि। जो चिंतवन करे सो प्राप्त कराने वाला अमूल मणि। **कित्तउ**-(स. कियत्), कितना भी। **बीय मयक**(सं.) द्वितीया (बीज बीय) का मयंक (सं. मृगांक), चन्द्र। शुक्ल द्वितीया की चंद्रलेखा घड़ी भर के लिए दृश्यमान होती है।

१०६ **घमी धमाविउ**-घमीघमाविउ (एक शब्द), धमधमाया।

सदस्यवत्स-'सदयवत्स' पढ़िये।

१०७ **ऊलग**- सेवा।

जुहार जयकार, जयहार, जउहार, जुहार, प्रणाम।

१०८ **रउद्द**- रौद्र, रुद्र स्वरूप, भयंकर।

हास मिसिइ (स. हास्यमिषेण) हास्य का निमित्त बताकर।

१०९ **नीच**-नीचु। दृष्टांत अलकार। **निठाडइ**-निढाडइ। तिरस्कार करके निकाल देना।

११० **जीहां**-(स. जिह्वा) 'बीहा' पढ़िये।

१११ **भमहि**-भ्रू, भृकुटि।

अचरिज-(सं. आश्चर्य, प्रा. अच्छरियं)।

११३ **ऊहट्टइ**-(सं.) अवघटयति।

११४ **ताजरणउ**-(सं. तर्जनकम्) चाबूक।

११७ **राउल**-(सं. राजकुल) राजका निवास-स्थान।

रान-(सं.) अरण्य; (प्रा. रण्ण, जू. गु. रान) जंगल।

११८ दूसरी पंक्ति सुभाषित के रूप में प्रसिद्ध है।

सबल-(सं. शम्बल) भायुं; (सं. भक्तोदेनम्)। भत्था।

११९ **प्रणीमू**-प्रणामूं पढ़िये।

१२२ **मइमारिउ**- मई मारिउ। पढ़िये।

घरइ-घरइ पढ़िये। **सयल**-सकल।

१२३ **आयस**-(सं. आदेश) आज्ञा।

१२४ वंधेया-(सं. वद्धुम् प्राकृतमें तुम्का एवं एत्वा) हृवयं कृदंत। बन्धन करने के लिये। देखिये कड़ी १३४, 'आपेवा भणी', और कड़ी २६४।
केत्यउ-(सं. कृत, प्रा. कत्य) किए।

१३६ (राज अन्याय) जिसां सहइ-जि, सासहइ, जे को सहन करे। देखिये कड़ी १३८, 'किम सासहइ'।

१२८ पयड-(सं. प्रकट) स्पष्ट रूप मे।

१३० राजा-पाहिइं-(सं. पार्श्व; प्रा. पास पाह-पाहि, पइं, पें) एवं अनेक रूप मे प्रयोग मिलते हैं।

१३६ महि हरियइं-'सहि हत्थिइ' पढ़िये। (सं स्वहस्तेन) अपने हाथमें

१३९ मइलउ-(सं. मलीन) अपवित्र, दोषयुक्त।

१४० सब्व-'सप्प' पढ़िये (सं. सर्प)।

१४१ पहिली पंक्ति सुधारके पढिये। 'नह मास मेय जणणो, दो मुहुलो हुहि खंडण समत्था।'

१४३ मंड-ग्येहु की मिष्ट रोटी। गुजराती में मुहवरा है 'मनने गम्या ते मांडा, ने लोक कहे ते गांडा।'

१४३ सउणभणी-(सं. शकुन प्रा. सउण) शुभ शकुन माननेके लिए देखिये कड़ी २४६।

१४४ सद्द-(सं. शब्द) आवाज। धवलहर-धवलगृह।
अतरि-(सं. अंतःपुर, प्रा. अन्तेउर) अन्तेउरि पढिये। स्त्रियों का निवास स्थान।

१४६ असिमर-'असिवर' पढिये। श्रेष्ठ तलवार।

१४९ सूर-'सुर' पढ़िये।

१५३ माइ-माई। पीहर-(सं. पितृ गृह, प्रा. पीइहर) पीहर।

१५४ पुठि-'पुट्टि' पढिये।

१५९ जंघजूअल-जंघ जुअल (सं. जंघा युगल)।

१६० निलवट-(सं. ललाट पट्ट) ललाट मे।

ताडोक-'ताडक' पढिये।

१६१ मयरकेत-(सं. मकरकेतु) कामदेव।

१६२ खड-'खड' पढिये।

१६६ 'उदउ' भणइ- उदय हुआ ऐसी आशीष भणती जोगिणी दाहिनी जाती हैं।

१६९ डाउ-'डावउ' (वाम बाजु) पढिये।

१७५ देवा-देवी।

१७६ सविहूंगमइ-सविहू गमइ।

१७६ सुर-(स. सूर्य) 'सूर' पढिये।

१८८ पलीथ-'पलीय' पढिये।

१८९ बिलकिलिउ-व्याकुलीउ व्याकुल हुआ।

१९१ नस मास 'नस मांस' पढियें।

१९४ अहिठाण-अधिष्ठान। पहिठाण-प्रतिष्ठानपुर।

१९५ पबरिस-पौरुप।

१९७ कउडी-(स. कपर्दिका प्रा.) कवड्डिया कउडा। कौंडी। धूत खेलन मे इसका उपयोग होता है।

१९८ भब भगति-सारा आयुष्य भरकी की हुई भक्ति। हेलां-रमत मात्र मे।

२०१ पचार उपचार अर्थ मे समझना चाहिए।

२०३ उलगि-'उलगि मु' पढिये। उजगि स्यूं सेवा करू गी।

२०५ ऊखाणउ (सं. आभाणकम, प्रा. आहाणउ) उपाख्यान, लोकोक्ति। देखिये कडी ३४६।

२०६ रण्ण-(सं. अरण्य)। देखिये 'रान' कडी ११७।

२०९ सुरहा-सुरहि (म. सुरभि) सुगधा।

२१२ वुलंब-'फुलब' पढिये। नायवेलि-नागवेलि।

२१४ वंकडीयाकुलीय पयडोय पलास-समान भाव के लिय देखो 'बसन्त विलास', लिपिसंवत १५१२ का दूहा।

'येगू-यली अति यौगुही, औगुही मयण थी जाणि ।
विरही नां इणि कालि, कालिज थाइइ खाणि ॥'

तियास नियास पढ़िये ।

२१६ फयक 'थवर' पाठ होना चाहिये ।

२१९ धजवड (सं. ध्वजपट) । पडिग्रार-(सं. प्रतिहार) मन्दिर के प्रतिहार के रूप में स्थित ।

२२१ सूंदा पाहि-'सूदा पाहि' पढ़िये ।

१३२ ग्रालवइ-(सं. आलपति) आलाप करती है ।

२३३ पांगति (सं. पंक्ति) ।

२३६ सांइ-(सं. स्वामी) स्वांमीने गावलिगीरी सावि लीलावतीको सी

२४२ जुहार-(स. जयकार) जय बोलने के बाद प्रणाम ।

२४३ पुहर पंथ एक प्रहरमें पहुच सके इतना दूर । अति दूर नहि ।

२४४ धूग्रा-(सं. दुहिता का ये प्राकृत रूप है) पुत्री ।
वछू-'वछू' पढ़िये ।

२४६ ग्रवद्धडी- (सं. अवधि) ।

२४९ माउलउ-(सं. मातृकुल प्रसिद्धः) ।

२५४ परतु-(सं. प्रतीत) सच्चाई या अनुभव ।

२५९ गुज्झ (सं. गुह्य) छुपाने लायक कोई बात ।

२६० सउकि (सं. सपत्नी) ।

२६६ लीलौ-गई-'लीलागई' पढ़िये ।

२७३ सपराणी-(सं. सप्राणा) चेतनवती, उत्तम श्रेष्ठ ।

२७८ जमहर (सं. यमगृह, प्रा. जमहर) राजपूत इतिहास में शत्रु का विजय देख के राजकुल की महिलायें 'क्षमोर' करती थीं । ये अग्निकुंड में भस्मीभूत होती थीं । यमगृह प्रवेश अथवा आत्मघात का अर्थ में प्रयुक्त है ।

२८६ झीदाता-(सं. खीद् धातु) दुखित होना, दुख पाते हुए ।

२८७ गागेय-भीष्म । माणि अभिमान रखने में । कविका महाभारत

के पात्रों का अच्छा परिचय इस प्रशस्ति से प्रतीत होता है।

२९१ **वड वाहूमि**-वड़े (संदेश) वाहक ने वर्द्धापनिका दी। **वद्धामणी** (सं. वर्धापनिका) अभिनन्दन।

२९३ **सीकिइ**-'सीमिइ' (सीमाडें में) पाठ ठीक रहेगा।

२९९ **पाथरउ**-(सं. प्रास्तरक.) रास्ते में पाउं से चलने वाला मामूली आदमी।

३०० **बारहट्ट**-(सं. द्वारभट्ट, प्रा. में बारहट्ट) जो लोकभाषा में 'बारोट' नामसे प्रसिद्ध है।

३०१ **मेलउ**- 'मेलउ' पढिये। मिलाप कराया। **हर हेत** हर (ईश) के कारण से।

३०६ **पंगुरण**-(सं. प्रावरण) उत्तरीय वस्त्र।

३०८ **मउडद्दय**- (सं. मुकुटवद्धक., प्रा. मउड गू मांड)। मुकुट को धारण करने वाले। 'मुड्धा' शब्द इससे आया हुआ मालूम होता है।

३०९ **सेणाहिव**-(सं. सेनाधिप)।

३१० **वेयभूणि**-(सं. ध्वनि; प्रा. झूणि) वेद का घोष।

३१२ उपान्त्य पंक्ति को सुधार के पढिये -'आगइ कामुकीय कामिनी, अनइ वसंतनिसि-ऊजली।'

३१४ **रलीयाइति**-('रली' आनन्द के अर्थ में) आनन्दित।

३१८ **खेवि**-(सं. क्षेप) वेग में जो चडते है। **सालिहुंत**-(सं. शालिहोत्र) अश्वशास्त्री। लक्षणा से सर्व शुभ लक्षणोपेत अश्व का बोध होता है।

३१९ **पात्र**-नर्तकी। इस शब्द अपभ्रंश के रूपमें पातर अर्थात् सामान्य गणिका का अर्थ में होजाता है। नृत्य शास्त्र का संपूर्ण अभ्यास के बाद नर्तकी को 'पात्र' पद प्राप्त होता है। देखिये 'समस्ताभ्यास-संयुक्ता, नर्तकी पात्र मुच्यते'। सुधाकलशविरचित 'संगीत सारोद्धार' में।

३२५ अहिणवउ (स अभिनव) नवीन।
दोवि भरन्ती-कुमार ये दोनों हाथों में सम्बन्धी जन मांगलिक पदार्थ भरते हैं।

३३३ पहु-जाउ-(प्रभुवरस-जात·) प्रभुवरस का पुत्र।

३३६ कईवार-(सं.) कवित्व उच्चार।

३४० वोलाविउ वहनेवी-(सं. भगिनीपति, प्रा. वहिणी+वइ) वहनोई।

३४० छःदरसन-जीव जगत और ईश्वर सम्बन्धी चिंतनका छ प्रमुख भाग को 'दर्शन' कहते है।
सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय पूर्वमीमांसा अथवा धर्ममीमांसा, और उत्तरमीमांसा अथवा ब्रह्ममीमांसा याने वेदान्त। दूसरी-गिनती में बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन को भी शामिल किया है और लोग चार्वाकमत को भी शामिल करते हैं।

३५४ देसाउर-(सं. अपर देश.) परदेश।

३५९ सुपुरुष और नृसिह (नरसिंह) नामसे सयर (स्वैर) स्वतंत्र है।

३६३ घसाहस-घसाघस पढ़िये।

३६५ साविज-(सं. श्वापद, हिंस्र पशु: पक्षी के अर्थ में)। इसका प्रयोग देशी भाषाओं में उपलब्ध होता है। स. सु+वाज (पाख ?) से व्युत्पन्न होना सम्भव है। देखिये, भालणकृत 'कादम्बरी', पूर्व भाग 'शुक सारिका साविज माँहि, वोलि पट् प्रकाश।'

३७३ पडर्मोहि-(सं. द्यूतपट) चौपट की बाजी।

३८७ धावलहर-'धवलहर' पढ़िये। (सं: धवलगृह; प्रा. धवल हर सुधाधवलित गृह)।

३९१ लच्छि-(सं. लक्ष्मी), देखिये गुजराती गौरीगत में लक्ष्मीवन के पुत्र का उल्लेख 'ओ लाछाकुंवर'। देखिये कड़ी ४०२।

३९७ आवर्जन-अनुकूल करने के लिए उपचार।

४०२ **दोसी**-(सं. दौश्यिकः) कापड के व्यापारी।
४०३ **माम**-ममत्व (प्रतिष्ठा) का अभिमान।
४०४ **नातरू**-(सं. नात्रकम् ? ज्ञानेयं ?) स्नेह-सम्बन्ध।
४१२ **दव**-'देव' पढिये।
४१३ **कलास**-'कैलास' पढिये।
४१८ **ढोणां ढोईइ** (सं. ढौकनानि) 'भेटणां'-उपहार अर्पण कीजिये
४२० **मुडधा**-(सं. मुकुटधारी; प्रा. मउडधा मुड्धा) देखिये 'कान्हडदे प्रबध' में खड २ कडी ६९।
४२६ **मुन पकखेसि**-'मु न पकखेसि' पडिये। मुझे नहि देखेगा।
४३२ **सपराणी**-(सं. प्राण) प्राणवान बलवंतका अर्थ में 'सविहु सपराणी' वाक्य खड में 'श्रेष्ठ' ऐसा अर्थ ध्वंजित होता है।
४३६ **पढम**-(सं. प्रथमम्; अपभ्रंश, पढम) पहिला।
सरड-(सं. सरटः) काकीडा।
४३७ **असुउणि**-(सं. अशकुन, अपशकुन) अपशकुनकी वेला में।
४३३ **ऊहडीनइ**-(सं. उद्धृत्य)।
४४६ **रढिल**-अति आग्रही। **डोह**-दोहन।
४४७-४८ **छोह**-क्षोभ। **वाउ**-वात।
४५२ **आरीसउ**-(सं. आदर्श; प्रा. आयरिसउ) दर्पण।
एकदन्ती-एक दन्त अवशिष्ट रहा है ऐसी परमवृद्धा गणिकाकी माता।
४६० **संपरदाउ**-संप्रदाय।
मत्तवारणउ-झरूखा में। **मूघा**-मुग्धा। **दीति**-देदिप्यमान
४६१ **सघुडिउगीत**-ध्रुवा सहित गीतम्।
४६५ **पात्र**-देखिये कडी ३१९।
४६६ गुर्जरवैद्य का उल्लेख कवि-परिचयका सूचक हो सकता।
४७४ **हलुई**-(सं. लघुक; प्रा. लहुआ) हलकी, मानभंग।
देखिये 'सुदामासार' काव्य में। "याचंता जे निर्मुख जाइ,

तृण-पइं ते हलूउ थाइ।'

४७९ समान विचार या अनुसंधान के लिए देखिये 'माधवानल काम-
कंदला प्रबंध।' अंग ६, दूहा ५४-१०४।

४८१ सुरहां-(सं. सुरभिकानि, प्रा. सुरहिआ) सुगंधी सुवासयुक्त।

४८६ अनेथि-(स. अन्यत्र, प्रा. अन्नत्थ)।

४९१ वेश्या-निंदा के लिए देखिए 'माधवानल कामकन्दला प्रबंध'
अङ्ग ७, दूहा २४३-२४६।

४९५ लांच-(सं. लंचा) अनधिकृत द्रव्य की लालच।

५०० आपणपूं-(स. आत्मीय, आत्मान अपना।

५०१ आवरजइ देखिए-कडी ३९७। अनुकूल बनाती है।
जूजई-(प्रा. जुय जुय) भिन्न, पृथक।

५०२ आयस-(स. आदेश) आज्ञा।

५०३ असूर-(स. उत्सूर्यम्) सूर्य को अस्तमान होने के बाद। विलंब
न करो।

५०७ सपराणा-देखिए कडी ४३२।

५१४ आथि-(स अर्थ) अर्थ से, द्रव्य से हार कर उठ गया।

५१९ आफणो-(प्रा. अप्पणीयम्) स्वयं, खुद ही।

५२४ अलविइ-(स अल्पेन आयासेन) सहज।

५२९ अहिनाण-(सं. अभिज्ञान, प्रा. अहिनाण) निशानी, एंधाणी
परिचय।
खात्र-(सं. खन् धातुसे शब्द बनता है)।
दिवार मे खुदने से प्रवेश होकर चौर्य कार्य होता है।

५३५ संभेरइ-(स. संहरण) माल का संकलन करता है।

५३६ हडताल-(सं. हट्ट+ताल) हाट पर ताला लगाकर बन्द कर
देना।

५४० नन्दलोकनइ-वणिको को 'नंद' शर्म दिया जाता है। इससे नंद
शब्द से वैश्य का बोध होता है। गुजराती मे मुहावरा है

"नन्दना फंद गोविंद जाणे ।"

५४३ लांभा-कनिष्ठ ।

५४७ पूछम– ? । बिनडी-विडम्बित की । सात-सुख ।

५५० कमिणी 'कामिणी' पढ़िये । अर्थ स्पष्ट नहीं है ।

५५४ सातो-माचो । सच्चा, पक्का, चोर ।

५५६ केत-(सं. केतु) केतु प्रतिकूल ग्रहका नाम प्रसिद्ध है ।

५६१ तलार (सं. तलारक्ष) नगर-तलकी रक्षा करने वाला । भाषा मे 'तलाटी' शब्द से बोला जाता है ।

ओलगु-सेवक

५६८ मोकलि जे-'मोकलिजे' पढ़िये ।

५६९ फेडेसिइ-त्याग करायेगा ।

५७९ अर्थांतर न्यास । सुभाषित रूप मे ।

५८१–५८३–वणिक-श्लाघा ।

ऊडइ–(स. उद्वहति) ।

५८५ कदल-कलह ।

५८७ परीछयउ (सं. पृष्ठम्) पूछताछ की ।

५९४-९५ परतनउ-परकीय परका । पीहर का वास पर घर का वास कैसे कहा जा सकता है ?।

५९९ तरणि-सूर्य । त्रिकम–(सं. त्रिकम) तीन डग में स्वर्ग मृत्यु पाताल में व्याप्त होनेवाला विष्णु ।

६०१ वाहण-वहाण यान-पात्र । नीजामा-(सं. निर्यामक,प्रा. निज्जामय) कर्णधार, केवटिया ।

६०६ उचांपला-व्याकुलता

६०७ अणोसरा-(सं. अनाश्रया) आश्रय रहित की ।

६१० थापणि-न्यास । मोस-मृषा, मिथ्या ।

६१३ मांटी-पुरुष, शूर पराक्रमशील मनुष्य ।

उसरावण कीधउ (सं. उत्सर्जन) मुक्त किया ।

६१४ पण-महत्त-पग, प्रतिज्ञा का महत्त्व।
६१६ कसो-(सं. कष् धातु) कस, कसौटी करो।
६१८ तलवार की उपर नाम-मुद्रा अंकित करने की रूढ़ि प्रतीत
होती है।
६१९-आपोपइ-स्वयमेव।
६२१ अर्थातर न्यास। सुभाषित।
६२३ सुंडाहलि-(सं. सुंडाफल्व)।
६२६ सइहथि-(स्वयं हस्तेन) खुद अपने हाथ से।
६२८ सौजन्य-सूचक सुभाषित।
६३२ भडिवाउ-(स. भटवाद) अपने को शूर मानने का अभिमान।
६३४ सेलहत-(स. शेल हस्ते यस्य, प्रा. सलहत्य) गुजरात के सेठवाल
ब्राह्मणों मे 'शेलत' की अवटंक प्रसिद्ध है।
६३५ कीधारेवणी-(सं. रेव् धातु) पलायन कर दिया।
६४० सांध-'संधि' पढ़िये।
६५४ उलवण-(सं. उल्लपन) आलाप संलाप।
६५७ आणू-(सं. आनयनम्)।
परिग्रह-(सं. परिग्रह, प्रा. परिग्गह) परिवार।
६८३ उदाहरण-दृष्टांत। पुरावा। गवाहि।
६८५ सोधइ-'सोचइ' पढ़िये।
आदीसर-(आदीश्वर) जैनों के प्रथम तीर्थङ्कर, आदिनाथ
ऋषभदेव।
७०४ पुरिसत्तण-(सं. पुरुषत्व) पौरुष, पराक्रम।
७०६ ग्रास-भूमि का जो खंड दान मे दिया जाता है। 'ग्रास' पाने
वाला 'ग्रासिया' कहलाता है।
७१० साथ समाहरण-साधन सामग्री।
७११ अन्न अठार-चार प्रमुख वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, और शूद्र
'नव नारु', और 'पंच कारु' कारीगर वर्ग, समेत अट्ठारह वर्ण
कहलाती है।

७२० बजा वार तउ भाजन करु–इस प्रकार का प्रतिज्ञा ग्रहण 'कान्हडदे प्रबन्ध'मे पाया जाता है। देखिये खड १, कडी १८०

७२३ पीयाणे-(सं. प्रयाण)।

७२६ करह–(सं.करभ) ऊंट।



पृष्ठ १०४ पंक्ति ४। 'प्रमेमोउ्य'-'प्रमोदाम' पढिये।

१०५ कडी ७। चग-'चग' पढिये।

१०६ कडी १३। मयाल-(सं. मृदु, प्रा. मउ) मायालु।

कडी १६। पुष्पदंस.'पुप्पदंत' पढिये।

११० कडी ४७। शत्रुकार-(सं. सत्रागार) सत्रकार पढिये।

१११ कडी ५६। घाडा-'घोडा' पढिये।

११८ कडी ७२। तेणि अवस 'तेणि अवसरि' पढिये।

खेडोदेवति-'क्षेत्र देवता।'

१३५ कडी ६। घार.'घरि' पढिये।

१३७ कडी २३। सुना-'सुता' पढिये।

१८५ कडी सख्या ४५५, ४५८, ४५९, को अक सुधार के पढिये।



पूर्ति-प्रस्तावना पृष्ठ 'औ'

'पद्मावत' में सदयवत्स कथा का उल्लेख

अब जौ सूर गगन चढ़ि धावहु ।
राहु होहु तौ ससि कहं पावहु ॥
विक्रम धँसा पेम के बारा ।
सपनावती कहं गएउ पतारा ॥
सदैवच्छ मुगुधावति लागी ।
कंचनपुर होइगा बैरागी ॥
राजकुंवर कंचनपुर गएऊ ।
मिरगावति कहं जोगी भएऊ ॥
मधाकुंवर मनोहर जोगू ।
मधुमालति कहं कीन्ह वियोगू ॥
प्रेमावति कहं सरसुर साधा ।
उखा लागि अनिरुधवा बांधा ॥
हौ रानी पदुमावति, सात सरग पर वास ।
हाथ चढ़ी सो तेहिके, प्रथम जो आपुहि नास ॥

—पदमावती, दो० २३३-१७

समाप्त